

गुणनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)
द्वारा भिवानी (हरियाणा), काठमाण्डू (नेपाल) से प्रकाशित

ISSN : 2395-7115
Impact Factor 8.642

बोहल शोध मंजूषा



Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY, MULTIPLE LANGUAGES
PEER REVIEWED, REFEREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website :

www.bohalshodhmanjusha.com

Email : grsbohal@gmail.com

Dr. Naresh Sihag, Advocate
HOD Hindi, Tania University
M. : 8708822674, 9466532152

गीना देवी शोध संस्थान

द्वारा श्रीगंगानगर, (राजस्थान), पटियाला (पंजाब) व नेपाल से प्रकाशित



ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834

Gina Shodh SANGAM

A Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website : www.ginajournal.com

Email : grngobwn@gmail.com

Office : 8708822674

Dr. Rekha Soni, Vice Principal
Education, Tania University
M. 9828531975

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ

द्वारा नई दिल्ली, आगरा, गाजियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639

Impact Factor 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : <https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Executive Editor : **Dr. Varsha Rani** M. 9671904323

Managing Editor : **Dr. Mukesh Verma** M. 9627912535

Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुणनराम सोसायटी (रजि.) के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से वितरित की।

ISSN 2348-5639



SHODH SAMALOCHAN

2025

Dr. Versha Rani
Dr. Naresh Sihag, Adv.

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा भारत-नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639

Impact Factor : 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Vol. : 12, Issue : 4

Oct.-Nov.-Dec. : 2025



Executive Editor :
Dr. Varsha Rani

Editor :
Dr. Naresh Sihag 'Bohal'
Advocate



गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.) द्वारा प्रकाशित

SHODH SAMALOCHAN

शोध-समालोचन (त्रैमासिक)

संस्थापक संपादक
स्व. फतेहचंद

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REREREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वर्ष-12, अंक-4

अक्टूबर-दिसम्बर 2025 (भाग-2)

आईएसएसएन : 2348-5639

संपादक

- डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

कार्यकारी संपादक

- डॉ. वर्षा रानी

प्रबंध संपादक

- डॉ. मुकेश 'ऋषिवर्मा'

सह-संपादक

- डॉ. लता एस. पाटिल,
- डॉ. सुलक्षणा अहलावत

अक्षर संयोजन

- मो. सलीम

कानूनी सलाहकार

- डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
- अजीत सिहाग, एडवोकेट

सलाहकार सम्पादक मंडल

- डॉ. निशीथ गौड, आगरा
- डॉ. ऊषा रानी, शिमला
- डॉ. गोविन्द सोनी, श्रीगंगानगर
- डॉ. सुषमा रानी, जीन्द
- डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट, श्रीनगर
- डॉ. दीपशिखा, पटियाला
- डॉ. गौतम कुमार साहा, दरभंगा
- श्री राकेश शंकर भारती, युक्तेन
- डॉ. के.के. मल्होत्रा, कैनेडा
- डॉ. आशीष कुमार दीपांकर, मेरठ
- डॉ. कामिनी कौशल, गाजियाबाद
- डॉ. रवि शंकर सिंह, आरा
- डॉ. संजय कुमार, रांची
- डॉ. संतोष कुमार भगत, रांची

1. 'शोध-समालोचन' का प्रबंधन और संपादन पूर्णतः अवैतनिक है।
2. 'शोध-समालोचन' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। उनके प्रति वे स्वयं उत्तरदायी हैं।
3. पत्रिका से संबंधित प्रत्येक विवाद का न्याय क्षेत्र भिवानी न्यायालय ही मान्य होगा।
4. प्रकाशक/ स्वामी डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से मुद्रित करवाया।

'शोध समालोचन' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है—बैंक : PUNJAB NATIONAL BANK Branch : Yamuna Vihar, Delhi-110053 IFSC : PUNB0225600 Account Holder : SANIA PUBLICATION Current Account No. 2256002100405546 भुगतान की मूल रसीद, शोध-पत्र पत्रिका की ई-मेल पर भेजना अनिवार्य है।

नोट :- इस अंक की प्रिंट कॉपी खरीदने के लिए सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से सम्पर्क करें मो. 9818128487

मूल्य : 650/- रु. एक प्रिंट प्रति

वार्षिक 2500/- रु.

Editorial Board Member

1. Dr. Priyanka Ruwali

Dept. Of Sociology

D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttrakhand

2. Ashutosh Singh

Department of History,

Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana

3. Mansi Sharma

ICSSR- Doctoral Fellow,

Department of Political Science,

University of Lucknow, Lucknow, U.P.

4. Kishor Kumar

Department of History,

Kumaun University, Nainital, Uttarakhand.

5. Vivek Kumar

Research Scholar,

Department of Medieval and Modern History,

University of Lucknow, U.P.

विषय विशेषज्ञ सलाहकार समिति/ संपादकीय मंडल :

- **Dr. Mudita Popli**

Principal, Maa Karni B Ed College Nal, Bikaner

- **Dr. Tapasya Chauhan**

Assistant Professor,

Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra (Uttar Pradesh)

- **Dr. AMBILI V.S.**

Assistant Professor, Department of Hindi,

N.S.S. College, Pandalam, Pathanamthitta Distt. University of Kerala.

- **Dr. Om Prakash Mehrara**

Director, Shri Ramnarayan Dixit PG College, Srivijaynagar, Distt. Anupgarh (Rajasthan)

- **Dr. Anju Bala**

Assistant Professor Hindi,

Guru Nanak Girls College, Yamunanagar-135001

- **डॉ. श्रीमती अभिलाषा सैनी**

प्राचार्य, स्व. रामनाथ वर्मा शासकीय महाविद्यालय, मोपका, जिला-बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़

- **डॉ. माया गोला**, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा (उत्तराखंड)

- **डॉ. मोहित शर्मा**

श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, निम्बार्क तीर्थ किशनगढ़, जिला अजमेर (राजस्थान)-305815

- **रजनी प्रिया**

राँगाटाँड़ रेलवे कॉलोनी, क्वार्टर सं. 502/136, तरुण संघ क्लब दुर्गा मंदिर, धनबाद, लैण्डमार्क - नियर श्रमिक चौक, पोस्ट जिला-धनबाद, झारखंड-826001

- **डॉ. आँचल कुमारी**, असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी
राम चमेली चट्टा विश्वास गर्ल्स कॉलेज गाजियाबाद चौधरी चरणसिंह युनिवर्सिटी, मेरठ (उ. प्र.)
- **डॉ. सरिता भवानी मालवीय**
असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ लॉ,
आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- **डॉ. संदीप कुमार**, असि. प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी हिंदी तथा
भाषाविज्ञान विद्यापीठ, डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि., आगरा
- **डॉ. प्रमोद नाग**
सहायक प्राध्यापक, आचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ ग्रेजुएट स्टडीज, बेंगलुरु-560107
- **पल्लवी आर्य**
असि. प्रोफेसर, भाषाविज्ञान विभाग, के.एम.आई. डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि., आगरा
- **डॉ. अमित कुमार सिंह**
डी. लिट्., असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, के.एम. आई., डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
- **कोकिला कुमारी**
शोधार्थी, हिंदी विभाग, राँची वि.वि. राँची, झारखंड
- **गोस्वामी सोनीबाला**
शोधार्थी - जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार
- **डॉ. करुणेन्द्र सिंह**, असिस्टेंट प्रोफेसर
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, गोरखपुर, बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पीपीगंज, गोरखपुर
- **डॉ. मीरा चौरसिया**
चमनलाल महाविद्यालय लंदौरा, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड-247664
- **Dr. Vimal Parmar**
Assistant Prof. Rajasthan P.G. Law College, Chirawa , Rajasthan
- **डॉ. तनु श्रीवास्तव**
असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र), स्कूल ऑफ सोशल साइंस, देवी अहिला विश्वविद्यालय, इन्दौर
- **डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी**
उप-प्राध्यापक, केंद्रीय हिन्दी विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू, नेपाल
- **Dr. Archana Tiwari** , Assistant Professor , History and Indian Culture, Uni. Rajasthan, Jaipur
- **डॉ. जगदीप दुबे**
सहायक प्राध्यापक वाणिज्य (म.प्र.), शासकीय आदर्श महाविद्यालय, डीनडोरी (म.प्र.)
- **डॉ. चन्द्रशेखर सिंह**
समाज कार्य विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
- **लेफ्टि. डॉ. सन्दीप भांभू**
शारीरिक शिक्षा विभाग, टॉटिया वि.वि. श्रीगंगानगर

Request to Writers

Send quality original and unpublished works written on language, literature, society, science and culture. For publication, along with the translated works, also send the letters of consent received from the original authors. Compositions should be typed in Hindi Unicode Mangal font, English Time Roman. At the beginning of the article, a summary of the article is required which should be between 150 to 200 words maximum. The abstract must reflect the purpose of writing the article. Also write 5 to 7 'key words' (seed words) according to the article.

Write the article by dividing it appropriately into subheadings. Be sure to give a conclusion at the end of the article. The word limit should be 2000 to 2500 words. List of bibliographies at the end of the article APA Be in the format of. While sending the article, please write your name, address, phone number and title of the article in the e-mail. Submit a declaration to the effect that the article is original, unpublished, the author and not the editorial board will be responsible for any dispute related to it in future.

At the end of the composition, mention your complete postal address, mobile number and e-mail address.

- Editor

लेखकों से निवेदन

भाषा, साहित्य, समाज, विज्ञान एवं संस्कृति पर लिखी गयी स्तरीय मौलिक तथा अप्रकाशित रचनाएं भेजें। प्राकशनार्थ अनूदित रचनाओं के साथ मूल लेखकों से प्राप्त सहमति पत्र भी भेजें। रचनाएँ हिंदी यूनिकोड मंगल फांट अंग्रेजी टाइम रोमन में टंकित होनी चाहिए। लेख के प्रारंभ में लेख का सार अपेक्षित है जो अधिकतम 150 से 200 शब्दों के मध्य हो। सार में लेख लिखने का उद्देश्य अवश्य परिलक्षित होना चाहिए। लेख के अनुरूप 5 से 7 (की वर्ड) (बीज शब्द) भी लिखें। लेख को यथोचित उपशीर्षकों में विभाजित करके लिखें। लेख के अंत में निष्कर्ष अवश्य दें। शब्द सीमा 2000 से 2500 शब्दों की हो। आलेख के अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची ए.पी.ए. के प्रारूप में हो। लेख भेजते समय अपने नाम, पता, फोन नंबर एवं लेख का शीर्षक ई-मेल में अवश्य लिखें। इस आशय का एक घोषणा-पत्र प्रस्तुत कर दें कि लेख मौलिक है, अप्रकाशित है, भविष्य में इससे संबंधित किसी भी विवाद के लिए लेखक उत्तरदायी होंगे संपादक मंडल नहीं।

रचना के अंत में अपना पूरा डाक पता, मोबाइल नंबर और ई-मेल पता अंकित करें।

-संपादक

प्रकाशित पत्रिका प्राप्त करने के लिए संपर्क करे :

सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094

मोबाइल : 9818128487, 8383042929

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc.,)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals	08 per paper	10 per paper
2.	Publications (other than Research papers)		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

संपादकीय

प्रिय पाठको,

हर्ष और गर्व का विषय है कि शोध समालोचन पत्रिका का यह तिमाही अंक (अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर 2025) आपके हाथों में है। जब हम नए वर्ष की दहलीज़ की ओर बढ़ रहे हैं, तब यह अंक न केवल समकालीन साहित्यिक विमर्शों का दस्तावेज़ है, बल्कि समय की चुनौतियों और संभावनाओं पर एक गंभीर चिंतन भी है।

आज का दौर तीव्र परिवर्तन का दौर है। समाज, राजनीति, शिक्षा, संस्कृति और तकनीक - हर क्षेत्र में गहरे बदलाव हो रहे हैं। इन परिवर्तनों के बीच साहित्यकारों और शोधकर्ताओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। साहित्य केवल भावनाओं का संसार नहीं है, यह हमारे सामूहिक जीवन का दर्पण भी है। इसीलिए शोध समालोचन ने सदैव यह प्रयास किया है कि अकादमिक शोध, आलोचना और साहित्यिक रचनाओं को एक साथ लाकर पाठकों को सार्थक विमर्श उपलब्ध कराए।

इस अंक में शामिल शोध लेख विविध विषयों को स्पर्श करते हैं। कहीं परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन की खोज है, तो कहीं स्त्री विमर्श, पर्यावरण चेतना और सामाजिक न्याय की आकांक्षा। शोधकर्ताओं ने अपने लेखों में साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों को रेखांकित किया है। यही अकादमिक विमर्श की सबसे बड़ी विशेषता है—वह केवल शब्दों का सौंदर्य नहीं, बल्कि विचारों का मंथन भी है।

आज हिंदी साहित्य में जो सबसे प्रमुख प्रश्न उभर रहा है, वह है—'यथार्थ की अभिव्यक्ति किस प्रकार हो?' क्या साहित्य केवल आनंद देने का साधन है या वह परिवर्तन का औजार भी हो सकता है? समकालीन कवियों और आलोचकों ने यह सिद्ध किया है कि साहित्य दोनों है। वह संवेदना का भी स्रोत है और क्रांति का भी बीज।

हमारे समय में स्त्री विमर्श विशेष महत्व पा रहा है। स्त्री की स्वतंत्रता, गरिमा और आत्मनिर्णय की आकांक्षा अब साहित्यिक विमर्शों में गहराई से उपस्थित है। इस अंक में प्रकाशित कई शोध लेखों ने स्त्री की बदलती भूमिका, उसकी चुनौतियों और संभावनाओं को केंद्र में रखा है। इसी प्रकार पर्यावरण विमर्श भी एक गंभीर मुद्दा है। प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने साहित्य को भी झकझोरा है। कवि और लेखक अब प्रकृति को केवल सौंदर्य प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि जीवन की मूलभूत शर्त के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

समकालीन हिंदी आलोचना भी इन विषयों से अछूती नहीं रही है। आलोचना की भूमिका केवल पाठ विश्लेषण तक सीमित नहीं है; वह समाज और साहित्य के संवाद को दिशा देने का कार्य करती है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि साहित्य का मूल्यांकन समय के साथ बदलता है। आज की पीढ़ी जिस दृष्टि से साहित्य को देख रही है, वह बीते समय से भिन्न है। यही आलोचना की जीवन्तता है।

इस अंक का एक और विशेष आकर्षण है—नवीन लेखकों और शोधार्थियों को मंच प्रदान करना। शोध समालोचन सदैव यह मानती है कि साहित्य और शोध का भविष्य नई पीढ़ी के हाथों में है। इसीलिए युवा लेखकों की रचनाओं को यहाँ स्थान देकर उन्हें प्रोत्साहन देना हमारा दायित्व भी है और प्रतिबद्धता भी।

हम यह भी मानते हैं कि अकादमिक शोध केवल पुस्तकालयों और कक्षाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उसका प्रत्यक्ष संबंध समाज से होना आवश्यक है। जब तक शोध समाज की ज्वलंत समस्याओं को नहीं छूता, तब तक उसका महत्व अधूरा है। इस दृष्टि से इस अंक में शामिल कई आलेख शिक्षा नीति, सामाजिक विषमताओं और लोकतांत्रिक मूल्यों जैसे विषयों पर केंद्रित हैं।

संपादकीय के माध्यम से हम अपने पाठकों और लेखकों से यह भी निवेदन करना चाहेंगे कि साहित्य को केवल अध्ययन का विषय न समझें, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक भी मानें। आज जब समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है—भ्रष्टाचार, असमानता, हिंसा और पर्यावरणीय संकट—तब साहित्य की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। यह हमें संवेदनशील, मानवीय और जागरूक नागरिक बनाने का साधन है।

अंततः, यह अंक आप सभी के लिए एक चिंतन-यात्रा है। इसमें जहाँ शोध और आलोचना की गहराई है, वहीं रचनात्मक साहित्य की भावनात्मक ऊष्मा भी है। हम आशा करते हैं कि यह अंक आपके अध्ययन, अध्यापन और शोध में सार्थक योगदान देगा।

आप सभी पाठकों, लेखकों और समीक्षकों का सहयोग ही हमारी शक्ति है। हमें विश्वास है कि आने वाले समय में भी यह पत्रिका हिंदी साहित्यिक आलोचना और शोध की गंभीर परंपरा को और समृद्ध करेगी।

सादर,

संपादक
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

विषयानुक्रमणिका

संपादकीय	6
किन्नर समुदाय और आत्म-पहचान का संवैधानिक अधिकार: ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 का आलोचनात्मक अध्ययन	11
डॉ. सरिता भवानी मालवीय The Role of Digital Marketing in Shaping Consumer Behaviour in Tier-II Cities: A Case Study of Ranchi, Jharkhand Dr. Chandani Kumari Prof. (Dr.) Smruti Ranjan Rath	15
केन्द्र सरकार द्वारा मनरेगा योजना के लिए ग्राम पंचायतों को आवंटित बजट की उपयोगिता का धरातलीय अध्ययन	30
संजय मोहन डॉ. सुमन लता	
भारतीय विदेश नीति निर्माता के रूप में पं. जवाहर लाल नेहरू की भूमिका प्रो. डॉ. मन्जू सोलंकी सुधीर कुमार	34
हिन्दी एवं कन्नड भक्ति परंपराओं में महिलाएँ चंद्रकला हळीमनी	40
अदृश्य जीवन, अदृश्य साहित्य : हिंदी उपन्यासों में किन्नर समुदाय का प्रतिनिधित्व एवं उसकी सीमाएँ डॉ. प्रवीन शर्मा अनिल कुमार	47
वर्तमान भारत में बालगंगाधर तिलक के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता गायत्री देवी प्रो. नीलम चौरे	51
वैश्विक शांति में महात्मा गांधी की भूमिका: प्रभाव और समाधान प्रो. चन्द्रशेखर सिंह	55
डॉ. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय की कविताओं में ग्रामीण परिवेश सतीश कुमार पाण्डेय प्रो. शिवनारायण सिंह	62

समस्या : शोध का विषय	67
डॉ. दस्तगीर एम. मुल्ला	
Marriage as a Socio-Economic Institution in Jane Austen's Pride and Prejudice	72
Dr. Mala Srivastava	
Disparities in Health and Well-Being: A Comparative Study of Women and Men in Uttar Pradesh	79
Alok Kumar Rai	
Dr. Vivek Kumar Jaiswal	
Democracy In The Digital Age: Navigating The Impact Of Social Media	89
Dr. Rajendra Prasad Meena	
Amit Batra	
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताएं : जन चेतना से जन आंदोलन तक	93
डॉ. मो. रियाज खान	
जनसंचार के आधुनिक माध्यम	96
चंचल कुमार सिंह	
सतनामी सम्प्रदाय की पूजा पद्धति, भक्ति एवं दर्शन	99
रोहित कुंवर	
डॉ. सोनू सारण	
डॉ. केशव देव शर्मा	
A Thematic Analysis Of Jâtakas And Therîgâthâ: Ancient Indian Perspectives On Caste, Gender, And Morality	104
Dr Bharti Tyagi	
Indresh Prasad Purohit	
मानवाधिकारों के प्रति शिक्षित ग्रामीण व शहरी महिलाओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन	114
डॉ. सूर्यप्रकाश	
डॉ. पूनम रावत	
जब्त-सुदा साहित्य की परंपरा और इतिहास	118
डॉ. नरेश कुमार सिहाग	
డాక్టర్. ఎ.వి. మానిలామణి - తెలుగు కథానికా సాహిత్యం	
Dr. N. Anitha Margaret	122
श्रीगंगानगर जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले गैर-शैक्षिक कार्यों का शिक्षण पर प्रभाव का अध्ययन	126
लवप्रीत सिंह	
डॉ. अनिल कुमार	
भगवान दास मोरवाल के साहित्य में लोक संस्कृति	131
सुषमा	
डॉ. संजय कुमार	
हिन्दी साहित्य में ए आई के नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थ	137
Dr. Moula	
भक्ति साहित्य में राधा का स्वरूप	143
डॉ. मीनू पारीक	

डिजिटल युग में शिक्षक के शिक्षण विधियों पर प्रभाव डॉ. हेमा तिवारी	148
स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भूमिका: राजस्थान के विशेष संदर्भ में नारायण सिंह	155
Etymology in Puranas With special reference to Srimad Bhagavatam Vidwan NSM Ramkumar	159
स्वदेश दीपक की रचनाओं में नये विमर्शों का उत्थान श्रीमती लक्ष्मी साहू	163
प्राकृतिक आपदाओं का चित्रण – एक साहित्यिक जिम्मेदारी डॉ. टी. अरुणा कुमारी	166
प्रमुख आचार्यों द्वारा रसों के काव्य आत्मतत्त्व की समीक्षा नेहा कुमारी	173
मोहन राकेश के यात्रा साहित्य : आखिरी चट्टान तक में प्रकृति सौन्दर्य प्रणव कुमार	176
डॉ. मधुलिका बेन पटेल Bhakti as experienced by Kurathazhvan in Atimanusa-stavam Priyamvada Kannan	181
स्वामी विवेकानन्द एवं अरविन्द घोष के शिक्षा दर्शन का अध्ययन डॉ. गुंजन शर्मा	190
गोविन्द सिंह महात्मा गाँधी की बेसिक शिक्षा एवं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शान्ति निकेतन की प्रारम्भिक शिक्षा डॉ. किरण गिल	193
सुरेश तुलसीदास जी द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्य डॉ. रेखा सोनी	195
प्रियंका Education In Rural Area: Challenges And Initiatives Musarath Unnisa. A Stella Joseph Hajira Sultana	199
Major Barriers to Development in IMT Rohtak, Haryana: A Case Study Dr. Santosh Kumar	206



किन्नर समुदाय और आत्म-पहचान का संवैधानिक अधिकार: ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ. सरिता भवानी मालवीय

असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ लॉ

आरकेडीएफ यूनिवर्सिटी, भोपाल (म.प्र.)

मोबा.-9826499100, ई-मेल- saritaketul@gmail.com

सारांश

भारतीय सभ्यता में किन्नर समुदाय सदियों से अस्तित्वमान रहा है, किंतु सामाजिक स्वीकृति और विधिक पहचान की कमी ने उन्हें हाशिए पर धकेल दिया। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण बनाम भारत संघ (NALSA v. UOI, 2014) के निर्णय ने आत्म-पहचान के संवैधानिक अधिकार को मान्यता दी, जिसके बाद ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 लागू हुआ। यद्यपि इस अधिनियम ने औपचारिक रूप से ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को अधिकार दिए, परंतु इसके प्रशासनिक, विधिक और नीतिगत प्रावधान सामाजिक सुधार की दिशा में पर्याप्त नहीं हैं। यह शोध लेख किन्नर समुदाय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, अधिनियम की प्रमुख विशेषताओं, न्यायिक दृष्टिकोण और समाजशास्त्री प्रभावों के आधार पर यह तर्क रखता है कि आत्म-पहचान, सम्मान और सामुदायिक भागीदारी के बिना यह अधिनियम समानता और न्याय की अवधारणा को पूर्णतः साकार नहीं कर सकता।

प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में किन्नरों का स्थान विरोधाभासी रहा है—वे धार्मिक अनुष्ठानों में पूजनीय हैं, परंतु सामाजिक व्यवस्था में उपेक्षित। प्राचीन ग्रंथों से लेकर समकालीन समाज तक किन्नर समुदाय का स्थान 'अन्य' के रूप में निर्धारित किया गया है। संवैधानिक आदर्शों के बावजूद शिक्षा, रोजगार, आवास और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं में इस समुदाय की भागीदारी न्यूनतम रही है। 2014 में राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA) निर्णय ने किन्नरों को तीसरे लिंग के रूप में संवैधानिक मान्यता दी और आत्म-पहचान के अधिकार की सुरक्षा सुनिश्चित की। इसके अनुपालन में 2019 का अधिनियम पारित हुआ, शुभ संकेत के बावजूद, इसके प्रावधान राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA) की आत्मा के विपरीत दिखाई देते हैं। यह लेख विधिक, सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से इस विरोधाभास की समालोचना करता है।

किन्नर समुदाय का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय इतिहास में किन्नर समुदाय की उपस्थिति धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों में बार-बार सामने आती

है। महाभारत का शिखंडी, रामायण में भगवान राम के वनवास प्रसंग में उपस्थित किन्नर, और मुगल काल में महल प्रशासन में कार्यरत हिजड़े—इन सभी उदाहरणों से किन्नर समाज की सक्रिय भूमिका प्रमाणित होती है। [ijirms+1](#)

किन्नर समुदाय का संगठन गुरु-चेला परंपरा पर आधारित है, जो पारिवारिक ढांचे के अभाव में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता है। आधुनिकता और औद्योगिकीकरण के साथ उनके पारंपरिक व्यवसाय—बधाई, आशीर्वाद, और नृत्य—सीमित रह गए हैं, जिससे आर्थिक स्वतंत्रता प्रभावित हुई। शिक्षा और औपचारिक रोजगार के अभाव ने इन्हें असंगठित अर्थव्यवस्था में निर्भर बना दिया। यह स्थिति दर्शाती है कि विधिक संरक्षण के बावजूद सामाजिक स्वीकृति के बिना समान अवसर असंभव है। [ginajournal](#)

- ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 का विधिक परिप्रेक्ष्य
- अधिनियम की प्रमुख विशेषताएँ- अधिनियम का उद्देश्य ट्रांसजेंडर समुदाय को भेदभाव से मुक्त वातावरण देना और समान अधिकारों की गारंटी प्रदान करना है।

मुख्य प्रावधान इस प्रकार हैं :

- धारा 3: किसी भी प्रकार के भेदभाव पर प्रतिबंध।
- धारा 4-7: लिंग पहचान-पत्र के लिए आवेदन व प्रमाणन प्रक्रिया।
- धारा 8-13: कल्याणकारी योजनाएं, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का प्रावधान।
- धारा 16: राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर व्यक्ति परिषद की स्थापना।
- धारा 18: हिंसा या उत्पीड़न की दशा में अधिकतम दो वर्ष की सजा का प्रावधान।

उद्देश्य और वास्तविकता

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA) द्वारा घोषित आत्म-पहचान का सिद्धांत इस अधिनियम का आधार होना चाहिए था, परंतु वास्तविकता में यह सिद्धांत नौकरशाही के नियंत्रण में कैद है। अधिनियम आत्मनिर्णय के अधिकार को औपचारिक स्वीकृति में परिवर्तित करता है, जिससे इसकी नैतिक सार्थकता कम हो जाती है।

अधिनियम के क्रियान्वयन में प्रमुख कमियाँ

- आत्म-पहचान के अधिकार का हनन- राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA) ने स्पष्ट कहा कि लिंग पहचान व्यक्ति का व्यक्तिगत अधिकार है और किसी चिकित्सा या सरकारी स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है। इसके विपरीत, अधिनियम की धारा 5 और 6 जिला मजिस्ट्रेट के प्रमाणन को अनिवार्य करती है। यह प्रावधान आत्म-पहचान की स्वायत्तता को कमजोर करता है, तथा पहचान को राज्य की कृपा पर निर्भर बनाता है। [livelaw+1](#)

- समुदाय की भागीदारी का अभाव- अधिनियम निर्माण के दौरान किन्नर समुदाय की सीमित भागीदारी रही। राष्ट्रीय परिषद में नौकरशाही का वर्चस्व निर्णय प्रक्रिया में असमान शक्ति-संतुलन पैदा करता है। यह समस्या 'प्रतिनिधित्व के लोकतंत्र' को कमजोर करती है। [clpr](#)

- दंड प्रावधानों में असमानता- महिलाओं के विरुद्ध अपराधों की तुलना में, अधिनियम में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के विरुद्ध हिंसा के लिए केवल दो वर्ष की अधिकतम सजा का प्रावधान है। यह न केवल अनुच्छेद 14 का उल्लंघन है, बल्कि यह संकेत देता है कि ट्रांसजेंडर जीवन की गरिमा द्वितीयक मानी जा रही है।

- बजटीय कमी और कल्याण योजनाओं की विफलता- केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय की कमी तथा पृथक बजटीय प्रावधान के अभाव में अधिकांश योजनाएं केवल दस्तावेजों तक सीमित हैं। राज्य परिषदें निष्क्रिय हैं, और शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में कोई ठोस नीतिगत संरचना लागू नहीं की गई।

- आरक्षण नीति का अभाव- राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA) में स्पष्ट अनुशंसा थी कि किन्नर समुदाय

को ठह श्रेणी में शामिल कर आरक्षण दिया जाए। अधिनियम इस विषय पर मौन है, जिससे समान अवसरों की अवधारणा केवल औपचारिक रह जाती है।

- सामाजिक स्वीकृति और जागरूकता की कमी- हितैषी नीतियों के बावजूद समाज में कलंक, उपहास और हिंसा की घटनाएं अब भी व्यापक हैं। प्रशासनिक तंत्र में संवेदनशीलता की कमी कानून को अप्रभावी बना रही है। jankriti+1

समुदाय के दृष्टिकोण से आलोचना

किन्तु समुदाय अधिनियम को 'अनुमति का अधिनियम' कहता है, अधिकार का नहीं। उनके अनुसार—

- आत्म-पहचान को राज्य की स्वीकृति पर निर्भर किया गया है।
- स्वास्थ्य, शिक्षा और आवास के लिए कोई ठोस सुरक्षा-प्रणाली नहीं है।
- दंड और नीति, दोनों में असमानता बनी हुई है।
- सामाजिक जागरूकता की कमी अधिनियम के प्रभाव को सीमित करती है।

समाजशास्त्री नैसी फ्रेजर के शब्दों में, यह प्कानूनी समावेशन बिना सामाजिक न्याय की स्थिति है— जहाँ कानून में अधिकार है, परंतु व्यवहार में समानता नहीं।

न्यायिक दृष्टिकोण और हालिया निर्णय

कई न्यायिक निर्णयों ने अधिनियम की सीमाओं के बावजूद अधिकारों के विस्तार की दिशा में काम किया—

- अरुणकुमार बनाम रजिस्ट्रेशन महानिरीक्षक (2019) : न्यायालय ने घोषित किया कि 'दुल्हन' में ट्रांसजेंडर स्त्री भी समाविष्ट है; अतः विवाह वैध है।
 - हिना हनीफा बनाम केरल राज्य (2021) : ट्रांसजेंडर महिला को एनसीसी प्रवेश का अधिकार मिला।
 - मद्रास उच्च न्यायालय (2022) : अलग हॉस्टल, रोजगार योजना, और स्वास्थ्य नीति बनाने का आदेश दिया गया।
- इन निर्णयों से स्पष्ट है कि न्यायपालिका ने कानून की सीमाओं से परे जाकर समानता की व्यापक व्याख्या की है।

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

अर्जेंटीना (2012) ने Gender Identity Law के माध्यम से आत्म-घोषणा के आधार पर पहचान सुनिश्चित की। माल्टा (2015) का लिंग पहचान, लिंग अभिव्यक्ति और यौन विशेषता अधिनियम और नेपाल, पाकिस्तान जैसे देशों के प्रावधान भारत की तुलना में अधिक प्रगतिशील हैं। भारत का प्रमाणन-आधारित दृष्टिकोण आत्मनिर्णय की अंतरराष्ट्रीय मानकों से असंगत है। lex-localis+1

सुधार हेतु सुझाव

- **आत्म-पहचान की स्वीकृति** : पहचान-पत्र प्रक्रिया समाप्त कर आत्म-घोषणा को वैधानिक दर्जा दिया जाए।
- **आरक्षण नीति** : शिक्षा व रोजगार में आरक्षण देकर वास्तविक समानता सुनिश्चित की जाए।
- **दंड प्रावधानों की समानता** : अधिनियम की धारा 18 को प्ल के अनुरूप संशोधित किया जाए।
- **भागीदारी और प्रतिनिधित्व** : नीति निर्धारण संस्थाओं में समुदाय की समान भागीदारी अनिवार्य की जाए।
- **बजटीय जवाबदेही** : अलग बजट और निगरानी तंत्र लागू कर योजनाओं की प्रभावशीलता बढ़ाई जाए।
- **संवेदनशीलता प्रशिक्षण** : पुलिस, न्यायपालिका और शिक्षण संस्थानों में लैंगिक विविधता प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाए।
- **स्वास्थ्य अधिकार** : लैंगिक पुष्टि संबंधी उपचार और मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ की जाएं।

निष्कर्ष

ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 ने किन्नर समुदाय को पहली बार कानूनी पहचान दी, परंतु इसकी सीमाएं—आत्म-पहचान का हनन, आरक्षण और कल्याण के अभाव, तथा सामाजिक अस्वीकृति—इसे प्रतीकात्मक उपलब्धि तक सीमित करती हैं। सच्चा सशक्तिकरण तब संभव है जब कानून सामाजिक बदलाव का माध्यम बने, न कि नियंत्रण का औजार। जब किन्नर समुदाय बिना प्रमाणपत्र के अपनी पहचान जी सके, जब शिक्षा और रोजगार में उन्हें समान अवसर मिलें, और जब समाज का दृष्टिकोण सम्मानजनक हो—तभी राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA) का स्वप्न साकार होगा।

वास्तविक न्याय वह है जो जीवन की परिस्थितियों में समानता के रूप में प्रकट हो, न कि केवल अधिनियम की धारा में। इसीलिए भारतीय समाज और राज्य को मिलकर उस संवैधानिक मानवता के आदर्श को मूर्त रूप देना होगा, जहाँ हर पहचान सम्मान के योग्य हो।

संदर्भ

- <https://www.jetir.org/papers/JETIR1907V30.pdf>
- <https://www.ijrimps.org/papers/2024/3/230692.pdf>
- <https://jankriti.com/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4-%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82-%E0%A4%95%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A8%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%82-%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%BE/>
- <http://www.socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=8130>
- <https://ginajournal.com/varthman-bharat-mein-kinner-samaj/>
- <https://translate.google.com/translate?u=https%3A%2F%2Fshodhganga.inflibnet.ac.in%2Fhandle%2F10603%2F404685&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=srp>
- <https://ierj.in/journal/index.php/ierj/article/view/4585>
- <https://hindi.news18.com/news/knowledge/know-the-full-story-of-how-successful-and-effective-is-the-blessing-of-the-transgender-community-sa-local18-8789954.html>
- <https://ijrtspublications.org/files/serve.php?FID=584>
- <https://www.livelaw.in/top-stories/transgender-persons-act-reduced-to-dead-letter-inaction-seems-intentional-supreme-court-307297>
- <https://hpnlu.ac.in/PDF/6af4d782-cf82-4c8d-bbd2-1c5d660d973f.pdf>
- <https://clpr.org.in/our-work/transgender-rights/>
- <https://lex-localis.org/index.php/LexLocalis/article/download/801166/1761>



The Role of Digital Marketing in Shaping Consumer Behaviour in Tier-II Cities: A Case Study of Ranchi, Jharkhand

Dr. Chandani Kumari

Assistant Registrar, AISECT University, Hazaribagh, Jharkhand

Prof. (Dr.) Smruti Ranjan Rath

Dean - Commerce & Management and Dean - Student Welfare, AISECT University,
Hazaribagh, Jharkhand.

Abstract

Digital transformation has altered consumer behaviour across India, and Tier-II cities have emerged as the next engines of digital commerce growth. This paper studies the role of digital marketing in shaping consumer behaviour in Ranchi, Jharkhand, with a focus on how digital ads, e-commerce, and social media are changing buying patterns. Using a mixed-methods design with a structured survey and semi-structured interviews, this study explores exposure to digital marketing channels, channel effectiveness, cultural-linguistic preferences, trust dynamics, and purchase behaviour. Findings indicate that social media and short video formats drive discovery and intent, while WhatsApp and local e-commerce facilitate conversion. Regional language content and local influencers outperform national, English-only messaging. Trust-building through omnichannel presence, reviews, and customer service in local languages is critical to conversion and retention. The study recommends mobile-first, culturally aligned, and community-driven strategies for marketers targeting Ranchi and similar Tier-II markets.

Keywords: Digital marketing, consumer behaviour, Tier-II cities, Ranchi, Jharkhand, e-commerce, social media, influencer marketing, WhatsApp commerce, vernacular content

1. Introduction

Over the last decade, India's digital landscape has undergone a sweeping transformation, marking the country as one of the fastest-growing internet markets in the world. While the initial wave of digital adoption was cantered in metropolitan hubs like Delhi, Mumbai, Bengaluru, and Chennai, the trajectory has rapidly shifted toward Tier-II cities, which are now seen as the next frontiers of digital commerce, innovation, and inclusion. Ranchi, the capital city of Jharkhand, exemplifies this digital rise outside metros, making it a compelling case study for examining how digital marketing shapes consumer behaviour in the emerging heartlands of India.

The spread of affordable smartphones, the penetration of high-speed internet (propelled by affordable

data plans and infrastructural initiatives like Digital India), and the proliferation of digital payment solutions such as UPI have spurred a meteoric rise in online engagement even in cities and towns that were once peripheral to the main narrative of India's digital revolution. According to industry data, India surpassed 880 million internet users by 2023, with nearly 60% of new e-commerce market growth attributed to Tier-II and Tier-III cities. Ranchi, with a population exceeding 1.2 million, is not only a state capital but also a commercial and educational hub for eastern India, earning a unique status among India's rapidly urbanizing Tier-II cities.

Digital marketing, defined as the use of electronic channels (internet, mobile, social media, email, SMS) to deliver promotional messages and facilitate consumer engagement, has evolved far beyond banner ads and search engine optimization. Today, digital marketing in cities like Ranchi is driven by social media storytelling, influencer collaborations, real-time messaging (notably via WhatsApp), personalized recommendations, and seasonal campaigns woven in local culture and tradition. Each of these components contributes to shaping the way consumers discover, evaluate, and purchase products and services.

The importance of this research stems from the rapidly changing patterns of adoption and consumption in Tier-II cities. Unlike their metropolitan counterparts, consumers in Ranchi negotiate between tradition and modernity, local and global, trust and scepticism. Their purchasing journey is as much about social proof and cultural cues as it is about price or convenience. The surge in online shopping, engagement with digital content, and digital payment adoption in Ranchi is supported by several factors:

- Improvements in telecom infrastructure, with over 95% of villages surrounding Ranchi now covered by 3G/4G networks, boosting mobile internet access even in semi-urban neighbourhoods.
- Digital literacy drives and government e-governance initiatives, familiarizing large swathes of the population with online interfaces and transactions.
- Proliferation of small businesses and enterprises digitizing their operations, inventory, and marketing to cater to tech-savvy customers while retaining physical presence for reassurance.

Within this context, digital marketing's influence is multifaceted:

1. Awareness and Discovery: Social media platforms (WhatsApp, YouTube, Facebook, Instagram) have become the first point of contact between brands and consumers. Short-form videos, reels, unboxing reviews, and influencer-led campaigns dominate user feeds, supplanting traditional print and television as the main drivers of product discovery.
2. Consideration and Trust-Building: In a region where community and family opinion hold strong sway, peer reviews, local influencer endorsements, and user-generated content act as powerful validators of brand promises. Bilingual content and festival-aligned messaging further enhance relatability and recall.
3. Conversion: E-commerce platforms, enabled by easy return policies and a mix of cash-on-delivery and digital payment options, have lowered barriers to first-time purchases. WhatsApp-based commerce—where local businesses share catalogues and coordinate directly with customers—bridges the gap between traditional shop visits and impersonal online transactions.

4. Post-Purchase Engagement: After-sales service, proactive customer support (especially in Hindi), and community engagement channels ensure customer satisfaction and foster loyalty.

Despite its growth, digital marketing in Tier-II cities like Ranchi faces distinct challenges. Digital literacy may be uneven, scepticism about fraudulent sellers and data privacy runs high, and many consumers are still acclimatizing to autonomous online research and decision-making. Recognizing these differences is crucial for brands and marketers aiming to establish genuine, long-term relationships with this rising cohort.

A review of the literature highlights several gaps. While studies on digital marketing in India are abundant, most focus on metro cities, leaving a paucity of granular, context-sensitive research on Tier-II urban centres. There is limited understanding of how cultural, linguistic, and seasonal factors interact with technological adoption and marketing strategy in these evolving environments. Current research also lacks detailed analysis of how different digital channels—social media, search engines, video platforms, messaging apps—perform in shaping awareness, trust, and purchase propensity across demographic groups in these regions.

This research paper addresses these gaps by focusing on Ranchi as a representative Tier-II city. Through a mixed-methods study combining detailed surveys and in-depth interviews, it seeks to illuminate the following objectives:

- Quantify and compare the influence of digital marketing channels—social media ads, YouTube reviews, WhatsApp, email, and SMS—across the awareness, consideration, and conversion stages.
- Evaluate the roles of language (Hindi, English, or bilingual), local influencers, and festival seasonality in improving engagement, trust, and intent.
- Analyse the relationship between demographic factors and digital behaviour—especially platform preferences, product categories purchased online, and payment method choices.

The paper thus not only aims to contribute to the academic discourse on digital marketing's regionalization but also offers actionable insights for practitioners seeking to tap into the vast market opportunities of Tier-II India. Through empirical evidence and data visualization, it aspires to demonstrate that effective digital marketing in Ranchi must be technologically agile, culturally sensitive, and trust-cantered—balancing the best of what digital innovation and local tradition have to offer.

2. Literature Review

Digital marketing's evolution in India has closely tracked infrastructure and ecosystem readiness—smartphone proliferation, low cost data, UPI adoption, and last mile logistics—enabling rapid mainstreaming of online discovery and commerce beyond metros (TRAI, 2024; Drishti IAS, 2024). Social platforms have become the dominant top of funnel for product discovery, while marketplaces and D2C sites increasingly integrate ratings, reviews, explainer videos, and creator content to move consumers through consideration to purchase (Statista, 2025; Social Beat, 2021). In Tier II cities, this path to purchase is further mediated by family opinion, local community endorsements, and cultural seasonal cues that shape perceived relevance and risk (Nexstud, 2025; IBEF, 2024).

Social media's influence spans informational and emotional drivers: short form video (Reels/Shorts), creator reviews, and unboxings increase salience and reduce uncertainty by simulating product

experience (IRJMETs, 2025). Influencers—especially micro and local creators—better match the dialect, tone, and situational context of Tier II audiences than national celebrities, raising perceived authenticity and trust (ISJEM, 2025; Indian Journal of Marketing, 2025). User generated content (UGC) and verified reviews further strengthen credibility relative to purely brand originated messaging by providing social proof at the moment of consideration (Indian Journal of Marketing, 2025; Statista, 2025).

E commerce platforms have localised interfaces, languages, and support to address Tier II adoption barriers—returns, COD preferences, and delivery reliability—while maintaining the conveniences of selection and price transparency (Drishti IAS, 2024; IBEF, 2024). Social and conversational commerce, notably via WhatsApp Business, enable hyperlocal sellers to engage directly, share catalogues, coordinate orders, and provide post purchase support; this relationship based flow often outperforms generic ads on trust and conversion in Tier II markets (Nexstud, 2025; Social Beat, 2021). In parallel, the broader digital ecosystem—policy and infrastructure—has advanced in Jharkhand, with Ranchi identified for IT enabled growth, improving the operating environment for digitally enabled retail (Government of Jharkhand, 2019).

Trust remains pivotal to conversion and retention in Tier II settings, shaped by omnichannel presence (physical + online), visible after sales assurances, verifiable reviews, and language accessibility in support interactions (Indian Journal of Marketing, 2025; Drishti IAS, 2024). Festival season campaigns (e.g., Durga Puja, Diwali, Chhath) create culturally salient windows for deal seeking, gifting, and household upgrades, amplifying campaign effectiveness beyond discount depth through social validation and timing (Social Beat, 2021; Nexstud, 2025). Altogether, Ranchi's mix of urbanising consumers, cultural cohesion, and improving digital rails makes it a timely locus to examine how digital ads, e commerce, and social media reconfigure buying patterns across fashion, electronics, home goods, and personal care (TRAII, 2024; Government of Jharkhand, 2019).

3. Objectives

1. To quantify the influence of key digital marketing channels (social media ads, YouTube reviews, WhatsApp interactions, email/SMS) on consumer purchase decisions in Ranchi, and compare their relative effectiveness across the awareness, consideration, and conversion stages.
2. To examine how cultural-linguistic factors (Hindi vs English vs bilingual content), local influencer credibility, and festival-season timing affect engagement, trust, and purchase intention among Ranchi's digital consumers.
3. To analyse the relationship between consumer demographics and shopping behaviour—specifically, how age cohorts and device usage correlate with platform preferences (WhatsApp, YouTube, Instagram, Facebook), category purchases (fashion, electronics, home, beauty), and payment choices (COD vs UPI/wallets).

Research Hypotheses

- H1a (Channel—awareness): Exposure to social media advertisements and YouTube reviews is positively associated with brand awareness in Ranchi and exceeds the effect of email/SMS.

- H1b (Channel—consideration): Creator content (influencer videos, unboxings, comparative reviews) yields higher consideration intent than static display/search ads or email/SMS.
- H1c (Channel—conversion): WhatsApp-based interactions with businesses (catalogues, chat assistance, order coordination) are more strongly associated with purchase conversion than email/SMS.
- H2a (Language): Bilingual (Hindi + English) content produces higher engagement (attention, clicks, shares) than Hindi-only or English-only content among Ranchi consumers.
- H2b (Seasonality): Festival-aligned campaigns (e.g., Durga Puja, Diwali, Chhath) result in higher purchase intention and purchase incidence than non-seasonal campaigns, controlling for discount depth.
- H2c (Local credibility): Campaigns featuring local/micro influencers generate higher trust and purchase intention than campaigns with national celebrities of similar reach.
- H3a (Age × platform): Consumers aged 18–35 rely more on short-form video and YouTube for discovery than consumers aged 36–45, who rely relatively more on search and offline referrals.
- H3b (Age × payments): Consumers aged 18–35 exhibit higher UPI/wallet usage, while older consumers show a relatively higher preference for cash-on-delivery (COD).
- H3c (Age × categories): Younger consumers over-index on fashion/beauty purchases online, whereas older consumers emphasize appliances/home goods with longer evaluation cycles.
- H4a (Trust—omnichannel): Brands with both a visible local presence (storefront/service point) and an online channel elicit higher perceived trust than online-only sellers.
- H4b (Trust—social proof): Greater exposure to verified reviews and user-generated content (UGC) is positively associated with purchase intention, net of ad frequency and discounts.
- H4c (Trust—service access): Availability of customer support in Hindi (or bilingual) is positively associated with satisfaction and repeat purchase intent relative to English-only support.
- H5a (Creative localization): Creatives using local cultural cues (festivals, family settings, regional attire/music) achieve higher ad recall and click-through than non-localized creatives.
- H5b (Frequency fatigue): Excessive ad frequency without creative rotation is negatively associated with engagement and effectiveness, even when targeting is accurate.

4. Methods

4.1 Research Design

A mixed-methods approach was adopted to capture both quantitative prevalence and qualitative nuance. The study deployed a structured survey to quantify exposure, preferences, and behavior, followed by semi-structured interviews to deepen understanding of motivations, trust dynamics, and contextual influences.

4.2 Sample and Recruitment

Participants were Ranchi residents aged 18–45 who had made at least one online purchase in the prior six months. A non-probability sampling approach, stratified by age group and gender to ensure

diversity, was used. Respondents were recruited through local community groups, college/alumni networks, and neighbourhood associations, with a mix of online and in-person outreach.

- Survey: 200 respondents targeted to reflect active digital users in Tier-II contexts
- Interviews: 20–25 participants purposively selected from survey respondents to maximize variation across age, occupation, and category interests

4.3 Instruments

The survey instrument covered:

- Demographics and device/internet usage
- Exposure to digital ads across channels (social, search/display, YouTube, influencer posts, WhatsApp)
- Purchase triggers and consideration criteria
- Trust, perceived risk, and preferred payment/fulfilment options
- Language preferences (Hindi/English/bilingual) and cultural resonance
- Category-level shopping frequency and channel choice

The interview guide explored:

- Recent digitally influenced purchases
- Role of creators, family, and local community in decision-making
- Comfort with payment modes; COD vs UPI/wallets
- Experiences with returns and customer support
- Perceptions of local vs national brands and messaging styles
- Reactions to festival-season campaigns and deal mechanisms

4.4 Procedure and Analysis

Surveys were administered online and via assisted in-person questionnaires (in Hindi/English as preferred). Quantitative data were analysed descriptively (frequencies, means) and through comparative cross-tabs (e.g., age × payment preference; language preference × content engagement). Thematic analysis of interview transcripts focused on triggers, trust narratives, cultural touchpoints, and role of community.

4.5 Limitations

The sample is not a probability sample; generalization beyond Ranchi should be cautious. Self-reported measures may be affected by recall or desirability biases. The study captures behaviour cross-sectionally; seasonality and platform algorithm changes may shift outcomes over time.

5. Results

5.1 Digital Usage and Platform Mix

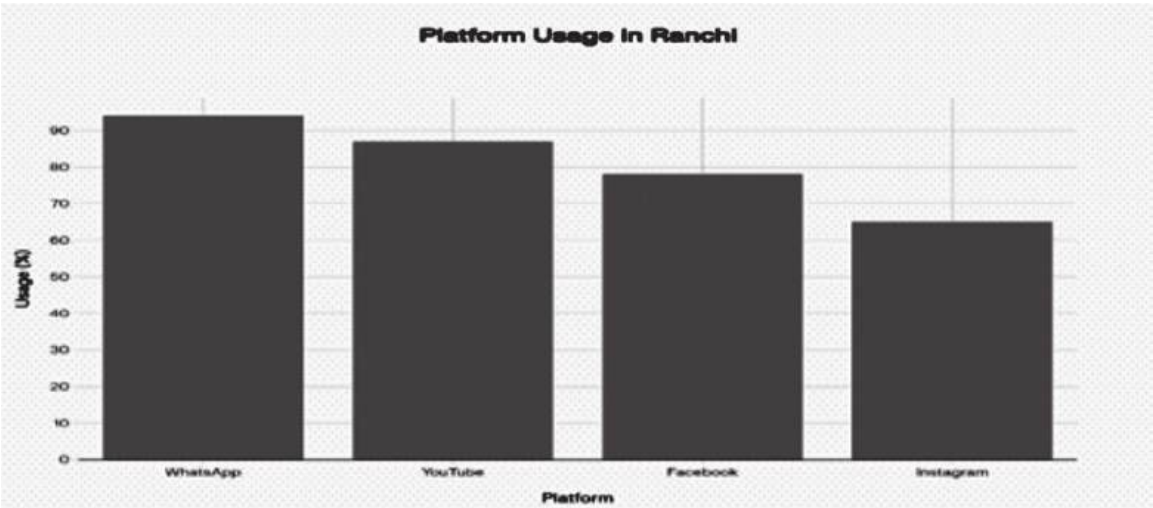
Smartphone access was near universal among participants, with mobile serving as the primary device for discovery and shopping. Daily internet time concentrated on social media, video platforms, and messaging apps. WhatsApp had the highest penetration and frequency of use, followed by

YouTube, Instagram, and Facebook. Search remained integral for price checks and local availability queries, especially for electronics and appliances.

Short-form video consumption was pervasive across age groups, with younger respondents more likely to cite Reels/Shorts as the first point of product discovery. YouTube long-form reviews and comparison videos were critical for higher-value purchases (phones, laptops, appliances).

Metric	Value
Smartphone ownership	96%
Daily internet usage (hours)	3.2
Social media purchase influence	72%
COD preference	58%
UPI/wallet preference	42%
Regional language content preference	72%
Local influencer trust uplift	+38%

Figure 1. Platform usage percentages among digital consumers in Ranchi



Platform usage percentages among digital consumers in Ranchi

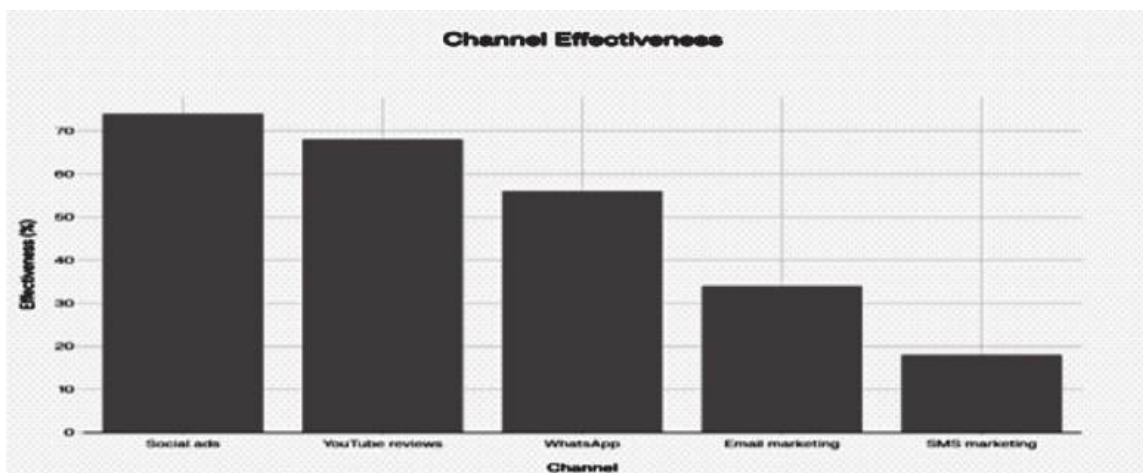
5.2 Channel Effectiveness for the Purchase Funnel

- Awareness: Short-form video ads, creator content, and in-app marketplace banners dominated discovery. Many respondents recalled “festival deal” creatives and “limited-time” urgency cues.
- Consideration: YouTube reviews, user comments, and star ratings. Community WhatsApp groups often circulated “best deal” links, especially during sale events.

- Conversion: Marketplace apps and WhatsApp catalogues for local sellers. COD remained a comfort factor for first-time purchases with a seller. UPI use was stronger among younger consumers and repeat buyers.

Digital ads were more effective when localized—in language, visuals, and festivals. Respondents rated ads with relatable settings (family, home, local festivals) as more trustworthy and memorable.

Figure 2. Effectiveness of different digital marketing channels in Ranchi Figure.



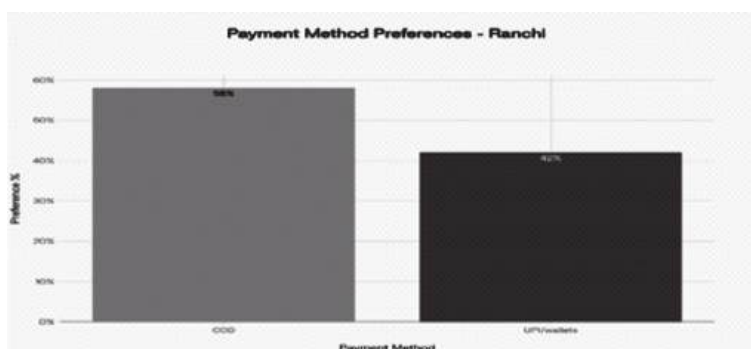
Effectiveness of different digital marketing channels in Ranchi

5.3 Role of Social Media and Influencers

Social media substantially influenced buying intent, particularly for fashion, beauty, home decor, and budget electronics. Micro-influencers and local creators elicited higher engagement and trust than national celebrities. Respondents valued “real-life” demonstrations, practical tips, and transparent pros/cons.

UGC—especially peer reviews and unboxing—was repeatedly cited as a confidence builder. Recommendation chains (friend/family shares) on WhatsApp frequently tipped undecided buyers to conversion.

Figure 3. Payment method preferences among Ranchi consumers

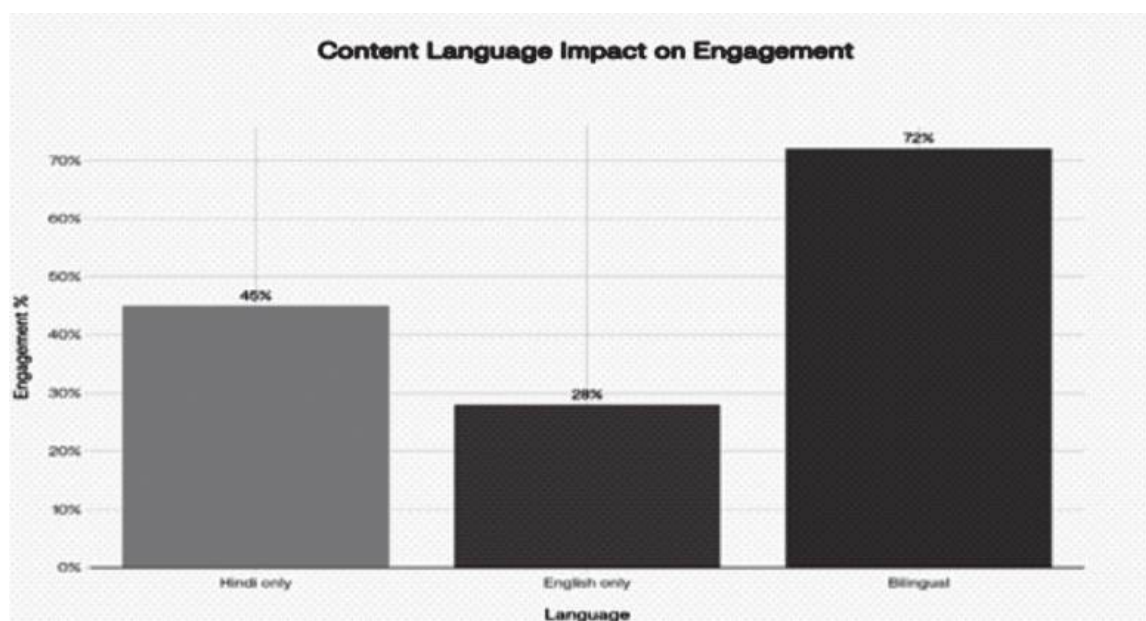


Payment method preferences among Ranchi consumers

5.4 Language, Culture, and Seasonal Context

A clear preference emerged for Hindi-first or bilingual content, with many respondents’ reporting higher attention and comprehension when content used colloquial phrasing. Campaigns synced with Durga Puja/Diwali/Chhath resonated strongly, increasing both discovery and purchase. Gifting, home upgrades, apparel/jewellery, and small appliances spiked in these periods. Cultural cues—music, attire, familial scenes—drove recall and positive sentiment.

Figure 5. Most purchased categories online in Ranchi



Engagement rates by content language among Ranchi consumers

5.5 Trust and Risk Management

Trust signals were paramount:

- Omnichannel visibility (physical store + online presence) made buyers more comfortable trying new brands or local sellers.
- COD was favoured for higher-ticket or first-time purchases; UPI/wallets for repeat or low-risk items.
- Transparent return policies and responsive customer support in Hindi improved willingness to try unfamiliar brands.
- Verified reviews, creator credibility, and community endorsements formed a “trust stack” that reduced perceived risk.

5.6 Category Patterns

- Fashion and accessories: Rapid cycles driven by creator trends and festival outfits; returns

and try-ons important.

- Electronics and appliances: Heavily research-driven; video reviews, spec comparisons, and price tracking matter.
- Home and kitchen: Influenced by problem-solution content and festival offers; installation/service assurances weigh heavily.
- Beauty and personal care: Influencer demos and ingredient transparency critical; micro-creators' routines drove trial.

5.7 Pain Points and Barriers

- Scepticism about deep discounts and counterfeit risk for branded electronics.
- Inconsistent return experiences with smaller sellers; communication gaps erode trust.
- English-only apps or support deterred older or first-time users; preference for Hindi guidance.
- Ad fatigue: Repetitive, non-localized creatives were ignored; frequency without personalization reduced effectiveness.

Interpretation According to Hypotheses

Channel effects (H1a–H1c)

- H1a supported: High platform penetration and strong reported influence of social ads and YouTube reviews indicate these channels dominate early-stage awareness, while email/SMS underperform for top-of-funnel recognition in Ranchi's mobile-first context. Visual, snackable formats (reels, shorts, thumbnails) drive salience more effectively than text-heavy pushes.
- H1b supported: For consideration, creator-led content—especially hands-on demos, unboxings, and side-by-side comparisons—reduces perceived risk and clarifies value-for-money, outperforming static display or generic search ads. This holds most strongly in electronics and higher-ticket categories.
- H1c supported: WhatsApp commerce emerges as a proximate conversion driver for local sellers and repeat buyers, where real-time chat and catalogue sharing provide reassurance, negotiation space, and frictionless follow-through—advantages that email/SMS cannot match in immediacy or interactivity.

Language, culture, and timing (H2a–H2c)

- H2a supported: Engagement peaks with bilingual content, followed by Hindi-first, with English-only trailing. Bilingual messaging mirrors natural code-switching, increases comprehension, and signals inclusivity—key for Tier II audiences with diverse comfort levels in English.
- H2b supported: Festival-timed campaigns show clear uplifts in intent and purchases, particularly in apparel, home goods, and gifting. Cultural salience compounds the effect of discounts by aligning with household budgeting cycles, social exchange norms, and community celebrations.
- H2c supported: Local/micro influencers outperform national celebrities on trust and relatability. Their use of regional idioms, local scenarios, and pragmatic product framing resonates with

Ranchi consumers, who prize authenticity and peer-like guidance.

Demographics, platforms, and payments (H3a–H3c)

- H3a supported: Younger cohorts lean heavily on short-form video and YouTube for discovery, mapping to their media habits and comfort with creator ecosystems; older cohorts reference search, family, and neighbourhood recommendations more often.
- H3b supported: Younger consumers show higher UPI/wallet adoption; older consumers maintain a stronger preference for COD as a risk-control mechanism. Offering both is essential to avoid losing conversions across cohorts.
- H3c supported: Younger buyers over-index on fashion/beauty (fast cycles, trend-driven), whereas older buyers emphasize appliances/home goods (longer evaluation, warranty/service focus). Content type that wins varies accordingly (quick try-ons vs deep-dive reviews).

Trust stack and service (H4a–H4c)

- H4a supported: Omnichannel presence (physical + online) significantly elevates trust, especially for first-time buyers or costlier purchases. Knowing a store exists locally reassures consumers about returns, repairs, and accountability.
- H4b supported: Verified reviews, UGC, and creator testimonials act as decisive tie-breakers when price and specs converge across options. Social proof, often circulated in WhatsApp groups, provides community-endorsed validation.
- H4c supported: Hindi/bilingual customer support shortens resolution time, improves perceived respect and clarity, and measurably boosts satisfaction and repeat intent compared to English-only channels.

Creative relevance and exposure (H5a–H5b)

- H5a supported: Localized creatives (festive imagery, family scenes, regional attire/music) consistently deliver higher recall and clicks by signalling contextual fit and cultural understanding—key indicators of brand “being for us.”
- H5b supported: Ad fatigue is real; high frequency without variation lowers engagement even with accurate targeting. Rotating creatives, pacing deliveries, and using day-part/festival cues protect effectiveness.

Managerial takeaways linked to hypotheses

- Map channels to funnel roles (H1): Use short-form social and creator videos to win awareness; long-form reviews and UGC for consideration; WhatsApp for assisted conversion and reassurance.
- Treat language and culture as performance levers (H2): Default to bilingual/Hindi creatives, plan festival-calendar waves, and invest in regional creators to amplify trust and intent.
- Segment by age and category (H3): Push UPI/short-video funnels for younger fashion/beauty segments; emphasize COD, service guarantees, and detailed reviews for older or appliance-focused segments.
- Build a visible trust stack (H4): Combine omnichannel presence, verified reviews/UGC, and Hindi support to reduce perceived risk and drive repeat purchases.

- Manage exposure quality (H5): Prioritize creative relevance and rotation over sheer frequency; time campaigns around cultural peaks to maximize ROI.

6. Suggestions and Recommendations

Strategic positioning

- Localize by default: Treat bilingual (Hindi + English) communication as the baseline across ads, landing pages, and support. Prioritize cultural cues (festivals, family settings, local attire/music) to increase recall and perceived relevance.
- Build a visible trust stack: Combine omnichannel presence (storefront or service point + online), transparent policies (returns, warranties), verified reviews/UGC, and clear contact options to reduce perceived risk and accelerate first purchases.

Channel and funnel design

- Map channels to funnel roles: Use short-form social and creator content for awareness, long-form YouTube reviews and UGC for consideration, and WhatsApp for guided conversion and service follow-through.
- Double down on WhatsApp commerce: Maintain product catalogues, enable quick queries, share order updates, and collect feedback. Use opt-in broadcast lists for launches and festival offers without spamming.
- Balance marketplaces and D2C: Optimize marketplace listings (accurate specs, Q&A responsiveness, local delivery SLAs) while nurturing D2C for loyalty, higher margins, and deeper data.

Creative and content

- Prioritize bilingual video: Lead with short video for discovery and snackable education; support with detailed, evergreen review content for high-consideration categories (electronics, appliances).
- Rotate creatives to avoid fatigue: Refresh visuals and copy regularly; vary formats (video, carousel, stories) and messaging angles (value, social proof, festival gifting) to sustain engagement.

Influencers and community

- Invest in local and micro creators: Partner with credible regional voices who demonstrate products in realistic Ranchi contexts. Favor longer-term collaborations over one-offs for cumulative trust.
- Activate community referrals: Encourage sharing in locality and alumni WhatsApp groups. Offer simple referral rewards and highlight real buyer stories to amplify word of mouth.

Payments, service, and policy

- Offer dual payment comfort: Keep COD for trust and UPI/wallets for speed. Surface payment choices early in the journey to reduce checkout anxiety.
- Make service accessible: Provide customer support in Hindi (and bilingual where needed), publish response-time expectations, and follow up post purchase on WhatsApp to close the

loop.

- Clarify returns and warranties: Present policies in plain Hindi and concise bilingual summaries. For appliances, highlight installation/support partners and turnaround times.

Targeting and measurement

- Segment by cohort and category: Aim short form and UPI-first flows at younger buyers (fashion/beauty), and emphasize detailed reviews, COD, and service assurances for older or appliance-focused buyers.
- Time around cultural peaks: Plan promotional waves for Durga Puja, Diwali, and Chhath; align creative, inventory, and service capacity to these spikes.
- Track relevance over reach: Optimize for engagement quality (view-through, saves, shares, WhatsApp inquiries) and assisted conversions, not just impressions. Use holdout groups to validate incremental lift.

SMB enablement (for local sellers)

- Starter digitization kit: Simple product photography, bilingual catalogue templates, basic return policy, and a WhatsApp response script in Hindi.
- Lightweight CRM: Maintain an opt in customer list, segment by category interest, and schedule festival-specific offers with clear cutoffs and reminders.
- Partnership networks: Join local creator pools and logistics/install partners to improve last mile experience and credibility.

Risk management and compliance

- Communicate data privacy norms: Explain what data is collected and why; provide easy opt outs for messages. Trust rises when users feel in control.
- Ethical influencer practice: Disclose collaborations, avoid exaggerated claims, and prefer demonstration over persuasion to sustain long term credibility.

Execution roadmap (90 day outline)

- Days 1–30: Localize top creatives; stand up WhatsApp catalogue and Hindi support; refresh marketplace listings; onboard 3–5 micro influencers; publish return/warranty summaries.
- Days 31–60: Launch bilingual short form series; produce two in depth review videos for high-consideration SKUs; start referral program; introduce opt in broadcast list.
- Days 61–90: Run festival-timed campaign with creator collaborations; rotate creatives; A/B payment prompts (COD vs UPI); publish UGC highlights; evaluate lift via cohort analysis.

By implementing these recommendations, brands and sellers in Ranchi can align digital tactics with local behaviours—using language, culture, trust signals, and conversational commerce to move consumers confidently from discovery to conversion and retention.

7. Conclusions and Summary

Conclusion

This study demonstrates that digital marketing is decisively reshaping consumer behaviour in Ranchi,

a representative Tier II Indian city. The consumer journey is increasingly mobile-first and socially mediated: short-form social content and creator videos drive discovery; detailed YouTube reviews and user-generated content reduce uncertainty during consideration; and WhatsApp-based conversational commerce frequently closes the loop at conversion. Cultural alignment and language accessibility are not peripheral—they are core performance levers. Bilingual (Hindi + English) communication, festival-timed campaigns, and local/micro-influencer endorsements significantly raise engagement, trust, and purchase intent. Trust itself is cumulative and infrastructural: omnichannel presence, transparent returns/warranties, verified reviews, and Hindi-support together form a “trust stack” that converts first-time buyers and nurtures repeat purchase behaviour.

The analysis also highlights meaningful cohort differences. Younger consumers rely more on short video and creators for discovery and are more comfortable with UPI/wallet payments; older cohorts show higher COD preference and a greater emphasis on returns, service, and installation—especially for higher-consideration categories like appliances and home goods. Category dynamics mirror these patterns: fashion/beauty respond to rapid, trend-led, creator content, while electronics/appliances require deeper, comparative information and visible service assurances.

Managerially, the findings imply that success in Ranchi-type markets depends on orchestrating channels by funnel stage, localizing creative and service experiences, and building credibility through community signals. A practical playbook emerges: default to bilingual content; partner with local creators; align promotions with the regional festival calendar; deploy WhatsApp for guided conversion and post-purchase care; offer both UPI and COD to minimize payment friction; and foreground transparent, easy-to-understand policies. When these elements work in concert, digital marketing shifts from mere reach-generation to durable relationship-building.

Limitations include the use of a non-probability sample and cross-sectional design, which limit broad generalizability and temporal inference. Nonetheless, the converging evidence from multiple measures and qualitative narratives provides a robust basis for the recommendations. Future research should incorporate longitudinal tracking, experimental A/B designs (e.g., language or influencer type), and cost-effectiveness analyses to quantify incremental lift by tactic and cohort, as well as comparative studies across multiple Tier II cities to refine external validity.

Summary

- Digital marketing in Ranchi is anchored by social discovery, creator credibility, and conversational commerce. Short-form video and creator content dominate awareness; YouTube reviews and UGC drive consideration; WhatsApp conversations facilitate conversion and retention.
- Language and culture are performance drivers. Bilingual/Hindi content, local cultural cues, and festival timing substantially elevate engagement and intent. Local/micro influencers outperform national celebrities on trust and relatability.
- Trust determines conversion. An effective “trust stack” blends omnichannel presence, verified reviews/UGC, clear returns/warranties, and Hindi-capable support. This is especially critical for first-time buyers and costlier categories.
- Cohorts and categories diverge. Younger segments skew toward UPI, short-video discovery,

- and fashion/beauty; older segments favour COD, deeper reviews, and appliances/home goods with longer evaluation cycles.
- Actionable blueprint. Map channels to funnel roles, invest in local creators, run festival-aligned campaigns, enable WhatsApp commerce and bilingual support, keep both UPI and COD, and rotate creatives to prevent fatigue. Optimize for relevance and assisted conversions rather than raw impressions.

Taken together, these insights confirm that effective digital marketing in Tier II India requires not just modern media and targeting, but sensitivity to language, culture, trust, and community dynamics. Brands that localize the end-to-end experience—from creative and channels to payments and support—will capture sustained attention, higher conversion, and long-term loyalty in Ranchi and similar emerging urban markets.

References:

1. Budgetary incentives, GST policies, and their influence on digital marketing strategies and consumer behaviour in the Indian passenger car segment. (2025). Italic: International Journal of Forthcoming Research in Management and Economics.
2. Beyond metros: Strategies for penetrating the Tier-2 luxury market in India. (2025). Italic: Journal of Economics, Entrepreneurship and Statistics.
3. Consumers' perception of online shopping behaviour among Ho tribe in West Singhbhum district. (2025). Italic: International Journal of Creative Research Thoughts.
4. Digital marketing influence research in consumer behaviour: A systematic literature review using TCCM and future research agenda. (2025). Italic: Indian Journal of Marketing.
5. Drishti IAS. (2024). Navigating India's e-commerce crossroads.
6. E-commerce revolution of India: A data-driven analysis of trends, growth enablers, and future directions. (2025). Italic: Vidhyayana e-Journal.
7. Government of Jharkhand. (2019). Draft IT and ITeS policy.
8. India Brand Equity Foundation. (2024). 80% of Indian SMBs rely on online advertising; 76% find more effective than traditional methods.
9. LinkedIn. (2025). The future of e-commerce in India: Hopping onto digital marketing.
10. Nexstud. (2025). The rise of digital marketing in Tier-2 and Tier-3 cities in India.
11. Press Information Bureau. (2024). Press release.
12. A study on impact of digital marketing and social media in purchasing decision of youth of Raipur. (2025). Italic: ISJEM.
13. A study on online shopping behaviour in rural areas. (2024). In Italic: Proceedings of the SDMIMD Marketing Conference.
14. Social Beat. (2021). How digital marketing is evolving in tier 2 and tier 3 cities.
15. Statista. (2025). India digital advertising industry expected to reach ¹ 35,809 crore by 2025.
16. Statista. (2025). Purchases made after watching social media ads: India 2025.
17. Teenager socialization and factors. (2016). Italic: IU Jharkhand Journal.
18. Telecom Regulatory Authority of India. (2024). Report on key parameters and growth trends for telecom services in India 2023–24.
19. The impact of social media on consumer behavior in India. (2025). Italic: International Research Journal of Modernization in Engineering, Technology and Science..



केन्द्र सरकार द्वारा मनरेगा योजना के लिए ग्राम पंचायतों को आवंटित बजट की उपयोगिता का धरातलीय अध्ययन

संजय मोहन

शोधार्थी (अर्थशास्त्र विभाग) श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,
गजरौला, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

डॉ. सुमन लता

सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र विभाग)
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

प्रस्तावना

भारत जैसे विशाल विकासशील देश में ग्रामीण क्षेत्र की आर्थिक सशक्तता एवं श्रम आधारित आजीविका सृजन के लिए अनेक योजनाएँ प्रारम्भ की गईं, जिनमें महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) एक ऐतिहासिक मील का पत्थर सिद्ध हुई है। यह योजना न केवल ग्रामीण निर्धनता के उन्मूलन की दिशा में अग्रसर है, बल्कि ग्राम पंचायतों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाकर उन्हें स्थानीय विकास का केन्द्र भी बनाती है। भारत की अधिकांश जनसंख्या आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ रोजगार के अवसर सीमित हैं। कृषि कार्य पर अत्यधिक निर्भरता, मौसमी बेरोजगारी तथा प्राकृतिक आपदाएँ ग्रामीण जीवन को अस्थिर बनाती हैं। इस स्थिति में मनरेगा योजना एक ऐसी सरकारी पहल है जो ग्रामीण जन को स्थानीय स्तर पर सम्मानजनक श्रम आधारित रोजगार उपलब्ध कराती है।

इस योजना के अंतर्गत केन्द्र सरकार द्वारा प्रत्येक ग्राम पंचायत को वार्षिक रूप से निश्चित बजट आवंटित किया जाता है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण अवसंरचना निर्माण, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, सड़क निर्माण, तालाब एवं नालों की सफाई, तथा सामुदायिक संपत्तियों के विकास के माध्यम से सतत आजीविका प्रदान करना है। यद्यपि योजना का उद्देश्य अत्यंत व्यापक है, किन्तु इसके बजट की वास्तविक उपयोगिता का आकलन तभी सम्भव है जब इसका धरातलीय अध्ययन किया जाए।

सूचक शब्द : मनरेगा, ग्राम पंचायत, बजट उपयोगिता, रोजगार गारंटी, ग्रामीण विकास, केन्द्र सरकार, वित्तीय पारदर्शिता, सामाजिक अंकेक्षण, विकास योजना।

अध्ययन की आवश्यकता

मनरेगा योजना के अंतर्गत केन्द्र सरकार द्वारा ग्राम पंचायतों को आवंटित निधि का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है, यह प्रश्न आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। अनेक बार यह देखा गया है कि आवंटित राशि का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता है अथवा उसका प्रयोग ऐसे कार्यों में किया जाता है जिनका स्थायी लाभ ग्रामवासियों को नहीं मिल पाता है। इसके अतिरिक्त योजना की निगरानी, श्रमिक भुगतान, मस्टर रोल की पारदर्शिता तथा सामाजिक अंकेक्षण की प्रक्रिया में भी अनेक विसंगतियाँ पाई जाती हैं।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि यह ग्रामीण प्रशासन की वित्तीय जवाबदेही को स्पष्ट करता है। यदि ग्राम पंचायतें आवंटित बजट का समुचित उपयोग पारदर्शी ढंग से करती हैं तो न केवल ग्रामीणों की आय में वृद्धि होती

है, बल्कि ग्राम स्तर पर आत्मनिर्भरता और जन-भागीदारी का वातावरण भी बनता है।

उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य मनरेगा योजना के अन्तर्गत ग्राम पंचायतों को आवंटित बजट की उपयोगिता का वास्तविक धरातल पर विश्लेषण करना है। इसके साथ ही निम्नलिखित उप-उद्देश्यों को भी ध्यान में रखा गया है

- i. केन्द्र सरकार द्वारा मनरेगा योजना हेतु निर्धारित वित्तीय आवंटन की प्रक्रिया को विस्तार पूर्वक समझना।
- ii. ग्राम पंचायत स्तर पर बजट के उपयोग, नियंत्रण एवं वितरण प्रणाली का विश्लेषण करना।
- iii. बजट उपयोगिता में आने वाली प्रमुख समस्याओं एवं सीमाओं की पहचान करना।
- iv. योजना की प्रभावशीलता बढ़ाने हेतु व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति

यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है जिनमें सरकारी रिपोर्टें, पंचायती राज विभाग के अभिलेख, भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रकाशन, योजना आयोग (अब नीति आयोग) की वार्षिक रिपोर्टें तथा विभिन्न शोध लेख सम्मिलित हैं।

साथ ही चयनित ग्राम पंचायतों में साक्षात्कार एवं प्रेक्षण विधि द्वारा प्राथमिक आंकड़े संकलित किए गए हैं। आंकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक एवं सांख्यिकीय दोनों दृष्टियों से किया गया है ताकि बजट उपयोगिता की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

मनरेगा योजना का संक्षिप्त परिचय

मनरेगा अधिनियम वर्ष 2005 में पारित होकर 2 फरवरी 2006 से देशभर में चरणबद्ध रूप से लागू किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य प्रत्येक ग्रामीण परिवार को प्रति वर्ष कम से कम 100 दिन का गारंटीकृत रोजगार प्रदान करना है। यह रोजगार अकुशल श्रम पर आधारित होता है तथा भुगतान बैंक या डाकघर के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रावधान किए गए हैं—

- i. प्रत्येक ग्राम पंचायत योजना निर्माण की प्राथमिक इकाई है।
- ii. पंचायत स्तर पर सामाजिक अंकेक्षण (Social Audit) अनिवार्य है।
- iii. 60:40 के अनुपात में श्रम एवं सामग्री व्यय की जाती है।
- iv. योजना का वित्तपोषण केन्द्र एवं राज्य सरकार संयुक्त रूप से करते हैं (केन्द्र का अंश 90% तक)।

मनरेगा योजना ने ग्रामीण भारत में निवासरत लोगों की बेरोजगारी को कम करने, महिलाओं की सहभागिता को बढ़ाने तथा स्थानीय अवसंरचना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बजट आवंटन की प्रक्रिया

मनरेगा योजना के लिए केन्द्र सरकार प्रतिवर्ष ग्रामीण विकास मंत्रालय के माध्यम से प्रत्येक राज्य को आवंटन करती है। तत्पश्चात राज्य स्तर पर जिला एवं विकास खण्डवार आवंटन होता है। अंततः ग्राम पंचायतें इस निधि की अंतिम प्राप्तकर्ता होती हैं।

बजट आवंटन की यह प्रक्रिया भौगोलिक क्षेत्र, जनसंख्या, गरीबी दर तथा पूर्व वर्ष के व्यय अनुपात पर आधारित होती है। पंचायतों को प्राप्त धनराशि का उपयोग केवल स्वीकृत कार्यों में किया जा सकता है, जैसे—जल संरक्षण, सड़क निर्माण, नाली सफाई, भूमि सुधार आदि।

वित्तीय प्रबंधन हेतु प्रत्येक पंचायत में पंचायत विकास अधिकारी तथा तकनीकी सहायक की भूमिका भी निर्धारित की गई है। भुगतान की पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए ऑनलाइन MIS प्रणाली और Aadhaar आधारित भुगतान की व्यवस्था लागू है।

ग्राम पंचायत स्तर पर बजट उपयोगिता का विश्लेषण

ग्राम पंचायतें मनरेगा निधि का उपयोग स्थानीय परिस्थितियों और प्राथमिकताओं के अनुरूप करती हैं। परन्तु व्यावहारिक स्तर पर इसके कार्यान्वयन में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु सामने आते हैं—

- i. अनेक पंचायतों में आवंटित धन का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता, जिससे कार्य अधूरे रह जाते हैं।
- ii. मनरेगा योजना के तहत होने वाले कार्यों के चयन में कभी-कभी पारदर्शिता के अभाव के कारण जन-हित की उपेक्षा होती है।
- iii. इंजीनियरों एवं पर्यवेक्षकों की कमी के कारण कार्य की गुणवत्ता प्रभावित होती है।
- iv. कई बार मजदूरी का भुगतान निर्धारित अवधि में नहीं हो पाता है, जिससे श्रमिकों की असंतुष्टि बढ़ती है।
- v. अधिकांश ग्राम पंचायतों में सामाजिक अंकुश केवल औपचारिकता तक सीमित होता है।
- vi. जिन पंचायतों में नेतृत्व पारदर्शी है, वहाँ जल संरक्षण, तालाब पुनर्जीवन, सड़क मरम्मत जैसे कार्यों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थायित्व प्रदान किया है।

इन विश्लेषणों से यह स्पष्ट होता है कि योजना का वास्तविक प्रभाव ग्राम पंचायतों की प्रशासनिक दक्षता, पारदर्शिता और जन-सहभागिता पर निर्भर करता है।

समस्याएँ एवं सीमाएँ

मनरेगा के सफल क्रियान्वयन में निम्नलिखित प्रमुख बाधाएँ देखी गई हैं

- i. वित्तीय अनियमितताएँ : कई बार धन का उपयोग नियमानुसार नहीं हो पाता है।
 - ii. निगरानी तंत्र की कमजोरी : उच्च स्तर पर प्रभावी नियंत्रण की कमी।
 - iii. अल्प जन-जागरूकता : ग्रामवासियों में योजना के अधिकारों और प्रक्रियाओं का अभाव।
 - iv. भ्रष्टाचार एवं पक्षपात : स्थानीय स्तर पर हितलाभ की प्रवृत्तियाँ।
 - v. सामग्री आपूर्ति में विलंब : निर्माण कार्य प्रभावित होते हैं।
 - vi. डेटा पारदर्शिता की कमी : MIS प्रणाली में समय पर अपडेट न होना।
- इन सीमाओं के बावजूद यह योजना ग्रामीण विकास के लिए एक मजबूत आधार प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

मनरेगा योजना ने ग्रामीण भारत में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की एक नई धारा प्रवाहित की है। परन्तु इसके वित्तीय प्रबंधन की सुदृढ़ता और ग्राम पंचायतों की जवाबदेही को और सशक्त बनाना आवश्यक है।

मुख्य निष्कर्ष

- i. ग्राम पंचायतें यदि पारदर्शी ढंग से बजट उपयोग करें तो मनरेगा ग्रामीण आजीविका का स्थायी स्रोत बन सकती है।
- ii. योजना का सकारात्मक प्रभाव उन क्षेत्रों में अधिक है जहाँ स्थानीय नेतृत्व ईमानदार एवं उत्तरदायी है।
- iii. मनरेगा ने महिलाओं की कार्य भागीदारी को बढ़ाया है और परिवारिक आय में वृद्धि की है।

सुझाव

- i. प्रत्येक पंचायत में वित्तीय पारदर्शिता पोर्टल अनिवार्य किया जाए।
- ii. सामाजिक अंकेक्षण को नियमित और स्वतंत्र एजेंसियों से कराया जाए।
- iii. श्रमिक भुगतान में देरी रोकने के लिए रियल-टाइम पेमेंट सिस्टम विकसित किया जाए।
- iv. ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों को वित्तीय प्रशिक्षण दिया जाए।
- v. योजना के स्थायी लाभ हेतु पर्यावरणीय एवं उत्पादक कार्यों को प्राथमिकता दी जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत सरकार, ग्रामीण विकास मंत्रालय, महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005।
2. योजना आयोग (अब नीति आयोग), भारत का पंचवर्षीय योजना दस्तावेज (2012-2017)।
3. ग्राम्य विकास एवं पंचायती राज विभाग, उत्तराखण्ड सरकार, वार्षिक प्रतिवेदन, 2022-23।
4. सिंह, ओ.पी. (2019), ग्रामीण विकास की भारतीय परिप्रेक्ष्य में मनरेगा योजना, नई दिल्ली : अवध पब्लिकेशन।
5. शर्मा, एस. (2020), ग्राम पंचायतों की वित्तीय भूमिका एवं पारदर्शिता, जयपुर : रावत प्रकाशन।
6. Government of India, MGNREGA Annual Report, 2023-24, Ministry of Rural Development.
7. Verma, R. (2021), Impact of MGNREGA on Rural Livelihoods in India, Economic Affairs Journal.



भारतीय विदेश नीति निर्माता के रूप में पं. जवाहर लाल नेहरू की भूमिका

प्रो. डॉ. मन्जु सोलंकी

निर्देशिका, राजनीति विज्ञान विभाग

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा

सुधीर कुमार

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा

वर्तमान युग अन्तर्राष्ट्रीयता का युग है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी देश एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। इस सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता है। आज के समय विश्व के सभी राष्ट्र अपने-अपने हितों के संवर्द्धन में लगे हुए हैं। सभी राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हित के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विदेशों से सम्बन्ध स्थापित करने में स्वतन्त्र नीति का प्रयोग करते हैं। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। भारत द्वारा अपने राष्ट्रीय हितों का अन्तर्राष्ट्रीय हितों से तालमेल बढ़ाने वाली नीति अपनाई जाती है।

“विदेश नीति राष्ट्रीय हित को प्राप्त करने का वह साधन है, जो अन्तर्राष्ट्रीय हितों को हानि पहुँचाए बिना ही ऐसा करता है।” 15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात भारत की विदेश नीति का निर्माण जवाहर लाल नेहरू के मार्ग दर्शन में ही हुआ।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान ही नेहरू जी की अंग्रेजी की नीतियों के प्रति असम्बद्धता ने उग्र रूप धारण कर लिया था। 1946 में ही अन्तरिम सरकार के अन्तर्गत प्रधानमन्त्री की हैसियत से उनके द्वारा भारतीय विदेश नीति में एक अच्छा मुकाम हासिल कर लिया गया था और आज भी है। उनकी नीतियों में स्वतन्त्र विदेश नीति, अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति का समर्थन, उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद का विरोध, रंगभेद की नीति की निन्दा, पराधीन देशों की स्वतन्त्रता का समर्थन करना, पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना, प्रवासी भारतीय नागरिकों की सुरक्षा आदि सम्मिलित हैं। आगे चलकर शीत-युद्ध के माहौल को देखते हुए नेहरू द्वारा गुटनिरपेक्षता की नीति को ही भारत की विदेश नीति का आधार बनाया। नेहरू जी की इसी नीति के कारण भारत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिला।

नेहरू जी द्वारा भारत की विदेश नीति में राष्ट्रीय हित के उद्देश्य को सर्वोपरि स्थान दिया गया। नेहरू जी ने राष्ट्रीय हित के साथ-साथ विश्व शान्ति के लिये शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धान्त का अपने पंचशील सिद्धान्त में प्रतिपादन किया। नेहरू जी द्वारा प्रतिपादित किया गया कि भारत की नीति ऐसी परिस्थितियों को रोकने की होनी चाहिये जो विश्व शान्ति को खतरा उत्पन्न करे। विश्व-शान्ति के लिये ही नेहरू जी द्वारा निःशस्त्रीकरण का समर्थन करते हुए उसे भारत की विदेश नीति में स्थान दिया गया।

नेहरू की भारतीय विदेश नीति को देन

नेहरू जी लम्बे समय तक भारत के प्रधानमन्त्री रहे और भारतीय विदेश नीति पर नेहरू जी का पूरा प्रभाव रहा। उनके

कार्यकाल में भारतीय विदेश नीति के कुछ नये सिद्धान्तों की नींव पड़ी। उनकी विदेश नीति के सही सिद्धान्त आज भी भारत की विदेश नीति के उद्देश्य व सिद्धान्त हैं।

भारत की विदेश नीति अपने राष्ट्रीय हितों का पालन करते हुए सभी राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने के सिद्धान्त पर आधारित है। “भारत सदैव ही विश्व में शान्ति व स्थिरता का समर्थक रहा है, और इसकी विदेश-नीति लोकतन्त्र के मूल्यों, मानवाधिकारों के सम्मान और बहुपक्षवाद द्वारा निर्देशित है।”²

भारतीय विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं।

- 1- अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा बनाये रखना।
- 2- साम्राज्यवाद का विरोध करना।
- 3- रंगभेद नीति का विरोध करना।
- 4- अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का शान्तिपूर्ण तरीके से समाधान करना।
- 5- शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व को बढ़ावा देना।
- 6- गुट निरपेक्ष और गैर प्रतिबद्ध रहना।
- 7- बहुपक्षवाद का पालन करना।
- 8- वैश्विक मंचों पर भारत की आवाज सुनाना।
- 9- विदेश में भारतीय प्रवासियों को जोड़ना एवं उनके हितों की रक्षा करना।

पं० जवाहरलाल नेहरू ने भारत की विदेश नीति के निर्माण में अहम भूमिका अदा की थी। उनके द्वारा 1946 से 1964 तक प्रधानमंत्री और विदेश मन्त्री के तौर पर भारत की विदेश नीति को आकार दिया गया और उसे लागू किया गया। नेहरू की विदेश नीति के मुख्य सिद्धान्त थे- गुटनिरपेक्षता, पंचशील, क्षेत्रीय अखण्डता को बनाए रखना, सम्प्रभुता को बचाए रखना, तेज आर्थिक विकास करना इत्यादि।

एक राष्ट्र के रूप में भारत का जन्म विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में हुआ था। वह अपनी विदेश नीति तैयार कर रहा था। तभी शीत युद्ध भी आरम्भ हो चुका था एवं दुनिया बड़ी तेजी से दो खेमों में विभाजित होती जा रही थी।

1-निःशस्त्रीकरण का समर्थन

भारत ने सदैव ही निःशस्त्रीकरण का समर्थन किया है। वह हमेशा अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के शान्तिपूर्ण समाधान में विश्वास करता रहा है। भारत द्वारा कोरियाई संघर्ष के समाधान में अग्रणी भूमिका निभाई गई एवं फिलिस्तीन मुद्दे, पड़ोसी देशों के साथ सीमा समस्याओं तथा अन्य ऐसे विवादों एवं समस्याओं के बातचीत के माध्यम से समाधान का समर्थन किया है।

भारत सदैव ही सैन्य हस्तक्षेप के खिलाफ रहा है। यह सिद्धान्त आज भी भारत की विदेश नीति का आधार बना हुआ है।

2-आदर्शवाद बनाम यथार्थवाद का सिद्धान्त

वर्तमान में भी भारत की विदेश नीति पर नेहरू, गाँधी, महात्मा बुद्ध जैसे शान्ति के पुजारी महात्माओं का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। नेहरू जी का पंचशील सिद्धान्त आज की भारत की आदर्शवादिता को प्रतिष्ठित करता है। भारत का विश्व शान्ति के प्रति अपनाया गया दृष्टिकोण भारत की विदेश नीति को आदर्शवाद की नीति घोषित करता है। लेकिन भारत की विदेश नीति केवल कोरी आदर्शवादिता की प्रतीक नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर यह यथार्थवादी दृष्टिकोण भी अपना लेता है।

यद्यपि नेहरू जी द्वारा विदेशों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की नीति अपनाई, निःशस्त्रीकरण पर विचार रखे, विश्व शान्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन किया। पंचशील जैसे सिद्धान्त दिये, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को प्रतिपादित किया गया। किन्तु 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण के बाद विदेश नीति समीक्षकों द्वारा भारत को विदेश नीति की आलोचना

की गई।

लेकिन इसका अर्थ कदापि यह नहीं है कि नेहरू जी की विदेश नीति का भारत की विदेश नीति के निर्माण और विकास में कोई योगदान नहीं है। सच्चाई तो यह है कि भारत की विदेश नीति आज भी उन उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों को समेटे हुए है, जो नेहरू ने बनाये थे।

3-गुटनिरपेक्षता की नीति

भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रीय एजेंडा निश्चित करने में निर्णायक भूमिका अदा की है। वे प्रधानमंत्री के साथ-साथ विदेश मंत्री भी थे। प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के रूप में 1946 से 1964 तक उनके द्वारा भारत की विदेश नीति की रचना और क्रियान्वयन पर गहरा प्रभाव डाला। नेहरू की विदेश नीति के तीन बड़े उद्देश्य थे- सम्प्रभुता को बचाए रखना, क्षेत्रीय अखण्डता को बनाए रखना और तेज रफ्तार से आर्थिक विकास करना। नेहरू इन उद्देश्यों को गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाकर हासिल करना चाहते थे। उन दिनों देश में ऐसी भी पार्टियाँ तथा समूह, समुदाय थे, जो ये चाहते थे कि भारत अपनी विदेश नीति अपने पक्ष में बनाए। लेकिन विदेश नीति को तैयार करने में नेहरू को अच्छी खासी बढ़त हासिल थी।

“आजाद भारत की विदेश नीति में शान्तिपूर्ण विश्व का सपना था। इसके लिए भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया।” भारत ने शीतयुद्ध से पनपे तनाव को कम करने की कोशिश की और संयुक्त राष्ट्र संघ में शान्ति अभियोजनों के लिये अपनी सेनाएं भी भेजी। शीत-युद्ध के समय अमेरिका ने उत्तर अटलांटिक संगठन (NATO) और सोवियत संघ ने इसके जवाब में सीएटो नामक संगठन बनाया। भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति को आदर्श माना।

इंडोनेशिया के एक शहर बाडुंग में एफ्रो एशियाई सम्मेलन 1955 में हुआ। हम इस सम्मेलन को वाडुंग सम्मेलन के नाम से जानते हैं। अफ्रीका और एशिया के नव स्वतन्त्र देशों के साथ भारत के बढ़ते सम्पर्क का चरम बिन्दु था। वाडुंग सम्मेलन में ही गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की नींव पड़ी। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की स्थापना में नेहरू की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।

“जवाहर लाल नेहरू की गैरप्रतिबद्ध अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की सबसे बड़ी सफलता गुटनिरपेक्ष आन्दोलन (NAM) का गठन था।” इस नये गठबन्धन के गठन में नेहरू के बाद में टीटो, नासिर, सुकार्णो और नकूमा जैसे सहयोगी मिले। प्रारम्भ में तो इस गठबन्धन को न तो पूर्वी देशों द्वारा और न ही पश्चिमी देशों द्वारा गम्भीरता से लिया गया। हालांकि गठबन्धन के महत्व को जल्दी ही स्वीकार कर लिया गया। नेहरू अपने मिशन पर बिना किसी डर के आगे बढ़े। कई अवसरों पर छ।ड को सफलता मिली, अक्सर नेहरू के नेतृत्व में जिसने भी इसके उद्देश्य का समर्थन किया, वह उसका सहयोगी और मित्र था। नेहरू ने मुद्दों पर आधारित गठबन्धन की नीति का प्रचार किया, न कि राजनीतिक और आर्थिक सिद्धान्तों पर आधारित उन्हें एशियाई होने पर गर्व था और वे चाहते थे कि एशियाई राष्ट्र अपने राजनीतिक भाग्य के प्राथमिक निर्धारक हों, न कि हमेशा पश्चिमी ताकतों द्वारा निर्देशित।

4-नेहरू और पाकिस्तान (कश्मीर समस्या)

कश्मीर एक सतत समस्या थी और वे पड़ोसी पाकिस्तान के साथ सफल बातचीत तक पहुँचने में सफल नहीं रहे। नेहरू जी को ईमानदारी से सहानुभूति रखने और राजनीतिक उदारता में सहज विश्वास था। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से पाकिस्तानी सरकार के साथ बातचीत करने के लिये दबाव बनाने की कोशिश की। लेकिन पाकिस्तानी सैन्य शासकों द्वारा किसी भी शक्तिपूर्ण समझौते से इन्कार कर दिया गया। 1950 में सम्भावित जनमत संग्रह की पेशकश को भी ठुकरा दिया गया। भारत द्वारा द्वि-राष्ट्र सिद्धान्त को लगातार नकारने के बाद, मुस्लिम बहुल कश्मीर में कश्मीर के पक्ष में परिणाम भारत के लिए एक रणनीतिक आपदा होगा। कश्मीर समस्या अनसुलझी रही और नेहरू की कूटनीतिक विशेषता भी समस्या को कोई सकारात्मक दिशा नहीं दे सकी।

नेहरू और चीन संकट

हालांकि भारत चीन मामले में भी, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को सम्भालने में पारदर्शिता में नेहरू का विश्वास ही सभी

समस्याओं की जड़ माना जाता है। नेहरू भारत और चीन के मध्य बहुत ही मधुर और लाभकारी सम्बन्ध चाहते थे। 1954 में पीकिंग और नई दिल्ली के बीच प्रारम्भ हुआ पंचशील समझौता इन वार्ताओं का परिणाम था। हालांकि चीन ने 1955 के बाद से भारतीय सीमा के कुछ हिस्सों में गश्त करना शुरू कर दिया। दिल्ली ने समस्या को शान्तिपूर्ण तरीके से हल करने के लिए बातचीत शुरू की। नेहरू के नेतृत्व में भारत एक समय में एक मुद्दे को लेना चाहता था और चर्चा करना चाहता था। चाऊ एन लाई के नेतृत्व में चीनी सरकार सीमा मुद्दे को एक बार में पूरी तरह से निपटना चाहती थी। यह पाँच सूत्री समझौते का घोर उल्लंघन था। “अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय से मध्यस्थता के लिए चीन के इन्कार ने समस्या को और अधिक जटिल बना दिया।”⁵

5-शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व में विश्वास की नीति

अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारे की शक्ति में नेहरू जी का अटूट विश्वास था। यह भारत के राष्ट्रमण्डल दर्जे को जारी रखने के उनके निर्णय से प्रमाणित होता है। राष्ट्रमण्डल के प्रति उनके समर्थन के कारण उन्हें अपने देश में बहुत आलोचना का सामना करना पड़ा। विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के वर्षों में ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वतन्त्रता मुद्दे की जटिलता के बाद जिसके कारण अवांछित विभाजन हुआ। हालांकि नेहरू जी हमेशा शान्तिपूर्ण गठबन्धन और चर्चा के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के समाधान में विश्वास करते थे, अपने आदर्शों पर चलते रहे।

“शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के पाँच सिद्धान्तों पर पहली बार औपचारिक रूप से 29 अप्रैल, 1954 को भारत और चीन के तिब्बत क्षेत्र के बीच हस्ताक्षर किये गये थे।”⁶ इस समझौते पर तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और चीन के प्रधानमंत्री चाऊ एन-लाई के बीच हस्ताक्षर हुए थे।

“अप्रैल 1954 में भारत ने तिब्बत को चीन का हिस्सा मानते हुए चीन के साथ पंचशील के सिद्धान्त पर समझौता किया।”⁷ पंचशील समझौते के मुख्य बिन्दु निम्नवत थे।

- 1- शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व
- 2- एक दूसरे की क्षेत्रीय अखण्डता और सम्प्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान।
- 3- पारस्परिक अहस्तक्षेप
- 4- पारस्परिक अनाक्रमण
- 5- समानता और पारस्परिक लाभ।

पंचशील समझौते ने भारत और चीन के मध्य तनाव को काफी हद तक कम कर दिया था। इन समझौतों के पश्चात भारत और चीन के मध्य व्यापार और विश्वास बढ़ाने को काफी बल मिला। इस बीच हिन्दी चीनी भाई-भाई के नारे बुलन्द हुए।

1959 के तिब्बती विद्रोह के प्रारम्भ में तिब्बती धार्मिक गुरु दलाई लामा और उनके अनुयायी सी0आई0ए0 की सहायता से तिब्बत से भागकर भारत में अपनी जान बचाने आये थे। भारत सरकार ने उन्हें शरण दी। बस यहीं से भारत और चीनी के मध्य पंचशील समझौता टूट गया। इसके बाद भारत और चीन के बीच रिश्ते खराब हो गये तथा चीनी जनता के बढ़ते विद्रोह के बीच चीनी सरकार ने देश भक्ति का हवाला देते हुए अपनी जनता को शान्त करने के उद्देश्य से भारत के खिलाफ एकतरफा युद्ध की घोषणा कर दी।

इस युद्ध के लिए न तो भारत की सेना तैयार थी और न ही यहाँ की सरकार। इस प्रकार पंचशील समझौता भारत और चीन के बीच आर्थिक तथा राजनीतिक सम्बन्धों को दुरुस्त करने के लिए उठाया गया एक सोचा समझा कदम था, लेकिन चीन द्वारा इसका गलत लाभ उठाया गया और भारत की पीठ में छुरा घोंपा गया।

“जो बात जानना सबसे जरूरी है, वह यह है कि इस विशाल भूमि में पहले भारतवासी सबसे ज्यादा मायने रखते हैं। भारत माता नहीं करोड़ो-करोड़ो जनता है और भारत माता की जय उसकी भूमि पर रहने वाले इन सबकी जय।”⁸

उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ने पर यह अनुमान लगाना बड़ा मुश्किल है कि आखिर कौन इस तरह भारत माता को परिभाषित

करते हुये जय बोल रहा है। हम बात कर रहे हैं, आधुनिक भारत के निर्माता पं० जवाहरलाल नेहरू के बारे में। उपरोक्त कथन पं० नेहरू जी का ही है, जिनकी नजरों में भारत माता की तस्वीर विशिष्टता बोध लिए हुए है।

व्यक्तित्व और कृतित्व का विश्लेषण किये बिना इस निष्कर्ष पर तुरन्त पहुँच जाना कि भारतीय विदेश नीति पर नेहरू के विचारों की छाप है। थोड़ी जल्दबाजी लगती है। लेकिन जैसे ही नेहरू की रचनाओं से गुजरते हुए उनके विचारों, सिद्धान्तों एवं कृतित्व की निष्पक्ष पड़ताल करते हैं, तो अनायास ही ये शब्द सही मालूम दिखाई पड़ते हैं।

नेहरू का चिन्तन मूल रूप से मानवतावादी है। उनका दृष्टिकोण पश्चिमी तथा आधुनिक था। नेहरू के दृष्टिकोण में लोकतन्त्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, भाईचारा, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, मानवतावाद, अन्तर्राष्ट्रवाद आदि आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। वे कहते हैं “समाजवाद मात्र एक आर्थिक सिद्धान्त ही नहीं बल्कि एक जीवन दर्शन भी है और यह अपने इसी स्वरूप में मुझे प्रेरित करता है।”⁹

एस० गोपाल के अनुसार “जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्र को एकजुट बनाया। लोकतन्त्र के लिए इसे प्रशिक्षित किया, आर्थिक विकास के लिए एक मॉडल का निर्माण किया तथा देश को आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर किया।”¹⁰

नेहरू जी एक महान अन्तर्राष्ट्रीयता वादी थे। अन्तर्राष्ट्रीयता की प्रेरणा उन्हें विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ ठाकुर एवं महात्मा गाँधी जैसे महान व्यक्तियों से प्राप्त हुई थी। उनका विश्वास था कि किसी देश विशेष के संकीर्ण दृष्टिकोण के स्थान पर वैसे दृष्टिकोण को अंगीकार किया जाना चाहिये जो वैश्विक हित में हो। अपने इसी दृष्टिकोण के कारण उन्होंने भारतीय विदेश नीति के निर्धारक तत्व के रूप में गुटनिरपेक्षता तथा पंचशील की संकल्पना को आधार के रूप में अपनाया। स्वतन्त्र विदेश नीति पर चलने पर प्रयत्न 1947 के बाद की भारतीय राजनीति की विशेषता थी।

नेहरू की मान्यता थी कि एशिया तथा अफ्रीका नवोदित राष्ट्रों की आवश्यकता है। गरीबी, निरक्षरता और बीमारी से लड़ना और यह कार्य शीतयुद्धकालीन दो गुटों में शामिल होकर नहीं किया जा सकता है। गुटनिरपेक्षता की अवधारणा नेहरू द्वारा प्रदत्त एक ऐसा उपहार है, जिसे उन्होंने प्रभुत्व की राजनीति, गुप्त कूटनीति, सैनिक समझौते तथा हथियारों की होड़ की दोड़ में भाग रहे संसार को प्रदान किया। इस नीति के अन्तर्गत समाहित किये गये विचार हैं। समानता की भावना, पारस्परिक प्रेम, भिन्न-भिन्न राष्ट्रों की शासन पद्धति के साथ सहिष्णुता, भौगोलिक अखण्डता को महत्व देना तथा शक्ति का प्रयोग न करना इत्यादि।

नेहरू ने अपने कार्यकाल में न सिर्फ पड़ोसियों से बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय महाशक्तियों से भी मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये। संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) जैसी संस्था में भी भारत द्वारा अपनी मजबूत स्थिति दर्ज कराई गई। गुटनिरपेक्षता की नीति को दुनिया के तमाम देशों द्वारा अपनाया गया। यह नेहरू के व्यक्तित्व और भारतीय विदेश नीति की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

जवाहरलाल नेहरू को आधुनिक भारत का निर्माता माना जाता है। स्वतन्त्रता के तुरन्त बाद के वर्षों में भारत की उथल पुथल भरी घरेलू स्थिति को सावधानीपूर्वक सम्भालने के अतिरिक्त नेहरू का प्रमुख योगदान विदेश नीतियों के क्षेत्र में है। वास्तव में नेहरू जी ने भारत के विदेश मन्त्री के रूप में आजादी के बाद के वर्षों में भारत की अन्तर्राष्ट्रीय छवि को काफी हद तक निर्धारित किया। नेहरू जी की विदेश नीति उनकी आर्थिक नीतियों की भाँति ही बहुत विवाद और बहस का विषय रही है। हालाँकि एक लोकतान्त्रिक गणराज्य के रूप में भारत की नई स्थिति के सम्पर्क में नेहरू के विदेश मामलों की नीतियाँ बहुत उपयोगी लगती हैं।

समाजवाद को नेहरू पर सबसे बड़े अन्तर्राष्ट्रीय प्रभावों में से एक कहा जा सकता है। किन्तु गाँधी के जलाग्रह के आदर्शों ने भी उन्हें काफी हद तक प्रभावित किया। किन्तु उन्होंने अपनी विदेश नीति को तैयार करने में स्वयं को किसी की दृष्टिकोण के लिये प्रतिबद्ध नहीं किया।

नेहरू की विदेश नीतियों की विशेषता के दो मुख्य पहलू थे।

1- वे चाहते थे कि भारत की एक ऐसी पहचान हो जो किसी भी शक्ति, समूह, संयुक्त राज्य अमेरिका अथवा सोवियत संघ के प्रति किसी भी तरह की प्रलक्ष प्रतिबद्धता से स्वतन्त्र हो।

2- अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में सद्भावना और ईमानदारी में उनका अटूट विश्वास था। पहली नीति के द्वारा गुटनिरपेक्ष (NAM) की स्थापना की गई।

नेहरू का दूसरा विश्वास 1962 के चीनी हमले से बुरी तरह हिल गया था। जिसमें 1954 के पंचशील समझौते की सभी धाराओं का खुलेआम उल्लंघन किया गया। विश्वास का यह उल्लंघन नेहरू जी के लिये एक बड़ा मनोवैज्ञानिक झटका था और आंशिक रूप से उनकी मृत्यु का कारण भी बना।

सैद्धान्तिक और व्यावहारिक आधार पर नेहरू जी द्वारा किये गये कर्म में जो भी अभाव और असंगतियाँ रही हो, उनके द्वारा अपने समय की विश्व-मानवता को अपने समय की परेशानियों से अवगत कराने की सफल चेष्टा ही नहीं की गई, बल्कि उसके दिमाग में यह भी साफ किया गया कि इनका सम्पूर्ण समाधान भावनाओं के आधार पर नहीं बल्कि उनके प्रति एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर ही किया जा सकता है।

इसलिए नेहरू के कार्यकाल तथा उनके व्यक्तित्व के विश्लेषण के आधार पर कह सकते हैं कि उनके द्वारा देश के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक आधार की आधारशिला रखी गई। उनके महान गुणों एवं कार्यों के कारण ही उनका भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। अपने व्यवहार, बुद्धिमत्ता एवं सन्तुलित विचारों के द्वारा नेहरू जी के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन करने का प्रयास किया गया, जिससे वे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही क्षेत्रों में सफल रहे।

इसलिए कहा जा सकता है कि नेहरू जी के द्वारा भारत के निर्माण की आधारशिला रखी गई और समाज के विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए योजना निर्माण का कार्य किया गया और उसे व्यवहार में भी लागू किया गया। इसलिए नेहरू जी को 'भारत का निर्माता' कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

ग्रन्थावली

- 1- भारतीय राजनीतिक चिन्तन- जीवन मेहता- साहित्य भवन पब्लिकेशन्स
- 2- प्राचीन, भारतीय राजनीतिक विचारक- डा० किरण टण्डन- मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- 3- भारतीय राजनीतिक विचारक- ओमप्रकाश गाबा
- 4- मूलभूत समाज शास्त्रीय विचारक- प्रदीप आगलावे, श्री साईनाथ, प्रकाशन, नागपुर।
- 5- प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक- डा० पुखराज जैन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स
- 6- भारतीय ज्ञान परम्परा और विचारक- रजनीश कुमार शुक्ल- प्रभात पब्लिकेशन्स।
- 7- समकालीन भारतीय चिन्तक- रमेश चन्द्र सिन्हा, विजय जी।
- 8- भारतीय सामाजिक विचारक- एस०एल० दोषी।
- 9- भारतीय राजनीतिक विचारक प्राचीन एवं आधुनिक स्वतन्त्रता पूर्ण, योगेन्द्र कुमार शर्मा।
- 10- भारत की विदेश नीति- दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, महर्षि दयानन्द, विश्वविद्यालय रोहतक-124001



हिन्दी एवं कन्नड भक्ति परंपराओं में महिलाएँ



चंद्रकला हळीमनी

शोधार्थी हिन्दी स्नातकोत्तर एवं अनुसंधान विभाग,
गुलबर्गा विश्वविद्यालय, कलबुरगि (कर्नाटक)-585106
ईमेल - Chandrakalac410@gmail.com
Mob. : - 8088436714, 9986098050

स्त्री की शक्ति और सत्ता के उभारने स्त्री साहित्य की ओर हमारा ध्यान खींचा है। किन्तु आज भी हमने स्त्री के लिखे को यह महत्व नहीं दिया है जो उसे मिलना चाहिए। वैदिक और जैन धर्म स्त्री को मुक्ति प्राप्ति के योग्य नहीं मानते थे। जीवन की कोई सुविधा नारी को प्राप्त नहीं थी जो पुरुष को थी। शिक्षा से वंचित नारी को पुरुष की छाया के समान जीवन व्यतीत करना पड़ता था। सती प्रथा प्रचलित थी। उपेक्षित अपमानजनक विधवा जीवन से ऊबकर सती होना ही यह श्रेष्ठ समझती थी। क्षत्रियों में पद्धति अधिक थी। स्त्री की इच्छा अनिच्छा की उपेक्षा कर उसे मृत पति के साथ जला दिया जाता था। इस प्रकार उस समाज में हजारों बन्धनों में बंधी स्त्री सजीव शव थी। नारी को इस दलदल से मुक्त करने के लिए शिवशरणों ने स्त्री-पुरुषों की समानता की घोषणा कर दी और समग्र व्यक्तित्व विकास की सुविधाएँ उसे दी गई।

भक्ति परंपराओं में महिलाओं ने कविता, दोहा, वचन, संगीत और कलात्मक अभिव्यक्ति के रूपों के माध्यम से भगवान के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त करते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिन समाजों में ये परंपरा उभरी, उनकी पितृसत्तात्मक प्रकृति के बावजूद महिला भक्त सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और धालमक क्षेत्र में अपने लिए जगह बनाने में सक्षम थीं।

हिन्दी भक्त महिलाओं में प्रमुख है

हिन्दी में भी अनेक भक्त महिलाएं भक्ति परंपरा में आते हैं। उनमें प्रमुख है—मीराबाई सहजोबाई, दयाबाई, उमा, मुक्ताबाई, पार्वती, इंद्रामती, सुंदर कुंवरबाई, ताज, चंद्रसमी, माधवी, मधुराली एरत्तावली आदि।

मीराबाई

एक प्रमुख भक्त कवि और भगवान कृष्ण की भक्त मीराबाई भक्ति परंपरा में एक प्रसिद्ध महिला भक्त हैं। उन्होंने कृष्ण के अपने प्रेम और भक्ति को व्यक्त करते हुए कविताओं की रचना की। और सार्वजनिक रूप से गायन और नृत्य करके सामाजिक अपेक्षाओं को खारिज कर दिया। मीराबाई की कविताएँ और गीत आध्यात्मिक ज्ञान प्रसारित करने और अन्य महिलाओं को अपनी भक्ति व्यक्त करने के लिए प्रेरित करने का साधन बन गया—

मेरे तो गिरधर गोपालए

दूसरो न कोई।

सब संसार में केवल कृष्ण की भक्ति ही सबसे महान है।

ताज : मीराबाई के बाद विद्रोहिणी कवयित्री के रूप में ताज का नाम सबसे ऊपर आता है। ये मुसलमान थी, कृष्ण

की भक्त थी। मुसलमान होकर भी कृष्ण का भक्त होना ही एक तरह का विद्रोह है। ताज ने धर्म-जाति-कुल-वंश सब सीमाओं से ऊपर उठकर कृष्ण भक्ति में डूबने का उदाहरण प्रस्तुत किया। वह मुसलमान की होकर भी परम वैष्णव भक्त थी।

**“कृष्ण के बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं,
उनके चरणों में बसा हर सुख है।”**

ताज की कविताओं में सरलता और विचारों की सटीकता थी। उनका काव्य भक्ति के सरल-लेकिन गहरे रूप को दर्शाता है। ताज का काव्य न केवल समाज के उच्च वर्ग के लिए था, बल्कि इसे आम आदमी भी सहजता से समझ सकता था। उनका काव्य प्रभावी था क्योंकि उसमें हर व्यक्ति के दिल को छूने की शक्ति थी।

**“भगवान का नाम है जीवन का सबसे बड़ा धुन है,
वही सुख और शांति स्त्रोत है।”**

सहजोबाई—सहजोबाई भी संत धरमदास की शिष्या थीं। ये दयाबाई की चचेरी बहन थी। इन्होंने दोहा, चौपाई, छंदों में रचनाएँ लिखी। इन्होंने इनके एक ही रचना उपलब्ध है—‘सहजप्रकाश’। सहजोबाई की रचनाएँ, अनुभूति भाव के स्थान पर ज्ञान तत्व से ओत प्रोत है। सहजोबाई भी निर्गुणवादी संत कवयित्री थीं। इनके काव्य भी दयाबाई जैसे ही गुरु महिमा-प्रेम और प्रभु के प्रति भक्ति से ओतप्रोत है। यह भी भक्ति परंपरा में आनेवाली प्रमुख महिला भक्त कवि है। इस प्रकार हिन्दी संत महिलाओं ने भक्ति को सार्वभौमिक तथा सुलभ साध्य बना दिया। संत सहजोबाई कहती है—

**“ऐसी सुमिरन कीजिये सहज रषैलौ लाय।
बिन निभ्याए बिन तालुनै अंतर सुरत लगाय।”**

इस प्रकार सहजोबाई ने कष्ट को सहन करते हुए भी नाम के जप का उपदेश दिया है।

**“कृष्ण के बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं है
उनके बिना तो यह संसार भी सूना लगता है।”**

यह पंक्ति सहजोबाई के कृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति को व्यक्त करती है जिसमें वे भगवान के बिना जीवन को अधूरा मानती है। सहजोबाई की कविताएँ शब्दों की सादगी में गहरी भक्ति और समर्पण की भावना प्रकट करती है। वे हमेशा अपनी रचनाओं में सरल भाषा का प्रयोग करती थीं जिससे हर व्यक्ति उनके काव्य से जुड़ सकता था। उनके काव्य की सरलता और स्पष्टता ने उन्हें आम जनता के बीच भी लोकप्रिय बना दिया था।

दयाबाई : दयाबाई ने संत तुकाराम की भाँति लोकभाषा में संत साहित्य की रचना की। वे सरल भाषा और करुणामय भक्ति भाव के लिए जानी जाती हैं। उनका संबंध मुख्यतः निर्गुण भक्ति परंपरा में माना जाता है और उन्होंने समाज में व्याप्त जाति-पाँति-भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई। वे संत कबीर रदास और मीराबाई जैसी संत-परंपरा की समर्थक थीं। उनके वचनों में आध्यात्मिक अनुभव, सामाजिक चेतना और मानवीय करुणा का समन्वय मिलता है। दयाबाई ने ईश्वर को सगुण रूप में न मानकर एक अद्वैत-निराकार और सर्वव्यापक सत्ता के रूप में अनुभव किया। उनका विश्वास था कि भगवान किसी मूलतः या मंदिर में नहीं बल्कि सच्चे हृदय और सेवा भाव में बसते हैं। दयाबाई का काव्य भगवान श्रीराम के प्रति गहरी भक्ति और प्रेम से भरा हुआ है। अपने काव्य में भगवान से मिलन के लिए अपने दिल की गहरी भावनाओं को व्यक्त करती हैं। उनका काव्य प्रेम और समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

“राम के चरणों में बसा सारा संसार है।

यह दिल राम के बिना कहीं भी नहीं है।”

दयाबाई ने अपने काव्य के माध्यम से समाज में महिलाओं की स्थिति पर भी ध्यान दिया। उनके काव्य में नारी के अधिकार, सम्मान और उसकी पहचान की बात की गई है। वे भक्ति के साथ जागरूकता को भी बढ़ावा देती थीं। दयाबाई की कविताओं में शब्दों की सादगी और भावनाओं की गहराई का मिलाजुला रूप देखने को मिलता है। उनकी कविताएँ साधारण शब्दों में गहरी भक्ति की भावना व्यक्त करती हैं जिससे कोई भी व्यक्ति आसानी से जुड़ सकता है। दयाबाई ने नारी के

आत्मसम्मानए स्वतंत्रता और ईश्वर से सीधे संवाद की बात की। वे मीराबाई की तरह सामाजिक नियमों की अवहेलना कर भक्ति पथ पर चली। दयाबाई का काव्य जात.पात ऊँच.नीच और और बाह्याचार के विरोध में था। लोकभाषा में रचनाएँ की। दयाबाई का योगदान भारतीय भक्ति परंपरा में एक क्रांतिकारी महिला संत के रूप में रहा है। उन्होंने स्त्री स्वर को सशक्त किया। भक्ति को आडंबरहीन बनाया और समाज में चेतना जागृत की।

हिन्दी की संत महिलाओं ने भगवन का नामस्मरण को भी बड़ा महत्व दिया। गरीबए अमीरए स्त्रीए पुरुष कोई भी हो परमात्मा का नाम आसानी से ले सकता है। भक्ति साधना के इस मार्ग के लिए विशेष वस्तु, स्थान या समय का बंधन नहीं होता। सोते-जागते, उठते-बैठते हुए हर कोई किसी भी अवस्था में नामस्मरण कर सकता है।

कन्नड की भक्ति परंपरा में महिलाएँ अनेक भक्त महिलाएँ कन्नड भक्ति परंपरा में आते हैं उनमें प्रमुख है—अक्कमहादेवी और आय्दक्की लक्कम्मा, सत्यक्का, गंगाबिकेएमोलीग महादेवी, गंगाम्मा, निलांबिके, मुक्तायक्का एसुळे संकवे, कालवे, हडपद लिगम्मा आदि अनेक भक्त हैं।

अक्कमहादेवी : 12 वीं सदी की भक्त कवयित्री थीं, जिन्होंने अपना जीवन भगवान शिव को समर्पित कर दिया था। उन्होंने एक सन्यासी बनने के लिए अपने परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों को त्यागकर सामाजिक परंपराओं को खारिज कर दिया। अक्कमहादेवी की कविताएँ जिन्हें, वचन के नाम से जाना जाता है, अपने दिव्य प्रिय के प्रति उनके गहन प्रेम और लालसा को व्यक्त करती हैं। पितृसत्तात्मक समाज पर प्रश्नचिह्न लगानेवाली प्रमुख महिला कवि अक्कमहादेवी थी। इस तरह सामाजिक रुढ़ियों को चुनौती दी। इस कवयित्री का नाम कन्नड भक्ति परंपरा में मुख्य रूप में लिया जाता है। अक्कमहादेवी ने आध्यात्म साधना से शरीर शुद्ध रखने के लिए जपए तपए ध्यानए पूजा करने के लिए तन मात्र नहीं बल्कि मन को अज्ञान से दूर रखने का मार्गदर्शन किया। अक्कमहादेवी की कविताएँ व्यक्तिगत भक्ति का अस्थितीय उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। लेकिन उन्होंने यह भी दिखाया कि भक्ति का मार्ग किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं है। वे इस बात में विश्वास करती थी कि भगवान के साथ संवाद और समर्पण केवल व्यक्तिगत ही नहीं बल्कि समाज के समग्र कल्याण के लिए होना चाहिए। अक्कमहादेवी की कविताओं में नारी को आत्मसम्मानए आध्यात्मिक स्वतंत्रता और भगवान के साथ आगीन संबंध स्थापित करने के लिए प्रेरित किया गया।

उदा. “हर आत्मा में शिव की शक्ति छिपी है, यह सबको पहचानना चाहिए, न केवल एक व्यक्ति को।”

वे जीवन की कठिनाइयों को भगवान के प्रति समर्पण के रूप में देखती थी, जो भक्ति के मार्ग में सहायक लेते हैं। उनका मानना था कि व्यक्तिगत संघर्ष ही आत्मा के आत्मसाक्षात्कार का एक आवश्यक हिस्सा है। वे यह सिद्ध करती थी कि भक्ति के साथ-साथ आत्मसमर्पण और आत्मज्ञान की आवश्यकता है।

उदा : “कभी भी तूफान आएँ फिर भी शिव के चरणों में शरण ही जीवन का सत्य है।”

आय्दक्की लक्कम्मा : 12वीं सदी में कन्नड की शिवशरणी थी। इसके पति का नाम था आय्दक्की मारय्या। परिश्रम संस्कृति के आचरण में, अनुभव मंटेप की चर्चा परिचर्चाओं में की भागीदारी में वचन साहित्य रचना की सृजनशीलता में एवं व्यष्टि. समष्टि संबंधों का सुंदर समन्वयता में से सबसे आगे रहते थे। शिवभक्तों के आंगन से चावल बीनकर जंगम-दासोह करते थे। शरण धर्म के प्रमुख लक्कम्मा के वृद्ध जागरूकता इनके वचनों की विशेषता है। लक्कम्मा का वचनांकित-‘मारय्याप्रिय अमरेश्वरलिंग’ था। और इनके अब तक 25 वचन प्राप्त हुए हैं। आय्दक्की लक्कम्मा चावल बीनकर दासोह चलाती थी। उसका पति एक दिन जरूरत से ज्यादा चावल लाये थे। तब कायक शुद्धि को समझाती है।

“मुझे प्रभु के चरणों में प्रेम दिखाएँ

यही है जीवन का सत्य”

आय्दक्की लक्कम्मा ने अपने काव्य में न केवल भक्ति और प्रेम की बात की बल्कि समाज सुधार की दिशा में भी कार्य किया। उन्होंने अपनी गीतों में सामाजिक असमानताओं और कुरीतियों के खिलाफ भी आवाज उठाई। लक्कम्मा ने अपने काव्य के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो और सभी को समान अधिकार मिलें।

“अंतरात्मा से प्रेम करोए जाति. पाति से नहीं।”

नागलांबिका : नागलांबिका एक प्रसिद्ध भक्ति कवयित्री थी जिनका काव्य विशेष रूप में भक्तिजीवन के सत्य और नैतिकता के सिद्धांतों पर आधारित था। नागलांबिका की कविताओं में भगवान के प्रति गहरी भक्ति और समर्पण की भावना थी। उनका मानना था कि भगवान के प्रति सच्ची श्रद्धा से ही आत्मा का उद्धार संभव है। वे जीवन के दुःखों से मुक्ति पाने के लिए भक्ति को सबसे प्रभावी साधन मानती थी। नागलांबिका ने अपनी कविताओं के माध्यम से जातिवाद, ऊँच-नीच और अन्य भेदभाव के खिलाफ एक सशक्त संदेश दिया गया है।

“जाति-पाति के भेद को छोड़,

सभी इंसान बराबर है।

जो प्रेम और भक्ति में खोते हैं।

वही सच्ची इंसान कहलाते हैं।”

नागलांबिका भी अपनी कविताओं में आध्यात्मिक ज्ञान और आत्मा के उन्नयन की बात करती है। उनका मानना था कि आत्मा का वास्तविक उद्देश्य ईश्वर के साथ मिलन है और इसके लिए भक्ति और ज्ञान दोनों का संतुलन आवश्यक है। नागलांबिका के काव्य में प्रकृति के सौंदर्य का भी सुंदर चित्रण है। वे मानती थी कि प्रकृति के रूप में भगवान का रूप है और भक्ति प्रकृति को समझता है वह भगवान को महसूस कर सकता है।

सत्यक्का : सत्यक्का का वचनांकित है ‘शंभुजक्केश्वर’। इन्होंने भी 27 वचनों को लिखा है कहा जाता है। इनके वचनों में जो शिवाधिक्य की भावना के बारे में कहा गया है। प्रभु के प्रति प्रेम तथा विनय की भाव विचलता सर्वत्र उनमें मिलती है। प्रेम के साथ ज्ञान भूत भी महिमापूर्ण वर्णन इन्होंने किया है। शिवशरणों के आंगन में झाड़ू लगाना तथा शिव भक्ति का आचरण करना इसका कायक था। इनकी प्रतिज्ञा थी की शिव के बिना किसी देव की पूजा नहीं करेंगी बल्कि एक देव की उपासना निष्ठ भक्ति का परिचय है। सत्यक्का का काव्य बहुत ही भावनात्मक और व्यक्तिवादी था। वे भगवान के प्रति अपनी भक्ति को सरल और सजीव शब्दों में व्यक्त करती थी। उनके काव्य में आत्मा का परमात्मा से मिलन और भक्ति के गहरे अनुभवों को व्यक्त किया गया है।

उदा : “प्रभु के बिना जीवन व्यर्थ है,

केवल वही सत्य है, वहीं प्रकाश है।”

इस उदाहरण के साथ में सत्यक्का ने भगवान के साथ आत्मीयता को स्पष्ट किया और यह संदेश दिया कि संसार के सारे सुख और दुख अंततः भगवान के ही होते हैं।

मोळिंगे महादेवी : गंगादेवी—बसवण्णा के यहाँ शरण होने वाले कल्याण को आकर शरणदिक्षा लेनेवाले कश्मीर के राजा महादेवरस और उनकी पत्नी गंगादेवी प्रमुख वचनकार है। इन्होंने लकड़ी बेचनेवाले का काम करते हुए जीवन निभाया। इस संदर्भ में वे अपना नाम गंगादेवी बदलकर मोळिंगे महादेवी बनकर रहने लगी। इनकी वचनांकित है—“निः कलंक मल्लिकार्जुनय्या” महादेवी का काव्य भगवान शिव के प्रति भक्ति को दर्शाता है। उनकी कविताएँ भगवान शिव की महिमा का गुणगान करती है। और भक्तिमार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।

उदा : महादेवी का प्रसिद्ध वचन है—

“शिव का नाम जपते हुए,

आत्मा में विलीन हो जाओ,

संसार के मोह. माया को छोड़ दो,

तब ही तुम मुक्ति पा सकोगे।”

महादेवी की कविताओं में भावनाओं का सूक्ष्म और गहरा चित्रण मिलता है। उन्होंने भक्ति को केवल एक बाहरी क्रिया के रूप में नहीं देखा, वहिक इसे आत्मा की गहरी भावना और शुद्धता के रूप में प्रस्तुत किया।

ये सभी महिला कवियों ने अपने रचनाओं के माध्यम से कन्नड़ साहित्य को धर्म, भक्ति और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में समृद्ध किया है। उनकी रचनाओं में ध्यान, साधना और आध्यात्मिक सन्देशों की महत्ता स्पष्ट रूप से उजागर होती है। इसमें से अनेक शिवशरणी और भी प्रमुख हैं—दुग्गले, गोगवे, गंगम्मा, शेतादेवी, मसणम्मा, रेकम्मा, लक्ष्मम्मा, लिंगम्मा, विरम्मा आदि कन्नड के प्रमुख भक्त महिलाएँ हैं।

महिला भक्त कवियों का भक्ति परंपरा में योगदान

वीरशैव भक्त महिलाएँ प्रभु से मिलने के लिए अत्यंत बेचैन हैं, उसी तरह हिन्दी की महिलाएँ भी बेचैन हैं। इस तरह से अनन्य भक्ति तथा समर्पण भाव संत तथा शिवशरणियों ने परमतत्त्व की प्राप्ति के लिए भक्ति से परमात्मा को रिझाती है। प्रभु के प्रति प्रेम तथा विनय की भाव विचलता सर्वत्र उनमें मिलती है। प्रेम के साथ ज्ञान का भी महिमापूर्ण वर्णन इन्होंने किया है। हिन्दी की संत महिलाओं ने भी कन्नड महिलाओं की तरह बहुदेववाद के विरोधी थीं। बहुदेव उपासना का आडंबर समाज को नष्ट कर देता है। लोगों को अंधाचरण और भ्रम में डाल देता है। एक ही परिवार में पत्नी, पत्नी भिन्न-भिन्न देव उपासक थे। समाज को टूटने से बचाने के लिए संत महिलाओं ने स्पष्ट रूप में एक देवोपासना का संदेश दिया। शरण कवयित्रियों ने बहुदेवोपासकों को वेश्याएँ कहा है।

साहित्यिक समृद्धि कुछ महिला कवियों ने साहित्यिक क्षेत्र में अपने योगदान के माध्यम से साहित्य को समृद्ध किया है। उनकी रचनाएँ साहित्यिक विचार और कला के क्षेत्र में उत्कृष्टता का प्रतीक हैं और साहित्यिक संवैधानिकता को संजीवनी देती हैं। इस रूप में, महिला कवियों ने भी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके योगदान ने साहित्य को सामाजिक, धार्मिक, और साहित्यिक दृष्टिकोण से समृद्ध किया है। महिला भक्ति कवियों ने अपनी कविताओं, गीतों और उपदेशों के माध्यम से भगवान की पूजा और भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने धार्मिक संदेशों को सामाजिक मानवीय और आध्यात्मिक सुधार के लिए उजागर किया और लोगों को आत्मनिर्भर और सजीव जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। उनकी रचनाओं में भक्ति, साधना और संगीत के माध्यम से अद्वितीय रूप से भगवान की उपासना का आत्मीय अनुभव व्यक्त होता है। इस प्रकार, साहित्य में महिला भक्त कवियों का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उनके काव्य में ध्यान, आध्यात्मिक संज्ञान और समर्पण की भावना स्पष्ट रूप से उभरती है। महिला भक्त कवियों ने अपने काव्य में सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित किया और धार्मिक संदेशों को सर्वांगीण रूप से प्रस्तुत किया। उन्होंने समाज को एकता, समरसता और प्रेम की महत्ता को समझाया और लोगों को धर्म, सेवा और समर्पण के माध्यम से जीवन का सार्थकता समझाया। इस प्रकार, महिला भक्त कवियों ने साहित्य में एक अद्वितीय स्थान बनाया है और समाज को धार्मिक और मानवीय मार्गदर्शन प्रदान किया है।

आध्यात्मिक सन्देश : अन्य महिला कवियों ने आध्यात्मिकता के माध्यम से भगवान के प्रति अपनी अनन्य भक्ति का प्रकट किया है। उनके काव्य में भक्ति, ध्यान और साधना के उत्कृष्ट भाव होते हैं जो सामाजिक समृद्धि और मानवीय संदेशों को संजीवनी देते हैं। उनके काव्य में आत्मविश्वास, समर्पण और संगीत के सुंदरता से मिलने वाला आनंद महसूस होता है। महिला भक्त कवियों ने भगवान की प्रेम की अद्भुतता को अपने काव्य में प्रकट किया है। उन्होंने अपने उपासना गीतों, आरतियों और भजनों के माध्यम से भक्ति के प्रति अपने अद्वितीय भावनात्मक संबंध को व्यक्त किया है। उनके काव्य में अन्तर्दृष्टि, संवेदनशीलता और आध्यात्मिक सन्देशों की गहराई उल्लेखनीय है। इन महिला कवियों ने समाज को धर्म, सेवा और समर्पण के माध्यम से संदेश दिया है। उन्होंने अपने काव्य माध्यम से समाज को आत्मनिर्भरता, सामाजिक न्याय और भगवान के प्रति श्रद्धा का मार्ग प्रदर्शित किया है। इस प्रकार महिला भक्त कवियों का योगदान समाज के धार्मिक और सामाजिक उत्थान में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

सामाजिक सन्देश : हिन्दी और कन्नड महिला भक्त कवियों ने भारतीय भक्ति आंदोलन को एक नई दिशा, संवेदना और आध्यात्मिक गहराई प्रदान की। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से सामाजिक विषमताओं, स्त्री की पीड़ा और आत्मिक

मुक्ति की लालसा को अभिव्यक्त किया। मीराबाई, सहजोबाई, दयाबाई जैसी हिन्दी कवयित्रियों ने भक्ति को आत्मसमर्पण प्रेम और विरह के माध्यम से जीवंत किया वहीं अक्कमहादेवी, नागलांबिका, लक्कम्मा जैसी कन्नड संत कवयित्रियों ने वीरशैव परंपरा और वचन साहित्य के माध्यम से स्त्री स्वतंत्रता, आत्मा-परमात्मा की एकता और सामाजिक चेतना को स्वर दिया।

इन महिला संत कवयित्रियों की भक्ति केवल आत्मरंजन या मोक्ष की आकांक्षा नहीं थीए बल्कि वह एक मौन क्रांति थी। जहाँ उन्होंने अपनी आवाज अपने शब्दों और अपने अनुभवों के माध्यम से समाज को यह बताया कि स्त्री की चेतना भी उतनी ही ऊर्जावान, आध्यात्मिक और सृजनशील हो सकती है, जितनी किसी पुरुष की। उन्होंने परमात्मा से निजता का संबंध जोड़ा न किसी मध्यस्थ की जरूरत नहीं न किसी बाहरी आडंबर की इनका जीवन और रचनाएँ इस बात की मिसाल है कि भक्ति न तो किसी कुल, वर्ण, लिंग या भूगोल या सीमा में बंधी है—वह तो अंतरात्मा की पुकार है, प्रेम की चरम अवस्था है और मुक्ति की जीवंत प्रक्रिया है। इन महिला संतों ने न भक्ति को एक अधिकार की तरह अपनाया उसे प्रेम, ज्ञान और सामाजिक न्याय से जोड़ा और आनेवाली पीढ़ियों के लिए संदेश छोड़ा कि—“भक्ति वह दीप है जो भीतर जलता है और स्त्री वह लो है जो उसे तेज करती है।”

निष्कर्ष

इन महिला भक्त कवियों ने भारतीय समाज पर धर्म और साहित्य को यह सिखाया कि भक्ति में शक्ति है और जब यह शक्ति स्त्री के हृदय से निकलती है, तो वह सिर्फ मोक्ष की ओर नहीं ले जाती बल्कि समाज को भी जागरूक और मुक्त बनाती है। उनकी भक्ति, उनका जीवन और उनकी वाणी, युग-युगांतर तक भारतीय संस्कृति की आत्मा को प्रकाशित करती रहेगी। इस प्रकार, हिन्दी और कन्नड महिला भक्त कवियों की यह परंपरा केवल इतिहास का हिस्सा नहीं, बल्कि जीवित विरासत है। जो आज भी हमारे अंतर्मन में भक्ति, प्रेम, आत्मशक्ति और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा के रूप में जल रही है। हिन्दी और कन्नड की महिला संत कवियों ने भक्ति आंदोलन को केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी समृद्ध किया।

- हिन्दी, महिला भक्त कवियों ने भक्ति को प्रेम और समर्पण के रूप में व्यक्त किया।
- कन्नड महिला संतों ने भक्ति को आत्मानुभूति और सामाजिक विद्रोह के रूप में प्रस्तुत किया।
- मीराबाई ने प्रेम को भक्ति बना दिया।
- अक्कमहादेवी ने निर्भयता को साधना बना दिया।
- सहजोबाई ने आत्मबोध को भक्ति को पराकाष्ठा बना दिया।
- नागलांबिका और लक्कम्मा ने सामाजिक चेतना को धर्म का आधार बना दिया।

इन सभी ने एक साथ मिलकर यह संदेश दिया कि, “ईश्वर पुरुष नहीं, नारी नहीं—वह आत्मा है और आत्मा की कोई जाति, कोई लिंग नहीं होता। जो प्रेम करता है, वही भक्त है। जो सत्य खोजता है, वही साधक है।” ये महिला संत कवयित्रिया न केवल भक्त थी, वे विचार थी, ऊर्जा थी और भक्ति युग की आत्मा थी। उनका युगदान युग-युगांतर तक स्मरणीय प्रेरणादायक और प्रासंगिक रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. कन्नड साहित्य संस्कृति कोश संपादक, डॉ. ची. सी. निर्गुणा।
2. वचन चिंतन, प्रो. काशीनाथ अंबलगे।
3. वचन निर्वचन, दंडे जयश्री
4. मीराबाई का काव्य, श्री मुरलीधर श्रीवास्तव

5. महादेवीअक्कन वचन, डॉ. आर. सी हिरेमठ, संपादक
6. आय्दक्की मारय्या आय्दक्की लक्कम्मा, प्रो. काशीनाथ अंबलगे ।
7. मोळगि मारय्या मोळगि महादेवी, प्रो. काशीनाथ अंबलगे ।
8. हिन्दी की महिला भक्त कवयित्रिया, उमाशंकर शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
9. निर्गुण भक्ति आंदोलन और संत साहित्य, डॉ. रघुनाथ सिंह, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली
10. संत साहित्य में नारी चेतना, प्रतिभा शर्मा, विद्या प्रकाशन, जयपुर
11. हिन्दी भक्तिकाव्य में नारी चेतना, डॉ. रेखा सेठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
12. वचन काव्य की महिलाएँ, कन्नड, डॉ. अन्नपूर्णा शरण, प्रकाशन कन्नड विश्वविद्यालय, हंपी
13. दक्षिण भारत की संत परंपरा में स्त्री स्वर, डॉ. शोभा भार्गव
14. स्त्री और भक्ति आंदोलन, डॉ. विमला ठाकुर, प्रकाशक निवारण पब्लिशर्स दिल्ली



अदृश्य जीवन, अदृश्य साहित्य : हिंदी उपन्यासों में किन्नर समुदाय का प्रतिनिधित्व एवं उसकी सीमाएँ

डॉ. प्रवीन शर्मा

शोध पर्यवेक्षिका,
सह आचार्या, हिंदी विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

अनिल कुमार

शोधार्थी, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़
ईमेल आईडी: akhoth2@gmail.com
सम्पर्क सूत्र : 94664 - 61015

प्रस्तावना

हमारे देश में समाज का एक ऐसा वर्ग मौजूद है जो कि सदियों से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक दृष्टि से हाशिये पर स्थित रहा है। धार्मिक आस्थाएँ तो इन्हें देवी-देवता के समतुल्य मानती हैं परंतु सामाजिक यथार्थ में इस समुदाय के व्यक्तियों को तिरस्कार, उपेक्षा और शोषण का सामना करना पड़ता है। साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है परंतु यह दर्पण भी कई बार कुछ चेहरों का धूंधला प्रतिबिंब दिखाता है, इसका स्पष्ट एवं सजीव उदाहरण हमारे सामने किन्नर समुदाय के रूप में है। आज के समय में जहाँ हाशिये पर स्थित समुदायों की आवाज साहित्य में मुखर होने लगी है तो वहाँ यह जरूरी हो जाता है कि हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर समुदाय जीवन, संघर्ष एवं अस्मिता को यथार्थपरक एवं सशक्त प्रतिनिधित्वों के माध्यम से देखा एवं समझा जाए। इस दिशा में यह शोध पत्र हिंदी साहित्य में रचित किन्नर विमर्श आधारित उपन्यासों में से कुछेक का प्रयोग करते हुए विश्लेषण करता है कि इन रचनाओं में किन्नर समुदाय का प्रतिनिधित्व किस प्रकार किया गया है एवं उनमें कौन-कौन सी सीमाएँ व्याप्त हैं ?

मूल शब्द : अदृश्य जीवन, अदृश्य साहित्य, संघर्ष, सम्वेदना, सहानुभूति, आत्मसंघर्ष आदि।

शोध के उद्देश्य

- (1) किन्नर समुदाय के सामाजिक जीवन एवं संघर्ष का साहित्यिक विश्लेषण करना।
- (2) हिंदी उपन्यासों में किन्नर पात्रों की प्रस्तुत प्रवृत्तियों को पहचानना एवं समझना।
- (3) यह समझना कि किस हद तक हिंदी उपन्यासों में किन्नर व्यक्तियों की सम्वेदना, अस्मिता एवं अधिकारों का चित्रण हुआ है।
- (4) किन्नर विमर्श आधारित उपन्यासों के पात्रों की सीमाएँ पहचानना।

प्रतिपादन

हिंदी साहित्य में किन्नर समुदाय पर केंद्रित कृतियाँ सीमित संख्या में ही उपलब्ध हैं। शुरुआत के दौर में तो किन्नर

व्यक्तियों का चित्रण हास्यस्पद अथवा डरावने पात्रों के रूप में ही होता था किंतु समय के साथ इसमें बदलाव होने शुरू हो गए। समकालीन साहित्यकारों ने किन्नर समुदाय के व्यक्तियों के आत्मसंघर्ष, पीड़ा एवं सामाजिक परतों को पाठकों के समक्ष उजागर करना शुरू किया। साहित्य की निधि से कुछ उपन्यासों का विवरण इस प्रकार किया गया है :-

(क) यमदीप (नीरजा माधव)

संपूर्ण हिंदी साहित्य में किन्नर समुदाय का प्रतिनिधित्व केंद्रीय पात्र के रूप में प्रतिनिधित्व करने वाला यह सर्वप्रथम उपन्यास था। इसके बाद उपन्यासों की परंपरा सी चल पड़ी जोकि किन्नर व्यक्तियों को केंद्रीय पात्र के रूप में प्रस्तुत कर रहे थे। इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र नाजबीबी उर्फ नंदरानी द्वारा समाज में किन्नर समुदाय के प्रति व्याप्त उपेक्षा, घृणा एवं भेदभाव का चित्रण किया गया है। इसके अलावा किन्नर डेरे के गुरु महताब के जरिए किन्नर समुदाय की संस्कृति, यथार्थवादी स्थिति एवं देश के प्रति उनकी भक्ति को भी दिखाया गया है।

सीमा :- चूंकि यह उपन्यास अपनी परंपरा में सबसे पहला प्रयोग था अतएव किन्नर समुदाय द्वारा प्रयुक्त होने वाली क्लिष्ट भाषा के शब्दों को इसमें बिना संशोधन के ही रख दिया गया है जिन्हें आमजन को समझने में कठिनाई होती है। इसके अतिरिक्त उपन्यास की कथा का क्रम इतना सुव्यवस्थित नहीं दिखता है।

(ख) मैं भी औरत हूँ (डॉ. अनुसूइया त्यागी)

इस उपन्यास की लेखिका पेशे से स्वयं एक डॉक्टर है एवं उपन्यास की कथा भी उसके किसी वास्तविक मरीज की कथाएँ हैं। लेखिका ने ही उपन्यास में वर्णित किन्नर पात्रों मंजुला एवं रोशनी (परिवर्तित नाम) को शल्य चिकित्सा द्वारा नवीन जीवन प्रदान किया था। इन दोनों बहनों में रोशनी पूर्ण स्त्री नहीं बन पाती है एवं इसी पात्र को केंद्र में रखकर इस उपन्यास की रचना की गई है। रोशनी के माध्यम से लेखिका किन्नर समुदाय के व्यक्तियों को शिक्षा का मार्ग अपनाने हेतु प्रेरित करती है।

उपलब्धि :- उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि एक तो किन्नर समुदाय के व्यक्ति को शल्य चिकित्सा के सहारे नवीन जीवन प्रदान किया जा सकता है एवं दूसरा यह है कि किन्नर समुदाय के व्यक्तियों हेतु भी यदि भेदभाव रहित एवं सम्मानजनक शिक्षा के अवसर उपलब्ध करवा दिए जाए तो वे भी अपने दलदली जीवन से उभर सकते हैं।

सीमा :- इस उपन्यास में काल्पनिकता का समावेश ज्यादा ही कर दिया गया है, यथा; रोशनी और मंजुला के व्यस्क होने तक भी उनकी माँ एवं अन्य किसी को उनके किन्नर होने का पता न चलना एवं सरोगेट मदर इला सावंत से उत्पन्न पुत्र मयंक सावंत का ओंकार एवं रोशनी की दंतक पुत्री तेजस्विनी के जरिए मिलाप होना।

(ग) तीसरी ताली (प्रदीप सौरभ)

इस उपन्यास में किन्नर समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले विनीत से विनीता बने पात्र शुरू में अन्य किन्नर व्यक्तियों की ही भंति दर्द एवं संघर्ष के एक लंबे दौर से गुजरता है किंतु जब उसे पिता रूप में कांस्टेबल राजचौधरी का सहयोग मिलता है तो वह संपूर्ण किन्नर समुदाय में 'गे क्वीन' नाम से विख्यात हो जाता है। विनीता अपने संपूर्ण समुदाय हेतु प्रेरणा स्रोत रूप में प्रस्तुत होता है।

उपलब्धि :- उपन्यास संपूर्ण किन्नर समुदाय को भिक्षावृत्ति नहीं अपितु मेहनत का मार्ग अपनाने की अपील करता है।

सीमा :- उपन्यास में डिम्पल नामक किन्नर का नकारात्मक चित्रण इस उपन्यास के व्यक्तियों के प्रति समाज में गलत चित्रण प्रस्तुत करता है जोकि किन्नर समुदाय की प्रगति में किसी भी जगह बाधक रूप में सामने आ सकता है। हालांकि डिम्पल का बाद में पश्चाताप एवं राजा व मंजू को मिलाने की प्रयास कोषिषें दिखाई गई हैं।

(घ) पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा (चित्रा मुद्गल)

इस उपन्यास का पात्र बिमली उर्फ विनोद समाज में प्रचलित इस मान्यता का खंडन करता है कि केवल आरक्षण देने भर से किन्नर समुदाय का जीवन सामान्य हो जाएगा। विनोद का मानना है कि किन्नर समुदाय को आरक्षण देने के पीछे

एक सोची समझी राजनीतिक साजिश है, और वह यह है किन्नर समुदाय का उत्थान न कर उनका बस वोट बैंक की तरह इस्तेमाल करना। उपन्यास में विनोद को शिक्षा एवं मेहनत द्वारा समाज में अपना स्थान बनाने की दिशा में प्रसारित दिखाया गया है।

उपलब्धि :- उपन्यास में किन्नर समुदाय की भलाई हेतु शिक्षा को अनिवार्य माना गया है एवं उपन्यास के अंत में विनोद को अपने पिता हरीन्द्र द्वारा घर वापसी हेतु अपील एवं वसीयत में बराबर की हिस्सेदारी प्रदान करना किन्नर समुदाय को सामाजिक स्वीकृति दिलाने की दिशा में एक अहम कदम साबित हो सकता है।

सीमा :- चूंकि यह उपन्यास विनोद एवं उसकी माँ के बीच लिखे गए 17 पत्रों को आधार बनाकर रचित है, अतः एव उपन्यास में कहीं-कहीं पत्रात्मक शैली का प्रभाव देखा गया है।

(ड) अस्तित्व (गिरिजा भारती)

जैसा कि शीर्षक से ही विदित है, यह उपन्यास अस्तित्व की खोज हेतु कथा है, उन लोगों की जिन्हें समाज द्वारा ठुकरा दिया गया है। इस उपन्यास की पात्र प्रीत एक आज्ञाकारी एवं जिम्मेवार पुत्री, सदा साथ निभाने वाली बहन एवं मुसीबत में साथ देने वाले ननंद के रूप में चित्रित हुई है। प्रीत उदार हृदय वाली एक लड़की थी जिसने अपनी भाभी रंजना द्वारा उसके खिलाफ साजिशें करने पर भी उसकी क्लीनिक खोलने में मदद की थी।

उपलब्धि :- उपन्यास समाज में किन्नर समुदाय के प्रति सोच में सकारात्मक बदलाव दिखाता है।

सीमा :- यह बात पाठक को हैरान कर देती है कि प्रीत के बड़े होने तक परिवार में किसी को भी उसके किन्नर होने का पता कैसे नहीं चला ?

(च) दरमियाना (सुभाष अखिल)

उपन्यास का शीर्षक स्वयं यह बयान कर रहा है कि इसकी कथावस्तु उन व्यक्तियों की है जो कि समाज के स्त्री एवं पुरुष नामक ढाँचे में फिट न बैठकर जीवन भर बीच वाले होकर रह जाते हैं। उपन्यास पाँच प्रसंगों द्वारा पाँच किन्नर पात्रों का चित्रण करता है जिन से उसकी अपने जीवन में चाहते अथवा न चाहते हुए भी भेंट होती है। उपन्यास के पात्र सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में संघर्षित देखे जा सकते हैं।

सीमा :- उपन्यास कथावाचक आषु को अपने जीवन में मिले किन्नर पात्रों के जीवन को आधार बनाकर रचित है अतः एव यह उपन्यास कम आत्मकथा ज्यादा प्रतीत होता है। दूसरा यह है कि भिन्न - भिन्न प्रयुक्त प्रसंगों के कारण उपन्यास पढ़ने के क्रम में बाधा उत्पन्न होने लगती है।

विश्लेषण एवं सीमाएँ

उक्त उपन्यासों का विश्लेषण स्पष्ट करता है कि

(1) किन्नर पात्रों का प्रतिनिधित्व तो बढ़ा है किंतु अभी भी पीड़ित विमर्श हावी बना हुआ है।

(2) ज्यादातर उपन्यासों में किन्नर पात्रों को सहानुभूति व करुणा का ही पात्र दिखाया गया है, नायक अथवा केंद्र में उन्हें कम ही स्थान मिल पाया है।

(3) कुछ उपन्यासों में प्रयुक्त आत्मकथमक शैली व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य को पीछे छोड़ देती है, हालांकि वह यथार्थ की तीव्रता अवश्य बनाती है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य के किन्नर विमर्श आधारित उपन्यासों में किन्नर समुदाय के व्यक्तियों का चित्रण समय के साथ-साथ अधिक यथार्थपरक एवं मानवीय तो हुआ है किंतु अभी भी इनमें कई सीमाएँ विद्यमान हैं। साहित्य में किन्नर समुदाय को मात्र पीड़ा एवं दर्द के संदर्भ में ही नहीं अपितु उनके योगदान, विचार, शक्ति एवं संघर्ष की व्यापकता के साथ भी प्रस्तुत करना

चाहिए। समाज में मात्र सहानुभूति ही नहीं समानता की आवश्यकता है और यह कार्य साहित्य से ही संभव है।

संदर्भ

- (1) यमदीप, नीरज माधव, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, 2018
- (2) मैं भी औरत हूँ, डॉ. अनसूया त्यागी, परमेश्वरी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
- (3) तीसरी ताली, प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
- (4) पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोंपारा, चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019
- (5) अस्तित्व, गिरिजा भारती, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2018
- (6) दरमियाना, सुभाष अखिल, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2018



वर्तमान भारत में बालगंगाधर तिलक के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता

गायत्री देवी

शोधार्थिनी, राजनीति विज्ञान

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट सतना (म.प्र.)

संपर्क-9125854958, ईमेल- devikomai085@gmail.com

प्रो. नीलम चौरे

विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय

विश्वविद्यालय चित्रकूट सतना (म.प्र.)

शोध सार

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भारतीय राजनीति के अनोखे विचारक थे। तिलक का सबसे प्रमुख राजनीतिक विचार स्वराज को अपनाना था। जिसका अर्थ है भारतवासियों के लिए स्वशासन की स्थापना करना। बाल गंगाधर तिलक जी कहते थे- “स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा।”¹

समाज को एक नई दिशा प्रदान करने के लिए लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल के साथ मिलकर बाल गंगाधर तिलक ने ‘लाल बाल पाल’ की तिगड़ी का गठन किया था। यह तिगड़ी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गरम दल या उग्रपंथी दल के रूप में जानी जाती थी। तिलक ने स्वीकार किया है कि भारत में राष्ट्रीयता का विकास सभी संप्रदायों के मध्य पारस्परिक सौहार्द और विश्वास पर निर्भर था। वर्तमान में जो ‘सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास’ की अवधारणा विकसित है कहीं न कहीं उसके उत्स तिलक की विचारधारा में ही हैं।

बीज शब्द- राष्ट्रीयता, स्वराज, देश प्रेम, स्वावलंबी, राष्ट्रवादी भावना, गरम दल, जन्मसिद्ध अधिकार, धार्मिक एकता।

प्रस्तावना

सन् 1856 में महाराष्ट्र के रत्नागिरी नामक शहर में जन्मे बाल गंगाधर तिलक देशभक्त, राष्ट्र निर्माता और भाव प्रणेता का भारतीय इतिहास में एक अनूठा स्थान है। तिलक समाज सुधारक से पहले राजनीतिक सुधारक थे किंतु वह कभी भी रूढ़िवादी न थे और पुरानी परिपाटी को बदलने के पक्ष में थे। उनके अनुसार-“मैं इसमें विश्वास नहीं करता कि राजनीतिक शक्ति के पूर्व सामाजिक पुनः निर्माण का प्रयत्न करना चाहिए। जब तक हमें अपना भविष्य स्वयं निश्चित करने की शक्ति नहीं प्राप्त हो जाती तब तक मेरी राय में राष्ट्रीय पुनर्जागरण नहीं लाया जा सकता। मैंने अपने जीवन में सदा इसी विश्वास का प्रचार किया है, जब मैंने एक ‘ऑफ कंसेंट बिल’ का विरोध किया था तो वह मुख्यतः केवल इसी आधार पर मैं न तो तब समझा था और न ही अब समझता हूँ कि, ऐसा कोई भी विधानमंडल जो जनता के प्रति उत्तरदायी नहीं है सामाजिक विषयों पर कानून बनाने के लिए सक्षम है।”²

“बाल गंगाधर तिलक ने समाज की शिक्षा व्यवस्था सुधारने के लिए 1 जनवरी 1880 को न्यू इंग्लिश स्कूल प्रारंभ किया था। वह एक पत्रकार के रूप में समाज पत्रों का प्रकाशन भी किया करते थे। जिसमें अंग्रेजी में ‘मराठा’, मराठी में ‘केसरी’

समाचार पत्र प्रकाशित किया तथा समाज को एक अच्छी सोच एवं दिशा निर्देश देने के लिए सन् 1885 में 'दक्कन एजुकेशन सोसाइटी' नाम से एक सार्वजनिक संस्था की स्थापना किया। इतना ही नहीं जनता को प्राचीन संस्कृति के प्रति आत्म गौरव की भावना जागृत करने के लिए शिवाजी महोत्सव व गणेश महोत्सव आरंभ किया। सन् 1961 में तिलक के प्रयासों से ही कांग्रेस व मुस्लिम लीग के मध्य लखनऊ समझौता हुआ।³

प्रस्तुत शोध पत्र में बाल गंगाधर तिलक जी के राजनीतिक विचारों का वर्तमान भारत के निर्माण में महत्त्व का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

बालगंगाधर तिलक का राजनीतिक चिंतन

बाल गंगाधर तिलक की राष्ट्रवादी सोच नवजागरणवादी थी। उन्होंने धार्मिक शास्त्रों से आध्यात्मिक ताकत और राष्ट्रीय उत्साह ग्रहण करने का सन्देश दिया और भारतीय प्राचीन परम्पराओं के आधार पर भारत में राष्ट्रवाद की स्थापना करने की बात कही थी। 13 दिसम्बर 1919 को मराठा नामक समाचार पत्र के अंक में उन्होंने कहा था -“सच्चा राष्ट्रवादी पुरानी नींव पर ही निर्माण करना चाहता है, जो सुधार पुरातन के प्रति घोर असम्मान की भावना पर आधारित है। उसे सच्चा राष्ट्रवादी रचनात्मक कार्य नहीं समझता। हम अपनी संस्थाओं को अंग्रेजियत के ढांचे में नहीं डालना चाहते। सामाजिक तथा राजनैतिक सुधार के नाम पर हम उनका अराष्ट्रीयकरण नहीं करना चाहते।”⁴ तिलक ने बताया था कि, उन्होंने शिवाजी और गणपति उत्सवों को प्रोत्साहन इसलिए दिया है कि उनके द्वारा वर्तमान घटनाओं और आन्दोलनों का ऐतिहासिक परम्पराओं के साथ सम्बन्ध जोड़े जा सकें।

तिलक ने राष्ट्रवाद को एक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक धारणा बताया थी। उनका मानना था कि “प्राचीनकाल में आदिम जातियों के मन में अपने कबीले के प्रति जो भक्ति रहती थी, उसी का आधुनिक नाम राष्ट्रवाद है।”⁵ इस राष्ट्रवाद का सम्बन्ध तीव्र संवेगों और अनुभूतियों से है। पहले जो आत्मिक प्रभाव और लगाव एक क्षेत्र विशेष तक सीमित थे, वे अब राष्ट्रवाद के अन्तर्गत सम्पूर्ण राष्ट्र में व्याप्त हो गया। यही कारण है कि वर्तमान राष्ट्रवाद की भावना किसी क्षेत्र विशेष के प्रति नहीं वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रति अनुभव की जाती है। जो राष्ट्रवाद राष्ट्रीय एकता पर आधारित होता है वही सच्चा और स्वस्थ राष्ट्रवाद है। तिलक की मान्यता थी कि विभिन्न विचारधाराओं जाति भेदों, अस्वस्थ मत-मतान्तरों आदि के कारण देश में राष्ट्रीयता की भावना उस तेजी से नहीं पनप सकती जिस तेजी से यह समान भाषा, समान धर्म और समान संस्कृति वाले देश में उत्पन्न हो सकती है, इसलिए उन्होंने भारत की राष्ट्रीय एकता के लिए आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक तत्वों पर बराबर बल दिया। ये तत्व प्राचीन काल से ही भारत में विद्यमान थे पर अब आवश्यकता उन्हें फिर से जगाने और प्राप्त करने की थी।

तिलक के जीवनीकार रामगोपाल ने तिलक की राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एकता की भावना को इस प्रकार परिभाषित किया है- “तिलक के प्रत्येक काम और प्रत्येक भाषण में एकता की भावना सर्वोपरि रहती थी, चाहे वह धार्मिक भाषण हो चाहे राजनीतिक, सामाजिक हो या कोई अन्य। वे जनता की राजनीतिक चेतना को ही नहीं वरन् गत और अनागत के संयोग से जनता की आत्मा को भी जानना चाहते थे। समाज सुधार आन्दोलन से अलग होने के फलस्वरूप उन्होंने पुराणपन्थी और धार्मिक भारत को जनतान्त्रिक राजनीति के पथ पर लाने के लिए विश्वस्त और अधिकारी नेता की अनोखी भूमिका निभाई।”⁶

स्वशासन बालगंगाधर तिलक का सर्वप्रथम राजनीतिक विचार था, जिसका अर्थ भारतवासियों के लिए अपने राज की स्थापना करना था। उन्होंने जनता में स्वराज के लिए एक नया उत्साह उत्पन्न किया था। तिलक द्वारा देशवासियों को अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध जागरण के लिए प्रोत्साहित करने हेतु धार्मिक ग्रंथों का सहारा लिया गया। “उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या कर्म-योग के रूप में की थी, जिसमें निष्ठा के साथ कर्तव्य पालन की बात कही गई है। जिसमें निजी हितों का परित्याग करना पड़ता है। गीता के अंतर्गत कृष्ण अर्जुन को कर्तव्य पालन के रूप में लड़ने के लिए प्रेरित किया ताकि, धर्म और न्याय की स्थापना हो सके।”⁷

तिलक का प्रयोजन देश की जनता को बड़ी संख्या में राजनीतिक गतिविधियों के लिए इकट्ठा करना था। उन्होंने जनता

के मन पर अत्यंत प्रभाव डाला था इसी कारण उन्हें लोकमान्य की उपाधि दी गयी था।

“तिलक ने एनी बेसेंट की मदद से होम रूल लीग की स्थापना 1916 में की थी। जो भारत में स्वराज की माँग को आगे बढ़ाने के लिए स्थापित की गई थी। उनका संपूर्ण जीवन देशभक्ति और देश के लिए त्याग व बलिदान के लिए समर्पित था। उन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष में साहसी नेतृत्व प्रदान किया था।”⁸

वर्तमान में तिलक के विचारों की प्रासंगिकता

बालगंगाधर तिलक की मान्यता थी कि, राजनीतिक कार्रवाई हेतु भारतीयों को एकजुट करने की जरूरत है। उनके द्वारा ‘केसरी’ और ‘मराठा’ नामक अखबारों के जरिए जनता को प्रभावित किया था तथा बड़ी संख्या में सार्वजनिक सभाओं के आयोजन को बढ़ावा देकर देश को नई दिशा प्रदान की।

तिलक ने बौद्धिक चर्चाओं एवं राजनीतिक कार्रवाइयों पर बल दिया। उनके द्वारा भारतीय जनता को अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध जागरूक होने तथा स्वराज पाने हेतु प्रेरणा प्रदान की गई।

बाल गंगाधर तिलक का मानना था कि, सामाजिक समस्याओं का समाधान राजनीतिक आजादी से संबद्ध था। वे समाज में व्याप्त बुराइयों के प्रति भी जागरूक थे तथा उनका विचार था कि, राजनीतिक जागरण के साथ-साथ सामाजिक विद्रूपताओं की भी समाप्ति होनी चाहिए।

तिलक द्वारा गणेश पूजन उत्सव जैसे धार्मिक आयोजनों का उपयोग आत्मजन मानस को एक स्थान पर लाने और उन्हें राजनीतिक उद्देश्यों के लिए सक्रिय करने के लिए किया था। जिससे सत्ता के खिलाफ भावनाएँ प्रबल हुई थीं।

बालगंगाधर तिलक द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद की अभिवृद्धि में सामूहिक उत्सवों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था। राष्ट्रीयता के आवेश को ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय रंग देने के लिए उन्होंने शिवाजी उत्सव का आयोजन किया था। शिवाजी उत्सव के माध्यम से राष्ट्रीय भावनाओं को उभारने और संगठित करने का कार्य किया था। उनकी दृष्टि में उत्सवों का दोहरा महत्व था एक ओर जहाँ इनके माध्यम से एकता की भावना की अभिव्यक्ति होती है वहीं दूसरी ओर उत्सवों में भाग लेने वाले व्यक्ति यह अनुभव करने लगते हैं कि, उनके संगठन और उनकी एकता के माध्यम से किसी श्रेष्ठतर कार्य को किया जा सकता है। राष्ट्रीय उत्सव, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज जैसे राष्ट्रीय प्रतीक जनता के संवेगों और मान्यताओं में जान फूँकने का कार्य करते हैं। ऐसे प्रतीक देशवासियों की राष्ट्रवादी भावना को जाग्रत करते हैं इससे सांस्कृतिक विकास होता है और संपूर्ण राष्ट्रवाद का निर्माण होता है।

सच्चे हिन्दू हृदय सम्राट तिलक द्वारा गणपति उत्सव को सामूहिक रूप से मनाये जाने का आयोजन हिन्दू तथा मुस्लिम दंगों के कारण प्रारम्भ किया गया था। यह तत्कालीन समाज में मुसलमानों के मुहर्रम उत्सव के आयोजन से हिन्दुओं को अलग करने का एक प्रयास था। तिलक गणपति उत्सव को सार्वजनिक रूप देना चाहते थे जिससे मुहर्रम का आकर्षण खत्म हो एवं हिन्दू लोग उसमें सहभागी न बनें। भगवान गणेश विद्या और बुद्धि के प्रतीक हैं तथा विघ्नहर्ता हैं। हिन्दुओं के प्रत्येक शुभ अवसर में उनकी पूजा होती है। इसलिए तिलक को गणपति जनप्रिय देवता के रूप में प्राप्त हुए। गणेशोत्सव की योजना मुसलमानों के हिन्दू विरोधी कार्यों एवं सरकार द्वारा उनके पक्षपात पूर्ण कार्यों विरोध में बनाई गई थी। इसके द्वारा जनता को शीघ्र आकर्षित किया गया था। यह योजना सामाजिक एकता और राजनैतिक जागृति का एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुई थी।

समाज सुधारकों द्वारा गणेश पूजा की खिल्ली उड़ाई गई थी क्योंकि, योजना की कार्यविधि धार्मिक त्योहारों का अनुकरण थी। तिलक द्वारा आलोचकों को उत्तर देते हुए कहा गया- “जो यह कहते हैं कि, गणपति की झांकियाँ मुसलमानों के ताजियों की नकल हैं। उन्होंने आषाढ़ और कार्तिक की एकादशी की भजन मण्डलियों को नहीं देखा है लेकिन ओलम्पिक का खेल, नगाड़ों की गड़गड़ाहट और इसी प्रकार के अन्य कार्य प्रायः हर मेले में होते हैं। पिछले दो-तीन सौ वर्षों से बहुत से हिन्दू मुहर्रम के अवसर पर मुसलमान पीरों की मनौनी मानते रहे हैं। कारण हम हर धर्म का मान करते हैं लेकिन मुसलमान पुराने

मेलजोल को छोड़कर, बदमाशों के बहकावे में आकर हिन्दू साधुओं को नियमित रूप से तंग करने लगे। इससे भेदभाव उत्पन्न होना अनिवार्य ही था।”⁹

तिलक ने ‘केसरी’ के द्वारा और अपने भाषणों से सारे महाराष्ट्र में उसका प्रचार भी किया। प्राचीन यूनान देश के ओलम्पिक त्यौहार और अन्य देशों के राष्ट्रीय पर्वों का उदाहरण देते हुए उन्होंने जोरदार शब्दों में जनता से अनुरोध किया कि, वह गणपति उत्सव में पूरा सहयोग दें। यह उत्सव शुरू से ही बिना जाति-पाँति के भेदभाव के मनाया जाता था।

तिलक का कथन है- “धार्मिक विषयों का चिन्तन और पूजा तो एकान्त में ही सम्भव है किन्तु, जनता को पुनर्जाग्रत करने के लिए कुछ प्रदर्शन आवश्यक है। इसी राष्ट्रीय भाषा के कारण यह उत्सव केवल पारिवारिक त्यौहार न रहकर शीघ्र ही सार्वजनिक पर्व बन गया। यह परिवर्तन ध्यान देने योग्य है क्योंकि, हिन्दू धर्म में पूजा अधिकतर वैयक्तिक या पारिवारिक रूप में होती है। ईसाई धर्म या इस्लाम की भाँति हिन्दुओं में सामूहिक रूप से पूजा नहीं होती किन्तु, राष्ट्रीयता की भावना का विकास होने से गणपति उत्सव शीघ्र ही सामूहिक रूप पा गया।”¹⁰

आज भी सामाजिक रूप से भटके हुए युवा सार्वजनिक उत्सवों में सहभागिता कर अपने जीवन में एकता, सौहार्द और धार्मिक भावना को सुदृढ़ करते हैं। तिलक की राष्ट्रवादी सोच अंग्रेजों की विरुद्ध थी परन्तु आज राष्ट्रवाद से अभिप्राय देश को अराजकतावादी तत्त्वों से देश को सुरक्षित करना है, साथ ही साथ अपने पर अंग्रेजियत को हावी न होने देने से है।

निष्कर्ष- इस प्रकार बालगंगाधर तिलक की राष्ट्रवादी सोच उतनी ही आज भी प्रासंगिक है जितनी उस समय थी। कहीं न कहीं सार्वजनिक गणेश पूजन हो, दुर्गा पूजा हो या रामलीला जैसे उत्सव उन्हीं के जीवित हैं।

तिलक कट्टर हिन्दूवादी चिंतक थे। जिन्होंने राष्ट्रवाद के विकास का आधार सार्वजनिक पूजन को स्वीकार किया था। उनके द्वारा अंग्रेजी सत्ता का विरोध इस ढंग से किया कि गोरे गोरे भी उनकी रणनीति का लोहा मानते थे। वर्तमान में उनकी राजनीतिक विचारधारा बड़ी ही प्रासंगिक है क्योंकि आज भी देश में राजनीतिक परिदृश्य सच्चे राष्ट्रवादी चिंतन की सख्त आवश्यकता है।

संदर्भ

1. बाखे, एस. एम. (1983), लोकमान्य बालगंगाधर तिलक और विवेकानंद के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन, पृ.-155.
2. सिंह, गजेन्द्र, (2001), बालगंगाधर तिलक, न्यू साधना पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, पृ.-263.
3. वर्मा, वी. पी. (2002), आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ.-202.
4. जैन, डॉ. पुखराज, एवं फड़िया, डॉ. बी. एल. (2024), साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ.-165.
5. गाबा, ओ. पी. (2022), भारतीय राजनीति-विचारक, नेशनल पेपरबैक्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ.-185.
6. नागर, डॉ. पुरुषोत्तम (2021), आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ.-328.
7. माथुर, डॉ. चंद्रकांता के. (2024), राजनीतिक चिंतन के भारतीय शिल्पकार, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.-408.
8. शर्मा, संजीव कुमार (2023), राजनीतिक चिंतन की भारतीय दृष्टि, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.-589.
9. सिंह, डॉ. ज्ञानेन्द्र विक्रम एवं पाठक, डॉ. कुलदीप कुमार (2022), भारत में राजनीतिक प्रक्रिया, ठाकुर पब्लिकेशन्स, लखनऊ, पृ.-239.
10. वर्मा, विजय कुमार एवं पाल, अखिलेश (2018), आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, हैदराबाद, पृ.-186.



वैश्विक शांति में महात्मा गांधी की भूमिका: प्रभाव और समाधान

प्रो. चन्द्रशेखर सिंह
समाज कार्य विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

सारांश

विश्व शांति की अवधारणा केवल राजनीतिक स्थिरता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवता, सह-अस्तित्व, करुणा और अहिंसा के आदर्शों से भी जुड़ी हुई है। बीसवीं शताब्दी के महानतम मानवतावादी महात्मा मोहनदास करमचंद गांधीने अपने विचारों, कर्मों और दर्शन से न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व को प्रभावित किया। गांधी जी का “अहिंसा”, “सत्य”, “सर्वोदय” और “सत्याग्रह” का सिद्धांत आज भी विश्व शांति के लिए मार्गदर्शक है। यह लेख गांधी जी की भूमिका का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाता है कि उनके सिद्धांत आज भी अंतरराष्ट्रीय संघर्षों, सामाजिक असमानताओं और सांस्कृतिक असहिष्णुता के समाधान में कितना प्रासंगिक हैं।

परिचय

आज का विश्व अनेक प्रकार के संकटों से गुजर रहा है - धार्मिक कट्टरता, आर्थिक विषमता, युद्ध, आतंकवाद, और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी चुनौतियाँ शांति के लिए गंभीर खतरा हैं। ऐसे युग में महात्मा गांधी का शांति-दर्शन मानवता के लिए प्रकाशस्तंभ के समान है। गांधी जी ने कहा था कृ“अहिंसा मानवता का सबसे बड़ा धर्म है।” उन्होंने शांति को केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं माना, बल्कि मनुष्य के भीतर की करुणा और नैतिकता की अभिव्यक्ति समझा। उनके विचारों ने न केवल भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा दी, बल्कि विश्वभर में शांति, मानवाधिकार, और नागरिक अधिकार आंदोलनों को प्रेरित किया। गांधी जी की जीवन-दृष्टि ने यह सिद्ध किया कि नैतिक शक्ति, भौतिक शक्ति से कहीं अधिक प्रभावशाली होती है। विश्व का इतिहास यह प्रमाणित करता है कि मानव सभ्यता ने अपनी दीर्घ यात्रा में जितनी प्रगति विज्ञान, तकनीक, राजनीति और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में की है, उतनी ही गहराई से वह हिंसा, संघर्ष और युद्ध के अनुभवों से भी गुजरी है। बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दी के मोड़ पर विश्व एक ओर अभूतपूर्व तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण की ओर बढ़ा, वहीं दूसरी ओर मानवता ने असहिष्णुता, आतंकवाद, धार्मिक उग्रता, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट, और नैतिक पतन जैसी चुनौतियों का भी सामना किया। ऐसी परिस्थिति में विश्व समुदाय के समक्ष सबसे बड़ी आवश्यकता है - वैश्विक शांति (Global Peace) की स्थापना। शांति केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं होती, बल्कि यह मनुष्य के मन, समाज और राष्ट्रों के बीच संतुलन, समरसता और करुणा की स्थिति है। आज जब आधुनिक विश्व की राजनीति शक्ति और स्वार्थ के आधार पर संचालित हो रही है, तब यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि शांति की खोज कहाँ से आरंभ की जाए। इस संदर्भ में महात्मा

मोहनदास करमचंद गांधी का जीवन और दर्शन आज भी एक प्रासंगिक और प्रेरणादायक प्रकाशस्तंभ के समान है। गांधी जी का योगदान केवल भारत की स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहाय उन्होंने अपने विचारों और आचरण से पूरी मानवता को एक नया नैतिक मार्ग दिखाया। उन्होंने यह स्थापित किया कि सत्य (Truth) और अहिंसा (Non-Violence) न केवल व्यक्ति के आंतरिक जीवन को शुद्ध करते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्रों के बीच स्थायी शांति का आधार भी बन सकते हैं।

गांधी जी ने शांति को एक आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक स्थिति के रूप में देखा। उनके अनुसार, “अहिंसा मानवता का सर्वोच्च धर्म है।” गांधी जी का जीवन दर्शन भारतीय संस्कृति की उस गहरी परंपरा से प्रेरित था जिसमें “वसुधैव कुटुम्बकम्” - अर्थात् संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की भावना निहित है। उन्होंने सत्याग्रह, अहिंसा, सर्वोदय, और स्वराज जैसे सिद्धांतों के माध्यम से यह संदेश दिया कि शांति केवल हथियारों या संधियों से नहीं, बल्कि मनुष्य की चेतना में परिवर्तन से उत्पन्न होती है। उनके विचारों में “सत्याग्रह” का अर्थ केवल विरोध नहीं, बल्कि आत्मबल के माध्यम से अन्याय और हिंसा के विरुद्ध नैतिक प्रतिरोध था। गांधी जी का शांति-दर्शन पश्चिमी अर्थों में राजनीतिक नहीं, बल्कि नैतिक और मानवतावादी दर्शन था। उन्होंने कहा— “शांति की शुरुआत स्वयं से होती है।” अर्थात् जब व्यक्ति अपने भीतर की हिंसा - जैसे घृणा, ईर्ष्या, लालच और अहंकार - को समाप्त करता है, तभी समाज और राष्ट्रों में वास्तविक शांति संभव होती है। यह दृष्टिकोण आज के समय में अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि आधुनिक सभ्यता में बाहरी विकास की गति ने आंतरिक मूल्यों की अनदेखी की है। गांधी जी की शांति-साधना केवल भारतीय संदर्भ में नहीं रही, बल्कि उसका प्रभाव विश्वभर में फैल गया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह का पहला प्रयोग किया, जिससे उन्होंने यह सिद्ध किया कि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष बिना हिंसा के भी सफल हो सकता है। बाद में उनके इन्हीं सिद्धांतों ने अमेरिका के मार्टिन लूथर किंग जूनियर, दक्षिण अफ्रीका के नेल्सन मंडेला, तिब्बत के दलाई लामा, और म्यांमार की आंग सान सू की जैसे नेताओं को प्रेरित किया। इन सभी ने अहिंसा और नैतिक शक्ति के बल पर अपने-अपने देशों में स्वतंत्रता, समानता और शांति के लिए संघर्ष किया। वर्तमान समय में जब विश्व पुनः युद्ध, आतंकवाद, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और पर्यावरणीय संकटों से जूझ रहा है, तब गांधी जी का दर्शन हमें यह सिखाता है कि स्थायी शांति केवल बाहरी समझौते से नहीं, बल्कि नैतिकता, सह-अस्तित्व और आत्मसंयम से संभव है। उनके विचार आज भी संयुक्त राष्ट्र (UN), यूनेस्को (UNESCO) और विश्व शांति परिषद जैसी संस्थाओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो रहे हैं।

इस प्रकार, गांधी जी का शांति-दर्शन न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समकालीन समय की सबसे ज्वलंत आवश्यकताओं को जैसे वैश्विक सहयोग, पर्यावरणीय संतुलन, मानवाधिकारों की रक्षा, और सांस्कृतिक सहिष्णुता - के लिए भी एक व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करता है। गांधी जी के सिद्धांतों का सार यह है कि “शक्ति का आधार हिंसा नहीं, बल्कि सत्य और करुणा है।”

गांधी जी का शांति दर्शन

महात्मा गांधी का शांति दर्शन भारतीय संस्कृति, वैदिक परंपरा, और सार्वभौमिक मानव मूल्यों से गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने जिस शांति की कल्पना की, वह केवल युद्ध या हिंसा की अनुपस्थिति नहीं थी, बल्कि मनुष्य की आत्मा, समाज और प्रकृति के बीच एक नैतिक और आध्यात्मिक संतुलन की स्थिति थी। गांधी जी के अनुसार, “शांति का मार्ग केवल सत्य और अहिंसा से होकर गुजरता है।” उनके जीवन का प्रत्येक कार्य - चाहे वह राजनीतिक आंदोलन हो या सामाजिक सुधार—इसी शांति-दर्शन पर आधारित था।

गांधी जी ने माना कि शांति केवल बाहरी परिस्थिति से उत्पन्न नहीं होती, बल्कि यह मनुष्य के अंतर्मन की स्थिति है। जब व्यक्ति अपने भीतर की हिंसा - जैसे घृणा, ईर्ष्या, स्वार्थ, और लोभ को समाप्त करता है, तभी वह सच्चे अर्थों में शांतिपूर्ण जीवन जी सकता है। इस विचार में उन्होंने आंतरिक और बाह्य शांति को एक-दूसरे का पूरक माना।

1. सत्य का सिद्धांत :-

गांधी जी ने सत्य को ईश्वर के समान माना। उनका प्रसिद्ध कथन है—“सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है।” गांधी जी के लिए सत्य कोई अमूर्त सिद्धांत नहीं, बल्कि एक जीवित नैतिक शक्ति थी। वे कहते थे कि मनुष्य का सर्वोच्च कर्तव्य है सत्य की खोज और उसका पालन करना। उनके लिए शांति का पहला और सबसे महत्वपूर्ण आधार सत्य था, क्योंकि यदि व्यक्ति और समाज सत्य के मार्ग पर चलते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हिंसा और संघर्ष समाप्त हो जाते हैं। सत्य का अर्थ केवल तथ्यात्मक सत्य नहीं, बल्कि नैतिक सत्य है - अर्थात् जो न्याय, समानता, और करुणा से प्रेरित हो। गांधी जी ने यह भी कहा कि “सत्य के बिना अहिंसा संभव नहीं है, और अहिंसा के बिना सत्य अधूरा है।” इस प्रकार, उनके शांति दर्शन में सत्य और अहिंसा परस्पर पूरक तत्व हैं।

2. अहिंसा का सिद्धांत :-

गांधीजी ने कहा, “अहिंसा केवल एक नीति नहीं, बल्कि जीवन का धर्म है।” उनके लिए अहिंसा का अर्थ केवल शारीरिक हिंसा का अभाव नहीं था, बल्कि विचार, वाणी और व्यवहार में भी हिंसा का अभाव था। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यदि हम अपने भीतर की हिंसक वृत्तियों को जैसे घृणा, ईर्ष्या, स्वार्थ, और क्रोध पर नियंत्रण कर लें, तो बाहरी शांति स्वाभाविक रूप से स्थापित हो सकती है। गांधी जी का सबसे प्रसिद्ध और प्रभावशाली सिद्धांत “अहिंसा” है। उन्होंने अहिंसा को केवल नीति या रणनीति नहीं, बल्कि जीवन का धर्म बताया। उनके अनुसार—“अहिंसा केवल मनुष्य का गुण नहीं, बल्कि उसकी आत्मा का स्वभाव है।” गांधी जी ने अहिंसा को तीन स्तरों पर परिभाषित किया—

1. विचारों में अहिंसा: दूसरों के प्रति घृणा, द्वेष या शत्रुता का त्याग।
2. वाणी में अहिंसा: शब्दों द्वारा दूसरों को आहत न करना।
3. कर्म में अहिंसा: शारीरिक या मानसिक रूप से किसी को कष्ट न पहुँचाना।

उनका मानना था कि अहिंसा एक सक्रिय शक्ति है, जो अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का माध्यम बन सकती है। यह कमजोरी की नहीं, बल्कि आत्मबल की निशानी है। गांधी जी कहते थे—“अहिंसा कायरों के लिए नहीं, वीरों के लिए है।” उनके जीवन का सबसे बड़ा प्रयोग था अहिंसक प्रतिरोध (Non-violent Resistance) जिसके माध्यम से उन्होंने अन्यायपूर्ण सत्ता और हिंसक प्रणाली के विरुद्ध बिना हथियार उठाए संघर्ष किया।

3. सत्याग्रह का सिद्धांत

“सत्याग्रह” का अर्थ है—सत्य के लिए आग्रह। यह एक नैतिक संघर्ष की पद्धति थी, जिसमें अन्याय के विरुद्ध बिना हिंसा का सहारा लिए सत्य और धैर्य के माध्यम से प्रतिरोध किया जाता है। गांधी जी के अनुसार, “सत्याग्रह व्यक्ति के भीतर की आत्मिक शक्ति का प्रदर्शन है, न कि दूसरों को पराजित करने का माध्यम।” गांधी जी के शांति दर्शन का सबसे व्यावहारिक रूप था सत्याग्रह, जिसका अर्थ है “सत्य के लिए आग्रह”। यह गांधी जी का मौलिक योगदान था, जो उन्होंने सबसे पहले दक्षिण अफ्रीका में प्रयोग किया। सत्याग्रह का आधार यह विचार था कि जब किसी व्यक्ति या समूह के साथ अन्याय होता है, तो वह हिंसा का सहारा न लेकर सत्य और अहिंसा की शक्ति से उसका विरोध करे। गांधी जी ने कहा—“सत्याग्रह आत्मबल का प्रदर्शन है, न कि दूसरों को पराजित करने की इच्छा।” सत्याग्रह केवल राजनीतिक उपकरण नहीं था, बल्कि यह आत्मिक अनुशासन का प्रतीक था। इसमें धैर्य (Sahan&shakti), करुणा (Compassion) और सत्यनिष्ठा (Integrity) का समन्वय था। यह पद्धति आगे चलकर नागरिक अधिकार आंदोलन, नस्लवाद विरोधी आंदोलन और महिला अधिकार आंदोलनों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनी।

4. सर्वोदय और सार्वभौमिक भाईचारा :-

गांधी जी का चौथा प्रमुख तत्व था - सर्वोदय, अर्थात् “सबका उदय, सबका कल्याण।” उन्होंने यह सिद्ध किया कि जब तक समाज में आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक असमानता बनी रहेगी, तब तक शांति स्थायी नहीं हो सकती। सर्वोदय का अर्थ था कि हर व्यक्ति को समान अवसर, सम्मान और गरिमा मिले। यह दृष्टिकोण वैश्विक शांति की आधारशिला है।

गांधी जी का मानना था कि “वसुधैव कुटुम्बकम्” अर्थात् संपूर्ण विश्व एक परिवार है। इस विचार ने उन्हें सार्वभौमिक भाईचारा (Universal Brotherhood) का प्रवक्ता बना दिया। उनकी दृष्टि में मनुष्य, समाज, राष्ट्र, और प्रकृति सभी एक ही वैश्विक ताने-बाने के हिस्से हैं। अतः किसी भी रूप में हिंसा या शोषण केवल दूसरों के प्रति नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के विरुद्ध अपराध है।

5. स्वराज और आत्म संयम :-

गांधी जी के लिए “स्वराज” का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं था, बल्कि आत्मिक स्वराज अर्थात् आत्म-नियंत्रण और नैतिक अनुशासन। उन्होंने कहा कि जब व्यक्ति अपने इंद्रियों और इच्छाओं पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है, तभी समाज और राष्ट्र में वास्तविक शांति संभव है। उनका यह दृष्टिकोण आधुनिक मनोविज्ञान और नैतिक दर्शन दोनों से मेल खाता है।

6. शांति का सकारात्मक दृष्टिकोण

गांधी जी ने शांति को निष्क्रिय स्थिति नहीं माना, बल्कि उसे सक्रिय निर्माण की प्रक्रिया बताया। उनके अनुसार, शांति केवल संघर्ष के बाद का विश्राम नहीं है, बल्कि यह निरंतर प्रयासों, आत्म-संशोधन और सेवा के माध्यम से बनाए रखी जाने वाली अवस्था है। उन्होंने कहा – “शांति केवल दूसरों के प्रति दया से नहीं, बल्कि स्वयं के भीतर से आरंभ होती है।” गांधी जी का शांति दर्शन इस प्रकार एक समग्र मानव दृष्टि प्रस्तुत करता है जिसमें नैतिकता, करुणा, आत्मबल, और न्याय सभी एक-दूसरे से जुड़े हैं।

7. सर्वोदय और सार्वभौमिक भाईचारा

गांधी जी ने “सर्वोदय” का अर्थ बताया सबका उदय, सबका कल्याण। उन्होंने “वसुधैव कुटुम्बकम्” की भारतीय अवधारणा को आधुनिक संदर्भ में व्याख्यायित करते हुए कहा कि मानवता की वास्तविक शांति तभी संभव है जब हर व्यक्ति को समान सम्मान और अवसर मिले।

8. गांधी जी की वैश्विक दृष्टि :-

गांधी जी केवल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी नहीं थे, बल्कि वे विश्व नागरिक (Global Citizen) थे। उनके विचारों का प्रभाव भारत की सीमाओं से बहुत आगे तक गया। अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका, और एशिया के अनेक देशों में उनके सिद्धांतों ने लोगों को शांति और स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया।

9. दक्षिण अफ्रीका में प्रयोग

गांधी जी ने पहली बार सत्याग्रह का प्रयोग दक्षिण अफ्रीका में किया, जहाँ भारतीयों पर भेदभाव किया जाता था। उन्होंने शांतिपूर्ण प्रतिरोध के माध्यम से अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया और यह सिद्ध किया कि हिंसा के बिना भी परिवर्तन संभव है। उनका यह प्रयोग वैश्विक शांति आंदोलनों का प्रारंभिक उदाहरण बना।

10. विश्व युद्धों पर गांधी जी की प्रतिक्रिया

पहले और दूसरे विश्व युद्ध के समय गांधी जी ने बार-बार यह कहा कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को लिखा – “हिंसा केवल हिंसा को जन्म देती है। शांति केवल अहिंसा से ही संभव है।” उन्होंने सैनिकों को हथियार छोड़कर मानवता की सेवा में लगने का संदेश दिया।

11. अंतरराष्ट्रीय नेताओं पर प्रभाव

गांधी जी के अहिंसात्मक दर्शन ने दुनिया भर के अनेक नेताओं को प्रभावित किया - जैसे मार्टिन लूथर किंग जूनियर (अमेरिका), नेल्सन मंडेला (दक्षिण अफ्रीका), दलाई लामा (तिब्बत), आंग सान सू की (म्यांमार) इन सभी नेताओं ने अपने देशों में अहिंसक संघर्षों के माध्यम से न्याय, समानता और शांति के लिए कार्य किया। इस प्रकार गांधी जी के विचार एक वैश्विक नैतिक शक्ति के रूप में स्थापित हुए।

गांधी जी के विचारों का वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में महत्व

आज का विश्व आतंकवाद, धार्मिक असहिष्णुता, आर्थिक विषमता और पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है। गांधी जी की शिक्षाएँ इन समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रस्तुत करती हैं।

1. अंतरराष्ट्रीय संघर्षों का समाधान

गांधी जी ने कहा “शांति बाहरी अनुबंधों से नहीं, बल्कि मानव हृदय से प्रारंभ होती है।” आज जब विश्व यूक्रेन-रूस युद्ध, इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष, और मध्य-पूर्व की अस्थिरता से जूझ रहा है, गांधी का सिद्धांत सिखाता है कि स्थायी शांति केवल संवाद, समझ और करुणा से ही संभव है।

2. पर्यावरणीय शांति और सतत विकास

गांधी जी ने कहा था “पृथ्वी हर मनुष्य की आवश्यकता को पूरा कर सकती है, परंतु किसी एक के लोभ को नहीं।” उनका यह कथन आज के पर्यावरण संकट के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने सरल जीवन, पुनः उपयोग और पर्यावरणीय संतुलन की वकालत की, जो सतत विकास (Sustainable Development) की आधुनिक अवधारणा से मेल खाती है।

3. सामाजिक न्याय और मानवाधिकार

गांधी जी ने समाज में अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव और आर्थिक शोषण का विरोध किया। उनका विश्वास था कि जब तक सामाजिक अन्याय समाप्त नहीं होता, तब तक शांति स्थापित नहीं हो सकती। इस विचार ने संयुक्त राष्ट्र (UN) की “Universal Declaration of Human Rights” जैसी पहल को भी प्रेरित किया।

4. शांति शिक्षा (Peace Education)

गांधी जी ने शिक्षा को केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और शांति निर्माण का माध्यम माना। उनकी “नई तालीम” योजना का उद्देश्य था—“सत्य, अहिंसा और सहयोग के मूल्यों पर आधारित समाज की रचना।” आज “Peace Studies” और “Conflict Resolution” जैसे विषय गांधीवादी दृष्टिकोण से प्रेरित हैं।

वैश्विक संस्थानों में गांधीवादी प्रभाव

- संयुक्त राष्ट्र (United Nations) ने 2 अक्टूबर को “अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस (International Day of Non-Violence)” घोषित किया।
- यूनेस्को (UNESCO) ने गांधी जी को “मानवता के नायक” के रूप में मान्यता दी।
- विश्व शांति परिषद, अंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस, और पीस फाउंडेशन जैसी संस्थाएँ गांधीवादी सिद्धांतों को अपनाकर कार्य कर रही हैं।
- कई विश्वविद्यालयों जैसे हार्वर्ड, ऑक्सफोर्ड, और जेएनयू में “Gandhian Peace Studies” एक प्रमुख अकादमिक विषय है।

समाधान :-

1. संवाद और सहिष्णुता का विकास

सभी धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक समूहों के बीच संवाद के माध्यम से आपसी समझ बढ़ाई जानी चाहिए। गांधी जी की तरह, “मतभेदों को विवाद नहीं, संवाद से सुलझाने” की परंपरा स्थापित करनी होगी।

2. अहिंसक नीति का अंतरराष्ट्रीयकरण

संयुक्त राष्ट्र और विश्व शक्तियों को युद्ध की बजाय अहिंसक नीतियों को प्राथमिकता देनी चाहिए। “सत्याग्रह” जैसी शांति-प्रक्रिया को अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का हिस्सा बनाया जा सकता है।

3. शिक्षा प्रणाली में गांधीवादी मूल्य

विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में “शांति, सेवा और सह-अस्तित्व” जैसे मूल्यों पर आधारित शिक्षा दी जाए। युवाओं को गांधीजी के जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

4. आर्थिक समानता और नैतिक उपभोग

गांधी जी का “ट्रस्टीशिप सिद्धांत” यह सिखाता है कि धनवान लोग अपने संसाधनों का उपयोग समाज के कल्याण में करें। यह आज के पूंजीवादी असंतुलन को संतुलित करने का एक व्यावहारिक उपाय हो सकता है।

5. पर्यावरण संरक्षण और सरल जीवन

गांधी जी के “सादा जीवन, उच्च विचार” के सिद्धांत को अपनाकर पर्यावरणीय संकटों को कम किया जा सकता है। प्राकृतिक संसाधनों का संयमित उपयोग शांति और स्थिरता दोनों के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी का जीवन और दर्शन मानवता के लिए एक अमर प्रेरणा है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि हिंसा नहीं, बल्कि नैतिकता और सत्य में निहित है। आज जब मानव सभ्यता युद्ध, असमानता और पर्यावरणीय विनाश के मोड़ पर खड़ी है, गांधी जी की शिक्षाएँ हमें शांति की ओर ले जाने वाला एकमात्र स्थायी मार्ग प्रदान करती हैं। उनकी दृष्टि में शांति केवल राष्ट्रों के बीच का समझौता नहीं, बल्कि मानव आत्मा की अवस्था है।

यदि विश्व समाज गांधी जी के “सत्य और अहिंसा” के सिद्धांतों को व्यवहार में लाए, तो वास्तविक और स्थायी वैश्विक शांति संभव हो सकती है। महात्मा गांधी का जीवन और दर्शन केवल भारत के स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं था, बल्कि वह सम्पूर्ण मानवता के लिए एक नैतिक दिशा और शांति का मार्गदर्शन बन गया। गांधी जी ने यह सिद्ध किया कि स्थायी शांति का निर्माण हिंसा, भय या शक्ति से नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम और करुणा से संभव है। उनका दृष्टिकोण केवल राजनीतिक या सामाजिक स्तर पर नहीं था, बल्कि यह मानव के अंतर्मन की शुद्धि और आत्मिक विकास पर आधारित था। गांधी जी का शांति दर्शन मानव सभ्यता को यह सिखाता है कि बाहरी संघर्षों का समाधान तभी संभव है, जब मनुष्य अपने भीतर के द्वेष, स्वार्थ और लोभ को समाप्त करे। गांधी जी ने यह स्पष्ट किया कि शांति का मार्ग किसी भी प्रकार की जबरदस्ती या दबाव से नहीं, बल्कि नैतिक बल (Moral Force) से प्रशस्त होता है। उन्होंने जो “सत्याग्रह” का सिद्धांत दिया, वह केवल राजनीतिक संघर्ष का उपकरण नहीं था, बल्कि यह जीवन जीने की एक नैतिक विधा थी जिसमें अन्याय का प्रतिकार हिंसा से नहीं, बल्कि सत्य और धैर्य के माध्यम से किया जाता है। यही सिद्धांत आगे चलकर विश्व के अनेक आंदोलनों की आत्मा बना।

मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने अमेरिका में नागरिक अधिकारों के लिए, नेल्सन मंडेला ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ, और दलाई लामा ने तिब्बत की स्वतंत्रता के लिए उसी गांधीवादी मार्ग पर चलकर शांति और न्याय की स्थापना की। गांधी जी के विचारों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने “शांति” को केवल राष्ट्रों के बीच के समझौते या राजनीतिक समझौदारी के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे मानवता की सार्वभौमिक स्थितिके रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार, जब तक समाज में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक असमानताएँ बनी रहेंगी, तब तक शांति अधूरी रहेगी। इसलिए उन्होंने “सर्वोदय” और “ट्रस्टीशिप” जैसे सिद्धांत दिए ताकि समाज में धन, शक्ति और अवसरों का समान वितरण हो सके। आधुनिक युग में, जब विश्व आतंकवाद, जलवायु संकट, जातीय संघर्ष, धार्मिक असहिष्णुता और आर्थिक विषमता जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब गांधी जी की शिक्षाएँ पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती हैं। उनका यह कथन आज भी मानवता के लिए चेतावनी है - “पृथ्वी हर मनुष्य की आवश्यकता पूरी कर सकती है, लेकिन किसी एक के लोभ को नहीं।”

यह कथन न केवल पर्यावरणीय संतुलन की ओर संकेत करता है, बल्कि यह बताता है कि शांति और सतत विकास (Sustainable Development) का संबंध एक-दूसरे से गहराई से जुड़ा हुआ है।

गांधी जी की शांति दृष्टि यह भी सिखाती है कि विश्व शांति केवल अंतरराष्ट्रीय नीतियों या संगठनों के माध्यम से नहीं लाई जा सकती। इसके लिए शांति की संस्कृति (Culture of Peace) का निर्माण आवश्यक है कृ ऐसी संस्कृति जिसमें शिक्षा, धर्म, राजनीति, और अर्थव्यवस्था सभी नैतिकता, सहिष्णुता, और परस्पर सम्मान के सिद्धांतों पर आधारित हों। यदि प्रत्येक व्यक्ति गांधी जी के “सादा जीवन, उच्च विचार” और “सत्य-अहिंसा” के आदर्शों को अपनाए, तो शांति केवल आदर्श नहीं, बल्कि व्यवहारिक वास्तविकता बन सकती है।

आज संयुक्त राष्ट्र, यूनेस्को और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थान गांधीवादी सिद्धांतों को अपनाकर विश्व में शांति और सहयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। 2 अक्टूबर को “अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस” के रूप में मनाया जाना इस बात का प्रमाण है कि गांधी जी की विचारधारा केवल भारत की नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व की नैतिक विरासत है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी ने शांति को केवल एक दार्शनिक आदर्श नहीं, बल्कि जीवन का व्यावहारिक मार्ग बनाया। उनके विचार आज भी मानवता के लिए उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे। उन्होंने यह दिखाया कि सच्ची शक्ति हथियारों में नहीं, बल्कि सत्य, प्रेम, करुणा और आत्मबल में निहित होती है। यदि आज का विश्व समाज गांधी जी के इन सिद्धांतों—“सत्य”, “अहिंसा”, “सर्वोदय” और “सत्याग्रह” को अपनी नीतियों, शिक्षा और जीवन मूल्यों में समाहित कर ले, तो युद्ध, आतंक और असमानता से मुक्त एकस्थायी वैश्विक शांति की स्थापना संभव है। इस प्रकार, महात्मा गांधी का शांति-दर्शन केवल इतिहास की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एकजीवंत दिशा - सूत्र है जो यह संदेश देता है कि “जब तक मनुष्य के हृदय में प्रेम और करुणा जीवित है, तब तक विश्व में शांति संभव है।”

संदर्भ सूची

1. Gandhi, M. K. (1927). The Story of My Experiments with Truth. Navajivan Publishing House.
2. Bondurant, J. V. (1958). Conquest of Violence: The Gandhian Philosophy of Conflict. Princeton University Press.
3. Dalton, D. (1993). Mahatma Gandhi: Nonviolent Power in Action. Columbia University Press.
4. Erikson, E. H. (1969). Gandhi's Truth: On the Origins of Militant Nonviolence. W. W. Norton & Company.
5. Raghavan, V. (Ed.). (2019). Gandhian Perspectives on Peace and Nonviolence. Sage Publications.
6. United Nations. (2020). International Day of Non-Violence. Retrieved from www.un.org
7. Sharma, R. (2015). Gandhian Thought and World Peace. Delhi: Concept Publishing Company.



डॉ. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय की कविताओं में ग्रामीण परिवेश

सतीश कुमार पाण्डेय

शोधार्थी

हिंदी विभाग, पाटलीपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

मेल- satish-global@zohomail.in

प्रो. शिवनारायण सिंह

शोध निर्देशक

शोध-सार

समकालीन हिंदी कविता का विकास मुख्यतः 1960 के बाद शुरू हुआ माना जाता है, जब भारत सामाजिक और राजनीतिक बदलावों के दौर से गुजर रहा था। आज़ादी के बाद की यह पीढ़ी नई सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वास्तविकताओं को समझने और व्यक्त करने लगी। समकालीनता के संदर्भ में विशम्भरनाथ उपाध्याय कहते हैं कि—“समकालीनता समय विशेष के साथ जीना मात्र नहीं है। समकालीनता, अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों से संघर्ष करना है। समस्याओं और चुनौतियों में भी, केन्द्रीय महत्त्व रखने वाली समस्याओं की समझ से ‘समकालीनता’ उत्पन्न होती है।”¹ इस समय के कवि जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और आम लोगों की आशंकाओं को अपनी कविताओं में जीवंत रूप से प्रस्तुत करने लगे।

समकालीन हिंदी कविता की मुख्य विशेषता जनसामान्य की आवाज़ बनना, यथार्थवादी तथा विविध अनुभवों की अभिव्यक्ति होना है। कविता सामाजिक असमानता, स्त्री, दलित, आदिवासी जैसे वर्गों के संघर्षों को संवेदनशील और प्रखर स्वर में बयान करती है। इस युग की कविताओं में ‘मैं’ से ‘हम’ की ओर एक सामूहिक चेतना का उदय हुआ है जो सामाजिक एकता का प्रतीक है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय समकालीन हिंदी कविता के प्रमुख कवि-कथाकारों में हैं यथा—“मालिकों के आगे टकटकी बाँध कर / दुम हिलाते कुत्ते / मुझे माफ करें / उन्हें चाहिए कि वे / अपने लिए सही जमीन तलाशें / और उसे तोड़ने के पहले / कचरा नहीं / अपनी दुम साफ करें।”² उनकी कविताओं की व्यापकता में मनुष्यों के अलावा पशु-पक्षी और अन्य जीवों के प्रति संवेदना भी प्रकट होती है। वे सामाजिक व्यवस्था में अस्पष्टताओं, विडम्बनाओं और आम जनता की पीड़ा को कविताओं के माध्यम से उजागर करते हैं।

कुँजी शब्द : लोक, आंचलिकता, गाँव, संस्कृति, आध्यात्म, प्रकृति, जनमानस।

शोध आलेख

राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय की प्रमुख कविताओं में ‘अधबना पुल, ईंटें और पुलघाट’, ‘परबाबा की विदाई’, ‘सुख के दुख’, ‘कहाँ हो नन्दिता कँवर’, ‘बीज’, ‘दुख है पहचान का मरना’, ‘संस्कार युद्ध’, ‘लालन-पालन’, ‘नाच रही हो माँ’, ‘बेटी’, ‘रक्षाबन्धन पर दीदी को प्रणाम’, ‘पीपल को प्रणाम’ आदि सम्मिलित हैं, जो मानव मूल्यों, रिश्तों और सामाजिक यथार्थ का सजीव चरित्रण करती हैं। ‘अधबना पुल, ईंटें और पुलघाट’ के में लेखक कहता है कि—“यह मेरे गाँव की नदी के पुलघाट के उस / अधबने

पुल की कहानी है / जो मेरे जन्म के पहले बनना शुरू हुआ / मगर पूरा नहीं बन सका / और कुछ के अलावा तमाम मजदूरों और राजमिस्त्रियों के / हाथों को काम नहीं मिल सका / जबकि आसपास के एकाध लोग / इसे पूरा बना देते हैं इस-उस पार।”³ उनकी भाषा सहज, सरल और प्रवाहपूर्ण है, जिसमें तत्सम, तद्भव और देशज शब्दों का संतुलित प्रयोग है। उनका लोकजीवन का विस्तृत अनुभव उनकी भाषा में झलकता है और वे बोलचाल की भाषा के प्रभावी प्रयोग के माध्यम से पाठकों के करीब आते हैं, जिससे उनकी कविता समकालीन आम जन की संवेदना का सजीव परिचायक बनती है।

समकालीन हिंदी कविता की यह धारा सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश की गहरी समझ के साथ अगली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी है, और डॉ. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय उनकी इस कविता धारा के उत्कृष्ट कवि-कथाकारों में गिने जाते हैं, जिन्होंने गहराई, संवेदना और सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ अपने कविता-संसार का निर्माण किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब भारतीय समाज में गहरे सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन दिखाई देने लगे, तभी से समकालीन हिंदी कविता का विकास एक नए रूप में प्रारंभ हुआ। इस दौर की कविता ने यथार्थवाद, विविधता और आम जनजीवन के अनुभवों को केंद्र में रखकर साहित्यिक स्वर को नया आयाम दिया।

विशेषकर 1960 के दशक के बाद हिंदी कविता ने एक ऐसे युग में प्रवेश किया, जिसमें जीवन के संघर्षों, सामाजिक विसंगतियों, मानवीय पीड़ा, चेतना और व्यक्ति-समाज संबंधों को गहनता के साथ अभिव्यक्त किया गया। समकालीन परिवेश को ध्यान में रखते हुए लक्ष्मीकांत वर्मा लिखते हैं कि—“समकालीनता” जनविरोधी मूल्यों को अस्वीकार करने और यथास्थिति के प्रति कि समका विद्रोह का नाम है। नितान्त नितान्त समकालीन नितान्त समसामयिक को अस्वीकार करके चलता है। इस अस्वीकृति में केवल प्रतिक्रिया ही नहीं होती वरन् कुछ मौलिक अनिवार्यता भी होती है।”⁴ समकालीन कविता की विशेषता यह रही कि उसने व्यक्तिगत अनुभवों से ऊपर उठकर सामूहिक चेतना को स्वर दिया और गरीब, दलित, आदिवासी तथा महिलाओं की आवाज़ को प्रखरता प्रदान की। इसमें शोषण, आशा, प्रेम और विद्रोह की तीव्र भावनाएँ दिखाई देती हैं।

अतः कहा जा सकता है कि समकालीन हिंदी कविता सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं का प्रामाणिक दस्तावेज है। इसने जीवन की जटिलताओं, असमानताओं और संघर्षों को स्वर दिया तथा दबे-कुचले वर्गों की उम्मीद और पीड़ा को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया। इसी प्रक्रिया में डॉ. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय एक ऐसे कवि सिद्ध होते हैं जिनकी रचनाएँ यथार्थवाद, प्रगतिशीलता और संवेदनशीलता की दृष्टि से समकालीन हिंदी कविता को नई ऊँचाई प्रदान करती हैं यथा—“यह क्या / सबसे पहले यह कोई / घोंघा हाथ लगा है / कि मेरा सेक्स / मेरी और समाज की / मजबूरी है / कहने को तो आदमी / उसी के कारण नंगा है / पर नंगियत से उसकी / उतनी ही दूरी है।”⁵ समकालीन हिंदी कविता की कुछ विशिष्ट तकनीकों और उसकी विषय-वस्तु उसे आधुनिक समय में सशक्त और प्रासंगिक बनाती हैं। यथार्थवाद और सामाजिक चेतना: इन कविताओं में जीवन के यथार्थ और समाज की जटिलताओं को सच्चाई के साथ उकेरा जाता है। संघर्ष, विडंबना और जीवन की सच्चाइयों को सीधे-सपाट और असरदार भाषा में रखा जाता है।

संवादात्मक शैली कवि अपनी कविता में संवाद की शैली अपनाते हैं जिससे पाठक प्रत्यक्ष संवाद का हिस्सा बन जाता है। ‘फूटती नदी’ में लेखक ने संवाद शैली को कुछ इस प्रकार से संजोया है—“इन चीजों को / एक ने फिर कहा- / ‘सौन्दर्य’ / दूसरे ने कहा- / ‘आदर्श’ / तीसरे ने कहा- / ‘ईश्वर’ / तीनों ने श्रद्धा सहित / इसमें से अपने भीतर / थोड़ा-बहुत भरा / और खुशी-खुशी चले गये।”⁶ सामाजिक असमानता और शोषणरू स्त्रियों, दलितों और आदिवासियों की पीड़ा, अन्याय और समानता की आकांक्षा कविताओं का केंद्र बनती है।

प्रकृति और पर्यावरण प्राकृतिक सौंदर्य की अभिव्यक्ति और पर्यावरणीय सरोकार प्रमुख रूप से उपस्थित रहते हैं। दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टि: जीवन मूल्यों, आत्मा और कर्म जैसे विषय कविताओं में गहराई जोड़ते हैं यथा—“गला-गलारी खेत माँ/भइया हैं परदेस माँ/भउजी हैं संकेत माँ /बरसौ राम धड़ाके से / बुढ़िया मरै फटाके से।”⁷ आधुनिकता और सामाजिक परिवर्तन तकनीकी प्रगति, सांस्कृतिक बदलाव और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को भी कवि अभिव्यक्त करते हैं। इस प्रकार, इन तकनीकों और विषयों का मेल समकालीन हिंदी कविता को जीवंत, प्रासंगिक और समाज का सशक्त दर्पण बनाता है।

डॉ. राजेंद्र की रचनाओं को दो किनारों वाली नदी से तुलना की जा सकती है। एक ओर जहाँ शिक्षित और शहरी संभ्रांत संसार है, वहीं दूसरी ओर गाँव की मिट्टी से जुड़ा जीवन—खेत-खलिहान, तालाब, बगीचे, चौपाल, लोककथाएँ और गांव 'दुधपतली' की कहानियाँ उपस्थित रहती हैं। ये दोनों ही दिशाएँ एक-दूसरे के बिना अधूरी हैं और उनकी परिपूर्णता इन्हीं के सामंजस्य में निहित है। उनकी रचनाओं में इस संतुलन की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

इस संतुलन का कारण भी स्वाभाविक है। प्रशासनिक जिम्मेदारियों के कारण वे जहाँ शहरी जीवन से घनिष्ठ बने रहते हैं, वहीं उनके हृदय का गाँव उनसे कभी दूर नहीं होता। इसी कारण उनकी रचनाओं में वेद की गंभीरता भी है और लोकगीतों की सहजता भी, कहीं छंद की परंपरा दिखती है तो कहीं लोक मनोरंजन की सहज धारा। उनकी कलम ने दोनों के सामंजस्य को अनोखी रचनात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। यही विशेषता उनके गद्य और पद्य दोनों में दिखाई देती है। विशेषकर उनकी पुस्तक 'नदी में नदी' में यह मिश्रण और भी प्रखर रूप में उपस्थित होता है, जहाँ परंपरागत गीत और लोकगीतों का विवेचन साथ-साथ मिलता है यथा—“आपन धरम निभावै खातिर हम सबको गोहराई / कैसे संगी-साथी को तज चली अकेली जाई? / जली-अधजली, कटी-पिटी मेहरारू आगे आवैं / नई सदी में चलने को सब मिल के दौड़ लगावैं।”⁸

दशानन की लोकप्रियता हमारे समाज के सामने अनेक प्रश्न खड़े करती है। भाषा में प्रयुक्त प्रत्यय और उपसर्ग की तरह, जो शब्दों का अर्थ घटाते-बढ़ाते या बदलते हैं, कवि इन्हीं के माध्यम से सत्य और असत्य के परस्पर बदलते रूपों पर व्यंग्य करते हैं। वे कहते हैं कि झूठ और सच आपस में मित्र बन चुके हैं और एक-दूसरे के वस्त्र पहनकर चलते हैं। दुनिया का आकाश भले ही समृद्ध दिखाई दे, पर समय निरंतर लोगों की साँसों को माप रहा है और मानवीय जीवन की त्रासदी का आभास कराता है यथा—“दशरथ विनती कर-कर हार गये / राम ने न किया वचन पूरा / गुरु वशिष्ठ ने वानर शिष्यों को / राजमार्ग पर मारा छूरा / युद्धस्तर पर अंगद लांघ रहे / बार-बार मर्यादा का वन।”⁹ इस रचना में कवि यह संकेत करते हैं कि विरोधी तत्त्वों की मित्रता कितनी घातक हो सकती है, जहाँ दाँत ही उंगलियों को काटने लगते हैं। साहित्य की दुनिया में बसंत और शरद के चित्रण बहुतायत में मिलते हैं और वर्षा भी बरस कर स्याही बनती है, किंतु हेमंत ऋतु की संवेदना अपेक्षाकृत उपेक्षित रहती है।

राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय की कविताएँ इस प्रकार मानव जीवन के अंतर्मन की गहराइयों की अनुभूतियों की मार्मिक अभिव्यक्ति बनकर हमारे सामने आती हैं। कविताओं में व्यक्ति का परिवेश जीवंत रूप में सामने आता है। कवि विसंगतियों को वाणी देकर जीवन से उसका सामंजस्य बैठाने का प्रयास करता है। वे मानव मन के जटिल, उलझे और अस्पष्ट भावों को शब्द प्रदान करते हैं। कभी कविता किसी क्षण को हूबहू कैमरे जैसी सजीवता से प्रस्तुत करती है, तो कभी कोलाज की तरह अनेक कोणों से दृश्य दिखाती है, और कभी वह सुंदर व स्पष्ट चित्रकला-सी सब कुछ उभार देती है। इस प्रकार कविता अपने अनेक रूपों में जन्म लेकर मन की गहराइयों में बस जाती है।

प्रकृति को आश्रय बनाकर कविता मनुष्य के जीवन को परत दर परत खोलती है और अपने समय की सच्चाई को संजो कर एक ऐतिहासिक दस्तावेज जैसी बन जाती है। यह मनुष्य के भीतर छिपे मौन संवाद को आवाज़ देती है और उसे सामाजिक वार्तालाप का हिस्सा बना देती है। इस दृष्टि से कविता मानव सभ्यता के इतिहास की नींव भी कहलाती है, जो व्यक्ति और समाज के बीच संवाद का पुल तैयार करती है।

राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय के कविता संग्रह 'फूटती नदी' में ये सारी विशेषताएँ मिलती हैं। संग्रह की पहली कविता 'लिखनिया दरी' में उन्होंने मिर्जापुर जिले की जरगो नदी के किनारे स्थित गुफाओं का चित्रण किया है, जहाँ कवि के अनुसार आदि मानव ने सबसे पहले भित्तिचित्र बनाए यथा—“वहाँ थी / महुअर-संगीत में आँखें मारती प्रपात-ध्वनियाँ / आकाश के मन से लिखी जाने को उत्सुक / शिलाओं की स्लेटें / बीच-बीच स्थिर होते जल में डुबकी मारती वृक्षावलियाँ / और पृथ्वी के छोटे खाद्य टुकड़े पर झपट्टा मारने को / वहाँ थे।”¹⁰ इस कविता के माध्यम से उन्होंने मानव जीवन के उद्गम, विकास और उसके विभिन्न चरणों को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

भित्तिचित्रों को देखकर कवि जीवन की आंतरिक व्यापकता, उत्साह और उमंग को अनुभव करता है और इन्हें कविता

में ढाल देता है। इन चित्रों से प्रकृति, मानव और इतिहास से जुड़े सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं की पहचान होती है, जो नए सृजनात्मक प्रतीकों को जन्म देते हैं। कवि नदी का मानवीकरण करते हुए मनुष्य और नदी के घुलने-मिलने की अद्भुत शैली रचते हैं, जहाँ बाहरी दृश्य गहरे मानवीय अनुभवों में परिवर्तित हो जाते हैं। औधी झील का दृश्य इस संवेदना को और अधिक प्रखर बना देता है, जहाँ जीवन के सभी मांगलिक क्षण—शिकार, वादन, नृत्य, भोजन और स्त्री-पुरुष का संगम-पर्व की तरह जीवंत हो उठते हैं।

इन भित्तिचित्रों से जुड़ी संवेदनाएँ कवि के भीतर उतरकर उनकी कविता में मुखर हो जाती हैं। वे कहते हैं कि युगों-युगों से सभ्यता और संस्कृति का उजाला इन भित्तिचित्रों, अल्पनाओं और लिपियों में छिपा है, जो आज भी अंधकार के बीच असंख्य पूर्वज पीढ़ियों की आवाज़ बनकर पुकारते हैं (लिखनिया दरी)।

प्रकृति अपनी उदारता हमेशा खुले हाथों से देती रही है, और नदी सबसे बड़ी जीवनदायिनी रही है। लेकिन मानव ने अपनी भौतिक ज़रूरतों के लिए प्रकृति का इतना दोहन किया कि उसका सबसे बड़ा शिकार नदी बनी। कवि के शब्दों में, पानी का मछली की तरह तड़प-तड़प कर मरना, इस संवेदनशील स्थिति की गहरी पीड़ा को अभिव्यक्त करता है।

जीवन, समाज और साहित्य की आपसी निर्भरता ही साहित्य की नवीनता का आधार बनती है, और राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय की कविताएँ इसका स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाएँ पारंपरिक उपमानों या साधारण सपाट अभिव्यक्तियों से हटकर समकालीन यथार्थ से सीधा जुड़ाव स्थापित करती हैं। इसी कारण उनकी कविताओं में न तो भाषा की कठिनाई दिखाई देती है और न ही विषय-वस्तु की एकरसता से उत्पन्न नीरसता। ऐसे सभी पक्षों को एक साथ जोड़ना किसी भी कवि हेतु कठिन कार्य होता है, किंतु राजेंद्र जी इसे अत्यंत सरलता और कुशलता से निभाते हैं। उनकी लेखनी में सहजता, देसीपन और भाषायी संस्कार का ऐसा अनूठा मेल मिलता है जो पाठक को आधुनिक युग की विसंगतियों पर गंभीर चिंतन के लिए बाध्य कर देता है।

अपनी कविताओं में राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय ने प्रकृति के बदलते स्वरूप, मानव द्वारा किए गए हस्तक्षेप के दुष्परिणाम, सामाजिक विसंगतियों और आचरण के नैतिक पतन को गहन संवेदना और आलोचनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। वे यह दर्शाते हैं कि अनिष्ट की आशंका से किए जाने वाले कई कर्मकांड निरर्थक हैं। उनके अनुसार शोकगीत, मंत्र, प्रार्थनाएँ, और उत्सवों के नाम पर शोकमय बाजों की गूंज, ठंडे-गरम पेय, मादक द्रव्य या विशिष्ट व्यंजनों का सेवन जीवन के वास्तविक उद्देश्य का दुरुपयोग है।

उनके काव्य और गीत-संग्रह यह भी साबित करते हैं कि वे प्रकृति प्रेमी कवि थे। आज की समकालीन कविता में प्रकृति का स्वरूप अपेक्षाकृत कम मिलता है, लेकिन पाण्डेय जी की कविताएँ नदी, झरने, पत्थर, पहाड़, धूप और ऋतुओं के मनमोहक चित्रों से भरी हुई हैं। उनके बिंब और प्रतीक भी अधिकांशतः प्रकृति से ही लिये गए हैं, जो उनकी कविताओं को विशेष जीवन्तता प्रदान करते हैं।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय का कविता संग्रह 'फूटती नदी' उनकी सृजनात्मकता का अनूठा प्रमाण है। इसमें शामिल लंबी कविता 'घर का होना' उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का विराट रूप प्रस्तुत करती है। इस कविता में "घर" मात्र निवास का प्रतीक नहीं है, बल्कि संपूर्ण भारतीय समाज का प्रतिबिंब है यथा—“घर आखिर घर है / और है आपका अपना / आप कोई भी हों / हरा-हरा' खेत के हलवाहे / 'छियो-छियो' घाट के धोबी / दफ्तर के चपरासी / मुहल्ले के भड़भूजा / वेश्याओं से दुत्कारे गए शराबी / आधी रात तक काम से चूर आला अफसर / तिकड़मों की गोट के खिलाड़ी।”¹¹ इसके बहाने कवि परिवार, संस्कृति, परंपराएँ, जीवन-मूल्य, पारिवारिक, मर्यादा, रहन-सहन, सामाजिक व्यवस्थाएँ और आर्थिक स्थितियों का सजीव चित्र खींच देते हैं। यह कविता अपने कथानक और चरित्रों की विविधता के कारण लगभग एक उपन्यास के समान प्रतीत होती है। इसमें माता-पिता, पुत्र-बहू, बेटी, भाई-बहन और बच्चों के साथ-साथ समाज के तमाम वर्गों के लोग हरवाहे, धोबी, चपरासी, भड़भूजावाला, वेश्या, शराबी अफसर, नेता, परित्यक्ता, डॉक्टर, पूँजीपति, कवि, नाई, खोमचेवाली, लेडी डॉक्टर, कौबाला, पंडित, बौद्ध भिक्षु, फादर, इमाम, सिख गुरु, कामरेड, कबाड़ी आदि—सभी चरित्रों का वर्णन है। विशेषता यह है कि कवि केवल

पात्रों का चित्रण ही नहीं करते, बल्कि उनकी मूल प्रवृत्ति और संपूर्ण मानसिकता को कुछ शब्दों के भीतर ही प्रभावी ढंग से उकेर देते हैं।

पाण्डेय जी का संपूर्ण साहित्य उनके गहन और गंभीर चिंतन का दर्पण है। वे वेद, उपनिषद, गीता, काव्यशास्त्र, व्याकरण, भाषाविज्ञान, हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य के गहरे जानकार थे। उनके ज्ञान की अपनी स्वतंत्र दृष्टि और स्पष्ट मत उनकी लेखनी में परिलक्षित होते हैं। किंतु इन सबसे बढ़कर उनका कवि-मन लोक और लोक संस्कृति का कवि था, जो प्रकृति, नदी, झरनों, वनों, पेड़-पौधों, परिवार और मिट्टी की खुशबू को लेकर निरंतर प्रवाहित होता रहा। इसी प्रवाह और ध्वन्यात्मक लोक भाषा की सहजता का सजीव रूप 'घर का होना' कविता में दिखाई देता है, जो पाण्डेय जी की लोकधर्मी और संवेदनशील काव्य दृष्टि का अद्वितीय उदाहरण है।

मनुष्य पंचतत्वों से निर्मित है और अंततः उन्हीं में विलीन हो जाता है। ये तत्व उसके आंतरिक अस्तित्व को अनुशासित और ऊँचाई प्रदान करते हैं। जल जहाँ उसे तरलता और जीवन की ताजगी देता है, वहीं मरुस्थलीय चिंतन से उबार कर जीवन को सामर्थ्य प्रदान करता है। यही कारण है कि नदियाँ मानव सभ्यता की जननी और आधार मानी गई हैं। सभ्यताएँ नदियों के तटों पर विकसित हुईं और इतिहास में उनका नाम अमर हो गया। जल स्वयं तो निरंतर गतिशील रहा, पर उसने मनुष्य के लिए स्थिरता और जीवन के विकास की आधारभूमि तैयार की।

संदर्भ सूची

1. डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय, समकालीन सिद्धांत और साहित्य, मैकमिलन प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 1976, पृष्ठ सं. 16
2. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय, फूटती नदी, अनामिका प्रकाशन, प्रयागराज, द्वितीय संस्करण, 2021, पृष्ठ सं. 20
3. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय, लड़कियाँ हैं तो, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2025, पृष्ठ सं. 28
4. डॉ. लक्ष्मीकांत वर्मा, तथाकथित साठोत्तरी पीढ़ी : एक ऐतिहासिक संदर्भ, आलोचना, जनवरी-मार्च 1969, पृष्ठ सं. 25
5. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय, फूटती नदी, पृष्ठ सं. 60
6. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय, फूटती नदी, पृष्ठ सं. 41
7. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय, नदी में नदी, अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2014, पृष्ठ सं. 55
8. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय, नदी में नदी, पृष्ठ सं. 53
9. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय, नदी में नदी, पृष्ठ सं. 36
10. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय, फूटती नदी, पृष्ठ सं. 11
11. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय, फूटती नदी, पृष्ठ सं. 88



समस्या : शोध का विषय

डॉ. दस्तगीर एम. मुल्ला

एसोसिएट प्रोफेसर और अध्यक्ष हिंदी विभाग,
मराठा मंडल कला, वाणिज्य, विज्ञान और गृह विज्ञान महाविद्यालय,
बेलगावी, (कर्नाटक)

मोबाइल नंबर- 8762075786

Email: drdmmulla@gmail.com

प्रस्तावना

इस संसार का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जिसमें कोई न कोई समस्या रहित जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण उसके जीवन में अनेक कठिनाइयां, बाधाएं निमंत्रण के रूप में खड़ी रहती हैं। जब मनुष्य को अपनी मर्जी से अपने लक्ष्य तक पहुंचने में बाधा निर्माण होती है तो उसे ही समस्या कहा जा सकता है। समस्या का अध्ययन कर उसका निराकरण और उससे संबंधित घटकों पर विचार करना ही शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाता है। समस्या परिस्थिति के अनुसार निर्मित होती रहती है। ऐसी परिस्थिति जो व्यक्ति, समाज तथा संस्थाओं को उनके लक्ष्य तक पहुंचने में बांधा बन जाती है वह उनके लिए समस्या बनी रहती है। समस्या की परिधि उसके विषय अनुसार बदलती तथा परिवर्तित होती रहती है। सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, वैयक्तिक, वैज्ञानिक, पर्यावरणीय आदि क्षेत्रों में निर्मित समस्याओं का अध्ययन कर उसका स्वरूप, उसका उद्देश्य तथा उसका परिणाम प्रभाव आदि को भौगोलिक, सामाजिक और कालबद्ध क्षेत्र से समझा जा सकता है।

समस्या का अर्थ किसी प्रश्न की खोज जिज्ञासा के रूप में कर उसका समाधान खोजना होता है। समस्या का स्वरूप हमेशा सरल तथा जटिल होता है। जब समस्या का प्रश्न इतना गहरा होता है कि कभी-कभी उसका तत्कालीन समाधान पाना भी असंभव हो जाता है। जिसका उत्तर या समाधान अनुत्तरित या अज्ञात रहता है तब वह शोध का विषय बन जाता है। समस्या का समाधान विचार विमर्श तथा शोध प्रक्रिया के माध्यम से किया जा सकता है। समस्या का समाधान ही नई जानकारी तथा नई विधि विकासों को जन्म देती है जिससे शोध कार्य विकास की दिशा आसान हो जाती है।

मुख्य शब्द : समस्या की व्युत्पत्ति एवं अर्थ, समस्या का उद्भव और विकास, समस्या स्वरूप एवं परिभाषा, समस्या का उद्देश्य।

प्रमुख आलेख

समस्या तो हर स्थिति में विद्यमान रहती है। जब परस्पर विरोधी स्थितियों का निर्माण होता है तब उन विरोधी स्थितियों में संघर्ष निर्माण का होता है। और इसी संघर्ष से समस्या का उद्भव होता है। चेतना का विकास और समस्या का आभास के संदर्भ में हेगेल का कहना है कि “विशुद्ध अन्धकार तथा विशुद्ध रोशनी दोनों के संयोग में यानी एक वस्तु को उसके विपरीत

से मिला देने पर तीसरी चीज की व्युत्पत्ति होती है और वह तीसरी हमारे लिए ऐसी रोशनी बनती है जिसमें हम देख सकते हैं। इसी से हेगेल का कहना है कि विरोध के अभाव में कोई चीज उत्पन्न नहीं होती।”⁽¹⁾ इससे स्पष्ट है कि समस्या की अनुभूति हमें चेतना के स्तर पर ही होती है।

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि तीसरी वह कौन सी चीज है? जो दो विरोधी स्वभाव की शक्तियों के मेल से उत्पन्न होती है और जिसके प्रकाश में हम वस्तु स्थिति को देख सकते हैं। इसका उत्तर है- चेतना का उद्भव। जब एक बार चेतना एवं विवेक शक्ति जागृत हो जाती है, तो समाज में व्याप्त विषमता, विसंगतियाँ, विडम्बनाएँ और परस्पर विरोधी भास, उस चेतना के प्रकाश में स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। तब हमारे विचार एवं मान्यताओं पर जबर्दस्त प्रहार - सा होता है। फलतः समस्याएँ उद्भूत होकर तीव्रतर हो जाती हैं।

पुरातन काल से समस्या का अस्तित्व पाया जाता है। वह मनुष्य के अस्तित्व के साथ उद्भूत होकर, मनुष्य जीवन के साथ-साथ चलती रही है। आदियुग में भी समस्या का अस्तित्व पाया जाता है ८ अन्यथा मनुष्य सभ्यता का विकास संभव नहीं होता। भूख, प्यास, भय, क्रोध, रक्षा आदि आदिम मानव की भी आवश्यकता रही हैं। इनकी पूर्ति के लिए उस मानव के सामने भी अनेक समस्याएँ खड़ी रही हैं ९ भूख की तृप्ति करने के लिए आहार की समस्या का निर्माण होता ही है। जिससे आदिम मानव के साथ-साथ आज का वैज्ञानिक युग का मानव भी त्रस्त रहा है। इस प्रकार जीवन एवं समस्याओं का विकास साथ-साथ ही हुआ है।

समस्या के विकास के संदर्भ में इलाचंद्र जोशी का कहना है “वैदिक युग में क्रान्त द्रष्टा ऋषि-गण अपने युग की समस्याओं से परिचित थे और उन्होंने जनता को उनसे परिचित भी कराया था। ऋग्वेद में ऐसे ऐसे ऋषियों की रचनाएँ संकलित हैं जो युद्ध और राजनीति से लेकर अन्नोत्पादन तक सभी विषयों पर अपने अनुभवों और उपदेशों से जनता को परिचित करा गए।”⁽²⁾

तात्पर्य यह है की मानव की अपनी अनेक आवश्यकताएँ होती हैं। वे सारी आवश्यकताएँ आसानी से तथा सुलभता से पूरी नहीं हो सकती हैं। अपनी चाहत को उचित-अनुचित माँगों से पूरा करने की कोशिश होती है तब मानव जीवन में समस्याएँ पैदा होती हैं और मानव की ये आवश्यकताएँ उद्भव से ही अस्तित्व में आयी हैं। अतः उसके पीछे समस्याओं का उद्भव हुआ है। इससे स्पष्ट है कि मानव- जीवन के प्रारंभ से समस्याएँ अभिन्न रही हैं। अनन्तर मानव- जीवन की परिस्थितियाँ जिस प्रकार कारूप धारण करती गयीं वैसे परिस्थिति के अनुरूप अनेक रमों में समस्याएँ भी अपना रूप धारण करती आयी हैं। मनुष्य जीवन की यात्रा के साथ वह चलती रहेगी कारण दोनों की यात्रा समानान्तर ही रही है।

समस्या : व्युत्पत्ति एवं अर्थ

“समस्या” शब्द संस्कृत भाषा का है, इसका व्युत्पत्त्यर्थ निम्न प्रकार से है—

संस्कृत भाषा के “स उपसर्ग तथा “अस्” धातु के संयोग से “समस्या” शब्द निष्पन्न हुआ है। “सम” का अर्थ है - “एकत्र” तथा “अस्” का अर्थ है - “पेकना” या “रखना” अर्थात् एकत्र रखना या करना है।

(1) आप्टे के संस्कृत हिन्दी कोष में “समस्या” शब्द का संरचना “सम् + अस कयप + टाप” बताई गई है, जिसका अर्थ है—

(अ) पूर्ण करने के लिए दिये जानेवाले छन्द का चरण, कविता का वह भाग जो पूर्ति के लिए प्रस्तुति किया जाए।

(आ) अधूरे को पूरा करना।

(इ) संघटनम्।⁽³⁾

“संघटनम्” शब्द का अर्थ होता है - व्यवस्था, मर्यादा, संरचना।

विचारणीय तथ्य यह है कि “समस्या” शब्द आजकल जिस व्यापक अर्थ में व्यवहृत होता है, वह “व्यवस्था” अर्थ से भिन्न है।

(2) रामचंद्र वर्मा के मानक हिन्दी कोष में “समस्या” शब्द की संरचना यों बताई गई है—

(अ) समसन - वि. (सं . सम् + अस + व्यक्त कयप) अर्थ है—

(क) जो किसी के साथ मिलाया जा सके या मिलाया जाने को हो।

(ख) (पद या शब्द) जिन्हें व्याकरण के अनुसार समास के रम में मिलाया जा सकता है।

(आ) समस्या - स्त्री (समस्य - टाप)

(1) मिलने की क्रिया या भाव (2) मिश्रण (3) संघटन (4) उलझनेवाली ऐसी विचारणीय बात, जिसका निराकरण सहज में न हो सकता हो। कठिन या बिकट प्रसंग। (प्रॉब्लेम) (5) छंद, श्लोक आदि का ऐसा अन्तिम चरण या पद जो काव्य-रचना के कौशल की परीक्षा करने के लिए उस उद्देश्य से कवियों के सामने रखा जाता है कि वे उसके आधार पर अथवा उसके अनुरूप पूरा छन्द या श्लोक प्रस्तुत करें।⁽⁴⁾

(3.) The Shorter Oxford English Dictionary. Problem

i.-(Problem 2 e. m.) (Late ME - Problem, a proble 'me, ad - L- problem, a Gr. rrpō' B nualit. a thing thrown or put forward, F - ?rpoB' annelv, f, npo' PRO 2 B' annelv to throw) + r A difficult question proposed for solution, a riddle, an enigmatic statement'- 1602.

ii - A question proposed for academic discussion or scholastic disputation. obs, exc. Hist 15 29 - blogic The question involved in a syllogism, and of which the canclusim is the solution or answer 1956.

iii. A doubtful or difficult question, a matter or inquiry, discassion, or throught 1594.iv. Geom A propostion in which something is required to be done Opp. to theorem 1570.v. Physics and Math. a question or inquiry which starting from some given conditions investigates some fact, result, or law 1570.

vi. Chess. An arrangement of places upon the Chessboard, in which the player is challenged to discover the method of a complishing a specified result 1817.

vii. att rib, as P. drama, navel, ply, etc.

viii. Physics and Maths a question or inquiry which starting from some given condition investigates some fact, result or law 1570.

ix.Chess-An arrangements of places upon the chess board, in which the players is challenged to discover the method of accomplishing a specified result 1817.

x.att rib ,as P .drama ,novel,play.etc.(5)

4.Authentic Senior Dictionary of the English language.

“समस्या” के अर्थ में अंग्रेजी भाषा में “प्राब्ल - लेम ’शब्द है जिसका अर्थ है” कठिन प्रश्न, उद्देशक (रिखागणित) उपपाद्य विषय, समस्या⁽⁶⁾

उक्त परिभाषाओं के आधार पर समस्या शब्द के निम्न अलग अलग अर्थ प्राप्त होते हैं।

समस्या शब्द विशुद्ध भारतीय है। प्रॉब्लम इस अंग्रेजी शब्द का इससे कोई योग सिद्ध नहीं होता है। दोनों की भाव-भूमि अलग है “प्रॉब्लेम “ और “समस्या“ समानार्थक में प्रयुक्त होने के बावजूद भी दोनों में सूक्ष्म अंतर है। प्रॉब्लेम एकांगी है। “समस्या“ व्यापक भाव भूमि को व्यक्त करता है। अतएव समस्या का सम्बन्ध साहित्य से रहा है जब कि अंग्रेजी प्रॉब्लेम का सम्बन्ध विज्ञान से रहा है।

पहला अर्थ “समस्या = संघटन की अपेक्षा दूसरा, श्री. रामचंद्र वर्माजी का अर्थ “कठिन” या “विकट प्रसंग” हमारे विवेचन प्रसंग में उचित जान पड़ता है। “विकट प्रसंग से विषम परिस्थिति का बोध इसमें चुनौति का भाव विहित है। कर्तव्य की प्रेरणा का बोध। वास्तव में “समस्या” शब्द पहेली साहित्यिक क्षेत्र से सम्बन्धित था। प्राचीन काल में कवियों के सम्मुख

उसकी काव्य प्रतिभा की परीक्षा के लिए, “पहेली” के रूप में एक समस्या उपस्थित कर दी जाती थी, कविगण उस चुनौति को स्वीकार करते और अपने अपरिमेय काव्य या पुरान - ज्ञान के बल पर, संदर्भ सहित समाधान देते हुए उसकी सरस एवं मनोहारी काव्यमय व्याख्या कर देते। यह आशु कविता होती थी। कालान्तर में - विषम परिस्थितियों से उद्भूत स्थिति के अर्थ में “समस्या” शब्द राजनीतिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं शैक्षिक आदि सभी क्षेत्रों में व्यापक रूप में प्रयोग होने लगा है।

समस्या : स्वरूप एवं परिभाषा

समस्या एक प्रक्रिया है, जिसमें द्वन्द्वात्मक स्थिति है। परस्पर विरोधी, परिस्थितियों में “समस्या” का उद्भव होता है। समस्त विषय स्थितियों को अपने में समेट कर वह गुल्मी के रूप में उपस्थित होती है। समस्या किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित ना होकर समूह या समाज से संबंधित होती है। वह समाजमूलक होती है।

समस्या का एक दूसरा पहलू भी है। कोई भी समस्या ऐसी नहीं हो सकती, जिसका हल संभव न हो। समस्या के जन्म के साथ ही उसके हल की परिस्थितियाँ भी जन्म ले चुकी होती हैं या उत्पन्न होने की स्थिति में होती है

समस्या की परिभाषा करते हुए जैनेन्द्रजी कहते हैं - जीवन के लिए द्वैत - स्थिति अनिवार्य बताते हुए “समस्या” को परिभाषित करते हैं : “धर्म - अधर्म , पाप- पुण्य, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य जैसे जोड़ीदार शब्दों की स्थिति को जीवन से समाप्त कर दिया जाएगा तो जीवन का अर्थ भी समाप्त होने लग जाएगा। जीवन की ज्योति को उसके वर्चस्व को बढ़ाना है तो इस अन्तिम द्वैत की बोध की ओर आत्मा को तीव्रतर होने देना होगा। इस प्रकार द्वैत - वेदना में से उस शक्ति का उदय होगा, जिसमें से पराक्रम और पुरुषार्थ फलित होता है।”----- “समस्या तक जीवन है। समस्या है इसीलिए यत्न, प्रयत्न है।”⁽⁷⁾

इसमें जैनेन्द्रजी ने समस्या के लिए द्वैत स्थिति को अनिवार्य बताया है। दोनों विरोधी स्थितियों का निर्माण हुए बगैर उनमें संघर्ष पैदा नहीं होता और संघर्ष से ही समस्या पैदा होती है। समस्या से ही जीवन को अर्थ प्राप्त होता है।

समस्या है इसलिए प्रयत्न है। द्वैत रहित स्थिति “यति” है तो द्वैत - सहित स्थिति “समस्या” और “गति” है, जीवन है।

मेरे मत के अनुसार समस्या का निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, हमेशा मनुष्य जाति अपने सामने रखकर उन्हीं समस्याओं का समाधान कर सकता है, क्योंकि जब हम और भी गहराई के साथ शोध करते हैं तो हमेशा हम यह पाते हैं कि समस्या तभी उत्पन्न होती है, जब उसके समाधान के लिए स्थित है या उसका समस्या उद्भव होनेवाला है।

समस्या का उद्देश्य

समस्या का उद्देश्य संघर्ष - पूर्ण स्थिति को समाप्त करना अर्थात् सामाजिक व्यवस्था को ही समूल बदल देना है। जब यह प्रश्न उठेगा कि व्यवस्था परिवर्तन कैसे और कहा से शुरू किया जाए? और उसकी पद्धति क्या हो? “क्रान्ति” या “शान्ति”? अनुभव यह बताता है कि “शान्ति के द्वारा किये गये परिवर्तन सदा निष्फल सिद्ध हुए हैं अर्थात् फिर वे ही विसंगतियाँ और तथा कथित प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ अपना सिर उठाने लगती हैं। समाज में यथास्थिति कायम हो जाती है। तब केवल एक ही मार्ग रह जाता है - क्रान्ति का संवैधानिक एवं सामाजिक ढांचे में समूल परिवर्तन। “विद्रोह” और “क्रान्ति” में मुख्य अंतर यही है कि यदि विरोध असफल हो जाता है तो “विद्रोह” की संज्ञा पाता है। और वहीं “विद्रोह” यदि सफल हो जाता है, तो “क्रान्ति” कहलाता है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि “समस्या क्रान्ति मूलक होती इस संदर्भ में सुप्रसिद्ध समालोचक डा. विजयेन्द्र स्नातक के विचार प्रस्तुत है “ जहाँ समस्या के प्रति पाठक या दर्शक का ध्यान आकृष्ट करना है, उसे समस्या के बाह्य एवं अभ्यान्तर स्वरूप से परिचित कराना है वहाँ क्रान्ति और प्रतिक्रिया के लिए प्रेरणा प्रदान करना भी है।”⁽⁸⁾

संदर्भ सूची

- 1) मन्मनाथ गुप्त- ऐतिहासिक भौतिकवाद- पृष्ठ संख्या-134, प्रगति प्रकाशन बनारस -प्रथम संस्करण -1974
- 2) इलाचन्द्र जोशी : “लेख युग की समस्याएँ और साहित्यकार जनवरी मार्च 1968 अलोचना 3-7, पृष्ठ संख्या-71-प्रथम संस्करण-1968
- 3) सं. वामन शिवराम आपटे- संस्कृत हिन्दी कोष दि.सं. मानक हिन्दी कोष (पाँचवां खण्ड)- पृष्ठ संख्या -1075 - श्री सुंदरलाल मोतीलाल बनारसी जवाहर नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण -1966
- 4) सं. रामचन्द्र वर्मा- मानक हिंदी कोष (पांचवा खंड)- पृष्ठ संख्या -383- मोहनलाल भट्ट सचिव, प्रथम शासन निकाय, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण -1967
- 5) William little-The shorter oxford English Dictionary Volume-II NZ- NZA पृष्ठ संख्या-1589- लिटरेचर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड कोलकाता, प्रथम संस्करण-1933 से 1968
- 6) Authentic Senior Dictionary of the English Language (Anglo-Hindi) 1162 पृष्ठ संख्या-1162- पब्लिशर राजकमल, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1962
- 7) जैनेद्रकुमार : लेख : शक्ति और नीति प्रकाशित मन, अगस्त पृष्ठ संख्या -75,- प्रथम संस्करण- 1975
- 8) डॉ. विजयन्द्र स्नातक : आलोचना- भाग 2 पृष्ठ संख्या- 52, जनवरी 1952.



Marriage as a Socio-Economic Institution in *Jane Austen's Pride and Prejudice*

Dr. Mala Srivastava

Asst. Professor, Department of English

Deen Dayal Upadhyay Government Degree Collage, Saidabad Prayagraj, U.P.

Abstract

*Marriage in Jane Austen's novels functions as both a personal relationship and a crucial socio-economic institution, especially in the context of Regency England where women's financial stability and social standing were often tied to matrimony. This paper explores the economic dimensions of marriage in *Pride and Prejudice* (1813) and *Sense and Sensibility* (1811), emphasizing how Austen intertwines themes of love, property, class, and financial security. Through close readings of key characters—Charlotte Lucas, Elizabeth Bennet, Edward Ferrars, Elinor Dashwood, Marianne Dashwood, and Colonel Brandon—the study highlights Austen's critique of marriages founded solely on wealth, while also acknowledging the limitations imposed upon women by inheritance laws, the practice of entailment, and the scarcity of professions open to women. Drawing upon feminist literary criticism and socio-historical approaches, the paper argues that Austen portrays marriage as a pragmatic negotiation rather than a purely romantic union. While *Pride and Prejudice* critiques the absurdity of materialistic unions, *Sense and Sensibility* illustrates the dangers of romantic imprudence when divorced from economic reality. Together, these novels reveal Austen's nuanced position: marriage is a vital economic strategy for women, but true social harmony arises when affection coexists with financial stability. This analysis situates Austen as a proto-feminist writer whose works remain relevant for understanding the intersections of gender, class, and economics in literature and society.*

Introduction

Jane Austen's novels continue to occupy a central place in English literary studies, not only for their artistry but also for their incisive social commentary. Among her most pressing concerns is the question of marriage, which emerges as the axis upon which the lives of her female characters revolve. In early nineteenth-century England, marriage was far more than a personal union; it was a critical socio-economic institution that defined women's futures. For women without independent wealth or professional opportunities, marriage was the most secure avenue for financial stability and social recognition. Austen, who herself never married, offers in her fiction a nuanced exploration of this institution, revealing both its material foundations and its moral ambiguities.

In *Pride and Prejudice* (1813) and *Sense and Sensibility* (1811), Austen's treatment of marriage exposes the tension between romantic ideals and economic imperatives. The entailment of the Bennet estate in *Pride and Prejudice* exemplifies how property laws rendered daughters financially vulnerable, thereby compelling them to view marriage as their only safeguard. Similarly, in *Sense and Sensibility*, the Dashwood sisters face the harsh reality of diminished fortune after the death of their father, illustrating how economic fragility shaped women's marital prospects. Austen's society made such concerns inescapable, and her novels reflect the intersection of law, economy, and gender within the domestic sphere.

Scholars such as Alistair Duckworth argue that the estate in Austen's novels symbolizes not only landownership but also the social order that must be preserved through prudent marital unions.¹ Likewise, Claudia Johnson observes that Austen's fiction "demystifies the romance of marriage by exposing the economic calculations that underpin it."² These interpretations emphasize that Austen was acutely aware of how love, though desirable, often came second to wealth and social security in the marital equation.

Characters such as Charlotte Lucas, Elizabeth Bennet, Elinor Dashwood, and Marianne Dashwood dramatize the range of choices available to women, from pragmatic acceptance of loveless unions to risky indulgence in passion, to the difficult balance between affection and prudence. Austen, therefore, positions marriage not as an escape from economic concerns but as a negotiation between personal happiness and financial survival.

This research paper examines the representation of marriage as a socio-economic institution in these two novels, arguing that Austen critiques the reduction of women to economic dependents while simultaneously acknowledging the constraints of her historical moment. By situating Austen's fiction within the socio-legal context of Regency England and drawing upon feminist and Marxist literary frameworks, the paper demonstrates how marriage in her novels reflects broader tensions between individual desire and social necessity.

Review of Literature

The institution of marriage in Jane Austen's novels has long attracted scholarly attention, because it reveals the complex interplay between economics, gender, and social structures in late eighteenth- and early nineteenth-century England.

Lionel Trilling emphasizes Austen's moral vision, suggesting that marriage in her works signifies not only a personal union but also a moral alignment with society.³ Alistair Duckworth, in *The Improvement of the Estate*, shows that property and inheritance form the basis of Austen's marriage plots, with unions preserving or reshaping social order.⁴ Claudia Johnson highlights Austen's demystification of romance by foregrounding economic necessity in female marital decisions.⁵

Sandra Gilbert and Susan Gubar see Austen as constrained by patriarchy yet subtly resistant, positioning heroines like Elizabeth Bennet as negotiating women's limited autonomy.⁶ Marilyn Butler, however, interprets Austen as a conservative moralist, reinforcing stability through socially advantageous marriages.⁷

Vivien Jones emphasizes the historical reality of inheritance laws and entailments that limited women's independence,⁸ while Edward Copeland shows how money and economic security underpin Austen's

fiction.⁹ Devoney Looser adds that Austen's reception reveals her adaptability to both feminist and conservative interpretations.¹⁰

Indian critics have also contributed: Meenakshi Mukherjee situates Austen in global feminist discourse while noting how her themes resonate with Indian debates on dowry and marriage.¹¹ Similarly, R. K. Kaul draws parallels between Austen's heroines and women in colonial Indian literature, suggesting cross-cultural universality in women's negotiation of marriage.¹²

Overall, the literature establishes that Austen dramatizes the balance between love and livelihood, critiquing mercenary marriages while recognizing that financial stability was indispensable for women of her time.

Theoretical Framework

To understand marriage as a socio-economic institution in Jane Austen's novels, this study applies three critical approaches: feminist literary criticism, Marxist social analysis, and a socio-historical framework.

Feminist literary theory underscores the ways in which Austen's heroines resist or negotiate patriarchal norms. Simone de Beauvoir argued that "one is not born, but rather becomes, a woman," emphasizing the cultural construction of female identity.¹³ In Austen's novels, women are pressured into marriage as their only socially sanctioned path, yet heroines like Elizabeth Bennet and Elinor Dashwood insist that affection and respect are central to their choices. Judith Butler's notion of gender performativity further illuminates characters like Charlotte Lucas, who conform to expectations by accepting pragmatic marriages, contrasted with Elizabeth, who resists performative compliance.¹⁴

Marxist literary criticism reveals how marriage operates as an economic contract. Terry Eagleton insists that literature reflects the material base of society, and in Austen, marriage often commodifies women.¹⁵ The Bennet sisters' lack of inheritance and the Dashwood sisters' financial precarity illustrate women's dependency on male wealth and property. From this perspective, the marriage market becomes a site of class negotiation, where alliances preserve or alter social hierarchies.

A socio-historical framework situates Austen's fiction within Regency England's property and inheritance laws. Entailment restricted women's access to property, as seen in the Bennet estate's transfer to Mr. Collins. As Vivien Jones observes, such legal structures rendered marriage the most practical avenue for women's security.¹⁶ Indian scholar Shalini Sinha, drawing parallels with colonial Indian practices, notes that Austen's women "mirror the vulnerabilities of Indian women under the pressures of dowry and arranged matches, where economic considerations often overshadow individual desire."¹⁷

By integrating these approaches, the study highlights marriage as both a personal negotiation and a structural necessity in Austen's world.

Methodology

This study adopts a qualitative, interpretative approach grounded in literary analysis. The primary texts under consideration are Jane Austen's *Pride and Prejudice* (1813) and *Sense and Sensibility* (1811), which are examined through close reading of character arcs, dialogues, and narrative strategies to uncover the socio-economic dimensions of marriage. The analysis is informed by secondary

scholarship, drawing on feminist criticism, Marxist literary theory, and socio-historical studies of Regency England. Feminist theory highlights the negotiation of women's agency within patriarchal structures; Marxist readings illuminate the commodification of marriage as an economic exchange; and socio-historical perspectives situate Austen's novels within the inheritance laws, property customs, and cultural norms of her era. A comparative framework is employed to examine similarities and differences in Austen's portrayal of marriage across the two novels. This triangulated approach ensures a holistic understanding of marriage as both a personal relationship and a socio-economic institution.

Analysis and Discussion

Marriage in *Pride and Prejudice*

Austen's *Pride and Prejudice* situates marriage at the nexus of love, money, and class. Its famous opening line satirizes social assumptions: "It is a truth universally acknowledged, that a single man in possession of a good fortune must be in want of a wife." The irony exposes how society commodifies marital alliances.

Charlotte Lucas exemplifies pragmatic marriage. At twenty-seven, with no fortune, she views marriage as her only safeguard, candidly admitting that she is "not romantic." Her acceptance of Mr. Collins reflects the grim reality for women of modest means. Claudia Johnson reads Charlotte as Austen's critique of a society that forces women into economic marriages.¹⁸

Elizabeth Bennet, in contrast, insists on marrying for respect and affection. Rejecting Mr. Collins, she refuses to compromise her autonomy. Her eventual union with Darcy, however, reconciles love with wealth. Sandra Gilbert and Susan Gubar see Elizabeth as Austen's "subversive heroine," one who challenges patriarchal norms yet finds fulfillment within them.¹⁹

Lydia Bennet's elopement illustrates reckless disregard for both propriety and economy. Without Darcy's intervention, her reputation would have been irreparably destroyed, revealing the precarity of women's social standing. Tony Tanner interprets Lydia's marriage as Austen's warning against marriages founded purely on passion.²⁰

Marriage in *Sense and Sensibility*

In *Sense and Sensibility* (1811), Austen explores marriage by presenting a contrast between the rational, self-controlled Elinor Dashwood and her impulsive, emotionally expressive sister, Marianne. The novel's central conflict between "sense" and "sensibility" dramatizes two competing approaches to love and marriage, both shaped by the economic and social realities of Regency England.

The Dashwood sisters' precarious situation following the death of their father illustrates the vulnerability of women within a legal and patriarchal framework that deprived them of property. Under the rules of primogeniture, their half-brother John Dashwood inherits the family estate at Norland Park, leaving Mrs. Dashwood and her daughters dependent on the charity of relatives. Their reduced circumstances not only affect their social position but also severely limit their marriage prospects. As Vivien Jones observes, "the novel dramatizes the financial helplessness of women in Regency society, where marriage was their most practical recourse."²¹ This displacement foregrounds the theme that marriage is not merely an emotional union but often the sole strategy for securing

financial stability and social respectability.

Within this context, Elinor Dashwood becomes the voice of restraint and prudence. Her affection for Edward Ferrars is genuine, yet she recognizes the obstacles presented by his uncertain inheritance and the disapproval of his family. Edward's engagement to Lucy Steele further complicates matters, threatening Elinor's hopes for marriage. Despite this, Elinor maintains composure and self-discipline, embodying Austen's model of sense. Her patience and moral strength highlight the necessity of balancing personal affection with pragmatic awareness of economic reality. In the end, Edward's eventual disinheritance and subsequent reconciliation with his mother allow him to marry Elinor, though with modest means. Their marriage symbolizes Austen's ideal: a sustainable union built on respect, emotional integrity, and realistic acceptance of financial constraints.

Marianne Dashwood, on the other hand, represents the dangers of privileging romantic sensibility above all else. Her passionate attachment to John Willoughby blinds her to his mercenary character and social ambitions. Marianne's disregard for economic considerations and propriety exposes her to heartbreak and near-ruin when Willoughby chooses to marry a wealthy heiress to secure his fortune. Austen uses Marianne's ordeal to critique the risks inherent in marriages based solely on passion without regard for financial security or social judgment. Her eventual acceptance of Colonel Brandon, a man she initially dismissed for his age and seriousness, reflects not only her personal maturation but also Austen's belief in reconciling passion with social and economic pragmatism. Marilyn Butler interprets Marianne's transformation as Austen's insistence that youthful sensibility must be tempered by rational sense if women are to secure stable and respectable futures.²²

Moreover, the sisters' contrasting experiences highlight broader cultural anxieties of Austen's era. Elinor's endurance represents the virtues of patience, rationality, and moral steadiness—qualities Austen rewards with a harmonious marriage. Marianne's journey, by contrast, dramatizes the perils of emotional excess and underscores the social consequences for women who disregard prudence. Yet Austen's portrayal is not unsympathetic; Marianne's suffering elicits readerly sympathy, and her eventual growth suggests that sensibility, when tempered by sense, can enrich a woman's experience of love. In this way, Austen critiques not only reckless romanticism but also a rigid, mercenary approach to marriage.

Through the Dashwood sisters, *Sense and Sensibility* dramatizes the negotiation women were compelled to perform in the marriage market: balancing emotional fulfillment with economic survival. While Elinor and Edward's marriage demonstrates Austen's vision of sustainable partnership, Marianne and Brandon's union suggests the possibility of reconciling passion with social stability. Together, their stories reveal Austen's nuanced understanding of marriage as a socio-economic institution shaped by both personal desire and the constraints of a patriarchal society.

Comparative Insights

In both novels, Austen critiques extremes—Charlotte's economic pragmatism, Lydia's recklessness, and Marianne's romantic excess. Her ideal marriages—Elizabeth with Darcy and Elinor with Edward—represent unions that blend affection, integrity, and financial prudence. From a feminist lens, Austen critiques women's lack of agency; from a Marxist lens, she depicts the commodification of matrimony; from a socio-historical lens, she documents the inheritance laws that entrenched women's dependency.

Indian critic Rajeswari Sunder Rajan situates Austen within global feminist debates, arguing that her heroines' negotiations resonate with women's struggles in postcolonial societies.²³ By balancing economic survival with individual autonomy, Austen provides a universal commentary on women's marital dilemmas.

Findings and Reflections

This study finds that Austen portrays marriage as both a necessity and a site of critique. Women in *Pride and Prejudice* and *Sense and Sensibility* must marry for survival, yet heroines like Elizabeth and Elinor insist on affection, thereby resisting total commodification.

Austen critiques the extremes of marriage: Charlotte Lucas's pragmatic compromise and Lydia Bennet's reckless choice in *Pride and Prejudice*; Marianne's romantic folly in *Sense and Sensibility*. By contrast, Elizabeth's and Elinor's marriages represent Austen's vision of balance.

From a feminist perspective, Austen critiques patriarchy while granting her heroines moral agency.²⁴ From a Marxist lens, marriage functions as an exchange of property and class status.²⁵ Socio-historically, Austen documents how legal structures like entailment deprived women of independence.²⁶

A striking reflection is Austen's continued relevance. Modern marriages, though less dictated by inheritance, still involve questions of financial compatibility and social mobility. Austen's vision—that true partnership requires both affection and stability—remains timeless.

Conclusion

Marriage in Austen's novels emerges as a socio-economic institution, deeply tied to property, class, and gender norms. Through varied examples—Charlotte's compromise, Lydia's folly, Marianne's passion, and the balanced unions of Elizabeth and Elinor—Austen critiques both extremes and advocates for equilibrium between love and livelihood.

Her heroines resist being reduced to commodities, yet they cannot escape the structures that confine them. In doing so, Austen both reflects the realities of Regency England and subtly critiques them. Indian scholars have noted parallels between Austen's society and Indian marital practices shaped by dowry, property, and social status, reinforcing her global relevance.

Ultimately, Austen demonstrates that while marriage may sustain social order, it must also honor individual dignity and emotional authenticity. Her nuanced critique ensures that her novels remain vital texts for debates on gender, economics, and society.

References:

1. Duckworth, A. (1971). *The improvement of the estate: A study of Jane Austen's novels*. Johns Hopkins University Press.
2. Johnson, C. (1988). *Jane Austen: Women, politics, and the novel*. University of Chicago Press.
3. Trilling, L. (1957). *The opposing self: Nine essays in criticism*. Viking Press.
4. Duckworth, A. (1971). *The improvement of the estate: A study of Jane Austen's novels*. Johns Hopkins University Press.
5. Johnson, C. (1988). *Jane Austen: Women, politics, and the novel*. University of Chicago Press.

6. Gilbert, S. M., & Gubar, S. (1979). *The madwoman in the attic: The woman writer and the nineteenth-century literary imagination*. Yale University Press.
7. Butler, M. (1975). *Jane Austen and the war of ideas*. Clarendon Press.
8. Jones, V. (1990). *How to study a Jane Austen novel*. Macmillan Education.
9. Copeland, E. (1995). *Women writing about money: Women's fiction in England, 1790–1820*. Cambridge University Press.
10. Looser, D. (2017). *The making of Jane Austen*. Johns Hopkins University Press.
11. Mukherjee, M. (1990). *Realism and reality: The novel and society in India*. Oxford University Press.
12. Kaul, R. K. (2003). Women in Austen and Indo-Anglian fiction: A comparative view. *Indian Journal of English Studies*, 40(2), 55–68.
13. Beauvoir, S. de. (1949/2011). *The second sex*. Vintage Books.
14. Butler, J. (1990). *Gender trouble*. Routledge.
15. Eagleton, T. (1976). *Marxism and literary criticism*. Routledge.
16. Jones, V. (1990). *How to study a Jane Austen novel*. Macmillan Education.
17. Sinha, S. (2005). Marriage and women in Jane Austen: An Indian feminist reading. *Journal of Literature and Aesthetics*, 5(1–2), 87–102.
18. Johnson, C. (1988). *Jane Austen: Women, politics, and the novel*. University of Chicago Press.
19. Gilbert, S. M., & Gubar, S. (1979). *The madwoman in the attic*. Yale University Press.
20. Tanner, T. (1986). *Jane Austen*. Harvard University Press.
21. Jones, V. (1990). *How to study a Jane Austen novel*. Macmillan Education.
22. Butler, M. (1975). *Jane Austen and the war of ideas*. Clarendon Press.
23. Rajan, R. S. (1993). *Real and imagined women: Gender, culture and postcolonialism*. Routledge.
24. Johnson, C. (1988). *Jane Austen: Women, politics, and the novel*. University of Chicago Press.
25. Eagleton, T. (1976). *Marxism and literary criticism*. Routledge.
26. Copeland, E. (1995). *Women writing about money*. Cambridge University Press.



Disparities in Health and Well-Being: A Comparative Study of Women and Men in Uttar Pradesh

Alok Kumar Rai¹, Dr. Vivek Kumar Jaiswal²

1. Research Scholar, Department of Economics, Kisan P.G College, Bahraich
2. Assistant Professor, Department of Economics, Kisan P.G College, Bahraich

Abstract

Uttar Pradesh (UP), India's most populous state, presents a complex landscape of health and well-being outcomes, significantly shaped by entrenched socio-cultural norms, economic disparities, and uneven access to resources. This paper undertakes a comparative study of health and well-being indicators between women and men in UP, highlighting the persistent gender disparities. Drawing upon secondary data from national surveys (e.g., NFHS-5, NSSO, Census) and relevant academic literature, the study analyzes key domains including maternal and reproductive health, nutrition, chronic and communicable diseases, mental health, access to healthcare, education, economic empowerment, and exposure to violence. The findings reveal that women in UP disproportionately bear the burden of poor maternal and reproductive health, anemia, and mental health issues stemming from limited autonomy and exposure to violence. Men, while generally having better access to healthcare and economic opportunities, face unique challenges related to substance abuse, occupational hazards, and higher mortality rates from accidents and NCDs, often exacerbated by delayed health-seeking behavior influenced by masculine norms. The paper argues that deeply rooted patriarchal structures, low literacy rates, poverty, and geographical barriers are fundamental drivers of these gendered disparities. It concludes with policy recommendations emphasizing gender-transformative approaches, strengthening primary healthcare and mental health services, promoting education and economic empowerment for women, and fostering community engagement to challenge harmful gender norms, ultimately advocating for equitable health and well-being outcomes for all residents of Uttar Pradesh.

Keywords: Gender disparities, health, well-being, Uttar Pradesh, women, men, social determinants of health, patriarchy, India, NFHS.

1. Introduction

Health and well-being are basic human rights and key measures of social progress. Yet they are not shared equally: patterns of illness, access to care, and overall life chances are shaped by social forces such as class, caste, location—and importantly, gender. In India, where social structures are layered and varied, gender shapes who eats enough, who goes to school, who reaches a clinic on

time, and who makes household decisions. Uttar Pradesh (UP), with a population exceeding 240 million, offers a stark example: its size, socio-economic variety, and persistent development challenges make it an urgent site for examining how gender influences health and well-being.¹

The social fabric of UP—marked by entrenched patriarchy, widespread poverty, lower average literacy, and a largely rural agricultural economy—creates conditions in which gendered disadvantage often begins at birth. Girls and women commonly face unequal access to nutrition, education, reproductive and general healthcare, and opportunities to participate in decision-making. At the same time, prevailing norms about masculinity also shape men's health: expectations to be stoic, to shoulder economic responsibility, or to engage in risky work can reduce men's use of health services and negatively affect mental and physical health.²

This paper offers a comparative analysis of health and well-being disparities between women and men in Uttar Pradesh. Using a range of health, social, and economic indicators, the study has three objectives:

1. Identify and document the specific health and well-being challenges that affect women and men differently in UP.
2. Examine the socio-cultural, economic, and systemic drivers that produce and sustain these gendered gaps.
3. Recommend evidence-informed policy actions aimed at narrowing disparities and promoting equitable health outcomes across genders.

A clearer understanding of these differences is essential for designing gender-sensitive policies and programmes. Targeted interventions that address both the distinct needs of women and the gendered constraints on men's health behaviour will help advance broader development goals—particularly Sustainable Development Goal 3 (good health and well-being) and SDG 5 (gender equality).³ By focusing on UP, the study aims to contribute practical insights for policymakers, health practitioners, and civil society actors working to make health systems and social policies more equitable and responsive to gendered realities.⁴

2. Theoretical and Contextual Background

2.1 Social Determinants of Health and Gender

The Social Determinants of Health (SDH) framework helps us see health not just as biology or individual choice but as the result of the social and economic conditions in which people are born, grow, live, work, and age. These conditions are shaped by broader forces — economic policy,

1 Office of the Registrar General & Census Commissioner, India; general population figures and state rankings.

2 Literature on gender and health behaviours; see reviews on masculinity, help-seeking, and women's access to care.

3 United Nations, Sustainable Development Goals — SDG 3 (Good Health and Well-being) and SDG 5 (Gender Equality).

4 State and national reports on human development and health (e.g., NITI Aayog, Human Development Reports; National Family Health Survey).

political systems, cultural norms and social hierarchies — that distribute resources, risks, and opportunities unevenly. Gender, understood as the social roles, behaviours and expectations attached to being female, male, or gender-diverse, is a central determinant in this web. It influences who gets adequate nutrition, who can travel to a clinic, whose illnesses are taken seriously, and who can make decisions about care and finances. Because gender is socially constructed and varies across time and place, it interacts with other determinants (class, caste, location) to create the specific patterns of advantage and disadvantage we observe in health outcomes.⁵

2.2 Gendered Health Disparities: Global and National Patterns

Globally, women often carry disproportionate burdens of poverty, educational deprivation, and violence — factors that translate into higher risks for maternal complications, untreated mental health conditions, and restricted access to preventive and curative services. At the same time, men face distinct, gender-shaped risks: masculine norms that valorize risk-taking and discourage help-seeking are linked to higher rates of substance misuse, workplace injuries, and underuse of health services.⁶ In India, these global patterns are visible and amplified in many contexts. Landmark analyses drawing attention to skewed sex ratios illustrated how deep-seated gender bias can affect survival and care from birth onward. National surveys and studies repeatedly show that Indian women experience higher levels of anemia, malnutrition, and unmet need for family planning, alongside lower educational and economic participation — all of which undermine lifelong health and agency.⁷

2.3 The Uttar Pradesh Context

Uttar Pradesh presents a concentrated picture of these gendered health challenges. The state's large and dense population, pronounced rural presence, and entrenched social hierarchies intensify barriers to care and wellbeing. Key concerns documented in UP include elevated maternal and infant mortality, widespread nutritional deficits (notably anemia among women and children), low female literacy and labour-force participation, and a high prevalence of gender-based violence. Geographic remoteness, poor transport and financial constraints further limit women's ability to reach timely care, compounding these problems. While a strong body of research examines women's health in UP, comparatively fewer studies set women's and men's health side by side using a social-determinants lens. This comparative approach — which considers how gendered norms and structural factors shape different risks, behaviours, and access for men and women — is what this paper aims to provide. By doing so, it seeks to highlight targeted entry points for policy and programmatic change that are sensitive to both women's vulnerabilities and the gendered constraints on men's health behaviours.⁸

5 World Health Organization. (2008). Closing the gap in a generation: Health equity through action on the social determinants of health (Final Report of the Commission on Social Determinants of Health). World Health Organization.

6 Sen, G., & Östlin, P. (2008). Gender inequity in health: Why it exists and how we can change it. World Health Organization.

7 Courtenay, W. H. (2000). Constructions of masculinity and their influence on men's well-being: A theory of gender and health. *Social Science & Medicine*, 50(10), 1385–1401.

8 Sen, A. (1990). More than 100 million women are missing. *BMJ*, 304(6827), 587–588.

3. Research Design and Methods

This study uses a comparative, descriptive design based on secondary data. Its central aim is to systematically contrast health and well-being indicators for women and men in Uttar Pradesh, drawing on large-scale, authoritative data sets and complementary published literature to map gendered patterns and suggest plausible drivers.

3.1 Data sources

Primary secondary sources consulted for the analysis are:

- a) **National Family Health Survey (NFHS-5, 2019–21)** — for state-level, sex-disaggregated data on health, nutrition, reproductive indicators, and selected measures of service use and wellbeing.
- b) **Census of India (2011)** — for demographic structure, literacy and basic economic participation statistics at district and state levels.
- c) **National Sample Survey (NSS) rounds / MOSPI reports** — for complementary information on employment, consumption, and household economic indicators.
- d) **Sample Registration System (SRS) bulletins** — for vital statistics such as birth and death rates and other mortality indicators.
- e) **Government of India ministry reports and peer-reviewed studies** — to provide context, programmatic details, and qualitative or in-depth analyses specific to Uttar Pradesh (for example, ministry program reports, state health mission documents, and academic articles).

Where possible, indicators were taken from the most recent rounds available; older but still relevant series (e.g., Census 2011) are used for structural context and trend interpretation.

3.2 Key indicators and domains

Comparisons between women and men are organised across two broad domains:

Health indicators — maternal and reproductive health (ANC coverage, institutional delivery, unmet need for family planning, MMR, adolescent births); nutritional status (anemia prevalence, child stunting/wasting as a proxy for maternal nutrition, BMI categories); communicable and non-communicable diseases (TB, HIV, malaria, hypertension, diabetes); mental health proxies available in NFHS; health-seeking behaviour and service use (utilisation rates, delays, insurance coverage); and mortality/morbidity measures (life expectancy, cause patterns where available).

Well-being indicators — education (literacy and enrolment by level), economic empowerment (labour force participation, wage gaps, asset ownership), exposure to violence (NFHS women's module measures), intra-household decision-making and mobility, access to amenities (sanitation, clean cooking fuel, water), and subjective proxies for psychological well-being such as agency and freedom of movement where captured in surveys.

3.3 Analytical approach

The analytical strategy combines several complementary steps:

1. **Descriptive statistics:** compute prevalence rates, means, and proportions for each indicator, disaggregated by sex (and where possible by rural/urban residence, caste, and wealth quintile).

2. **Comparative tabulation:** present side-by-side comparisons to highlight absolute and relative gaps between women and men.
3. **Contextual interpretation:** situate observed differences within UP's socio-economic and cultural context, using the Social Determinants of Health framework to link indicators to structural drivers (e.g., education, mobility, economic dependence).
4. **Driver identification:** draw on published literature and program reports to associate likely causal or contributing factors (for example, patriarchal norms, economic constraints, service-delivery gaps). Given the cross-sectional nature of most sources, causal claims are made cautiously and supported where possible by triangulated evidence from multiple sources.

3.4 Limitations

Key limitations of the study are acknowledged up front:

Secondary data constraints: reliance on existing surveys and reports means findings are limited to the variables those sources capture; nuances of lived experience and local variation may be missed.

Temporal and measurement gaps: data sets come from different years and rounds (e.g., Census 2011 vs. NFHS-5, 2019–21), which may complicate direct comparisons over time.

Gendered measurement limits: while NFHS provides rich information for women (including a detailed domestic violence module), comparable in-depth measures for men — particularly regarding mental health, non-partner violence, and some wellbeing dimensions — are sparse.

Cross-sectional design: the analysis is descriptive and cross-sectional and therefore cannot establish causal relationships; it does, however, identify robust associations and policy-relevant disparities that merit further longitudinal or qualitative study.

4. Comparative analysis of health and well-being in Uttar Pradesh

This section synthesizes available evidence—largely from NFHS-5 and other official sources—to compare health and well-being indicators for women and men in Uttar Pradesh and to interpret the gendered patterns that emerge.

4.1 Demographic and socioeconomic backdrop

Uttar Pradesh is a densely populated state with a predominantly rural population, and these structural features shape everyday life and access to services. Literacy shows a clear gender gap: about 77.3% of men are literate versus 63.2% of women—an educational divide that constrains women's opportunities and health literacy (NFHS-5). Child undernutrition is also alarmingly common: nearly four in ten children under five are stunted (39.7%) and a sizable share are wasted (17.3%), signaling chronic deprivation that reflects maternal nutrition, household food insecurity, and care practices. These baseline conditions set the stage for persistent gendered differences in health and well-being.⁹

4.2 Health disparities

4.2.1 Maternal and reproductive health (women-centred)

Maternal health remains a critical area of concern. Uttar Pradesh's maternal mortality ratios are

9 International Institute for Population Sciences (IIPS) & ICF. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21: India. IIPS.

among the higher state values nationally, despite gradual improvements over recent years. Access to antenatal care and institutional delivery has grown—NFHS-5 reports that 70.8% of women received four or more ANC visits and 79.7% had institutional deliveries—yet these averages conceal sharp shortfalls in remote and marginalized communities. Contraceptive use is rising, but female sterilization continues to dominate the method mix and the unmet need for family planning among currently married women is still around 9.7%, pointing to constrained contraceptive choice and limited male engagement in family planning. Adolescent childbearing is also significant: roughly 12.8% of girls aged 15–19 have begun childbearing, with well-documented risks for both mother and child.¹⁰

4.2.2 Nutrition

Anemia and undernutrition disproportionately burden women. Over half of women aged 15–49 are anemic (51.5%) compared with about 27.6% of men in the same age group—differences driven partly by biological factors (menstruation, pregnancy) but amplified by gendered food allocation and lower access to diverse diets for women. Undernutrition (thinness, BMI <18.5) affects a slightly higher share of women (16.2%) than men (15.8%), while rising overweight and obesity create a double burden—around 21.0% of women and 20.3% of men are overweight or obese—reflecting shifting diets and activity patterns across both sexes.

4.2.3 Communicable diseases

Gendered patterns in exposure, diagnosis, and treatment exist but are not always fully visible in state data. Social stigma and mobility constraints can reduce women’s access to testing and ongoing care for infections such as HIV, while men’s greater mobility and risk behaviours may increase their exposure to some infections. Where gender-disaggregated state figures are limited, national and program data suggest these differentiated pathways to infection and care.¹¹

4.2.4 Non-communicable diseases (NCDs)

NCDs are rising in UP for both sexes. Hypertension affects about 26.6% of women and 25.8% of men aged 15–49, and high blood glucose (a proxy for diabetes) is reported for roughly 10.4% of women and 10.6% of men in the same age band. Gendered lifestyles—tobacco and alcohol use, patterns of physical activity, dietary choices—together with differential access to screening and treatment, shape these burdens: men may be more exposed to some behavioural risks, while women often face barriers to early diagnosis and care because of mobility or decision-making constraints.¹²

4.2.5 Mental health

Comprehensive, comparable mental-health data are scarce in household surveys, and NFHS-5 provides limited proxies (mainly for women). Local studies and program reports indicate higher risk of depression and anxiety among many women in UP, often linked to domestic violence, marital stress, and heavy

10 Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2022). Sample Registration System (SRS) statistical report 2022. Government of India.

11 International Institute for Population Sciences (IIPS) & ICF. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21: India. IIPS.

12 Ministry of Statistics and Programme Implementation (MOSPI). (2020). Periodic Labour Force Survey (PLFS), 2019–20. Government of India.

unpaid care responsibilities; men's mental health challenges are often tied to economic stress, unemployment, and social expectations of stoicism that discourage help-seeking. Stigma and gaps in mental-health services contribute to widespread underdiagnosis and undertreatment for both genders.

4.3 Well-being disparities

4.3.1 Education and literacy

The gendered education gap constrains women's employment options, health knowledge, and bargaining power. While primary-level enrolment for girls has improved, dropout rates rise at secondary and higher levels—often driven by household duties, early marriage, and safety concerns—reducing women's long-term prospects and resilience.

4.3.2 Economic empowerment and financial autonomy

Women's labour-force participation in UP is low: only about 25.4% of women aged 15–49 report being employed, compared with 76.9% of men in the same age band. Women's work is disproportionately unpaid or concentrated in informal, low-paid agricultural tasks. Although asset ownership (house/land) recorded jointly or individually has increased for some women, control over assets and financial decision-making often remains limited. Bank-account ownership has expanded but differential usage and control constrain women's real economic autonomy.

4.3.3 Exposure to violence

Gender-based violence is a pervasive barrier to women's health and participation. NFHS-5 shows that about 31.2% of women aged 18–49 have experienced spousal physical, sexual, or emotional violence; 3.6% report sexual violence since age 15. The physical and mental health impacts are profound and long-lasting. Men are more commonly reported as perpetrators, though men can also be victims of violence—particularly in contexts not captured well by household surveys.

4.3.4 Decision-making and autonomy

Women's agency inside the household is limited: only around 78.4% of women participate in decisions about their own healthcare and lower shares engage in choices about major purchases or mobility. This curtailed autonomy constrains timely care, nutrition, and recovery from illness.

4.3.5 Basic amenities and time burden

Access to improved sanitation, clean cooking fuel, and safe water has improved unevenly; rural, remote, and marginalized households lag behind. Women continue to shoulder much of the unpaid domestic work—collecting water and fuel—which impinges on their time for education, paid work, rest, and care-seeking, and exposes them to safety and health risks.

5. Policy implications and recommendations

Addressing the entrenched gender gaps in health and well-being in Uttar Pradesh demands a coordinated, gender-transformative strategy that combines immediate health interventions with long-term action on the social determinants that shape everyday life. The recommendations below are grouped by system-level reforms, social-sector actions and community-facing strategies to ensure they are practical, scalable and sensitive to gendered needs.

5.1 Strengthen gender-sensitive primary health systems

Primary health care must become the first line of gender-responsive action. This means revitalizing

primary health centres (PHCs) and sub-centres so they reliably provide maternal, reproductive and basic non-communicable disease (NCD) services close to home. PHCs should prioritise staffing patterns that include female health providers (ASHAs, ANMs, nurses) who can improve women's access and trust, and ensure uninterrupted supplies of essential medicines and diagnostics for maternal care, anemia management, NCD screening and mental-health referral. Strengthening outreach — mobile clinics, community health days and adolescent health camps — will help reach marginalised and remote communities where service contact remains low. These measures will make routine care more accessible to women while also enabling earlier diagnosis and follow-up for men who delay care.¹³

5.2 Integrate maternal, nutrition, NCD and mental-health services

Program design should move beyond single-issue interventions to integrated packages delivered at the primary level. For women this means combining antenatal and postnatal care with nutrition services (iron-folic acid supplementation, diet counselling), family-planning counselling that expands method choice, and screening for common NCDs. For both sexes, mental-health first-line services — basic screening, psychosocial support and referral pathways — should be part of routine care. Training frontline workers to recognise gendered symptoms and referral needs, and to provide confidential, stigma-sensitive counselling, will increase uptake and continuity of care.¹⁴

5.3 Promote men's engagement and challenge harmful gender norms

Improving women's health also requires engaging men as partners. Behaviour-change campaigns should encourage shared responsibility for contraception, newborn care and household nutrition, and address male patterns of risk such as tobacco and alcohol use, hazardous work and delayed help-seeking. Programmes that promote positive, non-violent masculinities and father-inclusive services (paternity-friendly counselling, male clinic hours, workplace health outreach) can reduce barriers to care for men while supporting women's autonomy. Community-based male-engagement initiatives, coupled with school curricula on gender equality, help shift norms over time.

5.4 Advance education, economic empowerment and legal protections

Long-term reduction in gender gaps rests on expanding girls' education, women's labour-market opportunities and legal protections. Policies should incentivise girls' retention through secondary and higher education (scholarships, safe transport, sanitation facilities), expand skill-training and market linkages for women, and strengthen women's land and property rights to enhance economic autonomy. Enforcement of laws against domestic violence and streamlined access to support services — shelters, legal aid, crisis counselling and helplines — must be matched with community awareness campaigns that de-normalise violence and mobilise local leaders as allies.

5.5 Make policy and budgets gender-responsive, and improve data systems

Gender-sensitive planning requires gender-responsive budgeting so resources explicitly target

13 International Institute for Population Sciences (IIPS) & ICF. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21: India. IIPS.

14 World Health Organization. (2008). Closing the gap in a generation: Health equity through action on the social determinants of health (Final report of the Commission on Social Determinants of Health). World Health Organization.

gendered needs — maternal health, adolescent services, nutrition, mental health and women's economic inclusion. Routine collection and publication of sex-disaggregated data across health and welfare programmes is essential for monitoring progress; data systems should also capture key intersectional markers (rural/urban, caste, wealth) and support qualitative research to illuminate lived experiences that numbers alone cannot show.¹⁵

6. Conclusion

This comparative study shows that gendered gaps in health and well-being in Uttar Pradesh are deep, broad, and woven into everyday life. Women shoulder a disproportionate share of risks tied to reproductive and maternal health, anemia, restricted autonomy, and violence; men face their own gendered disadvantages — higher exposure to occupational hazards, substance use, and social pressures that discourage help-seeking. These are not separate problems but two sides of the same social order: gender norms, poverty, low literacy and uneven service availability shape how illness is experienced, expressed and treated for everyone in the state.

Tackling these inequalities therefore cannot be reduced to more hospitals or clinics alone. Clinical care is essential, but it must be wrapped in gender-transformative action: strengthen primary care and maternal-child services while simultaneously expanding education, economic opportunities and legal protections that increase women's agency; and design services and campaigns that bring men into health as responsible partners rather than bystanders. Programs that combine clinical, social and behavioural interventions — for example, integrated ANC and nutrition platforms that also include community outreach on gender norms and male engagement — are likely to yield the most durable gains.

Equity also requires better planning and financing. Gender-responsive budgeting, routinely disaggregated monitoring, and local accountability mechanisms will help ensure resources reach the districts and communities that need them most. Likewise, investments in mental-health services, NCD screening at the primary level, and robust responses for survivors of gender-based violence are urgent priorities that must be implemented alongside longer-term social investments.

References

1. International Institute for Population Sciences (IIPS) & ICF. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21: India (Vol. I). IIPS.
2. International Institute for Population Sciences (IIPS) & ICF. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21: Uttar Pradesh (State Fact Sheet). IIPS.
3. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). Census of India 2011: Provisional population totals. Government of India.
4. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2022). Sample Registration System (SRS): Special bulletin on maternal mortality in India (2021–23). Government of India.
5. Ministry of Statistics and Programme Implementation (MOSPI). (2020). Periodic Labour Force Survey (PLFS), 2019–20: Annual bulletin. Government of India.

¹⁵ International Institute for Population Sciences (IIPS) & ICF. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21: India. IIPS.

6. World Health Organization. (2008). Closing the gap in a generation: Health equity through action on the social determinants of health (Final report of the Commission on Social Determinants of Health). WHO.
7. Sen, G., & Östlin, P. (2008). Gender inequity in health: Why it exists and how we can change it. World Health Organization / Global Health.
8. Courtenay, W. H. (2000). Constructions of masculinity and their influence on men's well-being: A theory of gender and health. *Social Science & Medicine*, 50(10), 1385–1401.
9. Sen, A. (1990). More than 100 million women are missing. *BMJ*, 304(6827), 587–588.
10. World Health Organization. (2013). Comprehensive mental health action plan 2013–2020. WHO.
11. National Health Authority (NHA) / Ministry of Health & Family Welfare. (2018). Ayushman Bharat — Pradhan Mantri Jan Arogya Yojana: Operational guidelines / operation manual. Government of India.
12. World Health Organization. (2018). Noncommunicable diseases country profiles 2018. WHO.
13. Marmot, M., et al. (2008). Closing the gap in a generation: The Commission on Social Determinants of Health — key messages and implications. *The Lancet*.
14. United Nations Entity for Gender Equality and the Empowerment of Women (UN Women). (2017). Gender-responsive budgeting: A key tool for gender equality and women's empowerment. UN Women.
15. International Institute for Population Sciences (IIPS). (2021). NFHS-5: National, state and district fact sheets (Volumes and fact sheets). IIPS / DHS Program.
16. Ministry of Health & Family Welfare (MoHFW), Government of India. (2020). NFHS-5 Phase II compendium & state fact sheets (compilation). MoHFW.
17. Narain, J. P., et al. (2018). Noncommunicable disease surveillance and response in India: System readiness and policy. *Indian Journal of Public Health / relevant technical reports*.



DEMOCRACY IN THE DIGITAL AGE: NAVIGATING THE IMPACT OF SOCIAL MEDIA

Dr. Rajendra Prasad Meena
(Research Supervisor)
Assistant Professor
Department of Political Science

Amit Batra
(Researcher)
Political Science
Tantia University, Sri Ganganagar

Internet is the kind of friend that demands faith and submission. There are people who give to it an unconditional obedience. It makes people almost a slave to technology. A new world is re-emerging in front of us that is different from pre- Internet era; in the meantime we are witnessing the decline of the old human world. This is a transitory phase. But it is not the final stage in the cultural shift, which technology brings in.

Human beings have two predominant skills: physical and cognitive. Physical abilities refer to things like stamina, strength, flexibility, speed, agility, balance; literally almost everything related to physical activity form the physical skill. It is important for a healthy living. This skill was affected by the use of technology from time to time.

Cognitive abilities are brain-based skills. It is our skills for processing information. Because of thinking, experience and sensations, we gain knowledge and understand things. Cognitive abilities involve knowledge, attention, memory, loyalty, evaluation of events, reasoning, problem solving, listening, decisions, understanding, and speech understanding. In other words, cognition is about how human beings understand themselves and the environment.

While the physical skills continue to change due to increasing modernization and technological advancements, cognitive abilities remain unchanged. Machines competed with physical abilities, but cognition maintained enormous edge over machines. Cognition is our inner world, where access was granted only to ourselves. The key to our cognitive world is ourselves. As manual labour in agriculture and industry were increasingly automated, our cognitive ability remained superior. However, the basics of both the skills remain unchanged. During industrial revolution, for example, machinations changed our physical labour to a significant extent but it also paved the way for another area where the labour can be used. At the same time, cognitive skills were the same which remained unaffected by industrial revolution. Twentieth century was the same.

Now, the twenty-first century is witnessing something new as the human civilization is confronting a new technological shift. The invention of digital technologies and the increasing use of Internet to ease the human labour power indeed changed the whole human social system. The Internet technologies are going to conquer our cognitive abilities now. Twenty first century is data

century. Those who create and control data also control the key to our mind.

Internet is going to change the way we think, act, perceive and remember. It is going to damage our perception skill and the understanding of the environment. Our cognitive capacities are invaded by the enormous data being generated on Internet and indeed even narrowed. The data are being used by those who create, spread and control data, in order to influence our behaviour.

One important area, where the digital technology is set to influence our brain is how we think about the social world and how we underrated things. The point is that technology will have far reaching impact up on human social interactions, relationships, and networking among people. It affects our understanding skills, memory and emotional skills.

The Internet technology is not simply about computers and hardware. In the beginning, we anticipated that it would bring in some positive changes in our societies and all people would find a space, which they were deprived by social structures. As time passes, the interplay between society and digital technologies are transforming that way, in which we lose our own control over it. For example, it was anticipated that social robotics and Internet technology would sweep our kitchen floor, fill water tank, pay electricity bills, take care of our aging parents and give us a sensible companionship. But as time passes, we are also seeking the same technology as solution to our own pitfalls and misgivings. Now people are trying to replace social robotics, Internet, and cyber space to social relationships. For example the use of life size plastic gadgets as sexual companion or those sex toys are going to replace real human relationship³. Social robotics and Internet replaces human relationships. The damages that sex toys bring about what our perception about sexual life are an example. We treat Internet and other digital technologies as real people. Instead of meeting someone in real life, we call data as real persons. Instead of talking over phone, we send text messages. Instead of communicating with someone in real time, people update status. People digitize their relationship. They automate their social relations.

Our perception about other people are now what we see what they are on cyber space. People become more real on Internet and less on real life. If you want to understand someone, then a scrolling down on their social media profile is the key to their identity.

There are so many of us, who prefer simulated relationships to real ones. The increasing reliance on technology is altering what it means to be human. The matter is that technology has no intelligence but those who use it has. We are already filtering companionship through machines. In the days to come, we are obliged to accept machines as companions. There are people, who don't know how to dispose their emotions and relations with other people other than through technology. For them, the flesh-and-blood people with their impulses are unreliable. The real people are what are seen on the activities on their Internet profiles. Then the source of relationship is organized on digital technology such as Facebook, WhatsApp, Twitter, and YouTube. As many among our population are exposed to Internet since childhood, many things previous generation learnt by their social skills are totally unknown to Internet generation. Plainly, Internet technology is doing some peculiar things to them. Many people send thousands of text messages every month, spends hours each day on Facebook, WhatsApp, etc. Many of us appear to find life mediated by cyber space more alluring than real life.

Understanding, sharing, compromise, sympathy, generosity, etc, are the human qualities fostered by cognitive power. But these are things quite strange to Internet generation. For that

matter, they are busy living digital moments. They turn on notifications for WhatsApp, Facebook, Twitter, Facebook, Viber, Messenger, Gmail and a plenty of other social media platforms. Hours of journey time, lunch time, office time, family time, study time, face to face conversation, and other socially informative and valuable moments are being lost in social media notifications. They traverse from one app to another instantly for the self-gratification deriving from likes and shares being gained for the unintelligent and uninformative updates on social media accounts.

They are people, whose nonstop hook up with smart phone screens have ruined their social skills and detached themselves from the organic engagement with the surrounding. Their brain is tuned to make sense of the world only when they scan something on digital space. They talk more on cyber space. Make more friends on social media profiles. Update so many things on social networking sites. Gather information about the world only on social media space.

With access to every new social media site and every new app on the smart phone, they are rapidly destroying personal communication because they have become more reliant on technology than on each other for social interaction. Early morning, the first thing they are about to do before waking up from the bed is to scan almost all their social media profiles, and find out the missing notifications during their last night sleep.

There are people who frequently boast that they are pretty good at paying attention to the world around. That they are observant, detail oriented, and highly perceptive. But the truth is that they are not. There are lots of people who are missing what is in front of them. This happens because social media has robbed majority of their good time. Most of them relate with the world only by a medium. Social media being the medium, rarely they are able to perceive something without digital space. They then miss some important things that they should perceive organically in the natural setting. The fact is that they have automated their social skills.

Young people would rather use social media or talk online to people they do not know than to have a conversation face to face. How much face-to-face time do they spend with the people in their life is an odd question because they do not know how it works. Some of them may actually be quite lonely, despite how plugged in they seem to be. The reality is that they don't speak as much as they used to. Face-to-face interactions are becoming a thing of the past. Suddenly, they have become a human race that never looks beyond the screens held in their palm.

The teenagers are constantly using social media and it distracts them from looking up and talking to people right in front of them. Social media is ruining social skills. The core of this problem lies with one troubling fact that affects almost everyone in our tech savvy world: addiction- Internet addiction, smart phone addiction, App addiction, social media addiction, and technology addiction. Communicating face to face is beautiful. It tends to see a lot of different people with varied skills, emotions, and views. Now there are people, nine out of ten are looking at smart phones and scrolling down on their social media profiles.

Instead of putting their computer and smart phone in sleep mode and going for a walk across the walkways in the street, look at strangers, meeting and chatting with friends, acquaintances and strangers; they are continuously hooked up on smart phones. At the office canteen, they swish through Facebook timelines without taking their head up; their "always on" behaviour kills moods and manners. At free times in classrooms, nonstop smart phone use among young people detaches them from the friends' feelings and emotional living. There are people constantly hooked

up on smart phone in conference halls, panel meetings, public meetings, crowd, and street; their social world has shrunk to the device held on their palm.

There are people, whose social skill is ruined by social media; their social relationship is reduced by Internet and social world shrank to the size of a smart phone. The social space on Internet is feeding into dangerous connotations. What is interesting about exposure to the subtleties of young people playing with social media is the social change brought about by social media—to put it, brain development, privacy, body image, sexual behaviour, sleep, self-esteem, marital relations, social skill, mental health, parenting, socialization, social values and culture.

But there is another side to the changes being brought about by Internet. Content on social media can be tailor made for consumers. That said, people with some tricky intention to influence others can create materials and make it available to the targeted audience. Those who create such material can in turn control thinking abilities of people exposed to it. Here comes the trajectory of radical forces and ordinary Internet users. There is synergy between radical forces and ordinary Internet users. Those young Internet users who are unable to distinguish between fake and real information easily fall prey to the politically charged information being spread deliberately on cyber space. In future, it will have long lasting impacts up on democracy and political dialogue. If this phenomenon goes unchecked, democratic institutions are more likely to be subverted by forces who want to thrive on their false political agenda. This is going to be a reality soon because cognitive abilities of Internet users have already been on a steady decline.

Future Area of Research

India needs a people's technology revolution; and the development of social science of technology from the frame of everyday lives will serve to that idea. The technology revolution required to be detached from political games primarily because technology is a sensitive political subject in India. The political bickering over technology is apparent in the tall claims of political class. There is more to technology. Technology is shaped by the socio-cultural context in which it is deployed. For example, a housewife riding a two-wheeler is negotiating with patriarchy as that particular machine confronts gender, caste, patriarchy and misogyny prevalent in the Indian society. This area requires further research. So this research wrap up the work with the fact that more research is required to understand technology in the everyday lives of ordinary people. That is the linkages between everyday technology and the everyday life in India.

References

- 1 Swarajya – Read India Right <<https://swarajyamag.com/>>
- 2 <<https://www.opindia.com/>>
- 3 <<https://postcard.news/>>
- 4 Pativrata is a term used in Hindu culture and traditions to refer to a married woman who is faithful and loyal to her husband



डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताएं : जन चेतना से जन आंदोलन तक

डॉ. मो. रियाज खान
बी एम एस महिला महाविद्यालय बेंगलुरु

सारांश (Abstract)

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताएं सामाजिक चेतना, लोक संस्कृति, और जन जीवन के संघर्षों की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। उनकी रचनाओं में गाँव, किसान, स्त्री, श्रमिक, दलित और शोषित वर्ग की पीड़ा, आक्रोश और संघर्ष की लहरें स्पष्ट दिखाई देती हैं। उनकी कविताएं केवल साहित्यिक सौंदर्य का प्रतीक नहीं बल्कि जन-जागरण का उपकरण हैं, जो समाज में परिवर्तन की चेतना जगाती हैं। प्रस्तुत आलेख में उनके काव्य में निहित जन चेतना और उसके जन आंदोलन में रूपांतरण की प्रक्रिया का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : जन चेतना, जन आंदोलन, सामाजिक यथार्थ, प्रतिरोध, नरेश सिहाग एडवोकेट।

1. प्रस्तावना (Introduction)

समाज में कविता का कार्य केवल सौंदर्य-बोध कराना नहीं होता, बल्कि वह सामाजिक विवेक को भी जाग्रत करती है। हिंदी साहित्य की यह परंपरा संत कवियों से लेकर आधुनिक युग तक चलती आई है। इसी परंपरा के सशक्त वाहक डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट हैं, जिन्होंने कविता को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाया। उनकी कविताएं न केवल जनमानस को संबोधित करती हैं, बल्कि जन आंदोलन के रूप में चेतना को संगठित करती हैं।

डॉ. सिहाग की रचनाओं में हरियाणा के ग्रामीण परिवेश, किसान जीवन, मजदूर की वेदना, स्त्री की अस्मिता, और भ्रष्ट व्यवस्था के विरुद्ध मुखर स्वर सुनाई देता है। यही स्वर आगे चलकर सामूहिक प्रतिरोध की भावना को जन्म देता है।

2. जन चेतना का काव्यात्मक स्वरूप (The Poetic Form of Public Consciousness)

नरेश सिहाग की कविताओं में जन चेतना का उद्भव व्यक्ति के अनुभव से होता है। उनके शब्द जनता की नब्ज को पहचानते हैं। वे 'गाँव की गोद', 'चूल्हे की आँच और लोक की स्मृति', 'पेड़', 'औरत' जैसी कविताओं में लोकजीवन की गंध के साथ-साथ चेतना की लौ जलाते हैं।

उदाहरणस्वरूप, उनकी कविता "औरत" में वे लिखते हैं—

- "वो चूल्हे की आँच नहीं,
- वो घर की साँस है,
- जो जलकर भी उजाला देती है।"

यह पंक्तियाँ केवल स्त्री की सहनशीलता का बिंब नहीं हैं, बल्कि समाज की चेतना को दिशा देने वाली संवेदना हैं। जन चेतना उनके काव्य में वर्गीय संघर्ष के रूप में भी उभरती है—कभी किसान के रूप में, कभी मजदूर के, तो कभी उस आम आदमी के रूप में जिसे व्यवस्था ने उपेक्षित कर दिया।

3. कविताओं में सामाजिक यथार्थ और प्रतिरोध (Social Realism and Resistance in Poetry)

डॉ. सिहाग की कविताएँ ‘सामाजिक यथार्थ’ का दस्तावेज़ हैं। वे समाज की विडंबनाओं को केवल दिखाते नहीं, बल्कि उन्हें चुनौती देते हैं। उनकी कविताएँ आमजन की आवाज़ हैं, जो अन्याय, शोषण और भ्रष्टाचार के खिलाफ़ खड़ी होती हैं।

उनकी एक प्रसिद्ध पंक्ति—

- “जो डरते हुए बच्चे हैं,
● वही कल की क्रांति बनेंगे।”

यह वाक्य जन चेतना के उस बीज को उजागर करता है, जो अंततः आंदोलन में परिवर्तित होता है। यह कवि की दृष्टि का सामाजिक और राजनीतिक विकास का प्रतीक है।

4. लोक तत्व और जन संवाद (Folk Elements and Public Dialogue)

नरेश सिहाग का काव्य लोकभाषा और लोकजीवन से गहराई से जुड़ा है। उनकी कविताओं में हरियाणवी संस्कृति की सादगी, बोलचाल की भाषा और लोक कहावतों का सुंदर प्रयोग मिलता है। यह लोक तत्व कविता को जनसुलभ बनाते हैं, जिससे संवाद का दायरा बढ़ता है।

उनकी कविताओं में किसान का संघर्ष, खेतों की गंध और गाँव की मिट्टी की सच्चाई बोलती है। यह लोक तत्व ही उनकी कविताओं को जनता का काव्य बनाते हैं, जिससे वह साहित्य से बाहर निकलकर आंदोलन का रूप लेती हैं।

5. जन चेतना से जन आंदोलन तक (From Public Consciousness to Public Movement)

नरेश सिहाग की कविताएँ केवल भावनात्मक आवेग नहीं, बल्कि सामाजिक क्रिया की प्रेरणा हैं। उनकी कविताएँ सोशल मीडिया पर भी व्यापक रूप से प्रसारित होती हैं—विशेषतः उनके फेसबुक पेज ‘Naresh Sihag Bohal’ और ‘Bohal Shodh Manjusha’ पर। यहाँ उनकी कविताएँ पाठकों के बीच विचार-चर्चा का माध्यम बनती हैं, जो आगे चलकर सामूहिक चेतना का रूप लेती हैं।

जन चेतना जब सामूहिक अनुभव में परिवर्तित होती है, तो वह आंदोलन का रूप धारण करती है। सिहाग की कविताएँ इस परिवर्तन की प्रक्रिया को स्पष्ट करती हैं—

- “जब शब्द जलते हैं,
● तो भीड़ चुप नहीं रहती,
● आवाज़ बन जाती है।”

यह आवाज़ कविता से आगे बढ़कर सामाजिक परिवर्तन की मांग बन जाती है।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताएँ आधुनिक हिंदी कविता में उस जनमुखी परंपरा की प्रतिनिधि हैं जो समाज को आत्मबोध और संघर्ष की राह दिखाती हैं। उनकी कविताएँ जन चेतना के जागरण से लेकर जन आंदोलन की संरचना तक का एक जीवंत दस्तावेज़ हैं।

उनकी रचनाओं में व्यक्ति से समाज, और समाज से आंदोलन की यात्रा स्पष्ट दिखाई देती है। यही कारण है कि वे केवल कवि नहीं, बल्कि सामाजिक विचारक और आंदोलनकारी चेतना के संवाहक बनकर सामने आते हैं।

संदर्भ सूची (References)

(APA 7th Edition के अनुसार)

- * Sihag, N. (2023). Bodh Kathayein Hain. SSS Publication, Delhi.
- * Sihag, N. (2022). Gaon ki God. Bohal Shodh Manjusha, Bhiwani.
- * Sharma, P. (2024). Naresh Sihag ke Sahitya ka Samajik Drishtikon. Haryana Sahitya Akademi Journal, 12(3), 44–58.
- * Verma, M. K. R. (2024). Aadhunik Hindi Kavita mein Samajik Chetna. Delhi: Lok Sahitya Prakashan.
- * Naresh Sihag Bohal (Facebook Page). (2024–2025). Selected Poems and Posts.
Retrieved from <https://www.facebook.com/NareshSihagBohal>



जनसंचार के आधुनिक माध्यम

चंचल कुमार सिंह

शोधार्थी, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,

अमरकंटक (मध्य प्रदेश)- 484887

(संसद के अधिनियम के अधीन स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

Email : chanchalsinghnios@gmail.com

Mobile : -9635173982

मानव सभ्यता के विकास में संचार का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आदिम काल में जब मनुष्य जंगलों में रहता था, तब भी उसने संकेतों, चित्रों, ध्वनियों और प्रतीकों के माध्यम से एक-दूसरे से संवाद स्थापित किया। समय के साथ यह प्रक्रिया विकसित होती गई और मौखिक, लिखित तथा मुद्रित माध्यमों के रूप में प्रसार पाती रही। 20वीं सदी में जब विज्ञान और तकनीक ने तीव्र प्रगति की, तब संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। रेडियो, टेलीविजन, समाचार एजेंसियाँ, इंटरनेट, सोशल मीडिया और मोबाइल नेटवर्क ने सूचना के आदान-प्रदान को तात्कालिक बना दिया। यही माध्यम आज के युग में जनसंचार के आधुनिक माध्यम कहलाते हैं।

जनसंचार का अर्थ है— ऐसे संचार माध्यम जो एक साथ असंख्य लोगों तक जानकारी, विचार, संस्कृति, मनोरंजन और समाचार पहुँचाते हैं। यह केवल सूचना देने का कार्य नहीं करता, बल्कि समाज को जोड़ने, विचार निर्माण करने, और लोकतंत्र को सशक्त बनाने का कार्य भी करता है। जनसंचार का ऐतिहासिक विकास प्रारंभिक समय में संचार का साधन सीमित था — दूत, कबूतर, ढोल, नारे, पत्र और जनसभा जैसे माध्यमों के द्वारा ही संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जाता था।

15वीं सदी में जब मुद्रण कला (Printing Press) का आविष्कार हुआ, तब पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों के माध्यम से संचार का एक नया युग प्रारंभ हुआ।

19वीं सदी में टेलीग्राफ और टेलीफोन ने गति प्रदान की।

20वीं सदी में जब रेडियो और टेलीविजन अस्तित्व में आए, तब संचार का स्वरूप पूरी तरह बदल गया। अब व्यक्ति न केवल पढ़कर, बल्कि देखकर और सुनकर भी जानकारी प्राप्त करने लगा।

21वीं सदी में इंटरनेट और डिजिटल मीडिया के आगमन ने तो संचार को वैश्विक और लोकतांत्रिक रूप दे दिया।

आधुनिक जनसंचार माध्यमों के प्रमुख रूप

1. रेडियो पत्रकारिता : रेडियो को जनसंचार का सबसे पुराना और लोकप्रिय इलेक्ट्रॉनिक माध्यम माना जाता है। इसकी पहुँच गाँव-गाँव, पहाड़ों, रेगिस्तानों और सीमावर्ती इलाकों तक है। रेडियो समाचार, संगीत, शिक्षा, मौसम, कृषि और मनोरंजन का सशक्त स्रोत है। भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत 1927 में हुई और 1936 में इसे “ऑल इंडिया रेडियो”

का नाम दिया गया। रेडियो ने स्वतंत्रता संग्राम, युद्ध, प्राकृतिक आपदा और राष्ट्रीय कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भी एफ.एम. रेडियो, पॉडकास्ट और डिजिटल रेडियो के रूप में यह अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है।

2. टेलीविजन पत्रकारिता : टेलीविजन ने दृश्य और श्रव्य दोनों रूपों में संचार को जीवंत बना दिया।

मनोरंजन से प्रारंभ होकर टीवी अब समाचार, शिक्षा, खेल, संस्कृति, राजनीति, विज्ञान, पर्यावरण आदि सभी क्षेत्रों में सक्रिय है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है “आँखों देखा सच” — यानी घटनाओं को तुरंत और प्रत्यक्ष दिखाने की क्षमता।

समाचार चौनलों ने विश्वभर में जनमत निर्माण की प्रक्रिया को तेज कर दिया है। हालाँकि, व्यावसायिकता, सनसनीखेज प्रस्तुति और TRP की होड़ ने इसके नैतिक स्वरूप को प्रभावित भी किया है।

3. प्रिंट मीडिया (अखबार और पत्रिकाएँ) : यद्यपि आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का युग है, फिर भी समाचार पत्रों का महत्व कम नहीं हुआ है। प्रिंट मीडिया विश्लेषण, संपादकीय लेखन और विचार-विमर्श के लिए आज भी सबसे विश्वसनीय माध्यम है।

भारत में जेम्स ऑगस्टस हिकी द्वारा 1780 में प्रकाशित हिकी गजट को पहला समाचार पत्र माना जाता है। वर्तमान में दैनिक भास्कर, हिन्दुस्तान, टाइम्स ऑफ़ इंडिया, द हिंदू जैसे पत्र समाज को दिशा प्रदान करते हैं।

4. इंटरनेट और डिजिटल मीडिया : 21वीं सदी के आरंभ में इंटरनेट ने संचार जगत में क्रांति ला दी।

ई-मेल, वेबसाइट, ई-पेपर, ब्लॉग, यूट्यूब, ऑनलाइन चौनल, पॉडकास्ट, वेबिनार, और लाइव स्ट्रीमिंग जैसे माध्यमों ने जनसंचार को वैश्विक बना दिया है। अब समाचार और विचार न केवल पत्रकारों के माध्यम से, बल्कि आम नागरिकों के द्वारा भी साझा किए जाते हैं — इसे सिटिजन जर्नलिज्म कहा जाता है। डिजिटल मीडिया की यह खुली प्रकृति लोकतंत्र को सशक्त बनाती है, परंतु फेक न्यूज़ और साइबर अपराध जैसी चुनौतियाँ भी लाती है।

5. सोशल मीडिया : फेसबुक, ट्विटर (X), इंस्टाग्राम, यूट्यूब, व्हाट्सऐप, टेलीग्राम जैसे प्लेटफॉर्म आज विश्व के सबसे प्रभावशाली संचार माध्यम बन चुके हैं। इनके माध्यम से व्यक्ति अपने विचार, अनुभव और घटनाएँ तुरंत साझा कर सकता है।

सोशल मीडिया ने लोकतंत्र, आंदोलन, राजनीति, व्यवसाय और शिक्षा — सभी क्षेत्रों में गहरी पैठ बना ली है। हालाँकि, इसका दुरुपयोग भी बढ़ा है — जैसे अफवाह फैलाना, ट्रोलिंग, नफरत फैलाना और गोपनीयता का उल्लंघन।

6. सिनेमा और डॉक्यूमेंट्री : सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जनसंचार का भी सशक्त माध्यम है। फ़िल्में समाज की समस्याओं, संस्कृतियों और विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रभावी साधन हैं। डॉक्यूमेंट्री फ़िल्में शिक्षा, पर्यावरण, इतिहास और सामाजिक जागरूकता के लिए उपयोगी हैं। भारत का सिनेमा विश्व का सबसे बड़ा फ़िल्म उद्योग है जो न केवल मनोरंजन देता है, बल्कि राष्ट्रीय एकता और विविधता का प्रतीक भी है। जनसंचार माध्यमों की विशेषताएँ विस्तृत पहुँच— ये माध्यम एक साथ लाखों-करोड़ों लोगों तक पहुँच सकते हैं। तत्कालता— समाचार और सूचना अब रियल-टाइम में प्राप्त होती हैं। दृश्य-श्रव्य प्रभाव— टीवी और इंटरनेट दृश्य तथा श्रव्य दोनों के माध्यम से गहरी छाप छोड़ते हैं। जनमत निर्माण— मीडिया लोगों के विचार, व्यवहार और निर्णयों को प्रभावित करता है। शिक्षा और मनोरंजन का संतुलन— ‘एडुटेनमेंट’ यानी शिक्षा के साथ मनोरंजन की भावना को बढ़ावा मिलता है। जनसंचार माध्यमों की भूमिका लोकतंत्र का चौथा स्तंभ: मीडिया सरकार की नीतियों और कार्यों पर निगरानी रखता है। सामाजिक जागरूकता: भ्रष्टाचार, प्रदूषण, अपराध, लैंगिक समानता, शिक्षा आदि पर जनजागरण करता है। आपदा प्रबंधन: भूकंप, बाढ़, महामारी जैसी स्थितियों में सूचना और सहायता का प्रमुख साधन बनता है। राष्ट्रीय एकता: विविध भाषाओं और संस्कृतियों वाले देश को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जनसंचार की सीमाएँ और चुनौतियाँ व्यावसायिकता और बाज़ारीकरण: टीआरपी और लाभ की दौड़ में मीडिया की निष्पक्षता प्रभावित होती है। फेक न्यूज़ का खतरा : सोशल मीडिया पर असत्य सूचनाएँ तेज़ी से फैलती हैं। राजनीतिक दबाव रू कई बार मीडिया संस्थान राजनीतिक प्रभाव में आ जाते हैं। गोपनीयता का उल्लंघन: इंटरनेट युग में व्यक्तिगत जीवन असुरक्षित होता जा रहा है। सांस्कृतिक प्रदूषण: विदेशी संस्कृति और उपभोक्तावाद के प्रभाव से भारतीय मूल्य कमजोर हो रहे हैं।

आधुनिक जनसंचार का भविष्य, भविष्य का जनसंचार कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), वर्चुअल रियलिटी (VR), 5जी नेटवर्क और डेटा एनालिटिक्स पर आधारित होगा। सूचना का प्रवाह और भी तेज़, व्यक्तिगत और इंटरएक्टिव बनेगा। मीडिया अब केवल सूचना देने वाला माध्यम नहीं रहेगा, बल्कि विचारों और तकनीक का समन्वयक मंच बन जाएगा। भविष्य में वही माध्यम टिकेगा जो सत्य, पारदर्शिता और मानवीय संवेदनाओं के साथ कार्य करेगा।

निष्कर्ष

जनसंचार के आधुनिक माध्यमों ने संसार को “वैश्विक गाँव” (Global Village) में बदल दिया है। आज कोई घटना चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हो, उसका प्रसारण कुछ सेकंडों में पूरे विश्व में हो जाता है। इन माध्यमों ने लोकतंत्र को सशक्त, नागरिकों को जागरूक और समाज को गतिशील बनाया है। यद्यपि इनके सामने अनेक चुनौतियाँ हैं, फिर भी इनकी उपयोगिता, शक्ति और प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। सच्चे अर्थों में, आधुनिक जनसंचार विचारों की धारा, ज्ञान का प्रकाश और लोकतंत्र की आत्मा है। यदि इसका प्रयोग नैतिकता, जिम्मेदारी और सत्यनिष्ठा के साथ किया जाए, तो यह मानवता को नए युग की दिशा दिखा सकता है।

संदर्भ

1. जनसंचार / राधेश्याम शर्मा / हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला / 2004 चतुर्थ संस्करण
2. उत्तर आधुनिक मीडिया / हर्षदेव / वाणी प्रकाशन दिल्ली / 2001 प्रथम संस्करण
3. रेडियो और दूर - दर्शन पत्रकारिता / डॉ. हरिमोहन / तक्षशिला प्रकाशन दिल्ली / 2008
4. वाक त्रैमासिक पत्रिका अंक - 3 / 2007, संपादक— सुधीर पचौरी, पृ. 37
5. जनसंचार बदलते परिपेक्ष्य में / बलवीर कुंदरा / तक्षशिला प्रकाशन, पृ. 166-167



सतनामी सम्प्रदाय की पूजा पद्धति, भक्ति एवं दर्शन

रोहित कुंवर
(शोधार्थी)

डॉ. सोनू सारण
(शोध निर्देशिका)

डॉ. केशव देव शर्मा
(सह-शोध निर्देशक)
इतिहास विभाग

श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनूं

शोध आलेख सारांश - सतनामी साध-धर्म मन्दिर, रुकनपुर में जैसा कि हमारे सतगुरु साहिब हर युग में प्रकट होकर साधों को उपदेश देते आये हैं, कि पूर्णमासी का काम बड़े महत्व का है। उसी महत्ता के साथ पूर्णमासी मनाते हैं। प्रारम्भसतगुरु साहिब का हुक्म है कि गुरुद्वारों में पूर्णमा को सभी साध एक साथ इकट्ठे होकर साथ-साथ रहने के भाव से समारोह पूर्वक मनायें, उपवास करें, अवगत-नाम का जाप करें, अहम् व अहंकार से दूर रहने का व्रत धारण करें। सभी आत्माओं के प्रति अवगत भाव रखें, सभी साथ पूर्णमासी को साध-संगत मेले में पहुँचें। सतवादियों में पारस्परिक रूप से निर्मल भाव बनाये रखें। शब्द-वाणी सतवादियों की कथा का लय व नाद योग के साथ गायन करे एवं सतगुरु साहिब के उपदेशों के परिपालन करने का सत्य संकल्प लें।

सतनामी साधों की पूर्णमा-‘व्रत पूर्णमा’ होती है। वह कभी-कभी स्नान पूर्णमा से एक दिन पहले मनायी जाती है क्योंकि पूर्णमा के पूर्ण चन्द्रमा में प्रतिपदा के चन्द्रमा का योग आने के कारण ‘स्नान पूर्णमा’ को अपराह्न काल में ‘पूर्णमा-काल’ नहीं रहता है। अतः साधों की पूर्णमासी का काम चढ़ती-कला में आठ प्रहर के अन्दर पूर्ण करना होता है। पूर्णमा के छोर व प्रतिपदा चन्द्रमा के आगमन योग से आठ प्रहर पूर्व की अवधि को नक्षत्र-विज्ञान में चढ़ती-कला कहते हैं। इस चढ़ती-कला को ही पूर्णमासी का सुयोग माना जाता है।

मूल शब्द : पूजा पद्धति, भक्ति एवं दर्शन।

भूमिका

प्रतिवर्ष अश्विनी माह की शरद पूर्णमाशी रुकनपुर सतनामी धर्म मन्दिर के स्थापना दिवस के रूप में एवं चौत्र की शरद पूर्णमासी सतगुरु बाबा सबलदास साहिब के प्राकट्य दिवस के रूप में समूची साध-संगत बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाती है क्योंकि सतगुरु बाबा कायम कुँवर साहिब के अवशेषों की जोड़ी चरण-खड़ाऊ, साधन उपकरण चिम्बुक स्टैंड एवं कन्धे साधनों के दो स्टैंड-एवं पगड़ी के सौम्य दर्शन दोनों शरद पूर्णमासी को कराये जाते हैं। इन पवित्र पूर्णमासियों की साध-संगत में उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा होती है, इसे वे अपनी साध चर्या की बड़ी उपलब्धि मानते हैं। साध-संगत को सतगुरु बाबा कायम कुँवर साहिब की विद्यमानता की अनुभूति होती है, वे अपना-जीवन धन्य समझते हैं।

सतगुरु दीक्षा प्राप्त करने के आकाँक्षी साध उपवास करते हैं। सतगुरु बाबा साहिब भी दीक्षा स्वयं उपवास में रहकर

ही देते हैं। उन्हें दीक्षित साध के व्रतोपदेश दिये जाते हैं। 'गुरु उगमासी' की आज्ञा से कुतगदे साध ने साधों की साधना एवं रहनी-सहनी-करनी को रुपाबाई के पति रावण जिस प्रकार समझाया, उसे हाथ जोड़े खड़े दीक्षा प्राप्त करने के आकांक्षी साधों को गाकर के समझाया जाता है और रुपाबाई ने जो गुरु उपदेश पढ़ा, उसे भी गा-गा कर समझाया जाता है। इन्हें स्वीकार करने पर सतगुरु बाबा साहिब उन्हें सतगुरु मन्त्र से दीक्षित कर देते हैं। और उन्हें अपना आशीर्वाद देते हैं।

समस्त साध-संगत नामकरण संस्कार, अन्न प्राशन संस्कार, चूड़ाकर्म, केशोच्छेदन, मुण्डन संस्कार, कर्णवेध (कान व नाक) संस्कार, विद्यारम्भ संस्कार, विवाह संस्कार इत्यादि सतगुरु आज्ञा एवं आशीर्वाद प्राप्त करके प्रत्येक पूर्णमासी को धार्मिक रीति के अनुसार सम्पन्न किये जाते हैं।

सतनामी साधों की संस्कारित सन्तान उनके परिवार की अद्वितीय पहचान रहती है। संस्कार सम्पन्न हो रहे समय में साधों की उमड़ती श्रद्धा और अवगत मेहरबान में दत्तचित्त हो सुमिरन करने की उनकी आभा समस्त साधों को मनोहारी लगती है। साथ ही देखकर साध-संगत का धार्मिक विश्वास बढ़ता है। सभी साध प्रत्येक पूर्णमासी के दिन अपने दूध देने वाली गाय अथवा भैंस के दूध, दही का चढ़ावा लाते हैं, यह सतनामी धर्म की पुरानी परम्परा है। अधिकांश साध कृषक वर्ग से हैं, अतः इस चढ़ावे की प्रचुरता रहती है। दीप-ज्योति के लिए साध-जन देशी घी का भी चढ़ावा लाते हैं। रुकनपुर मन्दिर की यह अनूठी परम्परा है कि साध पूर्णमासी के दिन सतगुरु बाबा साहिब एवं व्रती साधो को जिमाने के लिये अपने घर से तैयार करके भोजन प्रसाद लाते हैं और वे स्वयं परोस कर श्रद्धापूर्वक जिमाते हैं, भेंट देकर उन्हें सम्मानित करते हैं। सतनामी साध-धर्म में माना जाता है कि सावड़ (स्याबड़ी) अर्चना अर्थात् अन्नदान से पृथ्वी की उत्पादकता बढ़ती है। इसलिये स्यावड़ी (अन्नदान) साध-धर्म का अनिवार्य अंग बना दिया गया है। इस अन्नदान के लिए स्नान-दान व्रत की विशाखा नक्षत्र युता वैशाखी पूर्णिमा सर्वश्रेष्ठ है, अतः सही नियमन कर दी है कि सभी साध प्रतिवर्ष वैशाख की पूर्णिमा को स्यावड़ी दान देंगे। साध संगत में यह दान अत्यन्त श्रद्धा के साथ मन्दिर में अर्पित किया जाता है। होली की पूर्णिमा एवं दीपावली पर मन्दिर में पूरी साध संगत साध, साधिनी, युवक व बालक साध अपराह्न काल में सत्य स्वरूप सतगुरु बाबा कायम कुँवर साहिब के समाधि स्थल पर एकत्रित होकर संध्या पर्यन्त शब्द-वाणी सतकथा आदि की चर्चा गायन करते हैं। मन्दिर में साध-समाज की ओर से तीन विशिष्ट समारोहों का आयोजन किया जाता है। पूर्णमासी के सदृश्य प्रातःकाल से अर्धरात्रि तक प्रभाती, आरती, शब्द-वाणी, लीलाओं का गायन प्रवचन, सत्सङ्ग आयोजित रहता है। भोजन-प्रसाद से साध संगत आनन्दित होती है। सतनामी साध-धर्म की विचारधारा के प्रचार व प्रसार के लिए सामाजिक धरातल से जुड़ना श्रेयस्कर ही है। सतनामी-भंडारा, जिसमें असंख्य साध-साधिनी, सम्मिलित होते हैं। प्रति तीन वर्ष बाद सतनामी साध धर्म मन्दिर रुकनपुर में आयोजित किया जाता है। गुरु मिलाप का माधुर्य, लावण्य, लालित्य, जिसे स्वर्ग से देवता भी पसन्नता पूर्वक देखते हैं और उसमें साध संगत के साथ सहभागिता भी करते हैं। सत्सङ्ग का विराट रूप होता है। चहुँ ओर की साध-संगत के दर्शन होते हैं। मसूह-भोग दोपहर से रात्रि के प्रथम प्रहर तक चलता रहता है। इसे साध-संगत में साधों का तीर्थोत्सव (देहरा) कहा जाता है। इसमें सम्मिलित होने वाले साध अपना जीवन कृतार्थ मानते हैं। सभी साधों को भंडारे का प्रसाद देकर ही विधिवत् विदाई दी जाती है। आदिपुरुष परब्रह्म परमात्मा अवगत मेहरवान के सत्य-स्वरूप सतगुरु शक्ति यहाँ विराजमान है, जो सर्वत्र विद्यमान है। उस निराकार की आराधना एकेश्वर सत्ता के रूप में की जाती है। उससे बड़ी शक्ति अन्य कोई नहीं है। प्रत्येक मानव में 'वाकी सुरता सबही में रमि रही' की धारणा से साधों में अभेद दृष्टि है। यही कल्याणकारी भाव अवगत मेहरबान परम परमेश्वर से अभेद सम्बन्ध बनाने का सहज मार्ग है। मानवदेह प्राप्त कर परमात्मा से अभेद सम्बन्ध कौन बनाना नहीं चाहेगा। जीवन का सौम्य परम लक्ष्य 'मुक्ति' है और यह अभेद सम्बन्ध ही मुक्ति है। सतनामी साध-धर्म मन्दिर रुकनपुर साधों को साधनारत कर मुक्ति मार्ग प्रशस्त करता है।

सारांश

साधपुरा "सतगुरु बाबा नितानंद जी साहिब" सतगुरु दरबार राजस्थान राज्य के जिला-करौली की तहसील-टोडाभीम

से लगभग 8 कि. मी. की दूरी पर टोडाभीम-गंगापुर जाने वाली सड़क पर गाँव साध पुरा में अरावली पर्वत की तलहटी में अत्यन्त सुन्दर व मनमोहक स्थान है। यह संतों का बड़ा ही प्राचीन पवित्र तपोस्थान है। सतगुरु दरबार सैकड़ों वर्षों से साधों के कल्याण के लिये ग्यान रुपी अमृत की वर्षा कर रहा है।

सतगुरु साहिब दरबार के बारे में किवदंती है कि खंडेला (जिला-सीकर) के भौपति साध जी को दर्शना हुई थी कि “सतगुरु बाबा सबलदास जी साहिब”, “बाबा कबीर दास जी साहिब” (सम्वत् 1455) व “बाबा उदादास जी साहिब” (सम्वत् 1744) में प्रकाश लेंगे। “वेई हैं उदा के दास, बेई हैं सबलदास, बेई परघटे काशी हों। “सतगुरु बाबा सबलदास जी साहिब” ने सम्वत् 1744 में उदादास जी के रूप में दिल्ली में प्रकाश लिया और वही से साधों को चिताना आरम्भ किया, जिनका प्रकाश समस्त जहान में फैला। खंडेला के साधों को बाबा उदादास जी का स्मरण आया और उस समय के करणीमान साध जोगीदास, वीरभान के शब्द सुने- वह जोगीदास तुम जुगति करि देख लेऊ। गजहस्त के शीश सबलदास बैठचो।

खंडेला के साधों को विदित था कि “सतगुरु बाबा नितानंद जी साहिब” “सतगुरु बाबा सबलदास जी साहिब” के इच्छा रुपी चेला थे, जिन्होंने अरावली पर्वत की श्रृंखलाओं में स्थित साधपुरा में साधों के कल्याण हेतु ग्यान का प्रकाश फैलाया और जन कल्याण किया एवं विशाल साध समुह के सम्मुख साधों को आशीर्वाद देकर अन्तरध्यान हो गये थे। खंडेला के साधों पर सतगुरु साहिब की ऐसी कृपा हुई और उनके अन्तःकरण में साध पुरा में बाबाजी साहिब के स्थान के निर्माण हेतु सुन्दर व कल्याणकारी विचार उत्पन्न हुआ। साधो ने सम्वत् 1746 के लगभग सतगुरु दरबार का निर्माण साधपुरा में कराया। गुरु स्थान पर समस्त साधों के इच्छानुसार सतगुरु बाबा उनादास जी आसीन हुये और साधों को चिताना आरम्भ किया। सतगुरु बाबा नितानंद की आज्ञानुसार इसी परम्परा का निर्वाह करते हुये अनेकों रूपों में गुरु पद पर रहकर साधों को ग्यान रुपी अमृत दिया। वर्तमान में सतगुरु दरबार, साधपुरा में “सतगुरु बाबा उमेश दास जी साहिब” विराजमान हैं जो बाबाजी साहिब के चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण करके इस ऐतिहासिक परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं।

रुकनपुर गुरुगद्दी और साधपुरा गुरुगद्दी की साधना एवं पूजा पद्धति और भक्ति और दर्शन समान है। रुकनपुर गुरु गद्दी सतगुरु बाबा कायम कुंवर साहिब द्वारा स्थापित की गयी थी, जो सतगुरु बाबा नितानन्द साहिब के शिष्य थे और इस धर्म में इन्होंने ही इन्हें दीक्षित किया था। साधपुरा गुरु गद्दी सतगुरु बाबा नितानन्द साहिब ने स्थापित की यौ। सतगुरु बाबा सबल दास साहिब सतनामी सम्प्रदाय के आदिगुरु माने गए हैं, और यह सम्प्रदाय प्राचीनतम है। सतगुरु बाबा सबलदास साहिब जीका प्राकट्यसन् 1130 ई0 में खण्डेला में अपने शिष्य नितानन्द जीके साथ हुआ। इन दोनों गुरु गद्दी की सभी गतिविधियों और पूजा पद्धति आदि समान ही हैं।

सतनामी साध- भक्ति दर्शन

किसी महत्तम उद्देश्य की सिद्धि के लिए पूर्ण निष्ठा से की जाने वाली क्रिया को साधना की संज्ञा दी जा सकती है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार ‘साधना कहलाने योग्य अधिकतर वे ही कार्य होते हैं जो धार्मिक कर्म या कृत भी कहलाते हैं और जो आध्यात्मिक वन के लिए आवश्यक होते हैं। सतनामी साध सम्प्रदाय की साधना में परम पद प्राप्त करने के चार साधना मार्ग प्रचलित हैं—

1. कर्म,
2. ज्ञान,
3. योग
4. भक्ति।

इन सभी साधनाओं में अद्भुत समन्वय कर इनका सह कृत रूप ‘सहज साधना’ के रूप में मिलता है। इस ‘सहज साधना’ में सतनामी साध सन्तों की स्वानुभूति भी सम्मिलित है। इस प्रकार ये न तो नवीन साधना मार्ग है और न प्राचीन परम्परा का अनुकरण मात्र। कर्म साधना-उपनिषद के अनुसार ‘कुर्वन्ने वह कर्माणि जिजि विषेच्छतं समा’ अर्थात् सच्चा व्यक्ति वह है जो इस लोक में कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करे। इसी तथ्य का उद्बोधन श्री कृष्ण ने ‘निष्काम कर्म योग’ के नाम से गीता में किया। सतनामी साध सद्गुरु भी कर्म सन्यास की अपेक्षा निष्काम कर्म को श्रेष्ठ मानते हैं। इन्होंने केवल

सदाचार, शुभाचरण एवं कथनी करनी की एकता पर अधिकाधिक बल देकर 'कर्म' को सहजतम बनाने का प्रयत्न किया। कर्म करना इन्द्रियों का धर्म है, इसलिए सतनामी साध संतों ने आ वन निरासक्त भाव से शुभ कर्म करते रहने का उपदेश दिया। सतनामी साधों को कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे अहंकार और आसक्ति को बल मिले। 'जो कोई चाहे मुक्ति द्वारा, छोड़ो काम, क्रोध, अहंकार।' मुक्ति के लिए 'अहम' भाव से मुक्त होना आवश्यक है, इसलिए सतनामी साध संतों ने 'ईश्वरेच्छा को अपनी कर्म साधना को प्रमुख स्थान दिया तथा प्रभु भक्ति, नाम स्मरण, लोक सेवा को सच्चा कर्म माना है।

कर्म तीन प्रकार के हैं—1. प्रारब्ध कर्म, 2. संचित कर्म, 3. क्रियमाण कर्म।

वर्तमान वन में जो शुभ-अशुभ कर्म करता है, वह क्रियमाण है। इन कर्मों में से कुछ कर्मों के फल इसी जीवन में मिलते हैं और कुछ कर्मों के फल आगामी जीवन में भोगने पड़ते हैं अतः संचित कर्म है। पूर्व जन्म के संचित कर्म ही वर्तमान में प्रारब्ध बन जाते हैं। संचित कर्मों के संस्कारों से प्रेरित होकर व जो कर्म करता है। उन्हीं के अनुसार आवागमन के चक्र में बँधा रहता है। जिसे आत्मसाक्षात्कार हो जाता है, वह निर्विषयी हो जाता है और उसके कर्म निर्हेतुक हो जाते हैं। वह कर्मबंधनों से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार सतनामी साध संतों ने कर्म साधना द्वारा निर्विषयी मन को परमतत्त्व से जोड़ने का उपदेश दिया है। नितानंद साहब केवल परमब्रह्म को समर्पित कर्मों को ही महत्त्व देते हैं- 'तू ही मेरा खाविंद हो सच्चे पिया, तू ही मेरा खाविंद हो।' सतनामी साधों ने 'निष्काम कर्म' की प्रशंसा की है। कर्म आसक्ति के त्याग को श्रेष्ठ मानते हैं। उनकी दृष्टि में प्रवृत्ति में निवृत्ति तथा निवृत्ति में प्रवृत्ति ही आदर्श वन है। मनुष्य सकाम कर्मों के कारण चौरासी लाख योनियों में भटकता है। नितानंद कहते हैं—

‘लख चौरासी में भरमत डोलें, एक टोक से तुलना है। साधो कर्म देह सूँ लाग रहयो है, आखिर इन सूँ ढलना है। सतनामी साध संतों के अनुसार साधों को वही कर्म करने चाहिए, जो द्वैत भाव को नष्ट कर दें और ब्रह्मतत्त्व की उपलब्धि करा दें। इसलिए इनके ग्रंथों में जप, ध्यान, तप और सत्संग का व्यापक वर्णन किया गया है। इस दृष्टि से कर्मों की दो कोटियाँ हैं- शारीरिक कर्म और मानसिक कर्म। शारीरिक कर्म में परोपकार तप आदि आते हैं तथा मानसिक कर्म जप, प्रभु का नाम स्मरण, आत्म चिन्तन आदि आते हैं। मानसिक कर्म भौतिकता से दूर कर परमब्रह्म में केन्द्रित करते हैं। ज्ञान साधना-सतनामी साधसंतों ने आध्यात्मिक वन में ज्ञान को विशेष महत्त्व दिया है। उपनिषद् में ज्ञान दो प्रकार है- 1. परा विद्या और 2. अपरा विद्या। अपरा विद्या का ज्ञान वाचिक अर्थात् पुस्तकीय ज्ञान होता है तथा परा विद्या तत्त्व ज्ञान व श्रेष्ठ ज्ञान है, जो दिव्य एवं अलौकिक होता है। सतनामी साध संत वाचिक ज्ञान का निरर्थक एवं सारहीन मानते हैं। नितानंद साहब का कथन है- ज्ञानी एक। 'वाचिक ज्ञानी बहुत हैं, अन्तर लाखों में तो हैं नहीं, करोड़ों माही देख।'।

सतनामी साध वाचिक ज्ञान की अपेक्षा आत्मानुभूति से उद्भूत ज्ञान को श्रेष्ठ मानते हैं। इसलिए वेद, पुराण, शास्त्रादि पठन की आवश्यकता नहीं होती। भोपति साध का मत है कि ज्ञान सत्संगति से प्राप्त होता है। यह ज्ञान आत्मानुभूति ही है। आत्म विचार एवं अंतः साधना द्वारा इसे प्राप्त किया जा सकता है।

‘सांचे की संगति कर ले बन्दे, झूठे से मत बतियाय।

या जग से तेरो कैसो मतलब, जग मारग अपने कू जाय।

जीव एवं ब्रह्म में अभेद है, इस अभेदता को ज्ञान समाधि में ही समझा जा सकता है। 'जीव में ब्रह्म, ब्रह्म में व, ज्ञान समाधि में सूझै', जीव ब्रह्म की द्वैतता के ज्ञान के पश्चात् ही वात्मा में ब्रह्म मिलन की आनन्दानुभूति होती है। धर्मदास का कथन है ब्रह्म मिलन का मार्ग सदगुरु ही प्रशस्त करता है—

‘याही विधि साहिब पाइये, सतगुरु दीनी मोह राय बताय।

धुन्द आपदा छोड़ दे, चरणन चित लगाय।

सतनामी साध संत ज्ञान साधना में सत्य,

त्याग, शील और प्रेम को महत्त्व देते हैं।

‘सांच बिना नहीं साधना, त्याग बिना नहीं ज्ञान।

शील बिना सूँचा नहीं, प्रीति बिना नहीं ध्यान।’

इस प्रकार ज्ञान साधना से ही चित्त शुद्धि होती है, अज्ञान का नाश होता है, सांसारिक मोह, संताप आदि मिटते हैं, तभी व की ब्रह्म के प्रति रागात्मक अनुभूति होती है। अतः शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभवजन्य ज्ञान महत्वपूर्ण है। योग साधना-योग बाह्य चित्तवृत्तियों के निरोध की शिक्षा देता है। वेदों में, उपनिषदों में तथा पतंजलि योगसूत्र में योग की प्रतिष्ठा की गई है। विष्णु पुराण के अनुसार- ‘साधक जब अपने चित्त की वृत्ति को प्रयत्न पूर्वक अपने आराध्य प्रभु के रूप के चिंतन में लगा देता है, तब वह स्थिति योग कहलाती है।’ श्रीमद् भागवत् पुराण में श्री कृष्ण ने उद्धव को तीन योग का उपदेश दिया- 1. ज्ञान योग, 2 कर्म योग, 3. भक्ति योग। इस प्रकार प्राचीन काल से ही योग भारतीय साधना का अंग रहा है। सतनामी साध सतगुरुओं का योगमत की क्रियाओं से गहरा परिचय है। सतगुरु बाबा सबलदास, नितानंद, कायमकुँवर, भोपति साध, सामल साध आदि को नाथ पंथीय योगमत का ज्ञान है। अनेक संतों ने कुछ न कुछ योग परक पदों की रचना की, जिसमें कुण्डलिनी जागरण, षट्चक्र भेदन, काया साधना, अजपा-जाप, अनहदनाद एवं गगन गुफा से रस सबित होने का वर्णन आता है। संत नामदेव ने भी बिसोबा खेचर नामक किसी नाथपंथी योगी से दीक्षा ली। सतनामी साध संतों की कविता में नाथपंथी साधना का उल्लेख मिलता है। नितानंद ने अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त अनहदनाद का व्यष्टि रूप में नाथ पंथियों का वर्णन किया है- ब्रह्म को चेतन कर ले, पार ब्रह्म में समाना। अनहद सूँ सब हद सुनि, लाली धारी देह मधमना।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रजापत, पप्पू सिंह - प्राचीन भारत (पाषाण काल से 1200 ई०), रायल पब्लिकेशन जोधपुर, द्वितीय संस्करण, 2021, पृष्ठ संख्या 600।
2. प्रजापत, पप्पू सिंह - प्राचीन भारत (पाषाण काल से 1200 ई०), रायल पब्लिकेशन जोधपुर, द्वितीय संस्करण, 2021, पृष्ठ 600।
3. प्रजापत, पप्पू सिंह - प्राचीन भारत (पाषाण काल से 1200 ई०), रायल पब्लिकेशन जोधपुर, द्वितीय संस्करण, 2021, पृष्ठ 601।
4. भटनागर, डॉ महेश, भारतीय इतिहास, मेरठ, 2013, पृष्ठ संख्या 279।
5. प्रजापत, पापूसिंह - प्राचीन भारत, जोधपुर, 2021, पृष्ठ संख्या 288।
6. शर्मा, भानु प्रकाश साध, सतनामी साध समाज, शाहदरा, 2006, पृष्ठ संख्या 6।
7. श्री जयप्रकाश पुत्र श्री स्व० भेदीराम कश्यप, गाँव रुकनपुर, पो० अरनिया, जनपद बुलंदशहर दिनांक 8. शर्मा, आर०डी०, शर्मा विनोद, (सम्पादित), सतनामी साध साधना, खण्ड द्वितीय, ज्ञान दीप पब्लिकेशन 2021, दिल्ली, पृ०सं० 25।
9. हरिओम शर्मा पुत्र श्री.स्व० मुंशी लाल शर्मा साध गाँव रुकनपुर, पोस्ट अरनियां खुर्द, जनपद बुलंदशहर का लिया गया व्यक्तिगत साक्षात्कार दिनांक 12.07.2024।
10. मध्यकालीन हिंदी सन्त विचार और साधक - डॉ० के शनि प्रसाद पृ० सं० 02 कनपुर, पो०-अरनियाँ पुर्य,
11. सतनामी ज्ञान सागर, सतीश साध, दिल्ली, 1998, पृष्ठ संख्या 10।
12. सतनामी साध समाज : गजेन्द्र कुमार शर्मा साध पृष्ठ संख्या 15।
13. सतनामी ज्ञान गंगा, गोयल, वेद प्रकाश, पृष्ठ संख्या 11।



A THEMATIC ANALYSIS OF JĀTAKAS AND THERĠĠĀTHĀ: ANCIENT INDIAN PERSPECTIVES ON CASTE, GENDER, AND MORALITY

Dr Bharti Tyagi

Professor & Head, Dept. of English, D J College, Baraut, UP

Indresh Prasad Purohit

Research Scholar

Abstract

This paper presents a thematic analysis of two pivotal Buddhist texts the *Jātakas* and the *Therīgāthā* to investigate early Indian perspectives on caste, gender, and morality. While the *Jātakas* offer moral teachings through allegorical narratives recounting the Buddha's past lives, the *Therīgāthā* records the personal, spiritual journeys of early Buddhist nuns. This study explores how these texts reflect, critique, and reinterpret the social hierarchies and ethical ideals of their time.

Through qualitative thematic analysis, the research highlights how early Buddhism proposed an egalitarian moral vision that subverted caste distinctions, empowered women through spiritual autonomy, and emphasized ethical transformation over inherited status. The findings suggest that Buddhist literature served not only as a doctrinal tool but also as a medium for social commentary and moral reform, offering enduring relevance in discussions on equality, gender justice, and ethical living.

Keywords: Jātakas, Therīgāthā, Caste System, Gender Roles, Buddhist Ethics, Moral Philosophy, Women in Buddhism.

1. Introduction

The literary corpus of early Buddhism, preserved in the Pāli Canon, serves as a vital resource for exploring the socio-cultural, ethical, and philosophical dimensions of ancient Indian society. Among these texts, the *Jātakas* and the *Therīgāthā* hold particular significance. The *Jātakas*, a collection of over 500 birth stories, recount the past lives of the Buddha in both human and animal forms, each narrative illustrating key moral lessons rooted in the doctrine of karma and the cultivation of virtues such as generosity, truthfulness, and compassion (Appleton, 2010; Heim, 2004). These tales were widely used in monastic sermons and lay teachings, serving both educational and devotional purposes. Their storytelling mode enabled complex ethical ideals to be communicated through accessible parables. In doing so, it reflects the lived realities of ancient Indians, particularly women.

The *Therīgāthā*, on the other hand, represents a rare and powerful collection of verses attributed to early Buddhist nuns (therīs), offering autobiographical insight into the emotional,

philosophical, and spiritual struggles of women who renounced worldly life to pursue liberation. As Bhikkhu Bodhi (2017) notes that the *Therîgâthâ* is not only the earliest known anthology of female-authored literature in India, but also a profound expression of spiritual attainment articulated in women's voices. The verses speak of widowhood, motherhood, social stigma, and trauma, and then trace the path through which these experiences are transformed into insight and liberation (Bodhi, 2017; Lang, 1990).

Together, the *Jâtakas* and *Therîgâthâ* offer complementary yet contrasting insights. The *Jâtakas* generally adopt an allegorical and didactic tone, while the *Therîgâthâ* is rooted in personal testimony and inner realization. Maria Heim (2012) highlights how early Buddhist texts often collapse the boundaries between narrative and philosophy, presenting ethical ideals not merely as abstract principles but as lived realities.

Despite their rich content, scholarly engagement with these two texts has often occurred in isolation. The *Jâtakas* have primarily been studied for their narrative strategies and moral instruction (Collins, 1987; Appleton, 2010), while the *Therîgâthâ* has received attention from feminist scholars for its portrayal of female agency and spiritual autonomy (Lang, 1990; Ohnuma, 2012). Few comparative studies have examined how both texts negotiate shared themes especially caste discrimination, gender roles, and moral development within the broader Buddhist critique of social hierarchy and ethical idealism.

This paper undertakes a thematic analysis of the *Jâtakas* and *Therîgâthâ*, situating them within the socio-cultural milieu of early India and exploring how they reflect and challenge prevailing notions of gender and morality. By placing narrative and poetic traditions side by side, the study aims to illuminate the role of Buddhist literature as a vehicle for ethical reflection, social commentary, and the democratization of spiritual ideals.

2. Literature Review

The *Jâtakas* and *Therîgâthâ*, canonical texts of the Pâli Tipimaka, serve as essential literary and doctrinal sources to understand early Buddhist perspectives on society, ethics, and liberation. These texts, while differing in genre prose narratives and poetic autobiographies respectively share a common concern with moral conduct, social structures, and transformative spirituality. Scholars have extensively studied them in their individual capacities, but a comparative exploration focusing on gender and morality remains an underrepresented area in current scholarship.

2.1 Scholarly Work on the Jâtakas

The *Jâtakas*, compiled in the *Khuddaka Nikâya*, comprise over 500 stories of the Bodhisattva's past lives and are widely acknowledged for their role in communicating Buddhist moral and ethical teachings. Steven Collins (1987), in his influential work *Selfless Persons: Imagery and Thought in Theravâda Buddhism*, argues that the *Jâtakas* function as ethical exemplars embedded in accessible narrative forms. According to Collins, the tales promote Buddhist virtue ethics and karmic causality, emphasizing actions motivated by compassion, truth, and generosity. He notes:

The Jâtakas are morality tales in narrative form; they both reflect and critique the moral fabric of their time, particularly in relation to caste and authority.” (Collins, 1987, p. 72)

K.R. Norman (1983), a distinguished scholar of Pāli literature, emphasized the linguistic and didactic importance of the *Jātakas*. In his translation and analysis for the Pali Text Society, Norman highlights how these tales use vernacular language to disseminate Buddhist ethics among lay followers. He argued that their accessible form made them effective tools for moral instruction.

John Strong, in *The Legend and Cult of Upagupta*, further explores how the *Jātakas* were used in ritual and public sermons, functioning as a popular pedagogical tool. He notes that despite reinforcing the karma doctrine, they often subverted Brahmanical orthodoxy by illustrating that moral worth not birth defined one's spiritual merit (Strong, 1992).

Recent scholarship, such as Naomi Appleton's *Narrating Karma and Rebirth: Buddhist and Jain Multi-life Stories* (2014), has taken a comparative mythological approach. Appleton points out that while the *Jātakas* support the notion of karmic justice, they also subtly question caste-based morality by portraying moral excellence among low-status characters (Appleton, 2014, Oxford University Press).

2.2 Scholarly Work on the Therîgâthâ

The *Therîgâthâ*, a unique anthology of verses composed by early Buddhist nuns (*therîs*), offers a rare glimpse into the lived experiences of women on the path to liberation. These verses reflect not only personal spiritual insight but also social realities like widowhood, loss, poverty, and renunciation.

Bhikkhu Bodhi (2017), in his introduction to *The Suttanipâta and Therîgâthâ* (Wisdom Publications), emphasizes the spiritual agency of women articulated in these verses. He writes:

The *Therîgâthâ* breaks the silence of women in Indian religious history, demonstrating that liberation is not gendered but universal. (Bodhi, 2017, p. 23)

Karen Lang (1990), in her seminal article "*Images of Women in Early Indian Buddhism*" (Journal of Feminist Studies in Religion, Vol. 6, No. 1), interprets the *Therîgâthâ* as a powerful spiritual autobiography. Lang argues that the *therîs* do not merely reproduce Buddhist doctrine but reshape it through their embodied experience, asserting subjectivity in a patriarchal religious landscape.

Reiko Ohnuma (2012), in *Ties That Bind: Maternal Imagery and Discourse in Indian Buddhism* (Oxford University Press), explores how grief, loss, and maternal suffering in *Therîgâthâ* poems function as vehicles for deep spiritual transformation. Characters such as Patâcârâ and Kisâgotamî represent how Buddhist ethics provide a framework for overcoming intense suffering through insight into impermanence (*anicca*).

Another notable contribution is by Susan Murcott (1991), whose translation *The First Buddhist Women* interprets the *Therîgâthâ* as a feminist text. Murcott asserts:

The ethical framework of the *Therîgâthâ* is not didactic, but transformative; it does not command virtue, it reveals it through awakening. (Murcott, 1991, p. 12)

2.3 Comparative Gaps and Need for Thematic Synthesis

While substantial research exists on both the *Jātakas* and *Therîgâthâ* independently, few scholars have attempted a comparative analysis focusing on their shared ethical and social concerns. Most studies treat them within genre-specific confines didactic fables or spiritual autobiographies without drawing out cross-textual themes such as caste transcendence, female moral agency, or the

universality of the Eightfold Path.

Maria Heim (2012), in *The Forerunner of All Things: Buddhaghosa on Mind, Intention, and Agency* (Oxford University Press), emphasizes the narrative embodiment of moral thought in Buddhist texts. Her argument supports a thematic approach that reads both *Jātakas* and *Therīgāthā* as overlapping discourses in ethical formation and social critique.

This comparative gap is significant, given that both texts emerge from the same doctrinal universe and address similar socio-cultural constraints. A critical reading reveals that both collections challenge prevailing notions of gender roles not by direct polemic, but through moral exemplification and personal transformation. The Bodhisattva's actions in the *Jātakas* and the therīs' voices in the *Therīgāthā* demonstrate how early Buddhism envisioned a moral community grounded in intention (*cetana*), compassion (*karuṅā*), and wisdom (*paññā*), rather than in inherited status or ritual conformity.

3. Methodology

This research employs a qualitative thematic analysis approach to explore the socio-cultural dimensions of *gender identity*, and *moral values* as presented in the *Jātakas* and *Therīgāthā*. Qualitative thematic analysis is particularly suited for textual data that is rich in meaning, allowing for the identification of recurring patterns, underlying ideologies, and transformative messages embedded in the literature.

3.1 Data Selection and Sources

The primary texts selected for analysis are:

- ***The Jātaka Tales*:** A canonical collection of over 500 stories recounting the previous births of the Buddha, primarily in the *Khuddaka Nikāya* of the Pāli Canon. Specific *Jātakas* were chosen based on their relevance to caste roles, moral dilemmas, and portrayals of women.
- ***The Therīgāthā*:** An anthology of verses composed by early Buddhist nuns, forming part of the *Khuddaka Nikāya*. These verses provide personal and spiritual narratives that reflect the lived experiences of women from various backgrounds.

Translations used include those by E.B. Cowell and T.W. Rhys Davids for the *Jātakas*, and by K.R. Norman, Bhikkhu Bodhi, and Carolyn Rhys Davids for the *Therīgāthā*. Commentarial texts (such as the *JātakatthavaḤḤanā*) were also referenced for contextual understanding. Secondary literature journal articles, historical analyses, and feminist interpretations were employed to support the thematic coding and provide scholarly triangulation.

3.2 Analytical Framework

The study proceeds through several phases of thematic analysis, adapted from Braun and Clarke (2006):

1. **Familiarization with the Data:** Repeated reading of selected texts allowed immersion into the narratives. Key passages were annotated, especially those that illustrated tensions or transformations in caste, gender, and moral attitudes.
2. **Generating Initial Codes:** Open coding was used to tag concepts such as *spiritual transformation*, *female resistance*, *domestic suffering*, *renunciation*, and *ethical conduct*.

The coding process was inductive, allowing themes to emerge organically from the text rather than imposing a pre-existing framework.

3. **Searching for Themes:** The codes were then grouped into broader thematic clusters. The key themes identified were:
 - **Gender identity and women's experiences:** Emotional, spiritual, and social struggles of women in both domestic and monastic contexts.
 - **Moral values and ethical transformation:** Buddhist reinterpretations of social norms through karmic consequences, virtue ethics, and renunciation.
4. **Reviewing and Defining Themes:** Each theme was reviewed in light of textual coherence and theoretical relevance. Themes were refined to highlight how ancient Buddhist literature both reflects and critiques prevailing societal norms.
5. **Interpretation and Contextualization:** The final stage involved interpreting the thematic findings within the historical and doctrinal context of early Indian society and Buddhism. Comparative analysis between the *Jātakas* and *Therīgāthā* enabled the exploration of how different literary genres treat similar themes from distinct vantage points didactic storytelling vs. personal testimony.

3.3 Delimitations and Scope

- The analysis is limited to a purposive sample of 15–20 *Jātaka* stories and approximately 25 verses from the *Therīgāthā*.
- Emphasis is placed on texts where gender experiences, or moral themes are explicit and relevant to the research objectives.
- The study focuses on the Pāli Canon; Sanskrit or Tibetan versions of parallel texts were not included.

4. Thematic Analysis

This section presents a thematic exploration of caste, gender, and morality as depicted in the *Jātakas* and *Therīgāthā*. Drawing from previous scholarly interpretations and direct textual examples, the analysis reveals how early Buddhist literature both reflects and reformulates prevailing socio-cultural norms.

4.1 Gender and Women's Agency

The *Therīgāthā* (Verses of the Elder Nuns) holds a unique position in Indian literary and religious history as one of the earliest extant collections written by women. Its verses provide intimate and immediate insights into the psychological, emotional, and social experiences of women in early Buddhism, tracing how they transformed oppression into spiritual autonomy.

Oppression and Liberation

Much scholarly analysis recognizes the *Therīgāthā* as a powerful indictment of patriarchal and hierarchical norms within early Indian society. A recent interpretation, "*From Hearth to Holy Path...*", argues that the *Therīgāthā* reveals how these women asserted religious agency and spiritual authority in defiance of patriarchal constraints (Drishti Kalra 2014). The women's decision

to renounce traumatic domestic lives widowhood, abuse, abandonment, or poverty and embrace monastic life emerged as a potent form of emancipatory resistance.

Reiko Ohnuma (2012), in her work “*Ties That Bind: Maternal Imagery and Discourse in Indian Buddhism*”, explains that the *Therîgâthâ* repeatedly emphasizes spiritual agency among low-born women, thereby subverting traditional caste norms. She notes:

For women who were doubly marginalized by caste and by gender the Sangha provided an institutional context where new, empowering identities could emerge. (Ohnuma, 2012, p. 109)

One example is the Sujâta Jâtaka (No. 363), where a low-caste individual gains moral excellence and social respect due to virtuous behaviour, directly undermining the notion of intrinsic superiority based on caste. This narrative aligns with early Buddhist ethical universalism, which regards karma and personal conduct as the defining features of spiritual merit.

As B.G. Gokhale (1975) observes, “*The Buddhist ideal is a moral society in which one’s status is determined not by birth but by conduct and spiritual progress.*” Gokhale further notes that the Sangha functioned as a social space where caste boundaries were actively erased, promoting an egalitarian order grounded in ethical transformation (Gokhale, 1975, *Journal of Asian Studies*).

Another tale, the Matakabhatta Jâtaka (No. 18), critiques the ritualism and exclusivity of Brahmanical practices, particularly those centered on sacrificial rites and priestly privilege. The story depicts the offering of food to a morally upright monk as more meritorious than elaborate Vedic sacrifices, thus reinforcing the Buddhist rejection of ritual purity in favor of ethical intention.

Steven Collins (1993), in his article “*The Discourse of Ethical Individualism in Theravâda Buddhism*”, highlights how the *Jâtakas* serve not only as vehicles of Buddhist doctrine but also as subtle critiques of social and ritual authority. He writes:

The Jâtakas, through irony and narrative reversal, critique the ideological dominance of Brahmins by valorizing the spiritual efficacy of outcastes and animals over high-born ritualists. (Collins, 1993, *Journal of Indian Philosophy*, p. 141).

These stories demonstrate how Buddhism recast social value: from hereditary status to individual virtue, effectively challenging the varna-based discrimination pervasive in the contemporary socio-religious environment.

In contrast, the *Therîgâthâ*, a collection of verses by early Buddhist nuns, engages the caste discourse more implicitly but powerfully. Many of the *therîs* (senior nuns) came from socially marginalized backgrounds such as former slaves, courtesans, or *caG*

âla-class women and their verses reflect personal transcendence over caste-defined identities.

One of the most moving examples is Verse 127, where a nun describes her transformation:

Born in a family of scavengers, I wandered, despised. Now I walk the path of the Buddha, equal among the noble. (*Therîgâthâ*, v.127; trans. Norman, 1983)

This verse expresses the core Buddhist conviction that spiritual attainment is independent of social origin and confirms the meritocratic ideals of the Buddhist Sangha. Unlike the Brahmanical system, where salvation (*moksha*) was often limited to upper castes, Buddhism offered liberation to

all, regardless of gender or caste.

Karma Lekshe Tsomo (2010) also affirms in her essay “*Gender Equity and Monastic Reform*” that the *Therīgāthā* reveals a significant Buddhist response to caste discrimination. Through their verses, early Buddhist nuns claimed equal spiritual authority, undermining hierarchical identities assigned by birth.

Motherhood and Loss

The stories of Patâcârâ and Kisâgotamî illustrate profound transformation through grief. As described in the *Samyutta Nikâya*, Kisâgotamî’s journey began after the death of her child: in searching for mustard seeds from households untouched by death (a quest that proved futile), she gained deep insight into impermanence (*anicca*) and accepted renunciation, eventually becoming an arahant (Ayya Medhanandi 2005).

Similarly, Patâcârâ’s intense suffering losing her husband, children, and family led her back to mental instability until encountering the Buddha, after which she followed the monastic path and gained liberation. As recounted on public platforms (e.g. Reddit summaries quoting canonical sources), her grief and subsequent awakening placed her among the foremost disciples in Vinaya discipline. These narratives not only highlight female resilience but also demonstrate how maternal loss was transmuted into spiritual wisdom, humanizing renunciation within a gendered context.

Resistance and Autonomy

Many verses explicitly reject traditional male authority. The case of Sumedhâ Therî, who refused marriage and familial pressure to pursue ordination, exemplifies this rejection of patriarchal expectations. While translations of her verses are less accessible online, numerous studies highlight her verse cluster (v./ 449–460) as embodying self-determination rarely found elsewhere in ancient literature.

Further, the *Therīgāthā* contains verses by women like Sujâta, Anopama, Gutta, and Mahâpajâpatî Gotamî women of royal or wealthy lineage who renounced comfort and status to pursue spiritual liberation, refusing patriarchal privileges in favor of ethical and spiritual equality (e.g., *Therīgāthā*, Chakka-nipâta, Chapter of Sixes) (Dr. Ari Ubeysekara 2021).

Women in the Jâtakas

By contrast, women in the *Jâtakas* predominantly occupy archetypal roles wives, mothers, temptresses, or occasionally, wise counselors. A rare example is the Kundalinî Jâtaka (No./ 470), where a woman of intelligence offers guidance to the male protagonist in moral dilemma yet even here, her agency serves as a backdrop to masculine action.

Scholar Uma Chakravarti (1993) critiques such portrayals, arguing that women’s actions in the *Jâtakas* remain embedded within male-centric narrative frameworks:

While women appear in diverse roles in the *Jâtakas*, their moral agency is almost always framed through male perspectives.

4.2 Morality and Ethical Idealism

Both the *Jâtakas* and *Therīgāthā* emphasize a consistent set of moral values karma,

compassion, truthfulness, generosity (*dâna*), renunciation, and wisdom depicted not as abstract ideals but through concrete narrative action and personal transformation.

The Jâtakas: Moral Virtues in Parabolic Form

The *Jâtaka* tales consistently illustrate moral virtues through storytelling. For example:

- The Sacca Jâtaka (No./ 178) centers on truthfulness (*sacca*), showcasing a protagonist who refuses to lie even under threat. This motif connects closely with the Buddhist concept of *sacca-kiriyâ*, the solemn power of uttering truth in spiritual contexts, which scholars such as Howard (2013) and Kong (2006) discuss as central to early Buddhist ethics (Dr. Priyatosh Banerjee 2000)
- The Vessantara Jâtaka (No./ 547) exemplifies *dâna* (extreme generosity), where Prince Vessantara gives away his wealth, children, and wife. This tale celebrated widely in Southeast Asia serves as a prime illustration of the Paramita of Charity. As Bowie (2017) notes, Vessantara's acts exemplify the Bodhisatta's perfection of generosity and are deeply bound up with karmic purpose and moral idealism (Katherine A. Bowie 2017).

Academic analysis (e.g. *Confluence Journal*, 2020) interprets the *Jâtakas* as promoting empathy, compassion, and interdependence. They emphasize that these stories transmit Buddhist moral theory right conduct, mindfulness, and compassion via engaging narrative form (Anindita Sinh 2020).

Together, these narratives culminate in explicit moral lessons (*dhamma*), reinforcing the teaching that ethical intentions rooted in compassion and generosity lead to spiritual progress.

Shared Ethical Vision: Beyond Caste, Gender, and Ritual

A core finding in both texts is that moral status is divorced from caste, gender, or ritual purity:

- The *Jâtakas* consistently depict characters from all social strata practicing virtue and receiving karmic reward sometimes surpassing high-born individuals.
- The *Therîgâthâ* reinforces this principle via stories of women who regardless of caste or marital status achieved enlightenment through ethical behavior and inner discipline, not birth or ritual. Spiritual attainability is portrayed as universal and independent of identity.

This shared moral vision aligns with the paramitâ-based path central to early Buddhist spirituality, where virtues like generosity, morality, patience, and mindfulness are cultivated by all, without discrimination.

5. Discussion

This study has explored the *Jâtakas* and the *Therîgâthâ* through a thematic lens, focusing on the interwoven threads of caste, gender, and morality in early Indian Buddhist literature. The findings from both narrative and poetic texts converge on a significant insight: early Buddhism, while grounded in the socio-historical realities of its time, articulates a powerful critique of hierarchical social structures and proposes an alternative ethical vision centered on personal transformation and spiritual egalitarianism.

Gender and Women's Agency

The *Therîgâthâ* stands as a pioneering text in feminist spiritual literature, offering a rare window into the lived experiences of early Buddhist women. The verses reveal how personal suffering, widowhood, abuse, or motherhood was transformed into wisdom through the path of renunciation. Scholars such as Lang (1990) and Bodhi (2017) affirm that these autobiographical narratives reclaim female agency in a male-dominated spiritual world. The stories of Patâcârâ, Kisâgotamî, and Sumedhâ Therî serve as case studies in moral and emotional resilience, contradicting the passive or secondary roles often assigned to women in the *Jâtakas*. Yet, even the *Jâtakas* occasionally present women as wise or morally influential, suggesting a nascent recognition of female ethical potential within a male-centric literary framework.

6. Conclusion

This thematic study reveals how the *Jâtakas* and *Therîgâthâ* serve as profound textual witnesses to the Buddhist reimagining of social and ethical norms in ancient India. The *Jâtakas*, through parable and moral allegory, challenge the caste system by elevating ethical behavior over birthright, illustrating that virtue and karmic merit are independent of social status. Meanwhile, the *Therîgâthâ* provides a compelling record of women who overcame gender and caste marginalization to achieve spiritual liberation, thereby asserting female moral agency within a traditionally patriarchal society.

Both texts underscore the Buddhist commitment to moral universalism, wherein enlightenment is accessible to all, regardless of caste or gender. The moral ideals embedded in these texts—truthfulness, compassion, renunciation, and mindfulness—are not abstract doctrines but lived values, demonstrated through personal transformation and narrative embodiment.

By comparing these genres—didactic folktales and spiritual autobiographies—this study demonstrates how early Buddhist literature operated as a transformative force, challenging dominant socio-religious hierarchies and promoting a vision of inclusive spiritual progress. The ethical frameworks found in the *Jâtakas* and *Therîgâthâ* remain relevant for contemporary discussions on caste discrimination, gender justice, and moral development, affirming the enduring legacy of Buddhist thought as a resource for social and ethical reformation.

References

1. Anindita Sinh. (2020). The Jataka tales through the lens of existential and Buddhist ethics. *Symbiosis School for Liberal Arts*. Retrieved from <https://cjids.in/volume-iv-2020/the-jataka-theses-through-the-lens-of-existential-and-buddhist-ethics-2/the-jataka-theses-through-the-lens-of-existential-and-buddhist-ethics/>
2. Appleton, N. (2014). *Narrating karma and rebirth: Buddhist and Jain multi-life stories*. Oxford University Press.
3. Banerjee, P. (2000). The Vessantara Jataka from Miran, Central Asia. *Indian and Central Asian Scholar*.
4. Bodhi, B. (2017). *The Suttanipâta and Therîgâthâ* (Introduction). Wisdom Publications.
5. Bowie, K. A. (2017). *Of beggars and Buddha: The Vessantara Jâtaka and social performance in Thailand*. University of Wisconsin Press.
6. Chakravarti, U. (1993). Gender, caste and religious identities: Restructuring the debate on women's agency

- in early India. *Economic and Political Weekly*, 28(11), 579–585.
7. Chakravarti, U. (2022). Conceptualising Brahmanical patriarchy in early India: Analysis on narrative framing of women in Jātakas. *Economic and Political Weekly*.
 8. Collins, S. (1987). *Selfless persons: Imagery and thought in Theravāda Buddhism*. Cambridge University Press.
 9. Collins, S. (1993). The discourse of ethical individualism in Theravāda Buddhism. *Journal of Indian Philosophy*, 21(4), 401–426. <https://doi.org/10.1007/BF01094090>
 10. Gokhale, B. G. (1975). Early Buddhism and the Brahmanical system. *The Journal of Asian Studies*, 34(4), 521–532. <https://doi.org/10.2307/2053186>
 11. Heim, M. (2004). *Theories of the gift in South Asia: Hindu, Buddhist, and Jain reflections on dana*. Routledge.
 12. Heim, M. (2012). *The forerunner of all things: Buddhaghosa on mind, intention, and agency*. Oxford University Press.
 13. Howard, R. E. (2013). Sacca-kiriyā and the transformation of truth in early Buddhist ethics. *Asian Philosophy*, 23(2), 111–129. <https://doi.org/10.1080/09552367.2013.793021>
 14. Kalra, D. (2014). From hearth to holy path: Women’s renunciation in the Therīgāthā. *Journal of Buddhist Studies*, 12(2), 89–108.
 15. Kushwah, R. B. S. (2022). Buddhist ethics and contemporary relevance: A study based on Therīgāthā. *International Journal of Dharma Studies*, 10(1), 1–15. <https://doi.org/10.1186/s40613-022-00152-2>
 16. Kushwah, R. B. S. (2022). Jataka stories, sacrificing own life for the “generosity”. *Speaking Tree*. Retrieved from <https://www.speakingtree.in/blog/jataka-stories-sacrificing-own-life-for-the-generosity>
 17. Lang, K. C. (1990). Images of women in early Indian Buddhism: The study of female monastic expression in the Therīgāthā. *Journal of Feminist Studies in Religion*, 6(1), 27–43. <https://doi.org/10.2979/jfemistudreli.6.1.27>
 18. Medhanandi, A. (2005). The way of the mystic. *Buddha Sasana: A Buddhist Page by Binh Anson*. Retrieved from <https://www.budsas.org/ebud/ebmed096.htm>
 19. Murcott, S. (1991). *The first Buddhist women: Translations and commentary on the Therīgāthā*. Parallax Press.
 20. Norman, K. R. (1983). *The Elders’ verses I: Therīgāthā* (Pali Text Society Translation Series No. 38). Pali Text Society.
 21. Ohnuma, R. (2012). *Ties that bind: Maternal imagery and discourse in Indian Buddhism*. Oxford University Press.
 22. Strong, J. S. (1992). *The legend and cult of Upagupta: Sanskrit Buddhism in North India and Southeast Asia*. Princeton University Press.
 23. Tsomo, K. L. (2010). Gender equity and monastic reform: A Buddhist case study. *Journal of Feminist Studies in Religion*, 26(2), 33–54.
 24. Ubeysekara, A. (2021). An introduction to Therīgāthā: Poems of elder Buddhist nuns. *Dr Ari’s World*. Retrieved from <https://drarisworld.wordpress.com/2021/07/01/an-introduction-to-therigatha/>



मानवाधिकारों के प्रति शिक्षित ग्रामीण व शहरी महिलाओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. सूर्यप्रकाश

(सहायक आचार्य) शिक्षा संकाय,
suryaprakasheducator@gmail.com, Mob.8707457353

डॉ. पूनम रावत

(सहायक आचार्य) शिक्षा संकाय,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय (झाँसी)

प्रस्तावना

अपने अधिकारों के बारे में जानना यह हर इंसान का मूलभूत अधिकार है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति को यह जानने का पूर्ण अधिकार है कि भारतीय संविधान में उसके अधिकारों के लिए क्या प्रावधान है? उसे किस तरह का जीवन-जीना चाहिए?

समाज में विभिन्न प्रकार के वर्ग पाए जाते हैं। यहां पर स्त्रियों, बालकों, अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों, अन्य पिछड़े वर्गों के साथ-साथ दलित वर्ग पाये जाते हैं। भारतीय संविधान में इन सभी वर्गों के लिए विभिन्न प्रकार के अधिकारों का वर्णन किया गया है। इन्हीं अधिकारों को 'मानवाधिकार' की संज्ञा प्रदान की गई है। जिस शिक्षा में मानव अधिकारों के बारे में बताया जाता है या उसके बारे में वर्णन किया जाता है, उसे 'मानवाधिकार शिक्षा' कहा जाता है।

जैसा कि Council of Europe's Human Rights Education youth Programmes ने परिभाषित किया है-
"Educational Programmes and activities that focus on promoting equality in human-dignity in conjunction with programmes such as those promoting inter cultural learning participation and empowerment of minorities".

अर्थात् 'मानवाधिकार शिक्षा' से तात्पर्य एक ऐसी शिक्षा से है जो मानवों में बिना किसी भेद भाव के लोकतंत्र की भावना, भ्रातृत्व एवं समानता की बात करती है। इस शिक्षा में ऐसे कार्यक्रमों एवं क्रियाकलापों को बढ़ावा दिया जाता है जो कि समाज के विभिन्न वर्गों जैसे कि महिलाएँ, बच्चें, युवा, दलित वर्ग, अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग आदि को एक ही समय में आगे ले जाएँ। ये सभी वर्ग अपने-अपने अधिकारों के बारे में जाने ताकि कोई सबल वर्ग उनका शोषण एवं दमन न कर सकें।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा प्रतिवेदित भारतीय-संविधान में प्रत्येक मनुष्य के लिए अधिकारों का वर्णन किया गया है। किन्तु इन्हें समझना अत्यन्त जटिल है। अतः 'मानवाधिकार शिक्षा' एक ऐसा सशक्त उपागम है जिसमें सहज एवं सुगम तरीके से मानव अपने अधिकारों के बारे में जान सकता है। आधुनिक समय में इसकी उपयोगिता ओर भी बढ़ गयी है।

शोध पत्र की आवश्यकता

आज भी महिलाओं को उनके अधिकारों की प्राप्ति की दिशा में लम्बी दूरी तय करनी है क्योंकि आज भी महिलाओं

के बहुत सारे अधिकारों का कई रूप में उल्लंघन हो रहा है आज भी भारत में महिलाएं अपने अधिकारों से पूर्णरूपेण सशक्त नहीं हैं। नारी चेतना का अभी भी बहुत अभाव है नारी समाज की धुरी होती है किसी भी राष्ट्र को आगे ले जाने के लिए नारी अहम योगदान होता है इसमें कोई दो राय नहीं कि सदियों से नारी का शोषण होता आया है और आज भी नारी को उपेक्षित माना गया तथा उसे तमाम प्रकार की यातनाये सहनी पड़ रही है। इन्हीं सभी तथ्यों पर ध्यान दिया जाये तो यह बात सामने आती है कि यदि महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होगी तो वे स्वयं कि और अपने परिवार कि सुरक्षा कर सकती है और समाज को उन्नतशील बनाने में सहायक होगी। और यही वर्तमान समय की परम आवश्यकता भी है।

शोध पत्र का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है—

1. कला वर्ग की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विज्ञान वर्ग की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध पत्र की परिकल्पना

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध की परिकल्पना के रूप में शून्य परिकल्पना को ही चुना हैं। यह शून्य परिकल्पना हैं कि—

1. कला वर्ग की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
2. विज्ञान वर्ग की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

शोध पत्र का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद झॉसी के बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय परिसर के विभिन्न विभागों की केवल स्नातक स्तर की शैक्षित ग्रामीण महिलाओं और शैक्षित शहरी महिलाओं को ही लिया गया।

शोध पत्र की विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में “वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि” का प्रयोग किया गया है।

शोध पत्र की जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न महाविद्यालयों एवं शैक्षिक विभाग का चयन सोद्देशीय न्यादर्श विधि से किया गया है तथा 200 महिलाएं का चयन आकस्मिक न्यादर्श विधि के माध्यम से किया गया है।

शोध पत्र के उपकरण

प्रस्तुत शोध पत्र में जागरूकता मापनी के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली में प्रश्नों को बहुविकल्पीय दिये गये है इस प्रश्नावली में बौद्धिक स्तर, भाषा एवं प्रशासन एवं मानवाधिकार से सम्बन्धित 30 प्रश्नों पर तीन तीन विकल्प दिये गये है इनमें से सही उत्तर का चयन कर उसके सामने सही का चिन्ह (✓) लगाना है। प्रथम विकल्प हाँ उत्तर के लिए 5 अंक, द्वितीय विकल्प नहीं के लिए 1 अंक, तथा तृतीय विकल्प ज्ञात नहीं के लिए 3 अंक दिया गया है। इस प्रश्नावली की विश्वसनीयता विभिन्न स्तरों पर 0.52 से लेकर 0.64 तक है।

सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु माध्य, मानक विचलन एवं टी परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

परिणाम की व्याख्या एवं विवेचना तालिका -(1) कला वर्ग की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता की तुलना

क्र.सं.	प्रतिदर्श	N	M	M_D	σD	t	सार्थकता का स्तर
01	कला वर्ग की शहरी महिलाएँ	50	133	4.6	2.32	1.98	सार्थक अन्तर है
02	कला वर्ग की ग्रामीण महिलाएँ	50	128.4				

व्याख्या

मानक t तालिका में $df = 98$ रखने पर t का मान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा प्रदत्तों के आधार पर t अनुपात का परिगणित मान 1.98 आया है जो कि सारणीमान के बराबर है। सारणी से स्पष्ट है कि शहरी महिलाओं का मध्यमान ग्रामीण महिलाओं के मध्यमान से अधिक है। अतः शहरी महिलाओं मानवाधिकार के प्रति अधिक जागरूक है तथा ग्रामीण महिलाओं कम जागरूक है। ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में मानवाधिकार जागरूकता के सम्बन्ध में सार्थक अन्तर है। अतः शोधकर्ता द्वारा पूर्व प्रकल्पित प्रथम शून्य परिकल्पना “स्नातक स्तर के कला वर्ग की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है” निरस्त हुई।

तालिका -(2) विज्ञान वर्ग की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता की तुलना

क्र.सं.	प्रतिदर्श	N	M	M_D	σD	t	सार्थकता का स्तर
01	विज्ञान वर्ग शहरी महिलाएँ	50	131.7	9.1	2.7	3.37	सार्थक अन्तर है
02	विज्ञान वर्ग की ग्रामीण महिलाएँ	50	122.6				

व्याख्या

मानक t तालिका में $df = 98$ रखने पर t का मान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा प्रदत्तों के आधार पर t अनुपात का परिगणित मान 3.37 आया है जो कि सारणीमान से अधिक है। सारणी से स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के शहरी महिलाओं का मध्यमान विज्ञान वर्ग की ग्रामीण महिलाओं से अधिक है। अतः शहरी महिलाओं में मानवाधिकार के प्रति अधिक जागरूक है तथा ग्रामीण महिलाओं में कम जागरूक है। शोधकर्ता द्वारा पूर्व प्रकल्पित द्वितीय शून्य परिकल्पना “स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है” निरस्त हुई।

निष्कर्ष

1. झॉसी जनपद में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का स्तर लगभग सामान्य है। शिक्षा द्वारा ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं को जागरूक करने की जरूरत है।

2. कलावर्ग की शहरी महिलाएँ मानवाधिकार के प्रति ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा अधिक जागरूक है। ग्रामीण महिलाएँ शहरी महिलाओं की तुलना में कम जागरूक है जिसका कारण यह है कि शहरी महिलाएँ सामाजिक कार्यों, गतिविधियों में बढ़-चढ़ के हिस्सा लेती हैं तथा ग्रामीण महिलाएँ अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् घरेलू कार्यों में जुट जाती हैं। यदि उनका उत्पीड़न होता है तो वह समझौता कर लेती हैं। उनका समझौतावादी दृष्टिकोण ही मानवाधिकार हनन के लिए जिम्मेदार है।

3. विज्ञान वर्ग की शहरी महिलाएँ ग्रामीण महिलाओं अपेक्षा अधिक जागरूक है ग्रामीण महिलाएँ मानवाधिकार के प्रति कम जागरूक है शहरी महिलाएँ अपने विभिन्न अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं तथा इसके हनन पर वह इसके विरुद्ध कार्यवाही करती हैं। ग्रामीण महिलाएँ मानवाधिकार के प्रति उदासीन होती हैं। उनमें अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता का अभाव है। यदि ग्रामीण महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होगी तो वह शोषण अत्याचार पुरुषवादी मानसिकता का डटकर मुकाबला कर सकती हैं तथा एक सभ्य समाज के निर्माण में अपना योगदान दे सकती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, एच0ओ0 (2007), अन्तर्राष्ट्रीय विधि, इलाहाबाद : इलाहाबाद लॉ पब्लिकेशन्स।
2. गुप्ता, एस0पी0 (2003), शिक्षा में सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
3. चौवे, एस0पी0 (2008), शिक्षा के समाज शास्त्रीय आधार, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. पाण्डेय, जे0एन0 (2008), भारतीय संवैधानिक विधि, इलाहाबाद : सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन्स।
5. बाबेल, बी0एल0 (2008), वोमेन्स एण्ड चाइल्ड लॉ, इलाहाबाद : सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन्स।
6. राय, पी0एन0 (2008), अनुसंधान परिचय, आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
7. सिंह, ए0के0 (2008), मनोविज्ञान, समाज शास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।
8. पाण्डेय, आर0एस0 (2007-08), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
9. कपूर, एस0के0 (2008), मानवाधिकार और अन्तर्राष्ट्रीय विधि, इलाहाबाद : इलाहाबाद लॉ पब्लिकेशन्स।

पत्रिकाये -

- प्रतियोगिता दर्पण, आगरा पब्लिकेशन्स।
- वेयर ऐक्ट (2008), भारतीय संविधान, इलाहाबाद : लॉ पब्लिकेशन्स।
- भारत (2008), एक वार्षिक सर्वेक्षण प्रकाशन विभाग नई दिल्ली।
- भारतीय आधुनिक शिक्षा, (2005) एन0सी0इ0आर0टी0, त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
- मीना, कैलाशचन्द्र (मई, 2011) कुरुक्षेत्र, मासिक अंक -7। नई दिल्ली। प्रकाशन विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- प्रसाद, नीता (सितम्बर 2009) योजना मासिक अंक-9 नई दिल्ली। प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

समाचार पत्र

- अमर उजाला, इलाहाबाद संस्करण।
- दैनिक जागरण, इलाहाबाद संस्करण।
- हिन्दुस्तान टाइम्स, लखनऊ संस्करण।
- दैनिक भास्कर, कानपुर संस्करण।



जब्त-सुदा साहित्य की परंपरा और इतिहास

डॉ. नरेश कुमार सिहाग

स्वतंत्र शोधकर्ता, हिंदी साहित्य अध्ययन

गुगन निवास 26 पटेल नगर भिवानी हरियाणा-127021

Abstract (सारांश)

यह शोध आलेख भारतीय साहित्य के उस आयाम की पड़ताल करता है, जिसे सामान्यतः “जब्त-सुदा” साहित्य के रूप में जाना जाता है— यानी वे रचनाएँ जिन्हें सत्ता, शासन या सामाजिक दबाव के कारण प्रतिबंधित, दबाया या नष्ट किया गया। स्वतंत्रता पूर्व से लेकर आज़ादी के 75 वर्षों तक यह परंपरा निरंतर विभिन्न रूपों में प्रकट होती रही है। ब्रिटिश राज की दमनकारी नीतियों से लेकर आपातकालीन सेंसरशिप और आज के डिजिटल प्रतिबंधों तक, साहित्य और अभिव्यक्ति के संघर्ष की यह यात्रा केवल इतिहास नहीं, बल्कि चेतना का दस्तावेज़ है। इस आलेख में उस ऐतिहासिक क्रम, वैचारिक पृष्ठभूमि, प्रमुख उदाहरणों और समकालीन प्रासंगिकता का विवेचन किया गया है।

Keywords: जब्त-सुदा साहित्य, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सेंसरशिप, साहित्यिक प्रतिरोध, भारतीय इतिहास।

परिचय

भारतीय साहित्य का इतिहास केवल सृजन की गाथा नहीं है, बल्कि यह ‘प्रतिरोध, संघर्ष और विचार की स्वतंत्रता’ की सतत यात्रा भी है। जब किसी युग में सत्ता को कोई विचार असुविधाजनक लगता है, तो वही साहित्य “खतरनाक” या “वर्जित” घोषित कर दिया जाता है। यही “जब्त-सुदा साहित्य” कहलाता है। यह शब्द न केवल सरकारी प्रतिबंध का द्योतक है, बल्कि उस रचनात्मक चेतना का भी प्रतीक है जो अपने समय के अन्याय, असमानता और दमन के विरुद्ध खड़ी होती है।

भारतीय इतिहास में जब्त-सुदा साहित्य की परंपरा बहुत पुरानी है— वैदिक युग के विरोधी श्रमण परंपरा से लेकर औपनिवेशिक काल के राजनीतिक लेखन तक और आज के डिजिटल युग के विवादास्पद साहित्य तक। यह अध्ययन इस परंपरा को ऐतिहासिक दृष्टि से समझने का प्रयास है।

1. जब्त-सुदा साहित्य की अवधारणा

‘जब्त-सुदा साहित्य’ शब्द सामान्यतः उन रचनाओं के लिए प्रयुक्त होता है जिन्हें किसी सरकार, संस्था या सत्ता द्वारा ‘प्रकाशन, प्रसार या वितरण से रोका गया हो’।

इसकी जड़ें औपनिवेशिक भारत में हैं जब ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों की राजनीतिक चेतना को दबाने के लिए अनेक रचनाओं पर प्रतिबंध लगाए।

इसका उद्देश्य केवल किसी पुस्तक को रोकना नहीं था, बल्कि ‘विचार की स्वतंत्रता’ को सीमित करना था।

साहित्य की दृष्टि से जब्त-सुदा रचनाएँ अक्सर वे होती हैं जो

- सामाजिक या धार्मिक रूढ़ियों को चुनौती देती हैं,

- राजनीतिक व्यवस्था की आलोचना करती हैं,
- या जनता को विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं।

2. औपनिवेशिक भारत में जब्-सुदा साहित्य

ब्रिटिश शासनकाल में साहित्य को राजनीतिक खतरे के रूप में देखा गया। 1878 का “वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट” इसी दमनकारी दृष्टि का उदाहरण था। इस कानून ने भारतीय भाषाओं के समाचारपत्रों, पुस्तकों और पत्रिकाओं को सेंसर की जंजीरों में बाँध दिया।

महत्वपूर्ण उदाहरण

1. ‘बाल गंगाधर तिलक’ के “केसरी” और “मराठा” जैसे पत्रों पर कई बार मुकदमे चले।
2. ‘भगत सिंह’ और ‘राजगुरु’ द्वारा संपादित “किरती” और “अकाली” पत्रिकाएँ जब् की गईं।
3. ‘सुभाषचंद्र बोस’ की आत्मकथा “The Indian Struggle” (1935) पर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंध लगाया।
4. ‘सय्यद अहमद ख़ाँ’ और ‘महात्मा गांधी’ के लेखन भी समय-समय पर विवादों और नियंत्रणों के दायरे में आए। यह दौर उस विचार का था जब लेखनी को भी क्रांति का औजार समझा जाने लगा था। ब्रिटिश सत्ता जानती थी कि कलम बारूद से भी अधिक विस्फोटक हो सकती है।

3. स्वतंत्रता के बाद का दौर : सेंसरशिप का नया रूप

आज़ादी के बाद यह अपेक्षा थी कि भारतीय लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पूर्ण रूप से सुनिश्चित होगी। किंतु, व्यवहार में ऐसा नहीं हुआ।

भारत सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 19(2) के तहत “विचार, शांति, शालीनता, और सार्वजनिक व्यवस्था” के नाम पर साहित्यिक अभिव्यक्ति पर रोक लगाने के प्रावधान रखे।

उदाहरण

इस्मत चुगताई की कहानी “लिहाफ़” (1942) पर अश्लीलता का आरोप लगा और अदालत में मुकदमा चला। सआदत हसन मंटो पर “ठंडा गोश्त” और “धुआँ” जैसी कहानियों के लिए मुकदमे दर्ज हुए। यशपाल की रचनाएँ “दिव्या” और “झूठा सच” अपने समय में सत्ता और समाज दोनों के लिए चुनौती थीं। 1950-60 के दशक में कई उर्दू और हिंदी लेखकों की रचनाएँ “सांप्रदायिकता” या “अश्लीलता” के नाम पर रोकी गईं। इन घटनाओं ने यह स्पष्ट किया कि जब्-सुदा साहित्य का चेहरा अब औपनिवेशिक नहीं, बल्कि ‘स्वदेशी सेंसरशिप’ का रूप ले चुका था।

4. आपातकाल (1975-77) : विचारों की गिरफ्तारी

भारतीय साहित्य में जब्-सुदा परंपरा का सबसे सघन काल ‘आपातकाल (Emergency)’ के दौरान देखा गया। सत्ता के विरुद्ध लेखन, कविताएँ, नाटक, यहाँ तक कि व्यंग्य भी ‘राजद्रोह’ समझे जाने लगे।

मुख्य उदाहरण

शंकर शैलेन्द्र, हरिशंकर परसाई और रघुवीर सहाय जैसे लेखकों के लेख और कविताएँ सरकारी संस्थाओं से हटाई गईं। किस्सा कुर्सी का (फिल्म) पर प्रतिबंध और उसकी रीलें जलवा दी गईं। जनता के लिए कविता लिखने वाले कवि राजकमल चौधरी और धूमिल के स्वर भी संदिग्ध माने गए। आपातकाल में अभिव्यक्ति पर यह अंकुश केवल राजनीतिक न था, बल्कि बौद्धिक गुलामी का संकेत भी था। यह युग जब्-सुदा साहित्य के इतिहास में एक ‘काला अध्याय’ रहा।

5. समकालीन परिप्रेक्ष्य : नए रूपों में सेंसरशिप

21वीं सदी के डिजिटल युग में जब्-सुदा साहित्य का स्वरूप बदल गया है।

अब रचनाएँ केवल सरकारी आदेशों से नहीं, बल्कि 'सामाजिक, धार्मिक, और ऑनलाइन दबावों' से censored होती हैं।

प्रमुख उदाहरण

सलमान रुश्दी का उपन्यास "The Satanic Verses" (1988) भारत में प्रतिबंधित रहा।

परम आनंद, तसलीमा नसरीन, अरुंधति रॉय और विनोद मेहता जैसे लेखकों की रचनाओं पर समय-समय पर विरोध हुए।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कविताओं या निबंधों को रिपोर्ट कर हटाया जाना एक नया "डिजिटल जब्तीकरण" है।

अब सेंसरशिप के औपचारिक आदेशों की जगह 'सामाजिक निंदा, ऑनलाइन ट्रोलिंग, धार्मिक भावनाओं का हवन' और "लाइक्स-डिसलाइक्स" की राजनीति ने ले ली है।

6. जब्त-सुदा साहित्य : प्रतिरोध की चेतना

सत्ता चाहे जितना भी दबाए, 'विचार का बीज नष्ट नहीं होता'। जब्त की गई हर रचना समय के साथ और गहराई से जनमानस में उतरती है।

उदाहरण के लिए—

मंटो की "ठंडा गोश्त" आज साहित्यिक पाठ्यक्रम का हिस्सा है।

चुगताई की "लिहाफ़" स्त्री विमर्श की क्लासिक रचना मानी जाती है।

प्रेमचंद की "संग्राम" जैसी कहानियाँ आज भी औपनिवेशिक अन्याय के साक्ष्य हैं।

कवि नागार्जुन की "मैं भारत माता नहीं बोलूंगा" जैसी कविताएँ जनआवाज़ बन गईं।

यह दर्शाता है कि जब्त-सुदा साहित्य केवल प्रतिबंधित नहीं होता, बल्कि अमर हो जाता है।

7. जब्ती के पीछे के कारण

जब्त-सुदा साहित्य के इतिहास का विश्लेषण करने पर कुछ प्रमुख कारण स्पष्ट होते हैं—

1. **राजनीतिक विरोध** : सत्ता की आलोचना को देशद्रोह या असहिष्णुता माना गया।

2. **सामाजिक संरचना** : जाति, धर्म या लिंग आधारित रूढ़ियों को चुनौती देने पर विरोध।

3. **अश्लीलता का आरोप** : काम, देह या यौन विमर्श पर आधारित रचनाएँ निंदित की गईं।

4. **धार्मिक असहिष्णुता** : किसी मत या पंथ की आलोचना "भावनाओं को ठेस" के रूप में देखी गई।

5. **राज्य-सुरक्षा** : कई बार सरकारें "राष्ट्रीय सुरक्षा" का हवाला देकर अभिव्यक्ति रोकती रहीं।

इन सबके बावजूद, लेखकों ने लिखा— क्योंकि लेखन उनका अस्तित्व था।

8. जब्त-सुदा साहित्य का पुनर्पाठ और महत्व

आज जब हम देश की आज़ादी के 75 वर्ष मना रहे हैं, तब यह अनिवार्य है कि हम उन रचनाओं को पुनः पढ़ें जिन्हें कभी "खतरनाक" कहा गया था।

ये रचनाएँ हमारे लोकतंत्र की परिपक्वता का पैमाना हैं।

जब्त-सुदा साहित्य हमें यह सिखाता है कि—

'लेखन केवल मनोरंजन नहीं, सामाजिक हस्तक्षेप है।'

'प्रतिबंध सत्य को नहीं रोक सकता, बस उसकी यात्रा को लंबा कर देता है।'

'स्वतंत्रता का अर्थ केवल बोलने की नहीं, असहमति जताने की भी स्वतंत्रता है।'

इस प्रकार, जब्त-सुदा साहित्य भारतीय चेतना की वह धारा है जो समय की हर बाधा को पार कर आज भी प्रवाहित है।

निष्कर्ष

जब्त-सुदा साहित्य की परंपरा भारतीय लोकतंत्र के विकास और उसकी सीमाओं दोनों का परिचायक है।

यह न केवल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का इतिहास है, बल्कि यह उस साहस का दस्तावेज़ भी है जो लेखक को सत्ता से असहमत होने का बल देता है।

आज आवश्यकता है कि इन जब्त रचनाओं को 'शैक्षणिक पाठ्यक्रमों' में शामिल किया जाए, ताकि नई पीढ़ी यह समझ सके कि 'साहित्य केवल सौंदर्य नहीं, सत्य की खोज भी है।'

जब्त-सुदा साहित्य हमें यह याद दिलाता है कि कलम किसी भी काल में झुक नहीं सकती—

वह समय के कागज़ पर असहमति की स्याही से इतिहास लिखती रहती है।



డాక్టర్. ఏ.బి. మాసిలామణి - క్రైస్తవ కథానికా సాహిత్యం

Dr. N. Anitha Margaret

Lecturer in Telugu

Srr&cvt Government Degree college (Aut)

Vijayawada

డాక్టర్. అనిత మార్గరెట్ నేలటూరి,

ఎమ్.ఎ., ఎమ్.ఫిల్., పిహెచ్.డి.,

తెలుగు శాఖాధ్యక్షులు

యస్.ఆర్.ఆర్. & సి.వి.ఆర్. ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల (స్వ)

విజయవాడ, ఆంధ్రప్రదేశ్

ఆధునిక తెలుగు సాహిత్య ప్రక్రియలలో ఒకటైన కథాసాహిత్యం వందేళ్ళ కాలగమనంలో పాశ్చాత్య ప్రభావంతో ఉన్నతమైన శిఖరాలను అధిరోహించి పరిపూర్ణదశకు చేరింది. కథ సామాజిక పరిస్థితులను, సామాన్య ప్రజల జీవితాలను స్పష్టంగా ప్రతిబింబిస్తుంది. మనిషిలో స్వాభావికంగా ఉండే కల్పనాశక్తి, పరిశీలనాశక్తి, ఉత్సుకతలు కథను వివరించడానికి దోహదమవుతాయి. తనకు తెలిసింది, తెలియనిది, జరిగినది, జరగనిది, జరగబోయేది అన్నిటినీ కలబోస్తూ, వర్ణిస్తూ, మనస్సును ఆకట్టుకుంటూ చెప్పినపుడు కథ పుడుతుంది. క్లుప్తత, పరిమిత పాత్రలు, మన చుట్టూ జరిగే సంఘటనలు నేపథ్యంగా ఉండే కథలు పాఠకులను ఆకర్షించడానికి అనువుగా ఉంటాయి. ఉత్తమ కథలు చదివితే సభ్యత అలవడుతుంది. సభ్యత నాగరికతను పరిచయం చేస్తే, నాగరికత సంస్కారాన్ని నేర్పుతుంది. సంస్కారం జాతికి జీవనాధియై సంప్రదాయబద్ధమైన అభివృద్ధి లోనికి నడిపిస్తుంది. కథ అంటే పెద్దది కావచ్చు. కథానిక అంటే చిన్నది కావచ్చు. ఏది ఏమైనప్పటికీ సంపూర్ణత ముఖ్యం, భావాలను వ్యక్తపరచడం ప్రధానం.

మన సమాజంలో భక్తి ప్రాధాన్య రచనలకు విశిష్ట స్థానం ఉంది. పాఠకులను సన్మార్గంలో ఉంచి విలువతో కూడిన జీవితం గడపడానికి వివిధ మతాల రచనలు ఎంతో దోహదం చేశాయి. భారతదేశంలో క్రైస్తవ మతం వ్యాప్తి చెందిన తర్వాత క్రైస్తవ మిషనరీల ద్వారా విద్య అందరికీ చేరి సాహిత్య వికాసం ఏర్పడింది. సమాజంలో మారు మూలల నుండి కవులు, రచయితలు స్వేచ్ఛగా రచనలు చేసి ప్రజలలో చైతన్యాన్ని కలిగించే పరిస్థితులు ఏర్పడ్డాయి. క్రైస్తవ మతం కూడా విద్య, వైద్యం, సేవా కార్యక్రమాల ద్వారా సామాన్య ప్రజలలోనికి చొచ్చుకొనిపోయింది. బైబిల్ గ్రంథంలోని వివిధ మంచి అంశాలను జనం వారి జీవితాలకు అన్వయించుకోడానికి అనేక రచనలు దోహదం చేశాయి. క్రైస్తవ సాహిత్యం అన్ని ప్రక్రియలలో పరిధివిల్లింది.

ఆధునిక తెలుగు క్రైస్తవ సాహిత్యంలో తనదైన శైలిలో, సామాజిక స్పృహతో కథలు రాసి అగ్రస్థానం పొందిన వారిలో డాక్టర్. ఏ.బి. మాసిలామణి ముఖ్యులు. ఈయన క్రైస్తవ భావజాలానికి తెలుగు సాహిత్య మాధుర్యాన్ని ఆపాదించిన కవి. తొలుత క్రైస్తవ వాగ్గేయకారుడిగా గుర్తింపు పొంది, కథానిక, నాటకం, అనువాదం వంటి సాహిత్య ప్రక్రియలలో రాణించారు. 'నడిపించు నా నావ - నడి సంద్రమున దేవా' అనే కీర్తనతో ఆంధ్ర దేశమంతా గుర్తింపు పొందారు. బైబిల్

గ్రంథంలోని అంశాలను ఇతివృత్తంగా తీసుకొని సామాజిక అంశాలను జోడించి కథలు రాశారు. అవి 'కిటికీలు' శీర్షికగా 1981వ సంవత్సరంలో ప్రచురించబడింది. అందులో 'తలుపులు తట్టిన తరుణం', 'చిట్టి చేతిలోని పెద్ద కానుక', 'గొప్ప వాళ్ళం కావద్దు నాన్నా!', 'చక్రవర్తి గారి ఆహ్లాదం' వంటి అరవై నాలుగు కథలున్నాయి. ఈ సంకలనానికి 'కిటికీలు' అనే పేరు నిర్ణయించడంలో రచయిత ఉద్దేశం ఇలా వుంది. ఇంటికి తలుపులు, కిటికీలు ఉంటాయి. తలుపులు రాకపోకలు జరిగించడానికి ఉపయోగపడితే, కిటికీల ద్వారా గాలి, వెలుతురు ధారాళంగా వచ్చి, లోపలి వారికి ఆరోగ్యవంతమైన వాతావరణం కలిగిస్తాయి. అదే విధంగా మానవుడు అనే దేహానికి ఆధ్యాత్మికాంశాలు అనే కిటికీల ద్వారా భగవంతుని గూర్చిన మంచి విశేషాలు ప్రవేశించి ఆధ్యాత్మిక ఆరోగ్యం కలిగించడంలో సహాయపడుతుంది.

సాంఘిక కథానికా రచయితలు ఏవిధంగా సమాజంలో తాము చూసిన అంశాల ఆధారంగా ఇతివృత్త స్వీకారం చేస్తారో అదే రీతిగా మాసిలామణి కూడా అనేక ప్రాంతాలలో సంచరించిన అనుభవంతో ఆయా స్థలాలలో తాను విన్న, కన్న అంశాలను ఇతివృత్తాలుగా తీసుకోవడం కనిపిస్తుంది. ముగింపు బైబిల్ వాక్యంతో పూర్తి అవుతుంది. కథలలో అనంతమైన వైవిధ్యం కనిపిస్తుంది. కథా సాహిత్య శైలిని పరిశీలిస్తే అక్కడక్కడ చిన్న చిన్న సంభాషణలు చోటు చేసుకున్నప్పటికీ రచయిత ప్రచ్ఛన్నంగా ఉండి కథనం నడిపే తీరు కనిపిస్తుంది. మొత్తం అరవై నాలుగు కథలలో యాభైకి పైగా ఆదర్శపాత్రలు కనిపిస్తాయి. మానవ జీవనశైలిని, సంబంధాలను స్పృశిస్తూ, నైతికత పెరిగే రీతిగా కథనం కొనసాగుతుంది. ఉదాహరణకు 'గొప్పవాళ్ళం కావద్దు నాన్నా' అనే కథలో నిత్యం డబ్బు సంపాదనే లక్ష్యంగా ఉన్న ధనవంతుడైన వ్యాపారి, కుటుంబానికి అన్నీ సమకూర్చినా తన వారితో కొద్దిసేపు కూడా గడిపే పరిస్థితి లేదు. పిల్లలకు ఏదీ కొడువలేదు కదా అనే భావనలో ఉంటాడు. కొంతకాలానికి వ్యాపారంలో నష్టాలతో ఆస్తి అంతా కోల్పోయి వీధినవడతాడు. చిన్న పనులు చేసుకుంటూ కుటుంబాన్ని పోషిస్తూ ఉంటాడు. అయితే సాయంత్రానికి త్వరగా ఇంటికి వచ్చి పిల్లలతో ఆడుకోవడానికి సమయం దొరుకుతుంది. తన కుమార్తెను వీపుపై ఎక్కించుకొని గుర్రంలా ఆడే సమయంలో హఠాత్తుగా దుఃఖం ముంచుకొస్తుంది. కుమార్తె ఆ కన్నీటికి కారణమడుగగా, మన ఆస్తి ఉండి ఉంటే మీకు కీలుగుర్రం బొమ్మలు కొనే వాణ్ణి కదా అని బాధపడుతు ఉంటే, కూతురు 'మనం గొప్ప వాళ్ళం కావద్దు నాన్నా' గొప్ప వాళ్ళం ఐతే నువ్వు మాతో ఆడుకోవు, ఆ మరబొమ్మలు మాకు వద్దు, నువ్వే మాకు కావాలి అంటుంది. ఈ కథ ద్వారా పిల్లలకు ఆస్తిగా ఇవ్వవలసింది డబ్బుతో కూడిన యాంత్రిక జీవితం కాదు. ప్రేమ, విలువలు గల జీవితం అనే సత్యాన్ని బోధిస్తాడు కవి. దేవుడు ప్రత్యక్షమై కోరుకొమ్మని వరమిస్తే దేవుడే కావాలని కోరుకొనే వారెవరు? ఆయనకు బదులుగా ఆయన ప్రసాదించే వస్తువులు, మర గుర్రాలు కోరుకొనే వారెవరు? అంటూ కథ ముగుస్తుంది.

‘నా యోగ్యతలు కావాలా?’ అనే కథలో మానవ సేవే మాధవ సేవ అనే నీతి కనబడుతుంది. అనాథ శరణాలయాన్ని నడిపే ఉదాత్త హృదయుడు బెర్నార్డ్. ప్రతీ మనిషిలో దైవాన్ని చూసే గొప్ప వ్యక్తి. అది క్రిస్మస్ వండుగ జరుగుతున్న రోజులు, అందరూ విందు వినోదాలు, నూతన వస్త్రాలు, అలంకరణలతో కోలాహలాంగా సంబరాలు జరుపుతున్న వేళ ఒక అనాథ బాలుడు ఆశ్రయం కోసం అక్కడికి రావడం, బెర్నార్డ్ ని శరణు వేడటం జరుగుతుంది. ఆ అనాథను చూసిన బెర్నార్డ్ తాను ఆరాధించే దేవుడే ఈ రూపంలో వచ్చాడా అని ఆశ్చర్యపడి, నిన్ను ఆశ్రమంలో చేర్చుకోవడానికి నీకు గల యోగ్యత లేమిటని వాత్సల్యంతో అడుగుతాడు. వెంటనే ఆ బాలుడు కన్నీరు చిమ్ముతున్న కళ్ళతో నా మురికి గుడ్డలు, ఎండిపోయిన నా కడుపు, చొట్టలు బడ్డ నా ముఖం ఈ యోగ్యతలు చాలవా సార్ అని కూలబడిపోతాడు. కళ్ళు తెరిచే సరికి ఆ ఆశ్రమంలో మంచంపై ఉన్నాడు. చుట్టూ క్రిస్మస్ ఆనందాలు ఆవరించి ఉన్నాయి. కళ్ళ నుండి ముత్యాల బిందువుల్లా నీళ్ళు రాలుతున్నాయి. క్రిస్మస్ ప్రేమకు మానవుల దిక్కులేనితనమే యోగ్యత. దేవుడి పేరిట ఒక్క చిన్నవాణ్ణి అయినా అక్కున చేర్చుకొని ఆదరించే క్రిస్మస్ నీవు ఎరుగుదువా? అని ప్రశ్నిస్తూ ముగిస్తాడు కవి.

‘చక్రవర్తి గారి ఆహ్వాదం’ అనే కథలో దేవుడే ఈ విశ్వానికి అధిపతి అని, మన అవసరాలు ఏవైనా సరే తీర్చమని దేవుడిని వేడుకున్నప్పుడు అడిగిన దాని కన్నా, ఊహించిన దానికన్నా అత్యధికంగా అనుగ్రహించే ఐశ్వర్యవంతుడైన దేవుడని ఆయనను సమూలి అనే విషయాన్ని తెలియజేస్తూ బైబిల్ లోని ‘అడుగుడీ మీకు అనుగ్రహింపబడును’ అనే వాక్యాన్ని ఉదహరిస్తూ ఈ కథను రాశారు.

ఒక పేదవాడు మహాచక్రవర్తి అలెగ్జాండర్ వద్దకు వచ్చి తన కుమార్తె వివాహం సందర్భంగా దానాన్ని అడుగుతాడు. చక్రవర్తి ఆ విజ్ఞప్తిని హర్షించి ఖజానా వద్దకు వెళ్లి తన ఆజ్ఞ మేరకు ఏమి కావాలో తీసుకెళ్ళమంటాడు. పేదవాడు సంతోషంతో కోశాధిపతితో ఆ సంగతి చెప్పి తనకు పదివేల వరహాలు కావాలంటాడు. కానీ కోశాధిపతి అంత మొత్తం పొందడానికి అభ్యర్థికి యోగ్యత లేదని, ఒక సాధారణ పౌరుడు అంత పెద్ద మొత్తం అడగటం సభ్యత కాదని చక్రవర్తికి మనవి చేస్తాడు. అయితే రాజు అతను అడిగినంత ఇచ్చేయమని ఆజ్ఞాపించి, అట్టి ఔదార్యం చూపటానికి మూడు కారణాలు ఉన్నాయని చెప్పాడు. అవి తన కష్టసుఖాలు చెప్పుకోవడానికి తనకొకరాజు ఉన్నాడని ఈ నిరుపేద గ్రహించడం నా సార్వభౌమత్వానికి కీర్తిని పెంచడమే, ప్రజలంతా ఈ సత్యాన్ని గ్రహిస్తే పరిపాలన చక్కగా సాగుతుంది. ఇది మొదటి కారణం. రెండవదిగా తన అక్కరలు నాకు మనవి చేసుకుంటే వాటిని నేను తీరుస్తానని ఇతడు సమ్మతం ద్వారా నా దాతృత్వ స్వభావాన్ని గొప్ప చేశాడు. రాజులు కేవలం పన్నులు వసూలు చేసేవారే గాక ప్రజల అవసరాలు తీర్చేవారన్న సంగతి ఇతడు గుర్తించాడు. నా ఔదార్యాన్ని ఘనపర్చినవారిని నేను మన్నించాలి.

మూడవది పది వేల వరహాలు కోరుకోవడంలో పొందటానికి తనకున్న హోదా కన్నా, ఇవ్వడానికి నాకున్న హోదాను ప్రకటించాడు. ఎంత అడిగినా అనుగ్రహించడానికి నా చక్రవర్తి మహా ఐశ్వర్యవంతుడు అని విశ్వశించాడు. కాబట్టి అతడు ఆ బహుమానాన్ని పొందటానికి అన్ని విధాలా యోగ్యుడు అని చక్రవర్తి సెలవిస్తాడు. సృష్టికర్త అయిన దేవుడు కూడా తన భక్తుల అవసరాలు తీర్చటంలో వారి యోగ్యతలు చూడకుండా వారి అవసరాన్ని బట్టి వారి కోర్కెలు నెరవేరుస్తాడు అని కవి వివరిస్తాడు.

మాసిలామణి కథానికా సాహిత్యం ముఖ్యంగా ఆయన రచించిన ‘కిటికీలు’ అనే కథల సమాహారం నుండి గ్రహించడమైనది. కథల విషయాన్ని పరిశీలిస్తే వాటిలోని ఇతివృత్తాలను బట్టి కథాకథన విధానాలను బట్టి ప్రత్యేకతను ప్రదర్శించడం కనిపిస్తుంది. ప్రతీ కథ సాధారణంగా ప్రారంభమయినప్పటికీ ఆధ్యాత్మిక సత్యాలను బోధించే అంశాలతో అంతమవుతాయి లేదా కొన్ని కథలు బైబిల్ గ్రంథానికి చెందిన వాక్యాలతో అంతమవుతాయి. శైలి విషయం గమనిస్తే రచనలో ఆయన వ్యక్తిత్వంతో పాటు భావనాబలాలు స్పష్టంగా కనిపిస్తాయి. ప్రపంచంలోని ఆయా ప్రాంతాలలో వ్యక్తిగతంగా సంచరించిన కారణంగా పరిసరాల వర్ణన సహజ రీతిలో వివరించడం జరిగింది. ఆధ్యాత్మిక భావనలతో తేలియాడుతూ ఒక వైపు, మరొక వైపు చైతన్యవంతమైన సామాజిక స్పృహతో నైతిక విలువలకు ప్రాధాన్యతనిస్తూ కథను ముందుకు తీసుకొనివెళ్ళడం స్పష్టమవుతుంది.

ఆధార గ్రంథాలు

1. కిటికీలు - డా. ఏ.బి. మాసిలామణి
2. క్రైస్తవ వాగ్దేయకారుడు డాక్టర్ ఏ.బి. మాసిలామణి, రచనలు - పరిశీలన
ఆముద్రిత సిద్ధాంత గ్రంథం - డాక్టర్ అనిత మార్గరెట్ నేలటూరి
3. తెలుగు సాహిత్య చరిత్ర - డా. నా. శాస్త్రి
4. తెలుగు సాహిత్య సమీక్ష - డా. జి. నాగయ్య
5. శ్రీపాద సుబ్రహ్మణ్య శాస్త్రి - చిన్న కథలు సమగ్ర సమీక్ష - డా. చామర్తి కనకయ్య

డాక్టర్. అనిత మార్గరెట్ నేలటూరి,

ఎమ్.ఎ., ఎమ్.ఫిల్., పిహెచ్.డి.,

తెలుగు శాఖాధ్యక్షులు

యస్.ఆర్.ఆర్. & సి.వి.ఆర్. ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల (స్వ)

విజయవాడ, ఆంధ్రప్రదేశ్



श्रीगंगानगर जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले गैर-शैक्षिक कार्यों का शिक्षण पर प्रभाव का अध्ययन

लवप्रीत सिंह
(शोधकर्ता)

डॉ. अनिल कुमार
(शोध निर्देशक)

शिक्षक का नाम हमारे मन में आते ही ऐसे व्यक्ति की छवि बनती है, जो विद्यार्थियों को स्कूल में अध्ययन करवाते हैं और ज्ञान रूपी प्रकाश से अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करवाते हैं ताकि छात्र का सर्वांगीण विकास हो सके। लेकिन वास्तव में देखें तो बड़ी संख्या में सरकारी शिक्षक शिक्षण के बजाए गैर शैक्षिक कार्यों में ही व्यस्त रहते हैं। इसी कारण शिक्षक को कक्षा में पढ़ाई जाने वाले विषय के संदर्भ में पाठ योजना व सहायक सामग्री का उपयोग करने हेतु बहुत कम समय मिलता है। कक्षा में शिक्षण कार्य करते समय शिक्षक को कक्षा-कक्ष में गतिविधियां करते हुए रहना चाहिए। शिक्षक यदि पूर्ण तैयारी से होता है तो वह आत्मविश्वास से गुणात्मक रूप से शिक्षण कर सकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षक को एक गहन तैयारी की आवश्यकता होती है। यदि शिक्षक शिक्षा के साथ कुछ गैर शैक्षणिक कार्य करता है तो शिक्षक को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है जोकि कक्षा-कक्ष शिक्षण को हानि पहुंचाता है। गैर शैक्षिक कार्यों की वजह से छात्र शिक्षक के मध्य परस्पर पूर्ण तालमेल नहीं हो पाता तथा शिक्षण कार्य पूर्ण रूपी से प्रभावी नहीं होता, जिससे छात्रों के चहुंमुखी विकास में बाधा आ जाती है।

गैर-शैक्षिक कार्य

गैर शैक्षिक कार्य से तात्पर्य उन कार्यों से है जो शैक्षणिक पाठ्यक्रम पाठ्यसहभागी क्रियाओं के अतिरिक्त सरकार व संगठन द्वारा शिक्षकों को समय-समय पर सौंपे जाते हैं।

विद्यालय में शिक्षकों को शैक्षिक कार्यों के साथ-साथ अन्य गैर शैक्षिक कार्य भी करने पड़ते हैं। इन गैर शैक्षिक कार्यों की वजह से शिक्षकों पर अतिरिक्त भार पड़ता है। इससे शिक्षकों में तनावपूर्ण स्थिति बनी रहती है और न ही उनका शिक्षण कार्य प्रभावशाली बन पाता है। कक्षा व विद्यालय की सफलता अध्यापक के व्यक्तित्व के गुणों, शैक्षिक व्यावसायिक योग्यता व दक्षता पर निर्भर है। उसके व्यक्तित्व की छाप कक्षा-कक्ष व विद्यालय पर नजर आती है। एक शिक्षक तभी प्रभावशाली या अच्छा शिक्षक कहलायेगा जब विद्यार्थी उसका स्वयं सम्मान करने हेतु तत्पर हो। यह सम्मान एक शिक्षक तभी प्राप्त कर सकता है जब उसके व विद्यार्थियों के मध्य परस्पर तालमेल सही हो। शिक्षक विद्यार्थियों को अधिक से अधिक समय दे सके, परंतु गैर शैक्षिक कार्यों की वजह से यह संभव नहीं हो पाता। अध्यापक अन्य कार्यों में ही उलझा रहता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य के दत्त संकलन कार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा अनूपगढ़ व श्रीगंगानगर जिले के सरकारी विद्यालयों के कुल 400 शिक्षकों को शामिल किया गया, जिनमें से 200 अनूपगढ़ जिले के शिक्षक (100पुरुष + 100महिला) तथा 200 श्रीगंगानगर जिले के शिक्षक (100पुरुष + 100महिला) का चयन किया गया।

विधि

इस शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

उपकरण

इस हेतु शोधकर्ता द्वारा उपकरण के रूप में स्वनिर्मित 'गैर शैक्षिक कार्यों का शिक्षण पर प्रभाव मापनी' का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी

शोध कार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया।

शोध के उद्देश्य

1. श्रीगंगानगर जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले गैर-शैक्षिक कार्यों का शिक्षण पर प्रभाव अध्ययन करना।

विश्लेषण

सारणी संख्या-1 (शिक्षक)

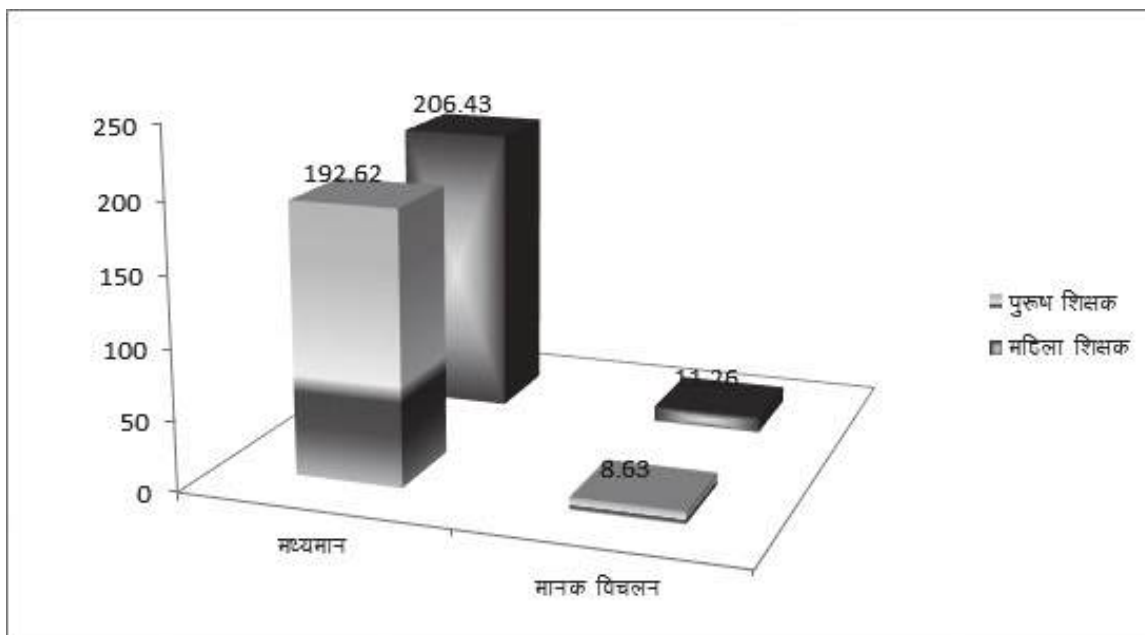
समूह (शिक्षक)	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
पुरुष शिक्षक	100	192.62	8.63	198	9.73	सार्थक
महिला शिक्षक	100	206.43	11.26			

0.01 व 0.05 सार्थकता स्तर

परिणाम एवं व्याख्या

सारणी संख्या 1 के अनुसार श्रीगंगानगर जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले गैर-शैक्षिक कार्यों का शिक्षण पर प्रभाव मध्यमान क्रमशः 192.62 तथा 206.43 है। इन दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमशः 8.63 व 11.26 हैं। अतः दोनों के मध्यमानों के अंतर का टी मूल्य 9.73 है। ये मूल्य 198 स्वतंत्रता की कोटि हेतु 0.05 स्तर पर विश्वास मूल्य 1.97 तथा 0.01 के विश्वास मूल्य 2.60 से अधिक है। अतः दोनों स्तरों पर सार्थक अंतर है।

श्रीगंगानगर जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले गैर-शैक्षिक कार्यों का शिक्षण पर प्रभाव में अंतर प्राप्त हुआ है जैसा कि लेखाचित्र से भी स्पष्ट हो रहा है-



सारणी संख्या-2 (ग्रामीण व शहरी)

समूह (शिक्षक)	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
ग्रामीण शिक्षक	100	202.08	11.82	198	0.70	असार्थक
शहरी शिक्षक	100	200.97	10.46			

परिणाम एवं व्याख्या

सारणी संख्या 2 के अनुसार श्रीगंगानगर जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले गैर-शैक्षिक कार्यों का मध्यमान क्रमशः 202.08 तथा 200.97 है। इन दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमशः 11.82 व 10.46 हैं। अतः दोनों के मध्यमानों के अंतर का टी मूल्य 0.70 है। ये मूल्य 198 स्वतंत्रता की कोटि हेतु 0.05 स्तर पर विश्वास मूल्य 1.97 तथा 0.01 के विश्वास मूल्य 2.60 से कम है। अतः दोनों स्तरों पर सार्थक अंतर नहीं है।

श्रीगंगानगर जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले गैर-शैक्षिक कार्यों का शिक्षण पर प्रभाव में कोई अंतर प्राप्त नहीं हुआ है जैसा कि लेखाचित्र से भी स्पष्ट हो रहा है-

सारांश

अध्ययन के परिणाम से अनूपगढ़ जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले गैर-शैक्षिक कार्यों का शिक्षण पर प्रभाव का अध्ययन पर प्रकाश डालने में मदद मिलेगी। यह शोध सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले गैर-शैक्षिक कार्यों का शिक्षण पर प्रभाव का अध्ययन करने में भी मदद करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Adeymi, B.A. (2020). Teachers Effectiveness and Student's Academic Achievement in Senior secondary School Civic, Osun State Nigeria. *Asian Journal of Social Sciences and Management Studies*. 7(2),99-103
2. Ahmad, Z., Saleem, Z. & Rehman, K. (2020). Impact of Teacher Effectiveness and Student Attitude on Student's Academic Achievement in Science Subject in the Secondary Schools of Dera Ismail Khan (Pakistan). *Global Social Science Review*, V(I), 241-247. doi:10.31703/gssr.2020 (V-I).25
3. Akiri, A.A. (2013). Effects of Teachers Effectiveness on Academic Performance in Public Secondary School; Delta state Nigeria. *Journal of Educational and Social Research*, 3(3), 105-111.
4. Bhatiya, S., & Gautam, G. (2018). A Study of Effectiveness in Teaching among Male and Female Teachers of Higher Secondary School and its Relation with Student's Achievement. *CHETANA*, 3(3), 164-176.
5. Chikendu, R.E. (2022). Teachers Effectiveness And student's Academic Performance in Secondary Schools. *International Journal of Advanced Academic Research*, 8 (2), 90-97.
6. Koralli, B.C. & Hoovinabhavi, B. (2021). Relationship of Teaching Effectiveness in Relation to Academic Achievement of High School Students of Kalaburgi District. *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, 9(9), 681-688.
7. Lin, Y. (2016). Teacher Effectiveness in improving both Academic Achievement and Social –Emotional Skills. Degree of Master of Arts. University of California Riverside.
8. Garrett, H.E. (1984). *Statistics in Psychology & Education*. Kalyani Publishers, New Delhi, pp.399-400.
9. Singh, A.K. (2013). *Research Methods in Psychology Sociology and Education*. Motilal Banarsidas, Delhi, pp 220,232
10. अग्रवाल, जे.सी. (1966), *एज्यूकेशनल रिसर्च इन इंट्रोडक्शन*. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो।
11. अग्रवाल एवं अस्थाना (1980), *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन*, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
12. अग्रवाल, एस. (2012), अनुदानित व गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन, शिक्षा चिंतन, त्रिमूर्ति संस्थान, अक्टूबर-नवम्बर पृष्ठ संख्या 14-22.
13. अग्रवाल, एस. व चंदेल, एन.पी.एस. (2009), अनुदानित व गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का उनके कक्ष्य संतोष पर प्रभाव का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16, अंक 3, दिसम्बर 2009 पृष्ठ संख्या 53-66.
14. अरोड़ा डॉ. रीता, मारवाह डॉ. सुदेश (2004-05), शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार, जयपुर: शिक्षा प्रकाशन।
15. कपिल, एच.के. (1978), *अनुसंधान परिचय*. आगरा, हर प्रसाद भार्गव पब्लिकेशन।
16. कोठारी, डी.एस. (1966), *शिक्षा आयोग शिक्षा मंत्रालय*. नई दिल्ली।
17. गुप्ता एवं शर्मा (2011), 'अध्यापकों की कार्यप्रणाली के तरीकों पर व्यावसायिक दबाव व लिंग के आधार पर अध्ययन', पीएच.डी. स्तरीय अध्ययन।
18. चन्दराई, के. (2010). ओक्यूपेशनल स्ट्रेस इन टीचर्स, नई दिल्ली : ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।
19. चोपड़ा (2001), 'ग्रामीण व शहरी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कार्यभार का तुलनात्मक अध्ययन', पीएच.डी. स्तरीय अनुसंधान।
20. चोपड़ा, अरुणा (2015), 'व्यावसायिक प्रतिबद्धता, कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभाविकता का अध्ययन', पीएच.डी. स्तरीय अनुसंधान।
21. जायसवाल, वी. व गुप्ता, पी. (2011), नियमित शिक्षक-शिक्षिकाओं व शिक्षामित्रों के मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध

- में उनकी प्रभावशीलता का अध्ययन, वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, वाल्यूम-1, नम्बर-1 जून 2011, पृष्ठ सं. 31-42.
22. डॉ. शर्मा, आर. ए (2013), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
 23. दक्षिण एम. (2009), 'विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि पर शिक्षण प्रभावशीलता के प्रभाव का अध्ययन', पीएच. डी. स्तरीय अनुसंधान।
 24. पाण्डे, के.सी. (1983), *एज्यूकेशनल रिसर्च इन इंट्रोडक्शन*. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो।
 25. बार्ग वाल्टर आर. (1965), *एज्यूकेशन रिसर्च इन इंट्रोडक्शन*, नई दिल्ली, डेविड सिक्की कम्पनी, नई दिल्ली।
 26. बेलागाली, एच.बी. (2011), 'माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की प्रबन्ध के प्रकार तथा शिक्षण अनुभव के सम्बन्ध में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन', पीएच.डी. स्तरीय अनुसंधान।
 27. भटनागर, सुरेश (1996), विवेचनात्मक अध्ययन, कोठारी कमीशन, एज्यूकेशन कमीशन, आर. लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेंट इन्टर कॉलेज, मेरठ।
 28. भटनागर, सुरेश, सक्सेना अनामिका (1997), विवेचनात्मक अध्ययन, कोठारी कमीशन, एज्यूकेशन कमीशन, आर. लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेंट इन्टर कॉलेज, मेरठ।
 29. भटनागर, सुरेश- शिक्षा मनोविज्ञान, (दशम संस्करण) मेरठ, आरलाल बुक डिपो।
 30. भटनागर, ए. बी. एवं मीनाक्षी (2002), शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान, मेरठ : एच. पी. भार्गव बुक हाउस।
 31. भार्गव, डॉ. महेश (1985), आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, आगरा : भार्गव बुक हाउस, राजा मण्डी।
 32. मेस्लो, ए. एच. (1970), अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व (द्वितीय संस्करण)। न्यूयार्क, हार्पर एवं रॉ।
 33. रूहेला, एस. (1970), *सामाजिक सर्वेक्षण व अनुसंधान के मूल तत्व*, दिल्ली, विकास पब्लिकेशन।
 34. वर्मा, डॉ. रामपाल सिंह (2004), अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
 35. सिद्धु, के.सी. (1985), *मैथडोलॉजी ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन*, एटलिंग पब्लिशर्स।
 36. सिन्हा, एच.पी. (1929), *शैक्षिक अनुसंधान*. नई दिल्ली, विकास पब्लिकेशन हाऊस प्रा. लिमिटेड।
 37. शिक्षा चिन्तन (2008), शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिका, त्रिमूर्ति संस्थान, नई दिल्ली; वर्ष 15, अंक 3, पृ. सं. 81-88.
 38. त्रिवेदी, आर. एन. एवं शुक्ला, डी. पी. (2000), *रिसर्च मेथेडोलॉजी*, जयपुर : कॉलेज बुक हाउस।

Webliography:-

1. www.rspb.org.uk/webcams/projects
2. www.bbc.co.uk/schools/scienceclips/
3. www.ase.org.uk
4. www.elsevier.com/
5. www.shodhganga.net
6. www.usq.edu.au/users/albino/papers/site99/1345.html
7. <http://www.nict.com/rajasthan-project.html>



भगवान दास मोरवाल के साहित्य में लोक संस्कृति

सुषमा

शोधार्थी

ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार

डॉ. संजय कुमार

निर्देशक

(सह-आचार्य) ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार

23 जनवरी 1960 को मेवात के नगीना नामक कस्बे में जन्मे भगवान दास मोरवाल हिंदी कथा साहित्य एक सुप्रसिद्ध कथाकार एवं उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध है। गांव- देहात से संबंध रखने के कारण भगवान दास मोरवाल के साहित्य पर उसकी छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उन्होंने अपने साहित्य में चाहे वह कहानी हो या उपन्यास हो अपने लोक संस्कृति, बोल-चाल, भाषा, रीति-रिवाज, वैवाहिक रस्में, तौर-तरीकें, धार्मिक विश्वास, अंधविश्वास, कर्मकांड, आदि को बड़ी सुंदरता के साथ उकेरा है। अपने कथा साहित्य में भगवान दास मोरवाल जी ने सांस्कृतिक धरोहर को संभालने के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए लोक सांस्कृतिक को संरक्षित करने का कार्य किया है। भगवान दास मोरवाल ने कभी भी अपनी आंचलिकता को नहीं छोड़ा। इसी ग्रामीण परिवेश के अंचल का दामन पड़कर उन्होंने साहित्य जगत में ख्याति प्राप्त की।

लोक संस्कृति के विभिन्न आयाम

लोक संस्कृति से तात्पर्य है- देहाती समाज के जन-जीवन, रीति-रिवाज, त्यौहार, शादी-विवाह की रस्में, लोक कथाएं, लोकगीत से है। भगवान दास मोरवाल जी के कथा साहित्य में लोक संस्कृति के इन्हीं बिन्दुओं पर नजर डालते हैं—

1. रीति रिवाज

भगवान दास मोरवाल के साहित्य में मेवात क्षेत्र की हिंदू एवं मेव रीति-रिवाज का मिला-जुला स्वरूप देखने को मिलता है। न केवल वेशभूषा, भाषा, दिनचर्या आदि बल्कि जीवन के अन्य रस्म- रिवाजों में भी यहां तक कि मुस्लिम मेवों के निकाह में हिंदुओं की तरह चाक पूजने का रिवाज आज भी कायम है। निकाह पढ़ने तथा फेरों को छोड़कर लगभग सारी प्रथाएं दोनों समाज में एक जैसी है। मेवात या फिर यह भी कह सकते हैं कि हरियाणा को छोड़कर चाक पूजने की रस्म एक प्रचलित रस्म है। इसमें कुम्हार चाक पर मिट्टी के बर्तनों को बनाता है। किसी भी उत्सव शुरुआत चाक पूजन करने के बाद की जाती है। चाक पूजने की रस्म को पूरे उत्साह के साथ पूरा किया जाता है। “चाक पूजने के लिए सिर्फ बड़ी- बूढ़ी, प्रौढ़, और नवोद्गाएं ही नहीं आती बल्कि उनसे कहीं ज्यादा बच्चों की वह वानर सेना आती है, जिसने निपटना कोई आसान काम नहीं है।”¹ इसके अतिरिक्त बकरा करने की प्रथा, दिवाली के दिये लेने की प्रथा भी एक उदाहरण है। मेवात क्षेत्र में हिंदुओं तथा मेवों के बीच अंतर बहुत ही महीन होता है। दूसरे लोगों को यह अंतर दिखाई नहीं पड़ता। देखने पर हिंदू एवं मुस्लिम दोनों के रीति- रिवाज एक जैसे लगते हैं। बाबल तेरे देस में पारो को देखकर गफोंदी यह अनुमान लगा लेती है कि पारो मेवाणी नहीं है। “पर रईसन का बाप, हमारा मुसलमानन में गोदनी की रिवाज कहां है।”²

इसी प्रकार कंजर समुदाय में भी माथा ढकाई की एक प्रचलित प्रथा है। यह प्रथा कंजर समुदाय में युवावस्था में पहुंचने पर लड़की पर की जाती है। इस प्रथा के बाद लड़की अपना व्यावसायिक जीवन शुरू कर देती है। इस तरह यह एक ऐसी

परंपरा है जिसके द्वारा खिलावड़ी क्रिया व्यापार को एक सामाजिक वैधता प्रदान करने का प्रयास करती है। माथा ढकाई के अवसर पर कंजर समुदाय में एक पूरे समारोह का आयोजन किया जाता है। इस समारोह में इज्जतदार घरों से लोगों को बुलाया जाता है। सामाजिक दृष्टि से प्रतिष्ठित लोग तथा ऊंचे पदों पर आसीन अफसर लोगों को इस अवसर पर आमंत्रित किया जाता है। माथा ढकाई रस्म का वर्णन करते हुए कमला बुआ कहती है कि—“वैद्य जी, हमारे यहां जो इज्जतदार माथा ढकाई करता है, उम्र भर उसका जमाई की तरह मान किया जाता है। एक ब्याहता मर्द की तरह अपनी खिलावड़ी के पास आने जाने की पूरी छूट होती है। उससे कभी पैसे नहीं लिए जाते बल्कि जमाई की तरह पूरी नेक-दस्तूर के साथ उसकी विदाई की जाती है। वैसे भी बैदजी, माथा ढकाई जिंदगी में एक दफे ही होती है। ये समझ ले इस बहाने जमाई के चाव चोंचले पूरे हो जाते हैं।”³

2. लोक कथाएं

मेवात क्षेत्र में लोक-कथाओं का प्रचलन भी खूब है। काला पहाड़ उपन्यास में सलेमी में अपने बूढ़े बाप द्वारा सुनाई गई कहानियों को आज भी याद करता है। जिसमें थिनगढ़ में यदुवंशी राजा थिनपाल की दो संतानों में लखनपाल की दो संतानों में से सांमरपाल की बहादुरी से बादशाह फिरोज शाह बहुत प्रसन्न हुए। उसकी बहादुरी को देखते हुए बादशाह ने उसका नाम नाहरनखां रख दिया। इसके अलावा मेवात में ‘पंडून का कड़ा’ नमक महाकाव्य की रचना की। इस कथा को भी बड़े ही पारंपरिक तरीके से गया जाता है। इस महाकाव्य का एक किस्सा है कि—“कहा जाता है कि सादल्ला के गांव आकेड़ा के एक मेव चौधरी साँवला द्वारा कुआं खुदवाने का कार्य शुरू किया गया। खुदाई के दौरान उसमें कुछ तांबे के पत्तर मिले, जिन पर कुछ लिखा हुआ था। साँवला मेव ने ये पत्तर सादल्ला को सौंप दिए। सादल्ला ने इस इन पत्तों का अध्ययन किया और पाया कि इन पत्तों में पांडवों का जीवन-परिचय लिखा हुआ है। इस आधार पर सादल्ला ने पंडून का कड़ा की रचना प्रारंभ की, जिस उसने 1695 में पूरा किया।”⁴

बाबल तेरे देस में मजीदन, दादी जैतूनी को चंद्रावल का किस्सा सुनाती है। पूरी हवेली की औरतें चंद्रावल का किस्सा बड़ी ही उत्सुकता के साथ सुनती हैं। लोक कथा में बाल श्री कृष्ण द्वारा बाल सखा के साथ क्रीड़ाओं का वर्णन किया गया है। इसके अलावा सुर बंजारन में गिरिजा प्रसाद रामबाबू लाल के अफवाह और किस्सों के बारे में बताते हैं। वही थानेदार एस.एस मलिक रैदास के बारे में बताते हुए हवलदार नैनपाल कहते हैं कि—“आप रैदास नाम तो जरूर सुना होगा.... वही रैदास जनाब जिसने कहा है कि मन चंगा तो कटौती में गंगा। इसी रैदास ने जिसने चमार के घर अपने गुरु के शाप से जन्म पाकर, अपने पुनर्जन्म में अपनी भक्ति भाव से अपने जीवन को कृति कृत्य किया, और गुरु से भी ज्यादा दुनिया में नाम रोशन किया।”⁵

3. लोकगीत

किसी भी संस्कृति में वहां के लोकगीत संस्कृति के परियाचक होते हैं। लोकगीतों की अपनी एक लय-ताल होती है। यह लोकगीत ग्रामीण लोगों में मनोरंजन के लिए उनके द्वारा अनुभव किए गए जीवन की अभिव्यक्ति होते हैं। वह इन गीतों के द्वारा अपने तीज-त्योहार का, जीवन-मृत्यु, विवाह, पूजा-पाठ आदि अवसरों पर अपने मनोभावों को व्यक्त करते हैं। काला पहाड़ में सलेमी अपने बेटे की हरकतों से तंग आकर निराश होकर गीत गाता है।

“माता! पुत्र ऐसो जनमियो, जो जग को मांझी होए
ऐसा मत जनमियो, जासू तेरो जोबन रूढो होए
मलियागर की महक सू, जाने कितना चंदन हो जाए रूख
एक पूत सपूत सू, समंदर तीरे जहाज
हो जाए एक कपूतर कूख में, सारा जाए कुटम की लाज।”⁶

‘बाबल तेरे देस में’ दादी जैतूनी बत्तो से गीत गाने के लिए कहती है। तब बत्तो गाना शुरू करती है—

दमड़ी का चार अनार कर लाई रेऽऽऽ

देख बलम मेरी चतुराई।

दौड़ी तो दौड़ी मैं गई कुम्हार के

आपकू मटका खसम कू कुल्लड़

छोरा कू भोबला दिवा लाई रेऽऽऽ

देख बलम मेरी चतुराई...”⁷

जब मनीराम को पुत्र- रत्न की प्राप्ति होती है। तब दादा खानू की मजार पर गलेप चढ़ाते हैं। गलेफ चढ़ाने निकाला महिलाओं का हुजूम लोकगीत गाती है—

“पपलिया झकझाल री

जहाँ सय्यद को थान

अम्मां तेरी ढो रई ब्यार

घेर लई ही सब गवड़ी

घेरो मोहन ग्वाल

सय्यद सोई सांझ के

कौन जगावन जाए?

औधे तो धरे बिलोवणा

फिर- फिर जाएं छछियार

सय्यद बडे औलिया...”⁸

इसी प्रकार बनवारे का गीत है—

“घौले-घौले चावल, उजलो है भात

उजली बत्तीसी बनवारो नोतो

मैं तोहे बूझूं मेरे सुघड़ बनड़ा, मेरे चतर बनड़ा

तेरो बनवारो री किन्ने नोतो

दादा मेरो राजा, दादी रानी होए

मेरो बनवारो री, उन्ने नोतो

ताऊ मेरो राजा ताई रानी होए

मेरा बनवारो री, उन्ने नोतो

घौले-घौले चावल....।”⁹

बन्ना का गीत

“बनड़ा ले-ले कलम- दवात, चलो जा पढ़णा कू,

इस्लामी मदरसो पास, चलो जा पढ़णा कू।

बनड़ा मैं जाणू बाब गयो, तेरी माई पे अजब बहार

चलो जा पढ़णा कू, बनड़ा ले- ले कलम दावत....

बनड़ा मैं जाणू काका गयो, तेरी काकी पे अजब बहार

चलो जा पढ़णा कू, इस्लामी मदरसा पास...

बनड़ा मैं जाणू मेरा भाई गयो, तेरी भावज पे अजब बहार
चलो जा पढ़णा जा इसलामी मदरसा पास...।”¹⁰

भात का गीत

“भाई अच्छो भरियो भात बहाण टोटा में,
थाली में डेढ़ हजार, मोहर लोटा में
मैं हंसली कठला पहर खड़ी कोठा में
भाई अच्छों भरियो भात बहाण टोटा मे भरि।”¹¹

हलाला में डमरू के द्वारा गाए जाने वाला गीत

“उठ गयी प्रीत- परीत, टूट गया नाता- रस्ता
माया-मोह कित गया, पड़ा भाईन भाईन भंता
मतलब की संसार है, मतलब की संसार
माया की सब दोस्ती, नहीं अच्छी दूढ़े नार
कलजुग आयो बुरो जमानो।”¹²

उपन्यास सुर बंजारन में रागिनी द्वारा गाए जाने वाला लोकगीत

“घायल हिरनिया मैं बन- बन डोलूँ
किसका लगा बाण मुख से ना बोलूँ
मुड़के जो देखूं तो बचपन बुलाये
पलकों में लेकिन कोई मुसकुराये
जी को दिखाऊं कि जी संग हो लूँ
घायल हिरनिया मैं बन-बन डोलूँ।”¹³

‘नरक मसीहा’ में सत्याग्रहों द्वारा गया जाने वाला लोकगीत

“कोन चिरइया मोर सुख सोवय दिदिया,
कोन चिरइया जागत रात।
मोर सुवना कोन चिरइया जागया रात।।
भरहीं चिरइया सुख सोवे निदिया ओ सुवना,
बकुला जगाय सारी रात, मोर सुवना....।”¹⁴

4. तीज-त्योहार

लोक संस्कृति की झलक यहां के तीज-त्योहारों में मिलती है। भगवान दास मोरवाल जी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से विभिन्न समाजों में मनाए जाने वाले त्योहारों का वर्णन किया है। ‘काला पहाड़’ में सलेमी द्वारा तीज के समय में की जाने वाली पतंगबाजी को याद करते हुए उन बीते हुए पलों को जैसे उसके सामने जीवंत कर दिया हो। पतंगोत्सव के बारे में वह सोचता है—“वह कैसे भूल है तीज पर कूड़ ऊपर जमा उस भीड़ को जिसकी आंखें पश्चिम कि ओर दूर आकाश में गोता लगाती उस पतंग पर टिकी होती हैं, जिसकी डोर मंगतू की खून से सनी उंगलियों के पोरों को ज़िबह करती हुई, पूरी गति के साथ

दूसरी पतंग की डोर को रेत रही होती।”¹⁵

कहानी ‘सिला हुआ आदमी’ में दीपावली पर्व का वर्णन करते हुए लेखक लिखते हैं—“बाजार, गली, मोहल्ला हर जगह दिवाली का उन्माद छाया हुआ था। शाम होते ही पास-पड़ोस की छतों, खिड़कियों पर दिए टिमटिमाने शुरू हो गए। अजीब वातावरण था। थोड़ी देर के लिए मैं भी उसे वातावरण में घुल गया।”¹⁶ इसी प्रकार ‘बाबल तेरे देस में’ हवेली में बनाए जाने वाले उत्सव का वर्णन करते हुए लेखक लिखते हैं कि—“बीच चौक में खड़े विशाल वृद्ध नीम की मजबूत भुजाओं पर बरही डालकर आमने-सामने दो झूले डाल दिए गए। इन्हीं के लिए बेहद ही गंभीरता के साथ मंत्रणा चल रही है। आपस में धक्कम-धक्का, धींगा-मुश्ती, शिकवा-शिकायत, मारा-मारी मचर ही है बहुओं में। जब-जब कोई बहू चिरौर करती हुई दादी जैतूनी को अपने ढंग से प्रभावित करने की कोशिश करती, तो उसे लगता है जैसे पुराने दरख्त की भुजा को कोमल लता सहला रही है।”¹⁷

5. भाषा

यह अक्षर देखा जाता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी मातृभाषा में ही अपनी भावनाओं को सहजता के साथ व्यक्त कर सकता है। भावनाओं की अभिव्यक्ति मातृभाषा में ही होती है। हम जब अत्यधिक खुश या दुखी होते हैं, उन भावनाओं को हम सहजता पूर्ण अपनी मातृभाषा में ही प्रकट कर सकते हैं। भगवान दास मोरवाल ने मेवात क्षेत्र की देहाती भाषा का प्रयोग किया है। मेवात क्षेत्र में खांटी मेवाती भाषा बोली जाती है। लेखक ने मेवाती भाषा की सूक्ष्मता का वर्णन काला पहाड़, बाबल तेरे देस में जैसे उपन्यासों में किया है। बाबुल तेरे देस में दादी जैतूनी द्वारा खांटी मेवाती भाषा का प्रयोग करती है—“करे कहा! रांड अब तू अपना रंडापा ए कोस। तोसू कितनी बार कही ही के याके नकेल घाल-घूलके अलग हट, पर तैने सुनी होए जब न.... अब भुगत।”¹⁸

भगवान दास मोरवाल जी ने लोक संस्कृति को और लोक जीवन को प्रस्तुत करने वाली मेवाती बोली का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। यहां के लोग स्थानीय बोली बोलते हैं। उनके उपन्यास की अधिकतर पात्र अनपढ़ हैं, जो आपस में लोक भाषा का ही प्रयोग करते हैं। स्थानीय बोली का उदाहरण देते हुए मोरवाल जी लिखते हैं कि—“कुछ समझ में ना आ रही है रोबाडा..... पूरा इलाका में तो यही बात उड़ी पड़ी है कि प्रधानमंत्री हमारी पिलसण ए बढ़ाण की बात कहेगो३३पर ई एमेले तो और ही रामाण ए लेके बैठ गो....। अरे ई खुद तो हमारी बात सुने ना है, और आज जब ई परधानमंत्री आयो है तो वाके आगे पतोई ना कहा गपड़-गपड़ कर रो है३३ कहीं हमन्ने डूबेणा के चक्कर में तो ना है.....। मनीराम ने झुंझलाते हुए कहा।”¹⁹ इसके साथ-साथ लेखक ने मेवात क्षेत्र से सटे अन्य राज्यों में बोली जाने वाली बोलियों का प्रयोग भी अपने साहित्य में किया है। हिंदी में प्रचलित अपभ्रंश शब्दों का प्रयोग भी करते हैं। जैसे “...हां उई उकील.... साब, आज जयपुर सू कार में आ रो हो.... पीछू सू कोलज के पै एक ट्रक ने ऐसी टक्कर मारी के उकील साब की सारी कार वाके नीचे दुच गी.....गफूर ने सिर्फ इतना ही कहा। आगे कुछ कहने की गुंजाइश थी भी नहीं।”²⁰ रेत उपन्यास में भगवान दास मोरवाल परिनिष्ठित हिंदी भाषा का प्रयोग किया है। इसकी अधिकतर पात्र हिंदी में बातें करते हैं, परंतु कहीं-कहीं बातचीत के दौरान पात्रों के द्वारा अनजाने में लोक शब्दावली का प्रयोग किया गया है। रेत उपन्यास में जैसे एक जगह पर कमला बुआ वेद जी से कहती है—“बोलना पड़े हैं वेदजी। इस धंधे में जितनी ज्यादा की मत्था ढकाई बताओगे, उतनी ज्यादा तादाद में इज्जतदार आएंगे। यह कोई बम्बै-गोआ तो है नहीं, जहां थैली भर भर के रकम मिलती है। गाजूकी है। यहां तो इत्ते भी मिल जाए बहुत है।”²¹

संदर्भ सूची

1. काला पहाड़, पृष्ठ- 363
2. बाबल तेरे देस में, पृष्ठ- 21

3. रेत, पृष्ठ 27
4. काला पहाड़, पृष्ठ- 132
5. सुर बंजारन, पृष्ठ- 238- 39
6. काला पहाड़, पृष्ठ- 60
7. बाबल तेरे देस में, पृष्ठ- 183
8. काला पहाड़, पृष्ठ- 56,57
9. काला पहाड़, पृष्ठ- 112
10. काला पहाड़, पृष्ठ- 113
11. काला पहाड़, पृष्ठ -120
12. हलाला, पृष्ठ- 28
13. सुर बंजारन, पृष्ठ- 30
14. नरक मसीहा, पृष्ठ- 166
15. काला पहाड़, पृष्ठ- 32
16. सिला हुआ आदमी, पृष्ठ- 82
17. बाबल तेरे देस में, पृष्ठ- 162
18. बाबल तेरे देस में, पृष्ठ- 12
19. काला पहाड़, पृष्ठ- 17
20. काला पहाड़, पृष्ठ- 26
21. रेत, पृष्ठ- 63



हिन्दी साहित्य में ए आई के नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थ

Dr. Moula

Krupanidhi College of Commerce And Management

Koramangala Bangalore -34

Email ID -moulaa794@gmail.com

Ph: +91 90361 62126

1. परिचय

ए आई का संक्षिप्त परिचय

ए आई, या कृत्रिम बुद्धिमत्ता, एक ऐसा तकनीकी विकास है जिसने मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। इसका अभिप्राय ऐसे कंप्यूटर सिस्टमों या मशीनों से है, जिन्हें मानव बुद्धिमत्ता का अनुकरण करने के लिए डिजाइन किया गया है। ए आई का उपयोग चिकित्सा, शिक्षा, वित्त, और विज्ञान सहित अनेक क्षेत्रों में हो रहा है, जहां यह निर्णय लेने की प्रक्रिया, डेटा विश्लेषण, और उपयोगकर्ता अनुभव को बेहतर बनाने में सहायक होता है। हिन्दी साहित्य में ए आई के नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थों का विश्लेषण करते समय यह देखना आवश्यक है कि कैसे यह तकनीक साहित्यिक अभिव्यक्ति, रचनात्मकता, और कलात्मकता को प्रभावित कर रही है। विशेष रूप से, ए आई के माध्यम से उत्पन्न सामग्री की वैधता, रचनाकार के अधिकार, और सांस्कृतिक मूल्यों पर इसके प्रभाव जैसे मुद्दे उभरते हैं। यहां यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि ए आई न केवल एक उपकरण है, बल्कि यह मानव समाज के नैतिक संदर्भों और सांस्कृतिक परंपराओं को भी चुनौती देता है, जिससे नई रूपरेखाओं और विचारों का उदय होता है। इसके अंतर्गत साहित्यिक आलोचना के नए दृष्टिकोणों का निर्माण होता है, जो ए आई के प्रभाव को समझने में सहायक होते हैं (शर्मा, 2022)।

हिन्दी साहित्य में ए आई का उभरा प्रभाव

हिन्दी साहित्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए आई) का उभरा प्रभाव एक महत्वपूर्ण शोध विषय है, जहाँ इसे नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थों के संदर्भ में समझा जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों में, ए आई ने साहित्यिक उत्पादन, आलोचना और पाठक-वार्तालाप के विभिन्न आयामों में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए हैं। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) तकनीकों का उपयोग करते हुए, कई लेखक अब अपनी रचनाओं में ए आई की मदद से नई शैलियों और विमर्शों का योगदान दे रहे हैं, जिससे साहित्य में नवीनता और विविधता का संचार हो रहा है (पांडे, 2022)। इसके अतिरिक्त, ए आई साहित्यिक विश्लेषण में भी सहायक सिद्ध हो रहा है, जहां यह बड़े डेटा सेट का उपयोग करके पाठों की गहनता, संबंध और संदर्भ को समझने में मदद करता है (शर्मा, 2023)। हालाँकि, इससे संबंधित नैतिक प्रश्न भी उभरते हैं, जैसे कि लेखकों का अधिकार, रचनात्मकता की प्रकृति और मशीन द्वारा उत्पन्न साहित्य की प्रामाणिकता (कुमार, 2021)। इसलिए, यह आवश्यक है कि हम ए आई के हस्तक्षेप को न केवल तकनीकी दृष्टिकोण से समझें, बल्कि इसके समाज में उत्पन्न प्रभावों का भी गहराई से

विश्लेषण करें, ताकि हम एक संतुलित दृष्टिकोण विकसित कर सकें जो कि नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को समाहित करे।

2. नैतिक निहितार्थ

तकनीकी नैतिकता : ए आई का विकास और सांस्कृतिक मूल्य

तकनीकी नैतिकता के संदर्भ में, एआई का विकास और सांस्कृतिक मूल्य अत्यंत महत्वपूर्ण और ध्यान आकर्षित करने वाला विषय है। जैसे-जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) प्रणाली का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा है, यह आवश्यक हो जाता है कि हम इसके नैतिक और सांस्कृतिक प्रभावों पर विचार करें। विशेष रूप से हिन्दी साहित्य में, एआई के इस विकास के निहितार्थ गहराई से अध्ययन किए जाने चाहिए। एआई प्रणालियों की रचनात्मकता, निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक व्यवहार को समझना आवश्यक है, क्योंकि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर को प्रभावित कर सकता है (गुप्ता, 2022)। साहित्यकारों और आलोचकों को चाहिए कि वे एआई के उद्भव को न केवल तकनीकी नजरिये से देखें, बल्कि इसके सामाजिक, सांस्कृतिक, और नैतिक पहलुओं पर भी ध्यान दें। इस विषय पर अध्ययन करते समय, यह महत्वपूर्ण है कि हम यह समझें कि एआई समाज के मूल्य, नैतिकताएं और मानवीय अनुभवों को किस प्रकार आकार दे सकता है (शर्मा, 2023)। इससे न केवल साहित्य की रचनात्मकता में परिवर्तन होगा, बल्कि यह भी तय करेगा कि हम भविष्य में एआई से किस प्रकार जुड़ना चाहते हैं। इसलिए, एआई के विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाना अत्यंत आवश्यक है ताकि हम एक नैतिक रूप से स्थायी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध समाज का निर्माण कर सकें।

नैतिक निर्णय लेने में ए आई की भूमिका

एआई की नैतिक निर्णय लेने में भूमिका हिंदी साहित्य के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें आधुनिक तकनीक और मानव मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता महसूस होती है। जब हम एआई को नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करते हैं, तो हमें यह समझना होगा कि एआई प्रणाली साक्षरता, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और नैतिकता जैसे जटिल पहलुओं को अपने एल्गोरिदम के माध्यम से कैसे समाहित करती है। उदाहरण के लिए, एआई द्वारा निर्मित साहित्यिक सामग्री या नैतिक दुविधाओं पर विचार करते समय, हमें यह देखना चाहिए कि ये प्रणाली किस प्रकार से मानव भावनाओं, सांस्कृतिक मानसिकता और नैतिक मानदंडों का सम्मान करती हैं (जैसे कि डॉक्टर, 2021)। एआई नैतिकता के सिद्धांतों को लागू करने में चुनौतियों का सामना करती है, जैसे कि पूर्वाग्रह रहित निर्णय लेने या सांस्कृतिक विविधताओं का उचित प्रतिनिधित्व करने में, लेकिन सही दिशा में की गई प्रगति मानवता और संस्कृति के लिए सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। इसलिए, हिंदी साहित्य में एआई के नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थों की गहरी समझ हमें Technology और मानवता के बीच एक सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित करने की दिशा में अग्रसर कर सकती है। इस संदर्भ में, हमें यह भी देखना आवश्यक है कि किस प्रकार एआई नैतिक निर्णयों के संदर्भ में साहित्यिक मूल्यांकन और आलोचना को प्रभावित कर रहा है (शर्मा, 2022)। इन पहलुओं पर अधिक शोध करने से हमें एआई के जरिए साहित्य में नैतिकता और संस्कृति के समन्वय की समग्र समझ विकसित करने में मदद मिलेगी।

मानवता और ए आई के बीच रिश्ते का विश्लेषण

मानवता और एआई के बीच रिश्ते का विश्लेषण एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, विशेषकर आज के डिजिटल युग में जब तकनीकी प्रगति दिन-ब-दिन तेजी से बढ़ रही है। हिन्दी साहित्य में एआई के नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थों की चर्चा करते समय यह आवश्यक है कि हम समझें कि एआई केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं है, बल्कि यह मानवीय अनुभवों, संवेदनाओं और मूल्यांशकों को भी प्रभावित करता है। एआई के माध्यम से साहित्य में नई रचनात्मक संभावनाएँ उत्पन्न

हो रही हैं, परंतु इसके साथ ही इस तकनीक के उपयोग में नैतिक दुविधाएँ भी उठती हैं, जैसे कि डेटा गोपनीयता, स्वायत्तता, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के निर्णयों में पूर्वाग्रह का समावेश। जैसे कि शर्मा (2021) ने अपने शोधपत्र में उल्लेख किया है कि 'एआई मानवता के सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित करता है, जिससे नई सांस्कृतिक धारणाएँ और नैतिक प्रश्न उभरते हैं।' इस संदर्भ में, हिन्दी साहित्य में एआई का स्थान, समकालीन मुद्दों और सांस्कृतिक परिवर्तनों का गहन विश्लेषण करने के लिए एक उत्कृष्ट माध्यम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि एआई विकास के साथ-साथ मानवता की मूलभूत नैतिकता और सांस्कृतिक पहचान पर भी गहरा प्रभाव डाल रहा है (रविचंद्रन, 2022)। इस प्रकार, इसके अध्ययन से हमें मानवता और एआई के बीच के जटिल रिश्ते को समझने में सहायता मिलती है, जो साहित्य, समाज और प्रौद्योगिकी के अंतर्सम्बन्धों को बेहतर तरीके से उजागर करता है।

3. सांस्कृतिक निहितार्थ

ए आई द्वारा सांस्कृतिक धरोहर की संरक्षण

एआई द्वारा सांस्कृतिक धरोहर की संरक्षण एक महत्वपूर्ण विषय है, जो हिन्दी साहित्य में एआई के नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थ का अध्ययन करने हेतु अनुसंधान पत्र के लिए उपयुक्त है। सांस्कृतिक धरोहर, जो किसी भी समाज की पहचान और इतिहास को दर्शाती है, उसे संजोने और संरक्षित करने में एआई की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है। एआई तकनीकें, जैसे मशीन लर्निंग और डेटा एनालिटिक्स, संग्रहित सांस्कृतिक डेटा का विश्लेषण कर सकती हैं तथा उन्हें पुनर्स्थापित करने में मदद प्रदान कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, यह तकनीक पारंपरिक साहित्यिक कार्यों, लोक कथाओं, और अन्य सांस्कृतिक तत्वों को डिजिटल प्रारूप में संरक्षित करने में सहायक हो सकती है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए उनकी उपलब्धता सुनिश्चित होती है। उदाहरण के लिए, एआई आधारित उपकरणों का उपयोग गुमशुदा ग्रंथों और पांडुलिपियों की पहचान और पुनर्प्राप्ति में किया जा सकता है (Sharma, 2021)। हालांकि, इस प्रक्रिया में एआई के नैतिक निहितार्थों पर विचार करना जरूरी है, जैसे कि सांस्कृतिक संवेदनशीलता, बौद्धिक संपदा के अधिकार, और डिजिटल विभाजन। ये कारक एआई के उपयोग को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं या उसके दुरुपयोग का कारण बन सकते हैं, इसलिए इस विषय पर विस्तृत विचार करना आवश्यक है। इस संदर्भ में, विभिन्न अनुसंधान कार्यों और विद्वानों की राय महत्वपूर्ण सिद्ध होती है, जैसे कि जितेंद्र सिंह की अध्ययन (Singh, 2022) जो एआई के उपयोग से सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के संभावनाओं का विस्तृत विवेचन करते हैं।

भाषा और साहित्य में ए आई का योगदान

भाषा और साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का योगदान तेजी से महत्वपूर्ण होता जा रहा है, विशेषकर हिन्दी साहित्य में इसके नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थों के संदर्भ में। एआई द्वारा विकसित उपकरण और तकनीकें न केवल लेखन प्रक्रिया को सरल बनाती हैं, बल्कि वे साहित्यिक रचनाओं के विश्लेषण और अनुसंधान में भी सहायक सिद्ध हो रही हैं। उदाहरण के लिए, मशीन लर्निंग और नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) के माध्यम से, एआई साहित्यिक पाठों के भीतर गहरे अर्थ और असामान्य पैटर्न की पहचान कर सकता है, जिससे शोधकर्ताओं को नए दृष्टिकोण प्राप्त होते हैं (शर्मा, 2022)। इसके अतिरिक्त, एआई की मदद से अनुवाद की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, जिससे हिन्दी साहित्य के वैश्विक प्रचार-प्रसार में सहारा मिला है। हालांकि, इस तकनीक के नैतिक पहलुओं पर भी चर्चा आवश्यक है, जैसे कि रचनात्मकता और सृजनात्मकता की अवधारणा पर एआई के प्रभाव, जिससे विचार-विमर्श में एक नया आयाम जुड़ता है (कुमार, 2023)। इसके अलावा, एआई द्वारा निर्मित साहित्यिक सामग्री के मूल्यांकन और पहचान की समस्या भी उठती है, जो साहित्य की मौलिकता और मानव रचनात्मकता को प्रश्न के घेरे में लाती है। इस प्रकार, एआई का हिन्दी साहित्य में योगदान न केवल तकनीकी है, बल्कि इसके नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थों का अध्ययन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

हिन्दी साहित्य में ए आई की सीमाएँ और संभावनाएँ

हिन्दी साहित्य में ए.आई. की सीमाएँ और संभावनाएँ पर विचार करने से पहले यह समझना आवश्यक है कि ए.आई. का साहित्यिक अनुप्रयोग किस प्रकार नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थ उत्पन्न करता है। ए.आई. की तकनीकों के माध्यम से हिंदी साहित्य के क्षेत्र में न केवल नई रचनाएँ उत्पन्न की जा सकती हैं, बल्कि मौजूदा साहित्य का विश्लेषण एवं पुनर्मूल्यांकन भी संभव है। उदाहरण के लिए, मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग कर साहित्यिक प्रवृत्तियों का पता लगाना और पाठ की संरचना पर गहन अध्ययन करने की संभावनाएँ हैं (त्रिवेदी, 2020)। हालाँकि, ए.आई. की सीमाएँ भी महत्वपूर्ण हैं। एक तो, ए.आई. की उत्पादन क्षमता सीमित होती है जब बात मानव अनुभव और संवेदनाओं की आती है, यही कारण है कि साहित्य में गहराई और सांस्कृतिक धारणाएँ जिन्हें केवल मानव अनुभव से समझा जा सकता है—ए.आई. से उत्पन्न नहीं की जा सकती। इसके अलावा, तकनीकी दुरुपयोग, जैसे साहित्यिक चोरी और उत्प्रेरक मानवीय दृष्टिकोण को खत्म करना, भी एक प्रमुख चिंता का विषय है (सिंह, 2021)। इसलिए, ए.आई. के उपयोग में न केवल एक तकनीकी दृष्टिकोण से बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी संतुलन बनाना आवश्यक है, ताकि हमारे साहित्यिक परंपराओं की रक्षा हो सके और उन्हें एक नई दिशा में आगे बढ़ाया जा सके।

4. समाज में प्रभाव

भारतीय समाज पर ए आई के प्रभाव

भारतीय समाज पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए आई) के प्रभाव का अध्ययन करते समय यह समझना आवश्यक है कि यह तकनीकी प्रगति किस प्रकार से न केवल आर्थिक विकास के संदर्भ में बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी व्यापक प्रभाव डाल रही है। ए आई का प्रयोग स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और परिवहन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में हो रहा है, जिससे उत्पादन प्रक्रिया में सुधार और मानव श्रम की दक्षता में वृद्धि देखी जा रही है (शर्मा, 2021)। इसके साथ ही, भारतीय समाज में ए आई के बढ़ते प्रभाव ने पारंपरिक सोच और सांस्कृतिक मान्यताओं को भी चुनौती दी है। उदाहरण स्वरूप, जहाँ एक ओर ए आई तकनीकी विकास को बढ़ावा देकर शिक्षा के क्षेत्र में नई संभावनाएँ खोल रहा है, वहीं दूसरी ओर यह शिक्षा के मानक और मूल्यांकन के पारंपरिक तरीकों को भी प्रभावित कर रहा है (गुप्ता, 2022)। इसके परिणामस्वरूप, नैतिक चिंताएँ भी उत्पन्न हो रही हैं, जैसे कि डेटा गोपनीयता, निर्णय लेने में स्वायत्तता की कमी, और मानव संबंधों में कमी। इसके अतिरिक्त, हिंदी साहित्य में ए आई के नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थ को समझने के लिए, लेखक और साहित्यकार अक्सर इस तकनीकी प्रभाव को समाज के लिए एक दर्पण के रूप में उपयोग करते हैं, जो मानवता की जटिलताओं और आधुनिकता के बीच की कड़ी को उजागर करता है (कुमार, 2023)। इस प्रकार, ए आई न केवल एक तकनीकी नवाचार है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना और नैतिक मूल्यों को भी पुनर्निर्धारित करने की क्षमता रखता है।

सामाजिक चिंताओं और ए आई की चुनौतियाँ

हिंदी साहित्य में ए.आई. के नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थ के संदर्भ में सामाजिक चिंताओं और चुनौतियों पर विचार करते समय, यह महत्वपूर्ण है कि हम तकनीकी प्रगति के साथ-साथ इसके सामाजिक प्रभावों को समझें। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) ने साहित्य में न केवल रचनात्मक प्रक्रियाओं को प्रभावित किया है, बल्कि यह विभिन्न सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक मान्यताओं को भी चुनौती दे रहा है। उदाहरण के लिए, ए.आई. द्वारा उत्पन्न साहित्यिक सामग्री में प्रतिभा, रचनात्मकता और मानव अनुभव की गहराई की कमी हो सकती है, जो पारंपरिक साहित्यिक मानकों को प्रभावित करती है (शर्मा, 2021)। इसके अतिरिक्त, ए.आई. के उपयोग से उत्पन्न सामग्री में मौजूद पूर्वाग्रह और सामाजिक असमानताएँ चिंताजनक हैं, क्योंकि मशीन लर्निंग एल्गोरिदम अक्सर पूर्ववर्ती डेटा पर आधारित होते हैं, जो सामाजिक अंतरों को पुनर्निर्माण

कर सकते हैं (दास, 2022)। इसके परिणामस्वरूप, ए.आई. के साहित्य में प्रयोग को सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी देखा जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह मानवता के अनुभव और संवेदनाओं को उचित रूप में प्रदर्शित करता है। ऐसे में, साहित्यकारों, शोधकर्ताओं और तकनीकी विशेषज्ञों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे नैतिक सिद्धांतों और सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए ए.आई. के संतुलित विकास और उपयोग पर ध्यान केंद्रित करें (मिश्र, 2023)।

निष्कर्ष : ए आई के नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण का समेट

ए.आई. के नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर विचार करते समय यह महत्वपूर्ण है कि हम इस तकनीकी विकास के प्रभाव को समझें, खासकर हिन्दी साहित्य के संदर्भ में। ए.आई. का उपयोग भारतीय साहित्य में नया आयाम जोड़ सकता है, लेकिन इसके साथ ही नैतिकता और संस्कृति के मूल सिद्धांतों पर भी प्रश्न उठाता है। भारतीय समाज में साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह संस्कृति, मानवीय भावनाओं, और नैतिक शिक्षाओं का प्रतिबिम्ब भी है। जब ए.आई. का उपयोग साहित्य के निर्माण या विधा में किया जाता है, तो यह साहित्यिक पूर्वाग्रहों को मजबूती प्रदान कर सकता है या समाज में मौजूद सांस्कृतिक असंतुलन को बढ़ा सकता है (Sharma, 2021)। इसके अलावा, यह साहित्य के मूल्यांकन में मानवीय तत्वों को मिटाने के खतरे के बारे में चिंतित करता है। इसलिए, यह आवश्यक है कि हम ए.आई. के नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थ का गंभीरता से अध्ययन करें, ताकि हम इसे हिन्दी साहित्य में उचित रूप से लागू कर सकें और साथ ही इसकी चुनौतियों का सामना कर सकें। ऐसा करने से हम न केवल साहित्यिक विकास को सुनिश्चित कर सकते हैं, बल्कि समाज में नैतिकता और सांस्कृतिक विविधता को भी बनाए रख सकते हैं (Verma, 2020)।

भविष्य की संभावनाएँ और साहित्य में ए आई की भूमिका

भविष्य की संभावनाएँ और साहित्य में ए. आई. की भूमिका एक महत्वपूर्ण विषय है, विशेषकर हिन्दी साहित्य के संदर्भ में जहाँ तकनीकी और सांस्कृतिक परिवर्तन एक दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में हैं। भारतीय साहित्य में ए. आई. के नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थों का विश्लेषण करते समय यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि कैसे मशीनों की बुद्धिमत्ता मानव रचनात्मकता और सांस्कृतिक तत्वों को प्रभावित कर सकती है। उदाहरण के तौर पर, ए. आई. साहित्यिक रचनाओं के उत्पादन में सहायता कर सकती है किंतु इसे एक साधन के रूप में देखना अधिक उपयुक्त है, जो साहित्यकारों को अपने विचारों को और अधिक व्यापक रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम बनाती है (कुमार, 2023)। ए. आई. के द्वारा उत्पन्न साहित्य न केवल रचनात्मकता के नए आयामों को खोलता है, बल्कि यह सांस्कृतिक संदर्भ और नैतिकता के मुद्दों को भी उजागर करता है, जैसे कि स्वामित्व, लेखक की पहचान और रचनात्मकता का निष्कर्षण (सिंह, 2022)। यह परिदृश्य हमें एक नई दिशा की ओर ले जाता है, जहाँ साहित्य और ए. आई. के बीच का संबंध न केवल तकनीकी आगे बढ़ने का प्रतीक है, बल्कि यह हमारे नैतिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्व्याख्या भी कर रहा है। इस प्रकार, हिन्दी साहित्य में ए. आई. की उपस्थिति भविष्य में न केवल साहित्यिक उत्पादन को प्रभावित करेगी, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर और नैतिक मूल्यों की संरचना को भी चुनौती देगी (शर्मा, 2021)।

संदर्भ

- शर्मा, आर. (2022), 'हिन्दी साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता : नैतिक एवं सांस्कृतिक निहितार्थ'. हिन्दी साहित्यिक विमर्श, 12(3), 45-58.
- पांडे, आर. (2022), 'हिन्दी साहित्य और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : एक नई दिशा', हिन्दी साहित्य समीक्षा.
- शर्मा, स. (2023), शृष्ठ और हिन्दी साहित्य : संभावनाएँ और चुनौतियाँ', साहित्य अनुसंधान पत्रिका.

- कुमार, जे. (2021), 'रचनात्मकता और नैतिकता : ए आई से उपजी नई चुनौतियाँ', मानविकी और सामाजिक विज्ञान.
- गुप्ता, विमल, (2022), 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और संस्कृति : एक नैतिक विश्लेषण', हिन्दी अध्ययन, 15(3), 45-60.
- शर्मा, आर्यन. (2023), 'हिन्दी साहित्य में ए आई के नैतिक और सांस्कृतिक आयाम', साहित्यिक विमर्श, 20(1), 78-90.
- Doctor A., (2021). "AI and Ethics: Bridging the Gap in Cultural Heritage." Cultural Studies Journal.
- Sharma, P. (2022). "The Influence of Artificial Intelligence on Modern Literary Criticism." Hindi Literature Review.
- शर्मा, आर. (2021), 'एआई और मानवता के बीच नैतिकता : एक साहित्यिक दृष्टिकोण', हिन्दी साहित्य और तकनीकी बदलाव, 3(2), 45-60.
- रविचंद्रन, एस. (2022), 'संस्कृति, मूल्य और एआई : हिन्दी साहित्य में जटिलताएँ', भारतीय साहित्य की आधुनिक चुनौतियाँ, 5(1), 30-50.
- Sharma, A. (2021). "AI and Cultural Heritage Preservation: Ethical Implications". Journal of Cultural Studies.
- Singh, J. (2022). "The Role of AI in Safeguarding Cultural Heritage". Indian Journal of Literature and Arts.
- Sharma, R. (2022). "AI in Literature: Impacts and Implications." Journal of Language Studies.
- Kumar, A. (2023). "Ethics and AI in Creative Writing." Hindi Literature Review.
- त्रिवेदी, आर. (2020), 'ए.आई. का साहित्य में योगदान : सीमाएँ और संभावनाएँ', हिन्दी पत्रकारिता.
- सिंह, के. (2021), 'हिन्दी में ए.आई. : नैतिक और सांस्कृतिक निहितार्थ', साहित्यिक अध्ययन.
- Sharma, R. (2021). 'Artificial Intelligence in Indian Society: Impacts and Perspectives'. Journal of Indian Technology and Society.
- Gupta, S. (2022). 'Ethical Challenges of AI in Education'. Indian Journal of Education and Technology.
- Kumar, J. (2023). 'Cultural Reflections of AI in Hindi Literature'. South Asian Literary Review.
- Sharma, A. (2021). "AI and Literature: Challenges and Ethical Considerations." Journal of Indian Literature.
- Das, P. (2022). "Bias in AI: Implications for Literary Creation." Indian Journal of Artificial Intelligence Studies.
- Mishra, R. (2023). "Cultural Dimensions of AI in Hindi Literature." Journal of Cultural Studies.
- Sharma, R. (2021). "AI and Literature: Ethical Implications in Indian Context." Journal of Indian Literature Studies.
- Verma, A. (2020). "Cultural Dimensions of AI in Hindi Literature." Literature and Society Review.
- कुमार, अशोक. 'हिंदी साहित्य में ए. आई. के प्रभाव', हिंदी साहित्य का नया युग, 2023.
- सिंह, राधिका. 'नैतिकता और ए. आई. : साहित्य में नई दृष्टि', साहित्य और तकनीक, 2022.
- शर्मा, सुरेश. 'सांस्कृतिक निहितार्थ : ए. आई. और हिंदी साहित्य', सांस्कृतिक अध्ययन, 2021.



भक्ति साहित्य में राधा का स्वरूप

डॉ. मीनू पारीक

हिंदी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ

Mail : meenupareek@banasthali.in

प्रस्तावना

भक्ति साहित्य में राधा का स्वरूप प्रेम, समर्पण और अध्यात्म की उच्चतम अभिव्यक्ति के रूप में प्रतिपादित हुआ है। राधा केवल एक पौराणिक नायिका नहीं, बल्कि भक्ति के आदर्श भाव-माधुर्य भक्ति- की प्रतीक हैं। कवि-संतों ने राधा को ईश्वर-प्रेम की वह स्थिति माना है, जहाँ आत्मा अपने आराध्य से पूर्ण एकत्व की अनुभूति करती है। सूरदास, जयदेव, चैतन्य और विद्यापति जैसे भक्त कवियों ने राधा के माध्यम से दिव्य-प्रेम के सूक्ष्म और गूढ़ रूपों को व्यक्त किया है। राधा का प्रेम सांसारिक नहीं, बल्कि अलौकिक है- जो वियोग में और अधिक गहन होता है तथा विरह को भक्ति का परम साधन बना देता है। इस प्रकार भक्ति साहित्य में राधा का स्वरूप अनुराग, समर्पण, विरह और आत्मानुभूति की चिरंतन प्रतीक के रूप में उभरता है, जो ईश्वर-भक्ति की चरम अवस्था का दार्शनिक और भावनात्मक रूपक बन जाता है।

बीज-शब्द : मुहमरूण, अधिष्ठात्री, आभीर, पर्यवसित, कृष्ण-कर्णामृत।

भारतीय भक्ति साहित्य में धार्मिक साहित्य के प्रमुख आधार स्तंभ राधा व कृष्ण हैं। कृष्ण की लीलाएं भक्ति कालीन कवियों के काव्य की प्रमुख विषय वस्तु राधा रही है किंतु राधा काव्य का आलंबन रही है। कृष्ण के प्रेम लीलाएं राधा के बिना अपूर्ण हैं 'विषय' रूप में कृष्ण तथा 'आश्रय' रूप में राधा वैष्णव काव्य व धर्म का मुख्य आशय है।

मध्यकालीन भक्ति साहित्य को यदि एक शब्द में अभिव्यक्त करना हो तो नहीं संकोच कहा जा सकता है वह शब्द है 'राधा' राधा जो मध्यकाल की प्रेरणा रही है साहित्यकारों की अधिष्ठात्री देवी रही है। राधा साथ ही वह नारी की ऐसी मांसल मूर्ति जिसके शरीर की हर अनु में कच्ची मिट्टी की गंध और आत्मा के प्रत्येक चेतन परमाणु में दिव्य प्रेम की आलोक की छटा विद्यमान है छठवीं शती से सत्रहवीं सदी तक का संपूर्णवाङ्मय में इस अनुपम नारी रत्न को व्यक्त करके सौंदर्य दृष्टि से अनुप्रेणित हुआ है।

सोलहवीं शती के प्रचलित साहित्य में राधा कल्पना ने धर्म व काव्य में अभिनवता व चारुता प्रदान की। राधा के स्वरूप प्रचलित है एक धर्म और दर्शन में दूसरा काव्य में। राधा के व्यक्तित्व में दोनों रूपों का पूर्ण समाहार हैं। भारतीय जनमानस में जो परमप्रेम, सौंदर्य एवं माधुरी का बीज था कालांतर में वही आध्यात्मिक व रूपरस माधुरी की उर्वरा पाकर पूर्ण विकसित हुआ। राधा की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों का मतभेद हैं। कुछ विद्वान राधा को आभीरों की देवी मानते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं 'राधा आभीर जाति की प्रेम देवी रही होंगी जिसका संबंध बालकृष्ण से रहा होगा। आरंभ में बाल कृष्ण का वासुदेव कृष्ण से एकीकरण हुआ होगा। इसलिए आर्य-ग्रंथों में राधा नामोल्लेख नहीं है। पीछे बाल कृष्ण की प्रधानता होने पर इस बालक देवता की सारी बातें आभीरों से ले ली गई होंगी और इस प्रकार राधा की प्रधानता हो गई होगी।'¹ डॉ. भंडाकर राधा को विदेशी मानते हैं इनका मत है कि 'सीरिया से आए हुए आभीरों की इष्ट देवी राधा को आर्यों ने स्वीकार

किया। आभीरों के यहाँ बस जाने पर उनके बाल गोपाल सात्वत धर्म के उपदेष्टा भगवान कृष्ण के साथ सम्मिलित हो गए और कुछ शताब्दियों पश्चात आभीरों की इष्ट देवी राधा भी आर्य जाति में स्वीकृत कर ली गई।”²

राधा की उत्पत्ति शक्तिवाद का स्वरूप माना गया है। कृष्ण भक्ति में राधा ही सर्वस्व है। राधा कवियों की प्रतिभा का उत्कृष्ट विलास है। यद्यपि राधा का स्वरूप साहित्य में पहले से है या धर्म में यह किसी भी प्रकार निश्चित नहीं किया जा सकता। राधा के प्रारंभिक साहित्य का उल्लेख यही दर्शाता है कि राधा धर्म से पहले साहित्य में स्थान का चुकी थी। पं. बलदेव उपाध्याय लिखते हैं ‘राधा की सर्जना साहित्य संसार की अप्रतिम वस्तु है। साहित्य के भीतर वह उद्भूत है परंतु वह वहीं तक पर्यवसित नहीं हो जाती। वैष्णव धर्म ने उस मूर्ति को अपनाकर अपने कलेवर में अद्भुत- उत्कृष्टता उत्पन्न कर दी है। राधा तत्त्व का विवरण दार्शनिकों की अलौकिक चिन्तन का परिणाम है। परंतु वह मूलतः साहित्य की वस्तु है, साहित्य की कल्पना है- विशुद्ध, निर्मल तथा रस निर्झर।”³

इसी क्रम में हम देखते हैं डॉ. शशि भूषण दास गुप्त लिखते हैं ‘वैष्णव धर्म, दर्शन और साहित्य में राधा का आविर्भाव और क्रम विकास मूलतः भारतवर्ष के साहित्य का अवलंबन करके हुआ है। लगता है ब्रज के चरवाहे कृष्ण की गोपियों के साथ प्रेमलीला पहले आभीर जाति के कुछ चरवाहों की गीतों के तौर पर बिखरी हुई थी। चपल आभीर बंधुओं और नौजवानों में आनंद सुंदर गोपी युवक कृष्ण की विचित्र प्रेमलीला के उपाख्यानों ने गोप जाति में अनेक गानों की प्रेरणा उत्पन्न की थी। लोक गीत के माध्यम से ही भारत में भिन्न- भिन्न अंचलों में फैल रहे थे। भारत के भिन्न- भिन्न पुराणों में स्थान पाकर कवि-कल्पना में और भी पल्लवित होने लगी।”⁴

साहित्य में उपलब्ध राधा प्रसंगों की चर्चा में सर्वप्रथम प्रथम शताब्दी की सात वाहन राजा हाल द्वारा संकलित प्राकृत ग्रंथ (गाहा-सतसई) गाथा सप्तशती में राधा का उल्लेख मिलता है। इसमें कृष्ण लीला के अनेक पद संकलित हैं। राधा का उल्लेख केवल एक पद में ही मिलता है

“मुहमारुण तं कहण गोरअं रहिआए अवणेन्तों।

एताणें वल्लवीणें अण्णाण वि गोरअं हरसि।”⁵

अर्थात् हे कृष्ण, तुम मुख मारुत के द्वारा राधिका के (मुंह पर लगे) गोरज (धूलि) का अपनयन करके इन वल्लभियों तथा दूसरी सभी नारियों के गौरव का हरण कर रहे हो। हाल ने इस ग्रंथ का संकलन किया अतः यह लोक कथा के रूप में प्रचलित रही होगी अतः राधा के अस्तित्व की प्राचीनता इसी से सिद्ध होती है। सप्तशती के अतिरिक्त कवि भट्ट नारायण कृत ‘वेणी संहार’ नाटक के नंदी श्लोक में कालिंदी के जल में रास के समय केली कुपिता राधा और उनके लिए किए गए कृष्ण के अनुनय का उल्लेख है—

“कालिंधा पुलिनेषु केलि कुपिता मुत्सृज्य रासे रसं

गच्छन्ती मनुगच्छ तोड़ श्रकलुषा कंस द्विषों राधिकाम्।

तत्पाद प्रति मानि वेशित पद स्योदभूत रोमोद्भूत-

रक्षुण्णोंडनुनयं प्रसन्न दायिता दृष्टस्य पुष्पातु वरु।।”⁶

इसी क्रम में आनंदवर्धन कृत (नवीं शती) में धन्यालोक में राधा कृष्ण से संबंधित श्लोक मिलता है। जिसमें वह लिखते हैं, कृष्णा वृंदावन से आए सखा से पूछ रहे हैं कि हे भद्र, उन गोप वधुओं के विलास -सु ह्यत और राधा की गुप्त साक्षी कालिंदी तटवर्ती लतागृह कुशल से हैं न।

इसी प्रकार दसवीं शताब्दी में एक संकलन ‘कविन्द्र वचन समुच्चय’ में राधा कृष्ण से संबंधित चार पद मिलते हैं। जिसमें राधा के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख मिलता है जिसमें राधा व गोपियों की वार्ता का उल्लेख है। साथ ही परवर्ती वैष्णव कवियों ने अपनी कविता के प्रसंगों में मानिनी राधा का उल्लेख किया है। ग्यारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में वाकपति की लिपि में कृष्ण संबंधी उल्लेख मिलता है। जिसमें उन्हें ‘राधा बिरहातुर मुरारिपु’ के नाम से संबोधित किया है—

“तद्राधा बिरहातुरं मुरारिपोण्वेर्लद्धपु रूपातु वरु।”

इस प्रकार हम देखते हैं की प्रथम शती से लेकर ग्यारवीं सदी तक राधा के थोड़े बहुत उल्लेख संकेत में है किंतु बारहवीं सदी से साहित्य में राधा के चरित्र का पूर्ण विकास हो गया। राधिका को नायिका के रूप में प्रस्तुत करने वाला ग्रंथ जयदेव कृत ‘गीत- गोविंद’ बारहवीं सदी में लिखा गया। गीत- गोविंद में राधा का नायिका रूप परवर्ती वैष्णव राधा साहित्यिक राधा के स्वरूप में मिलता है। जयदेव ने राधा की साहित्यिक प्रतिष्ठा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। साथ ही ‘कृष्ण-कर्णामृत’ जो बारहवीं सदी में लीला- शुख बिल्व मंगल ठाकुर द्वारा लिखा गया, इसमें राधा का उल्लेख मिलता है। इसमें राधा व लक्ष्मी के एक स्वरूप का उल्लेख मिलता है। भक्ति साहित्य में राधा के स्वरूप की चर्चा का उल्लेख बारहवीं सदी में गीत- गोविंद में अधिक है। जयदेव के साहित्य का प्रभाव अन्य कवियों के साहित्य पर भी देखा जा सकता है।

जयदेव, विद्यापति, सूरदास एवं परमानंद दास जैसे प्रतिभाशाली कवि अपनी लेखनी के माध्यम से राधा के व्यक्तित्व की छटाएँ साहित्य में प्रदान कर चुके थे। जयदेव ने अपने ग्रंथ ‘गीत- गोविंद’ में श्रीकृष्ण और राधा के प्रेम का कोमल और विलासमय वर्णन किया है। जयदेव के काव्य में राधा का स्वरूप का पूर्ण विकास देखने को मिलता है। राधा कृष्ण ईश्वर स्वरूप को छोड़कर मानवीय धरातल पर आ गए। जयदेव की राधा को लोक लाज का भय नहीं है जयदेव ने राधा को प्राणवान व्यक्तित्व प्रदान किया है। ‘गीत-गोविंद’ में राधा सर्वप्रथम अपने परमोज्ज्वल यौवन अनुपम, माधुर्य एवं सशक्त विलास आकांक्षा के साथ आती है। जयदेव की राधा मानिनी, कभी कृष्ण पर क्रोध करने वाली, कभी वासक-सज्जा की भाँति विलाप करने वाली है-

“भवति विलंबिनी विगलित लज्जा विलपति रोदिति वासक-सज्जा।

वह कृष्ण को खंडिता की तरह व्यंग्य वचन कहती है-

हरि हरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादं।।

तामनुभर सरसीरुहलोचनया हरति विषादम्।।

गीत -गोविंद में राधा का विलास-आकुल, काम- कातर, विरह- जर्जरित और मिलनोत्कण्ठित रूप में दिखाई देता है।⁸ गीत- गोविंद में राधा संयोगिनी, वियोगिनी, मानिनी परकीया आदि रूपों में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होती है। यद्यपि जयदेव की राधा आध्यात्मिकता का आरोप करते हुए रूप गोस्वामी ने गीत-गोविंद की व्याख्या कर कृष्ण को जीव और राधा को आत्म तत्व के रूप में स्वीकार किया है।

जयदेव की राधा को डॉ. प्रभुदयाल मीतल के अनुसार ‘जयदेव की राधा उपासना की देवी न होकर पृथ्वी की रानी है ‘ अतः राधा को लोकग्राह्य रूप जयदेव कृत है। वह लोक के धरातल पर रहती है कवि ने राधा को परकीया रूप प्रदान किया है। वह प्रेम की प्रतिमा है।

इसी क्रम में ‘मैथिल कोकिल विद्यापति’ विद्यापति की पदावली में राधा के स्वरूप को देखते हैं तो हम यह पाते हैं कि उन्होंने राधा के दर्जनों चित्र अपने काव्य में जैन परंपरा और प्रचलित कथाओं व गीतों के आधार पर चित्रित किए हैं। विद्यापति की राधा भी परकीया है। साथ ही इन्होंने भक्ति के प्रभाव में राधा की स्तुति भी की है, जिसमें उन्होंने माना है कि ब्रह्मा ने पृथ्वी तल पर अपूर्व लावण्य का सार ही ला मिलाया-

“देख-देख राधा रूप अपार।

अपुरुष के विहि अनि मिला औख खिति-तल लावनि सार।।

कत -कत लखिमी चरन-तल ने ओछर रंगिनी हेरि विभोरि।

करु अभिलाख- मनहि पद पंकज अहोनिशि कोर अगोरि।।”

विद्यापति की राधा किशोरी है, भोली है, अज्ञात यौवन है। उसके चरणों में नेत्रों की चंचलता है। विद्यापति ने राधा के नख-शिख का वर्णन किया है। राधा के अंगों में कवि को हरिण, चंद्रमा, कमल, हस्तिनी, सुवर्ण और कोयल सब एक साथ दिखाई देते हैं। विद्यापति की राधा भी प्रेम की प्रतिमा है। वे कृष्ण के समान ही लोकोत्तर सुंदरी हैं। उनका संयोगमय जीवन अत्यंत भावमय उदान्त और चित्ताकर्षक है। वे वन विहार करते हैं राधा अभिसार करती है। अभिसार के लिए उत्सुक राधा

किसी का भय मानने को तैयार नहीं।

विद्यापति ने राधा के व्यक्तित्व के प्रत्येक पक्ष का उद्घाटन किया है। राधा प्रेम परायण है वे वियोग सहन नहीं करती। प्रेम में तल्लीन राधा विरह वश स्वयं को कृष्णा समझकर राधा-राधा पुकारती है। यह प्रेम की पराकाष्ठा है। विद्यापति की राधा भी जयदेव की राधा की तरह यौवन और सौंदर्य से संपन्न चंचल नायिका है। डॉ. जयनाथ नलिन ने विद्यापति की राधा को आह्लादिनी शक्ति और ज्योति पिंड के रूप में स्वीकार किया है। वे लिखते हैं “ब्रह्मवैवत्त पुराण में राधा को रासेश्वरी कहा गया है। विद्यापति की राधा भी रस प्रेरिका और रस मध्यस्था है। यह राधा का एक मानवी से कृष्ण की आह्लादिनी शक्ति के रूप में विकसित हो जाती है वह आनंद की ज्योतिपिंड है और अन्य गोपियाँ उस आनंद ज्योति को विकर्ण करने वाली किरणें।”¹⁰

इसी क्रम में हम देखते हैं कि साहित्य के क्षेत्र में कृष्ण प्रिया राधा के विस्तृत व्यापक क्रमबद्ध और सर्वाधिक वर्णन का श्रेय सूर को है। सूर की राधा का स्वरूप भोली भाली बालिका के रूप में है जो भोलेपन से सबके चित्त का हरण करती है। कृष्ण के साथ उसके बालपन का प्रेम है। सूर की राधा विशाल- नेत्र पर रोली का टीका, पीठ पर लटकते वेणी, गोरे शरीर पर नील वर्ण की फरिया वस्त्र है यह राधा की सज्जा जिस पर कृष्णा मुग्ध होते हैं, वह कृष्ण से मिलने का बहाना ढूँढती है। सूर की राधा कृष्ण पर अपना अधिकार जमाती है।

सूरदास की राधा के स्वरूप वर्णन पर आचार्य शुक्ल के विचार हैं -“सूर का संयोग वर्णन एक क्षणिक घटना नहीं है, प्रेम-संगीत में जीवन गहरी चलती धारा है, जिसमें अवगाहन करने वाले को दिव्य माधुर्य के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं पड़ता।”¹¹ सूर की राधा कृष्ण की चिर संगिनी है। सूर्य की राधा भी जयदेव और विद्यापति की राधा के समान लोक की मर्यादा की चिंता नहीं करती। राधा अपनी दुविधा व्यथा को कृष्ण के ही सम्मुख रखती है। कृष्णा उसे लोक- लाज से न डरने की सहमति प्रदान करते हैं।

“ब्रजहि बसै आपुहि बिसरायौ।

प्रकृति- पुरुष एक ही कर जानहु , हो बातनि भेद करायौ।।

जल-थल जहाँ रहैं , तुम बिन नहि वेद उपनिषद गायौ।

द्वे-तन जीव- एक हम दोउ , सुख कारण उपजायौ।।

ब्रह्म- रूप द्वितीया नहि कोउ तन मनतिया जनायौ।

सूर, स्याम- मुख देखि अलपि हँसि आनंद पुंज बढ़ायौ।।”¹²

सूरदास राधा के परकीया रूप की चर्चा में उसे शाश्वत स्वकीया मानते हैं। सूर की राधा मानवती एवं गौरवशालिनी रूप में चित्रित है। सूर ने वियोगिनी राधा के स्वरूप को भी उकेरा है। सूर की राधा वाद- विवाद नहीं करती, भ्रमरगीत सार के प्रसंग में राधा वाद- विवाद नहीं करती। गोपियाँ ही उसकी ओर से विरह- निवेदन करती है। और ‘अति मलीन वृषभानुकुमारी’ की दशा बताती है। राधा कहीं भी अपने विरह का प्रचार करती हुई नहीं प्रतीत होती। यह बात उनके विरह को और गहन-गंभीर बना देती है। अंतिम मिलन में भी उसके मुख से कुछ नहीं निकलता। इस प्रकार सूर की राधा हमें सच्ची प्रेमिका के रूप में दर्शन देती है।

इसी क्रम में अष्टछाप कवि परमानंद दास की राधा के स्वरूप को देखते हैं तो हम पाते हैं कि परमानंद दास की राधा उपयुक्त वर्णित तीनों कवियों की राधा का समाहार है। उस पर पौराणिकता का प्रभाव दृष्टिगत होता है। कवि परमानंद अपने काव्य में राधाके जन्म की बधाई, गीत ,पालना और झूला झूलने का वर्णन करते हैं। सूर की राधा कृष्ण की बाल सखी है उसकी भोली चेष्टाओं के चित्र उनके काव्य में है; किंतु राधा जन्मोत्सव का वर्णन परमानंद काव्य में मिलता है वैसा कहीं अन्य नहीं है। कवि विद्यापति ने शैशवस्था से यौवन की देहरी पर कदम रखती हुई राधा का वर्णन किया है। परमानंद की राधा का निजी वैशिष्ट्य है कृष्ण उन्हें सम्मान देते हैं। परमानंद की राधा राजराजेश्वरी है, रसिकनी है, उनके सौंदर्य में अलौकिक छवि है, वह लक्ष्मी का अवतार है। कवि परमानंद की राधा वसंत और फाग खेलती है। परमानंद की राधा मानिनी है वे मान प्रसंग में क्रोध करती हैं मान करती है और न मानने करने का निर्णय करती है-

‘रुसे ही रहोंगी हो तो रुसे ही रहोंगी।
जब गृह आवेंगे स्याम मनोहर
तिनि सों हूँ बाँके वचन कहोंगी।।
जो वे मनावेंगे तौ हौ नहिं नहीं मानोंगी मनमथ- बान सहोंगी।
‘परमानंद दास ‘ कौ ठाकुर वे परै पौँड हौं तो हठनि गहोंगी।।’¹³

कवि की राधा लोक धरातल पर रहती है। सामान्य नारी की तरह अपने अधिकारों का हनन होते देख मान करती हैं और मनाने पर अभिसार के लिए प्रस्तुत हो जाती है। राधा के अलौकिक और लौकिक दोनों रूप देखने को मिलते हैं। परमानंद उनके विवाह स्वरूप, युगल स्वरूप का वर्णन कराते हैं-

“गौर स्याम तन यह जोरी पर बलि परमानंददास।” इनकी आध्यात्मिक राधा के साथ संयोगिनी, वियोगिनी राधा के रूप काव्य में मिलते हैं। जिसमें संयोग रूप के वर्णन अधिक है।

निष्कर्ष

अतः कह सकते हैं भक्ति साहित्य में राधा दैवीय धरातल पर उत्पन्न होती है किंतु भक्त कवियों के काव्य ने तथा उनकी काव्य कृतियों में राधा को कृष्ण के साथ मानवीय धरातल पर लाकर नायक नायिका के रूप में प्रतिष्ठित किया। जिसमें राधा के व्यक्तित्व के अनेक रूप हमें देखने को मिलते हैं। प्रत्येक भक्त कवि ने अपनी मेधा के अनुसार राधा के स्वरूप का जीवन्त चित्रण किया। काव्य में राधा परकीया, स्वकीया, मानिनी, प्रेमिका, रासेश्वरी, लक्ष्मी, गोपी का रूप में चित्रित है। राधा आध्यात्मिक रूप उनके सभी रूपों पर अधिक भारी पड़ता है। अतः भक्त कवियों ने जैसा वर्णन राधा का किया है वैसा वर्णन कहीं भी हमें दृष्टिगत नहीं होता। राधा का व्यक्तित्व पूर्णतः अंतर्मुखी है, शक्ति शक्तिमान के भीतर होती है शक्तिमान प्रकाश स्वरूप है अतः बहिर्मुखी कृष्ण में हो सकती है राधा में नहीं। श्रीकृष्ण रास के रूप है उनका स्वरूप उनकी रसात्मकता शक्तियों से विनिर्मित है राधा रसात्मक सिद्धि है। अतः तदरूपता के कारण राधा का व्यक्तित्व भाव प्रधान है इनका नैतिक भाव अति प्रबल है जिसमें वह अपनी इच्छा शक्ति के बल पर कार्य करती है। यही राधा जीवन्त स्वरूप में भक्ति साहित्य का आधार लेकर जनमानस में विद्यमान है।

संदर्भ सूची

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद : सूर साहित्य पृष्ठ सं -16
2. स्नातक, डॉ. विजेंद्र पूर्वोद्धत : राधावल्लभ संप्रदाय सिद्धार्थ और साहित्य
3. गुप्त, डॉ. शशी भूषण दास : श्री राधा का क्रमिक विकास, पृष्ठ सं -115
4. राजा हाल गाथा सप्तशती शतक -1 श्लोक
5. भट्ट, नारायण वेणी संहारम; प्रथम अंक श्लोक
6. आनंद वर्धन धन्यलोकद्वितीय उद्योग; 5, पृष्ठ सं -93
7. गुप्त, डॉ. शशी भूषण दास : श्री राधा का क्रमिक विकास, पृष्ठ सं -125
8. जयदेव गीत गोविंद षष्ठम् सर्ग प्रबंध, श्लोक -7
9. मीतल, डॉ. प्रभु दयाल : हिंदी साहित्य में राधा, पृष्ठ सं- 242
10. संकलनकर्ता बेनीपुरी, रामवृक्षः विद्यापति पदावली, पद-2 राधा की वंदना
11. नलिनी, डॉ. जयनाथ : विद्यापति पृष्ठ सं- 89
12. शुक्ला, आचार्य रामचंद्र : सूरदास पृष्ठ सं 182
13. वही पद 2306 -2308
14. पूर्वोद्धत शुक्ल डॉ. गोवर्धन दास रूक्मिवर परमानंद दास और वल्लभ संप्रदाय पद 720



डिजिटल युग में शिक्षक के शिक्षण विधियों पर प्रभाव

डॉ. हेमा तिवारी

सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)

श्याम शिक्षा महाविद्यालय, सक्ती (छ.ग.)

ईमेल:- drhematiwari83@gmail.com

सारांश

डिजिटल युग में शिक्षा प्रणाली तेजी से बदल रही है। पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों के स्थान पर अब तकनीकी साधनों पर आधारित शिक्षण विधियाँ अपनाई जा रही हैं। स्मार्ट बोर्ड, मल्टीमीडिया, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, ई-लर्निंग तथा फ्लिपड क्लासरूम जैसी विधियों ने शिक्षण को अधिक प्रभावी, रोचक और छात्र-केंद्रित बना दिया है। इससे शिक्षक की भूमिका भी बदलकर केवल ज्ञान प्रदाता से मार्गदर्शक, प्रेरक और नवाचारक के रूप में परिवर्तित हो गई है। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग ने शिक्षण विधियों को नई दिशा दी है, साथ ही शिक्षकों को तकनीकी दक्षता और सतत अधिगम की आवश्यकता भी बढ़ाई है।

बीज शब्द : डिजिटल युग, शिक्षक, शिक्षण विधियाँ, ई-लर्निंग, फ्लिपड क्लासरूम, मल्टीमीडिया, छात्र-केंद्रित शिक्षा।

प्रस्तावना

आज का युग डिजिटल युग कहलाता है। इस युग में विज्ञान और तकनीक ने मानव जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है, शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। पारंपरिक शिक्षण प्रणाली जहाँ केवल पुस्तकों, ब्लैकबोर्ड और मौखिक व्याख्या तक सीमित थी, वहीं अब स्मार्ट बोर्ड, मल्टीमीडिया, इंटरनेट, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और ई-कॉन्टेंट के माध्यम से शिक्षा का स्वरूप व्यापक और आकर्षक हो गया है। डिजिटल साधनों ने शिक्षण को अधिक सुगम, लचीला और छात्र-केंद्रित बनाया है। शिक्षण विधियों में यह परिवर्तन न केवल विद्यार्थियों की रुचि और सहभागिता को बढ़ाता है, बल्कि उन्हें नवीनतम ज्ञान और वैश्विक स्तर पर उपलब्ध संसाधनों से भी जोड़ता है। शिक्षक अब केवल जानकारी देने वाले न रहकर, मार्गदर्शक, शोधकर्ता और नवाचारक की भूमिका निभा रहे हैं।

डिजिटल युग में शिक्षण विधियों पर प्रभाव का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि इससे यह समझा जा सकता है कि किस प्रकार तकनीक के प्रयोग से शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यार्थियों की उपलब्धि तथा शिक्षक की कार्यकुशलता में सुधार हो रहा है। साथ ही यह भी कि इस परिवर्तन के बीच कौन-कौन सी चुनौतियाँ सामने आती हैं और उन्हें किस प्रकार दूर किया जा सकता है।

शिक्षण, एक पेशे के रूप में, हमेशा से पूजनीय रहा है। भारतीय संस्कृति में शिक्षकों को भगवान के समान माना गया है। उन्होंने अपने विद्यार्थियों के जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज भी, दुनिया भर में लाखों शिक्षक अपने छात्रों की सफलता के लिए कड़ी मेहनत करते रहते हैं। सरकार और

गैर-सरकारी संगठनों द्वारा संचालित आजीविका कौशल विकास कार्यक्रम भी शिक्षकों को सक्षम बनाने पर केंद्रित है।

”शिक्षण एक बहुत ही महान पेशा है जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता और भविष्य को आकार देता है। अगर लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के रूप में याद करते हैं, तो यह मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान होगा” - **ए.पी.जे. अब्दुल कलाम**

हालाँकि, इंटरनेट के आगमन के साथ, डिजिटल युग में शिक्षकों की भूमिका बदल रही है। डिजिटल मीडिया ने अब शिक्षकों के कक्षा में छात्रों के साथ जुड़ने के तरीके को बदल दिया है। अब हम स्मार्ट कक्षाएँ देख रहे हैं जो छात्रों के लिए सीखने को एक मनोरंजक गतिविधि बनाने के लिए नए युग के डिजिटल उपकरणों का उपयोग करती हैं।



अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार होती है। आज के डिजिटल युग में शिक्षा प्रणाली में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं। तकनीकी साधनों के प्रयोग से शिक्षण विधियाँ अधिक प्रभावी, संवादात्मक और छात्र-केंद्रित बन रही हैं। परंतु, शिक्षकों को इन नई विधियों को अपनाने और लागू करने में कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे - डिजिटल साक्षरता की कमी, संसाधनों का अभाव, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या तथा विद्यार्थियों की तकनीक पर अधिक निर्भरता।

ऐसे में यह आवश्यक है कि डिजिटल युग में शिक्षण विधियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाए, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि इस परिवर्तन से शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यार्थियों की उपलब्धि तथा शिक्षकों की भूमिका किस प्रकार प्रभावित हो रही है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. डिजिटल युग में शिक्षकों द्वारा अपनाई जाने वाली नई शिक्षण विधियों का विश्लेषण करना।
2. पारंपरिक और डिजिटल शिक्षण विधियों के बीच अंतर को स्पष्ट करना।
3. शिक्षण प्रक्रिया पर डिजिटल साधनों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
4. शिक्षण विधियों में तकनीक के प्रयोग से विद्यार्थियों की सहभागिता और अधिगम उपलब्धि का अध्ययन करना।
5. डिजिटल शिक्षण विधियों को अपनाने में आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान की पहचान करना।

डिजिटल युग में शिक्षण का नया स्वरूप

आज के शिक्षक AI, VR और इंटरएक्टिव लर्निंग प्लेटफॉर्म जैसे डिजिटल टूल्स का उपयोग कर रहे हैं। ये तकनीकें छात्रों को रियल-टाइम फीडबैक, पर्सनलाइज्ड लर्निंग और व्यावहारिक अनुभव देती हैं, जिससे सीखना अधिक प्रभावी और रोचक बनता है।

शिक्षक : ज्ञानदाता से मार्गदर्शक तक

स्मार्ट टेक्नोलॉजी ने शिक्षकों की भूमिका को पुनर्परिभाषित किया है। अब वे केवल पढ़ाने वाले नहीं, बल्कि छात्रों के

मेंटर हैं। प्रोजेक्ट-बेस्ड और कोलैबोरेटिव लर्निंग के जरिये वे क्रिटिकल थिंकिंग और समस्या-समाधान की क्षमता को बढ़ावा दे रहे हैं।

तकनीक से बढ़ती शिक्षा की पहुंच

स्मार्ट क्लासरूम और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने दूर-दराज के क्षेत्रों में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच सुनिश्चित की है। छात्र अपनी गति से सीख सकते हैं और शिक्षक डेटा-आधारित रणनीतियों से उनकी प्रगति को ट्रैक कर सकते हैं।

भविष्य के लिए तैयार होते छात्र

विशेषज्ञों का मानना है कि स्मार्ट टीचिंग टेक्नोलॉजी छात्रों को डिजिटल दुनिया के लिए तैयार कर रही है। यह उन्हें न केवल तकनीकी रूप से दक्ष बना रही है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और नवाचारी सोच वाला बना रही है।

डिजिटल शिक्षा के युग में शिक्षक की भूमिका में बदलाव।



कोविड-19 महामारी के दौरान

सभी शिक्षा और प्रशिक्षण ऑनलाइन हो गए। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से ही शिक्षक छात्रों से जुड़ते हैं।

तमाम बाधाओं और अक्षमताओं के बावजूद, इसने हमें आज की दुनिया में डिजिटल शिक्षा की क्षमता दिखाई। इसलिए, जैसे-जैसे हम डिजिटल शिक्षा के युग की ओर बढ़ रहे हैं, आइए देखें कि यह शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका को कैसे बदल रहा है।

आजीविका कौशल विकास कार्यक्रम के माध्यम से कौशल में निरंतर उन्नयन

डिजिटल मीडिया के आगमन से शिक्षण-अधिगम के तरीके में तेजी से बदलाव आ रहा है। निर्देश, मूल्यांकन और प्रबंधन के लिए नए इंटरैक्टिव उपकरण शिक्षकों की सहायता कर रहे हैं। शैक्षिक प्रौद्योगिकी-आधारित प्लेटफॉर्म का चलन बढ़ रहा है। मूडल जैसी शिक्षण प्रबंधन प्रणालियाँ अब डिजिटल शिक्षण प्रक्रियाओं का केंद्र बन रही हैं।

हालाँकि, इन नए उपकरणों के संचालन के लिए कौशल में उन्नयन की आवश्यकता है। शिक्षक, जो कक्षा शिक्षण के पारंपरिक तरीकों का उपयोग करते रहे हैं, अब इन नए उपकरणों को सीखने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को और अधिक कुशल बनाना भी महत्वपूर्ण है। पारंपरिक कक्षाओं में भी डिजिटल शिक्षा से कोई बच नहीं सकता। दिल्ली और केरल जैसे भारतीय राज्यों के सरकारी स्कूलों में भी स्मार्ट शिक्षण के प्रयोग शुरू हो गए हैं। इसका मतलब है कि शिक्षकों को इन बदलती परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालना होगा।

कक्षा में प्रौद्योगिकी का एकीकरण

कक्षा में प्रौद्योगिकी का एकीकरण डिजिटल युग द्वारा लाए गए सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक है। आज की आधुनिक दुनिया में, इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड और टैबलेट से लेकर ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म और वर्चुअल कक्षाओं तक, प्रौद्योगिकी शैक्षिक अनुभव का एक अभिन्न अंग बन गई है। हालाँकि, यह शिक्षकों के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करती है।

नए उपकरणों में महारत हासिल करना और उन्हें पाठ्यक्रम में प्रभावी ढंग से शामिल करना आज शिक्षकों के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों में से एक है। तेजी से विकसित हो रहे डिजिटल परिदृश्य के साथ तालमेल बिठाने के लिए, आज शिक्षकों को अपने तकनीकी कौशल को निरंतर अद्यतन करना चाहिए। हालाँकि इसके लिए निरंतर व्यावसायिक विकास के साथ-साथ नई शिक्षण विधियों के साथ प्रयोग करने की इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है, फिर भी अवसर अपार हैं। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने का मुख्य लाभ यह है कि यह सीखने के अनुभव को कई तरीकों से बेहतर बना सकता है जो पहले अकल्पनीय थे।

उदाहरण के लिए, आभासी वास्तविकता छात्रों को दुनिया के कई हिस्सों में या यहाँ तक कि अतीत में भी ले जा सकती है। इससे ऐसे इमर्सिव लर्निंग अनुभव बनाने में मदद मिलेगी जो पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों से कहीं आगे होंगे। अंत में और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि तकनीक शिक्षा तक बेहतर पहुँच को संभव बनाती है क्योंकि यह दूरस्थ या वंचित क्षेत्रों के छात्रों को भी ऑनलाइन पाठ्यक्रम लेने में मदद करती है। इससे भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक बाधाओं को दूर करने में मदद मिलती है और शिक्षकों के लिए, इसका अर्थ है व्यापक दर्शकों तक पहुँचना और छात्रों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालना।

शिक्षा में मानवीय तत्व

हालाँकि डिजिटल युग में तकनीकी प्रगति ने शिक्षा क्षेत्र में क्रांति ला दी है, यह याद रखना जरूरी है कि शिक्षकों की भूमिका तकनीक से कहीं आगे जाती है। शिक्षा मूलतः एक मानवीय प्रयास है, और सीखने के अनुभव का केंद्रबिंदु छात्र और शिक्षक के बीच का रिश्ता है। शिक्षकों को डिजिटल युग में अपने छात्रों के साथ मजबूत और सहयोगी संबंध बनाए रखने की आवश्यकता के साथ तकनीक के उपयोग को संतुलित करना चाहिए। हालाँकि तकनीक सीखने में सुधार ला सकती है, लेकिन यह एक शिक्षक की भूमिका और शिक्षकों द्वारा प्रदान किए जाने वाले व्यक्तिगत जुड़ाव को पूरी तरह से प्रतिस्थापित नहीं कर सकती। शिक्षकों को कक्षा में सामुदायिक भावना को बढ़ावा देना चाहिए जिससे छात्र समर्थित, मूल्यवान और सीखने के लिए प्रेरित महसूस करें।

अंत में, शिक्षा में मानवीय तत्व छात्रों के सामाजिक और भावनात्मक विकास को पोषित करना है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षक छात्रों को भावनात्मक बुद्धिमत्ता के साथ-साथ लचीलापन विकसित करने में मदद करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं, जो उन्हें चुनौतियों का सामना करने और आज की दुनिया में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है, जहां प्रौद्योगिकी कभी-कभी चिंता या अलगाव का कारण बन सकती है।

इस डिजिटल युग में छात्रों के जीवन में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका

हर व्यक्ति किसी ऐसे शिक्षक को याद कर सकता है जिसने उसके जीवन पर गहरा प्रभाव डाला हो।

आज के डिजिटल युग में, छात्रों के जीवन को आकार देने में शिक्षकों की भूमिका पारंपरिक कक्षा-कक्षों से कहीं आगे जाती है। तकनीकी प्रगति और ऑनलाइन उपलब्ध विशाल जानकारी के साथ, शिक्षक डिजिटल दुनिया में छात्रों का मार्गदर्शन, प्रेरणा और मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह लेख इस डिजिटल युग में छात्रों के जीवन में शिक्षकों की बहुआयामी भूमिका पर गहराई से प्रकाश डालता है।

1. ज्ञान और कौशल का संवर्धन

शिक्षक ज्ञान और कौशल का प्राथमिक स्रोत होते हैं जो छात्र अपनी शैक्षणिक यात्रा के दौरान प्राप्त करते हैं। वे पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, मार्गदर्शन प्रदान करते हैं और ऐसे शिक्षण अनुभव प्रदान करते हैं जो छात्रों को बौद्धिक रूप से विकसित होने में सक्षम बनाते हैं। कुछ प्रमुख बिंदुओं में शामिल हैं :

2. सीखने के प्रति प्रेम का पोषण

शिक्षक एक प्रेरक वातावरण बनाते हैं जो जिज्ञासा और ज्ञान की प्यास को प्रोत्साहित करता है।

वे छात्रों को नई अवधारणाओं और विचारों का अन्वेषण करने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे सीखना एक रोमांचक साहसिक कार्य बन जाता है।

3. आलोचनात्मक सोच का विकास

डिजिटल युग में, जानकारी हमारी उंगलियों पर आसानी से उपलब्ध है। फिर भी, शिक्षक छात्रों को सूचना के इस विशाल सागर में आगे बढ़ने और आलोचनात्मक सोच कौशल विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. जिज्ञासा और अन्वेषण को प्रोत्साहित करना

शिक्षक जिज्ञासा को प्रेरित करते हैं और छात्रों को प्रश्न पूछने, नए विचारों की खोज करने और अपने आसपास की दुनिया के बारे में गंभीरता से सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

शिक्षक विचारोत्तेजक प्रश्न पूछकर और छात्रों को जानकारी का विश्लेषण और मूल्यांकन करने के लिए चुनौती देकर स्वतंत्र सोच को बढ़ावा देते हैं।

5. सामाजिक और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का निर्माण

यद्यपि तकनीक हमें कई तरह से जोड़ती है, यह अलगाव और अलगाव की भावना भी पैदा कर सकती है। शिक्षक छात्रों में सामाजिक और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

6. प्रेरणा की कला

महान शिक्षकों में अपने छात्रों को प्रेरित करने की लगभग जादुई क्षमता होती है। वे एक नीरस पाठ्यपुस्तक विषय को भी आकर्षक कहानियों, आकर्षक गतिविधियों और विषय के प्रति सच्चे उत्साह के साथ जीवंत कर सकते हैं।

प्रेरणा की यह चिंगारी एक छात्र की शैक्षणिक यात्रा को गहराई से प्रभावित कर सकती है, उन्हें और गहराई से अध्ययन करने और उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित कर सकती है।

7. आत्मविश्वास और लचीलापन का निर्माण

शैक्षणिक सफलता का मार्ग आसान हो सकता है। छात्रों को चुनौतियों, असफलताओं और आत्म-संदेह के क्षणों का सामना करना पड़ता है। एक अच्छा शिक्षक निरंतर समर्थन और प्रोत्साहन का स्रोत होता है, जो छात्रों को उनकी गलतियों से सीखने और दृढ़ता के लिए आवश्यक लचीलापन विकसित करने में मदद करता है। वे बड़ी और छोटी, सभी उपलब्धियों का जश्न मनाते हैं, उनमें उपलब्धि की भावना को बढ़ावा देते हैं और छात्रों का अपनी क्षमताओं में आत्मविश्वास बढ़ाते हैं।

8. डिजिटल नेविगेटर

- डिजिटल परिदृश्य में नेविगेट करना

- शिक्षक छात्रों को विशाल डिजिटल परिदृश्य में नेविगेट करने में मदद करते हैं, उन्हें डिजिटल साक्षरता कौशल, ऑनलाइन सुरक्षा और आलोचनात्मक सोच सिखाते हैं।

- वे प्रौद्योगिकी के जिम्मेदार उपयोग को प्रोत्साहित करते हैं और छात्रों को सीखने और संचार के लिए डिजिटल उपकरणों का लाभ उठाने में मार्गदर्शन करते हैं।

9. नवाचार को अपनाना

अब शिक्षक स्मार्ट बोर्ड, ई-कंटेंट और वर्चुअल क्लासरूम जैसी तकनीक का इस्तेमाल करना सीख रहे हैं। तकनीक के इस दौर



में पढ़ाने का तरीका भी बदला है और शिक्षकों का जीवन भी. शिक्षक अब पारंपरिक सिस्टम तक सीमित नहीं हैं बल्कि नए टूल्स से भी अवगत हो रहे हैं. आइए, जानते हैं कि ऐसे में शिक्षकों की जिम्मेदारी कितनी बदली है।

- शिक्षक बदलते डिजिटल परिदृश्य के अनुकूल ढलते हैं, जुड़ाव और सीखने के परिणामों को बढ़ाने के लिए अपने शिक्षण अभ्यासों में प्रौद्योगिकी को शामिल करते हैं।

- वे छात्रों के इंटरैक्टिव और गतिशील सीखने के अनुभव बनाने के लिए नवीन उपकरणों और संसाधनों को अपनाते हैं।

10. शैक्षणिक ज्ञान- शिक्षकों को उन शिक्षण सिद्धांतों, सिद्धांतों और रणनीतियों की गहरी समझ होनी चाहिए जो उनके डिजिटल शिक्षण डिजाइन और वितरण को प्रभावित करते हैं।

उन्हें यह जानना होगा कि अपने शिक्षण उद्देश्यों, विषयवस्तु, गतिविधियों और आकलनों को अपने छात्रों की आवश्यकताओं, प्राथमिकताओं और लक्ष्यों के साथ कैसे संरेखित करें। उन्हें यह भी जानना होगा कि उपयुक्त डिजिटल उपकरणों और संसाधनों का चयन और उपयोग कैसे करें जो उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण का समर्थन करें और उनके छात्रों के शिक्षण परिणामों को बेहतर बनाएँ।

11. तकनीकी कौशल

शिक्षकों में उन डिजिटल उपकरणों और प्लेटफॉर्म का उपयोग, एकीकरण और समस्या निवारण करने का कौशल और आत्मविश्वास होना चाहिए जिनका उपयोग वे और उनके छात्र डिजिटल शिक्षण के लिए करते हैं। उन्हें अपने डिजिटल शिक्षण परिवेश के लिए खोजे या बनाए गए डिजिटल संसाधनों और सामग्रियों का उपयोग, मूल्यांकन और अनुकूलन करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें अपने छात्रों को डिजिटल युग में सफल होने के लिए आवश्यक डिजिटल कौशल और साक्षरता, जैसे संचार, सहयोग, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और डिजिटल नागरिकता, का मॉडल बनाने और सिखाने में भी सक्षम होना चाहिए।

12. सरलीकरण कौशल

शिक्षकों के पास ऐसे कौशल और रणनीतियाँ होनी चाहिए जो डिजिटल शिक्षण अनुभवों को संवादात्मक, सहयोगात्मक और छात्रों की जरूरतों और प्रतिक्रिया के प्रति संवेदनशील बनाएँ। उन्हें डिजिटल दुनिया में अपने छात्रों के बीच सामुदायिकता, उपस्थिति और जुड़ाव की भावना पैदा करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें डेटा, प्रतिक्रिया और चिंतन का उपयोग करके डिजिटल संदर्भ में अपने छात्रों की सीखने की प्रगति और प्रदर्शन की निगरानी, समर्थन और मार्गदर्शन करने में भी सक्षम होना चाहिए।

13. मूल्यांकन कौशल

शिक्षकों के पास अपने डिजिटल शिक्षण डिजाइन और वितरण की प्रभावशीलता और प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए कौशल और विधियाँ होनी चाहिए। उन्हें अपनी डिजिटल शिक्षण गतिविधियों और मूल्यांकनों से प्राप्त आंकड़ों और साक्ष्यों को एकत्रित, विश्लेषण और व्याख्या करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें अपने मूल्यांकन के परिणामों का उपयोग अपने डिजिटल शिक्षण अभ्यास और परिणामों को बेहतर बनाने और अपने निष्कर्षों और सिफारिशों को अपने हितधारकों तक पहुँचाने के लिए भी करना चाहिए।

व्यावसायिक विकास

डिजिटल शिक्षण में अपनी भूमिका को बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों को निरंतर व्यावसायिक विकास में संलग्न होने के लिए प्रेरणा और अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है।

उन्हें प्रासंगिक और गुणवत्तापूर्ण डिजिटल शिक्षण अवसरों, जैसे ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वेबिनार, पॉडकास्ट, ब्लॉग या प्रैक्टिस कम्युनिटीज, तक पहुँचने और उनमें भाग लेने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें अपने अनुभवों, अंतर्दृष्टियों और चुनौतियों को अपने साथियों और मार्गदर्शकों के साथ साझा करने और उनकी सर्वोत्तम प्रथाओं और नवाचारों से सीखने में भी सक्षम

होना चाहिए। डिजिटल शिक्षा शिक्षक का स्थान नहीं लेती, बल्कि शिक्षक की भूमिका को विस्तारित और समृद्ध करने का एक तरीका है। अपने शैक्षणिक, तकनीकी, सुगमिकरण, मूल्यांकन और व्यावसायिक विकास कौशल विकसित करके, शिक्षक अपने छात्रों के लिए प्रासंगिक, आकर्षक और प्रभावशाली डिजिटल शिक्षण अनुभव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

निष्कर्ष

डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से कहीं अधिक व्यापक और बहुआयामी हो गई है। अब शिक्षक केवल ज्ञान का स्रोत नहीं, बल्कि छात्रों के सीखने की प्रक्रिया में एक मार्गदर्शक, तकनीकी सहयोगी और प्रेरक की भूमिका निभा रहे हैं। डिजिटल तकनीकों के उपयोग ने शिक्षा को अधिक सहज, रोचक और सुलभ बना दिया है, जिससे छात्रों की भागीदारी और समझ दोनों में वृद्धि हुई है। ऐसे में शिक्षक को भी निरंतर सीखते रहना और तकनीकी परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को अद्यतन करना आवश्यक हो गया है। इस प्रकार, आज का शिक्षक एक डिजिटल शिक्षाशास्त्री बनकर शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार, सृजनात्मकता और गुणवत्ता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. <https://www.prabhatkhabar.com/technology/teachers-day-2025-smart-teaching-technology>
2. <https://www.smilefoundationindia.org/blog/role-of-a-teacher-transformed-in-the-era-of-digital-learning/>
3. <https://www.thehighereducationreview.com/>
4. <https://questplus.in/blogs/the-essential-role-of-teachers-in-students-lives-in-this-digital-age/page/4/>
5. <https://www.linkedin.com/advice/3/what-role-teacher-digital-learning-skills-digital-learning->



स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भूमिका: राजस्थान के विशेष संदर्भ में

नारायण सिंह

शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग,
श्री खुशालदास विश्वविद्यालय,
पीलीबंगा, हनुमानगढ़ (राजस्थान)

सारांश (Abstract)

भारतीय लोकतंत्र की मूल आत्मा 'जनभागीदारी' पर आधारित है। यह जनभागीदारी तभी वास्तविक बनती है जब समाज के सभी वर्ग, विशेषकर महिलाएँ, निर्णय-प्रक्रिया में समान रूप से शामिल हों। 73वें और 74वें संविधान संशोधनों ने स्थानीय स्वशासन को संवैधानिक दर्जा देते हुए ग्रामीण और नगरीय स्तर पर महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया।

राजस्थान, जो परंपरागत और सामाजिक दृष्टि से जटिल राज्य रहा है, वहाँ महिलाओं की भागीदारी ने लोकतंत्र की जड़ों को गहरा किया है। आज राज्य की पंचायतों, नगरपालिकाओं और नगर परिषदों में महिला प्रतिनिधियों की संख्या ऐतिहासिक रूप से सबसे अधिक है। यह शोध पत्र राजस्थान के संदर्भ में स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भूमिका, उनकी चुनौतियाँ, अवसर, और नीति-प्रभाव का विश्लेषण करता है।

बीज शब्द: स्थानीय स्वशासन, महिला सशक्तिकरण, पंचायती राज, नारी नेतृत्व, राजस्थान, शासन सुधार

1. परिचय (Introduction)

भारतीय लोकतंत्र केवल केंद्र या राज्य स्तर पर सीमित नहीं है, इसका वास्तविक स्वरूप स्थानीय स्तर पर दिखाई देता है। स्थानीय स्वशासन संस्थाएँ - ग्राम पंचायत, पंचायत समिति, और जिला परिषद नागरिकों के जीवन से सीधे जुड़ी हैं। महिलाओं का इन संस्थाओं में प्रवेश भारतीय समाज में एक नई चेतना का संकेत है।

राजस्थान में यह परिवर्तन विशेष महत्व रखता है क्योंकि यहाँ सामाजिक ढाँचा पारंपरिक और पितृसत्तात्मक रहा है। लंबे समय तक निर्णय-प्रक्रिया पुरुषों के अधिकार क्षेत्र में रही, किंतु 1990 के दशक में संवैधानिक सुधारों के बाद महिलाएँ पंचायत स्तर पर नीतिनिर्माण में भाग लेने लगीं।

स्थानीय शासन में महिला प्रतिनिधियों ने न केवल प्रशासनिक दक्षता दिखाई, बल्कि पारदर्शिता और जनहित की प्राथमिकता को भी नया आयाम दिया है।

2. अध्ययन का उद्देश्य एवं महत्व (Objectives and Significance)

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य हैं—

1. राजस्थान में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व की स्थिति का विश्लेषण करना।

2. यह समझना कि क्या आरक्षण ने महिलाओं को वास्तविक सशक्तिकरण प्रदान किया है।
3. सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं के सामने आने वाली बाधाओं की पहचान।
4. नीति और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन।

महत्व:

यह अध्ययन इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि राजस्थान में महिलाओं का योगदान केवल सांकेतिक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का साधन बन गया है। पंचायत स्तर पर महिलाओं की उपस्थिति ने शासन में संवेदनशीलता, पारदर्शिता और सामाजिक उत्तरदायित्व को सशक्त किया है।

3. सैद्धांतिक ढाँचा (Theoretical Framework)

3.1 नारीवादी सिद्धांत (Feminist Theory)

नारीवादी सिद्धांत के अनुसार सत्ता-संरचना में महिलाओं की उपस्थिति केवल प्रतिनिधित्व नहीं, बल्कि शक्ति-संतुलन का प्रतीक है। पंचायतों में महिला आरक्षण ने 'समान अधिकार' को व्यावहारिक रूप दिया है। महिलाओं ने स्थानीय मुद्दों जैसे शिक्षा, जल-संरक्षण, स्वच्छता को प्राथमिकता देकर शासन की दिशा बदली है।

3.2 सहभागितामूलक शासन सिद्धांत (Participatory Governance)

यह सिद्धांत मानता है कि लोकतंत्र की सफलता नागरिकों की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करती है। राजस्थान में पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी ने न केवल प्रशासनिक उत्तरदायित्व बढ़ाया बल्कि निर्णय प्रक्रिया को अधिक सामुदायिक बनाया।

3.3 सामाजिक पूँजी सिद्धांत (Social Capital Theory - Robert Putnam)

पुटनम के अनुसार सामाजिक नेटवर्क, विश्वास और सहयोग किसी भी लोकतंत्र की सफलता के मूल तत्व हैं। महिला प्रतिनिधियों ने सामाजिक नेटवर्क को मजबूत किया है- विशेषकर स्व-सहायता समूहों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, और महिला मंडलों के माध्यम से। इससे न केवल शासन सशक्त हुआ बल्कि समाज में सहयोग और विश्वास का वातावरण बना।

4. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Context)

राजस्थान में स्वशासन की परंपरा बहुत पुरानी है। गाँवों में 'खाप पंचायतें' या 'ग्राम सभा' जैसी संस्थाएँ पहले से मौजूद थीं, परंतु वे मुख्यतः पुरुष-प्रधान थीं।

1959 में राजस्थान पहला राज्य बना जिसने पंचायती राज व्यवस्था को लागू किया। 1992 के संविधान संशोधन के बाद यह प्रणाली लोकतंत्र की तीसरी परत के रूप में स्थापित हुई। महिलाओं को 33% आरक्षण प्रारंभ में दिया गया, जिसे 2010 में बढ़ाकर 50% कर दिया गया।

यह सुधार राज्य की सामाजिक-राजनीतिक संरचना में ऐतिहासिक परिवर्तन लेकर आया।

5. राजस्थान में महिला सहभागिता का विकास (Women's Participation in Rajasthan)

राजस्थान में पंचायत चुनावों ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में ठोस संकेत दिए हैं। नीचे तालिका 1 से यह प्रवृत्ति स्पष्ट होती है:

वर्ष	कुल पंचायत प्रतिनिधि	महिला प्रतिनिधि	प्रतिशत (%)
2010	1,04,317	47,860	45.8
2015	1,13,245	55,100	48.6
2021	1,21,370	68,500	56.4

(स्रोत: राजस्थान निर्वाचन आयोग एवं सुजस पोर्टल, 2024)

यह आँकड़े दिखाते हैं कि महिलाओं ने अब केवल भागीदारी नहीं, बल्कि नेतृत्व की भूमिका निभाई है।

6. सरकारी योजनाएँ और नीतियाँ (Government Schemes and Policies)

1. इंदिरा महिला शक्ति योजना (2019): महिलाओं को आर्थिक स्वावलंबन और उद्यमिता की दिशा में प्रोत्साहित किया गया।

2. महिला समृद्धि अभियान (2021): ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को वित्तीय साक्षरता और नेतृत्व प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

3. मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना (2020): महिलाओं को सूक्ष्म उद्योगों हेतु ऋण और तकनीकी सहायता।

4. राजस्थान महिला नीति 2021: शासन, शिक्षा, और स्वास्थ्य में महिलाओं की समान भागीदारी के लिए रणनीतिक ढाँचा।

इन नीतियों ने पंचायत स्तर पर निर्णय प्रक्रिया को अधिक सहभागी और संवेदनशील बनाया।

7. महिला नेतृत्व के व्यवहारिक उदाहरण (Case Studies)

सीकर की किरण चौधरी (2020-22): उन्होंने पंचायत बजट का 40% शिक्षा और स्वच्छता पर व्यय कर गाँव को ओडीएफ बनाया।

नागौर की रुक्मिणी देवी: जल-संरक्षण परियोजनाओं और पौधारोपण अभियानों से पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाई।

झुंझुनू की कमला देवी: स्व-सहायता समूहों को संगठित कर आर्थिक आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश की।

इन उदाहरणों से सिद्ध होता है कि महिला नेतृत्व केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि परिवर्तनकारी है।

8. प्रमुख चुनौतियाँ (Major Challenges)

1. पितृसत्तात्मक मानसिकता: कई स्थानों पर पुरुष प्रतिनिधि (सरपंच पति या प्रॉक्सी) अभी भी निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

2. शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी: तकनीकी जानकारी के अभाव में योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन कठिन होता है।

3. आर्थिक निर्भरता: सीमित वित्तीय संसाधन निर्णय स्वायत्तता को प्रभावित करते हैं।

4. राजनीतिक दबाव: दलगत राजनीति के कारण महिलाएँ स्वतंत्र निर्णय नहीं ले पातीं।

5. सामाजिक असुरक्षा: महिला नेताओं को कभी-कभी सामाजिक विरोध और असहयोग का सामना करना पड़ता है।

9. सुधार के सुझाव (Recommendations)

1. महिला प्रतिनिधियों के लिए नियमित प्रशासनिक और डिजिटल प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाए।
2. स्थानीय निकायों में महिला परामर्श केंद्र (Helpdesk) स्थापित किए जाएँ।
3. पंचायत बजट में 30% निधि महिला कल्याण कार्यों के लिए आरक्षित की जाए।
4. शैक्षिक और तकनीकी साझेदारी कार्यक्रम प्रारंभ किए जाएँ ताकि महिलाएँ आधुनिक शासन तकनीकों से जुड़ सकें।
5. महिला सरपंचों के कार्य का मूल्यांकन और पुरस्कृत करने के लिए राज्य स्तरीय मान्यता प्रणाली विकसित की जाए।

10. निष्कर्ष (Conclusion)

राजस्थान में स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भूमिका अब नीति की आवश्यकता नहीं, बल्कि सामाजिक वास्तविकता बन चुकी है। उन्होंने अपनी संवेदनशीलता, प्रतिबद्धता और नेतृत्व क्षमता से पंचायतों की दिशा बदली है।

महिलाओं के प्रतिनिधित्व ने शासन में पारदर्शिता, समावेशन और उत्तरदायित्व को नई ऊँचाइयाँ दी हैं। राजस्थान का अनुभव स्पष्ट करता है कि यदि अवसर और संसाधन दिए जाएँ तो महिलाएँ शासन की सशक्त धुरी बन सकती हैं।

भविष्य में शिक्षा, प्रशिक्षण और तकनीकी सहयोग के माध्यम से महिला नेतृत्व और अधिक प्रभावी होगा।

सन्दर्भ सूची (Reference)

1. राजस्थान सरकार। (2024)। सुजस पोर्टल प्रतिवेदन: स्थानीय शासन में महिला सशक्तिकरण। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग।
2. पंचायती राज मंत्रालय। (2023)। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की स्थिति। भारत सरकार।
3. राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान। (2022)। लिंग और शासन भारत में: पंचायती राज का अध्ययन।
4. पुटनम, आर. डी. (1993)। लोकतंत्र को कार्यशील बनाना: आधुनिक इटली में नागरिक परंपराएँ। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. सिंह, एस. (2020)। स्थानीय शासन के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण: राजस्थान का एक प्रकरण अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज, 45(2), 120-138।
6. यूएनडीपी इंडिया। (2021)। ग्रामीण भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम।
7. विश्व बैंक। (2022)। लिंग समानता और भारत में शासन सुधार। द वर्ल्ड बैंक ग्रुप।



Etymology in Puranas

With special reference to Srimad Bhagavatam

Vidwan NSM Ramkumar

Asst. Professor & HoD, Department of Samskritam
BMSCW, Bangalore

Dr. N.S. Suresh

Asst. Professor
Dept. of Samskritam
BMSCW, Bangalore

Introduction:

The Six Vedāṅga-s :

The six Vedāṅga-s are literally called the limbs of *Veda Puruṣa*. They are –

शिक्षा व्याकरणं छन्दः निरुक्तं ज्यौतिषं तथा ।

कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुः मनीषिणः ॥ (अ.को. 1.6.177)

Śikṣā, Vyākaraṇam, Chandas, Niruktam, Jyoutiṣam and Kalpa. These help us in interpretation and right understanding of the Veda-s.

Niruktam and its Significance - *Niruktam*, written by *Yāska Mahārṣi*, which is described as the 'Ears' of the Veda Puruṣa, is the earliest available technical treatise ever in the history of human civilization is inspired by Vedic texts. Hailed as the best treatment of linguistics, Niruktam also finds its source in Veda-s. This is the व्याख्यान or commentary of पञ्चाध्यायी-निघण्टु written by *Kaṣyapa Mahārṣi*.

Nirukta is concerned with the meaning of a word, more than the form, but confines itself to the Vedic usage. निर्-उपसर्गः, वच-परिभाषणे – निर्दुष्टम् / निश्चयेन उक्तम् इति निरुक्तम् । Niruktam means that which is said fully, completely and with firmness.

The scope of grammar is wider but the reach is limited. On the other hand, Nirukta's reach is deeper but the scope is limited. If Vyākaraṇa deals with the procedure part of the formation of the word, Nirukta deals with the purpose part of the word. Knowledge of both Vyākaraṇa and Nirukta is therefore necessary for the right interpretation and understanding of the mantra. Therefore it is said - तद् इदम् विद्या-स्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्यम्। (या. नि. 1.15). Completeness of Vyākaraṇa is found in Niruktam.

Nirvachanas in Bhagavata – Based on the principles of Etymology enumerated by Yaska maharshi, the scope may be extended to puranas, epics and kavyas also. Bhagavata, gives etymologies of many words. Some are given in this paper.

1. विष्णुरातः – रातो वोऽनुग्रहार्थाय विष्णुना प्रभविष्णुना ॥1.12.16 तस्मान्नाम्ना विष्णुरात इति लोके बृहच्छ्रुवाः। 1.12.17.
The Almighty Lord Vishnu, in order to shower His grace on you (Yudhishtira) preserved it by saving this child. Hence he will be known in this world by the name of Vishnurata (one who has been saved by Lord Vishnu विष्णुना रातः रक्षितः).
2. परीक्षितः – स एष लोके विख्यातः परीक्षिदिति यत्प्रभुः। गर्भे दृष्टमनुध्यायन् परीक्षेत नरेष्विह ॥ 1.12.30
It was this very child who was known all over the world by the name of Parikshith, because this gifted boy used to look for, among those whom he saw, the Person who he had perceived in his mother's womb and who always lingered in his thought. (परि+ईक्ष+क्त)
3. धीरः – गतस्वार्थमिमं देहं विरक्तो मुक्तबन्धनः। अविज्ञातगतिर्जहात् स वै धीर उदाहृतः ॥1.13.25
Free from worldly attachment and shaking off all bondage, he who drops off his body, which is no longer of any use to him, away from and unknown to his kith and kin, he alone is spoken as WISE, DETERMINED. विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः – कुमारसम्भवम्, कालिदासः
4. नरोत्तमः – यः स्वकात्परतो वेह जातनिर्वेद आत्मवान्। हृदि कृत्वा हरिं गेहात् प्रव्रजेत् स नरोत्तमः ॥ 1.13.26
Fed up with this world either by himself or by another's precept and with a subdued mind, and holding Sri Hari in his heart, he who leaves his home (as a recluse) is foremost among men. (नरेषु उत्तमः, उत्+तमः = He who has gone beyond the darkness of ignorance)
5. सप्तस्रोतः – स्रोतोभिः सप्तभिर्या वै स्वर्धुनी सप्तधा व्यधात्। सप्तानां प्रीतये नाना सप्तस्रोतः प्रचक्षते ॥ 1.13.51
The Ganga (the celestial river) has for the pleasure of the seven celebrated sages (Saptarishis) split herself into seven streams to flow through seven different channels, which they call Saptasrota.
6. हरिः – लोकत्रयस्य महतीमहरद् यदार्तिं स्वायम्भुवेन मनुना हरिरित्यनूक्तः ॥ 2.7.2
When (as Indra) He relieved the great affliction of all the three worlds, He was renamed by Swayambhuva (His maternal grandfather) as Hari (the Reliever of distress हृ - हरणे).
7. दत्तः – अत्रैरपत्यमभिकाङ्क्षत आह तुष्टो दत्तो मयाहमिति यद् भगवान् स दत्तः । 2.7.4
Pleased with the sage Atri (one of the seven sages who held the office of the Saptarishis during the first manvantara and was so-called because he had transcended the three Gunas of modes of Prakriti), who sought from Him a son, He said, “I have given(दा + क्त) Myself as a son to you” That is why the Lord became known by the name of Datta(दा + क्त) (when He was born as a son of Atri).
8. रुद्रः – यदरोदीः सुरश्रेष्ठ सोद्वेग इव बालकः। ततस्त्वामभिधास्यन्ति नाम्ना रुद्र इति प्रजाः ॥ 3.12.10
Since you wept as a frightened child, O chief of gods, hence people will call you by the name of Rudra (one who weeps).
9. निषादः – काककृष्णोऽतिह्रस्वाङ्गो ह्रस्वबाहुर्महाहनुः। ह्रस्वपात्रिग्ननासाग्रो रक्ताक्षस्ताम्रमूर्धजः ॥4.14.44

तं तु तेऽवनतं दीनं किं करोमीति वादिनम्। निषीदेत्यब्रुवंस्तात स
निषादस्ततोऽभवत्॥4.14.45

When the Rishis churned the thigh of the deceased king Vena, there arose a dwarfish man, dark as a crow, with exceptionally short limbs and particularly short arms and legs, large jaws, a flat nose, blood-shot eyes and red hair. To him, who was bent low and meek too, and who said, “What shall I do?” the Brahmanas said, “Sit down” That is why, dear child, he came to be known by the name of Nishaada (नि+षट्)

10. मार्तण्डः – मृतेऽण्ड एष एतस्मिन् यदभूत्ततो मार्तण्ड इति व्यपदेशः॥5.20.44
Because the sun-god appeared in this lifeless (inanimate) egg (as the Cosmic Being), the appellation of Martanda (मृते अण्डे भवः) has been applied to him (ever) since.
11. हिरण्यगर्भः – हिरण्यगर्भ इति यद्विरण्याण्डसमुद्भवः॥5.20.44
He is (also) called Hiranyagarbha inasmuch as he (as the sun) represents the embryo (located) in (the centre of) the golden egg (of this universe).
12. मान्धाता – कंधास्यति कुमारोऽयं स्तन्यं रोरूयते भृशम्। मां धाता वत्स मा रोदीरितीन्द्रो देशिनीमदात्॥ 9.6.31
When the babe cried much (for being suckled) and the Brahmanas anxiously inquired: “Whom will this prince suck?”, Indra put into the babe’s mouth his index finger (dripping with nectar), saying “The babe will suck me (मां धाता); do not cry my child” (Hence the babe became known as Mandhaataa).
13. त्रसद्स्युः – त्रसद्स्युरितीन्द्रोऽङ्गं विदधे नाम तस्य वै। यस्मात् त्रस्यन्ति ह्युद्विग्ना दस्यवो रावणादयः॥9.6.33
Indra gave Mandhaataa another name Trasyaddasyu (the terror of miscreants) inasmuch as villains like Ravana were very much afraid of him and felt greatly agitated because of him.
14. जनकः / वेदेहः / मिथिलः – अराजकभयं नृणां मन्यमाना महर्षयः। देहं ममन्थुः स्म निमिः कुमारः समजायत॥9.13.12
जन्मना जनकः सोऽभूद् वेदेहस्तु विदेहजः। मिथिलो मथनाज्जातो मिथिला येन निर्मिता॥9.13.13
(perceiving the risk of anarchy for the people; the great sages (who officiated as priests at the sacrificial performance of Nimi) churned the body of the king, whence a son was born (to him).
जनक - By virtue of his extraordinary birth (or by reason of his being he progeitor of a new line of kshatriya kings), the prince was called Janaka;
विदेहः - born in the line of king Nimi (who remained without a body), again, he became known as Vaideha(son of videha वि-देह)
मिथिलः - Sprung from the process of churning and further because (the city of) Mithilaa was built by him, he came to be known as Mithila.
15. देवरातः – यो रातो देवयजने देवैर्गाधिषु तापसः। देवरात इति ख्यातः शुनःशेषः स भार्गवः॥ 9.16.32
Saved by Varuna and other gods in a sacrificial performance meant to propitiate the god Varuna, the ascetic boy became celebrated among the scions of Gadhi by the name Devaraata (देवैः रातः रक्षितः)
16. भरद्वाजः – मूढे भरद्वाजमिमं भरद्वाजं बृहस्पते। यातौ यदुक्त्वा पितरौ भरद्वाजस्ततस्त्वयम्॥ 9.20.38
Brhaspati says to Mamata – O foolish one, nourish (Bhara भर) this child, born of two (द्वा –जम् –द्वाभ्यां जातम्) born of two namely myself and my brother, because begotten by me through my brother’s wife). (Mamata replied) O Brihaspati, nourish this child

(yourself), born (as it is) of us two (and particularly because I was forcibly impregnated by you). Since having spoken thus, the two (father and mother) went away (leaving the child), hence this child is (named) Bharadwaja.

17. पञ्चालाः – भर्माश्वस्तनयस्तस्य पञ्चासन् मुद्गलादयः॥9.21.31
यवीनरो बृहदिषुः काम्पिल्यः संजयः सुताः। भर्माश्वः प्राह पुत्रा मे पञ्चानां रक्षणाय हि॥ 9.21.32
विषयाणामलमिमे इति पञ्चालसंज्ञिताः॥ 9.21.33
भर्माश्व had five sons – Mudgala, Yavinara, Brhadishu, kaampilya and Sanjaya. भर्माश्व said – These five sons of mine are competent enough to protect five lands. Hence they were known as Panchalas
18. मौद्गल्यः - मुद्गलाद् ब्रह्म निर्वृत्तं गोत्रं मौद्गल्यसंज्ञितम् ॥9.21.33
From Mudgala sprang up a line of Brahmanas called Maudgalyas.
19. शन्तनुः – अभवच्छन्तनू राजा प्राङ्महाभिषजसंज्ञितः। यं यं कराभ्यां स्पृशति जीर्णं यौवनमेति सः॥9.22.13
शान्तिमाप्नोति चैवाग्र्यां कर्मणा तेन शन्तनुः॥ 9.22.14
Shantanu, who was called महाभिषक् (a great physician) in his previous birth, became the king. (Even in that life) whatever old man he touched with his hands would regain his youth and also experience great relief. Through this act of his he came to be known as Shantanu (शं तनुते - affording relief to one's body).
20. संकर्षणः/ रामः/बलः – गर्भसंकर्षणात् तं वै प्राहुः संकर्षणं भुविरामेति लोकरमणात् बलं बलवदुच्छ्रयात्॥ 10.2.13
People call him Sankarshana (सं+कृष्+णिच्)particular because of his being taken out of the womb (of Devaki);
By the name of Raama because of his giving delight to the world (रमयति इति रामः, रमन्ते योगिनो यत्र)
And बल because of his pre eminence among those possessed of strength.

References –

1. Srimad Bhagavadgita Published by Geeta Press, Ghorakhpur
2. *Nirukta and Nighaṇṭu, Yāska's , Volume I and II*, Tanjore Maharaja Serfoji's Sarasvati Mahal Library, Thanjavur, 1974.
3. Sarup, Lakshman, *The Nighaṇṭu and The Nirukta of Śrī Yāskācārya*, Motilal Banarasi Das Publishers Pvt Ltd, Delhi, Reprint 2009.
4. Mahāmahopādhyāya Śrī Chajjūrāmaśāstri and Puṇḍit Devaśarmaśāstrī and Hindi commentary by Ācārya Śrī Bhagīratha Śarmā, Yāska's Niruktam with Sanskrit and Hindi Commentaries, Durgācārya Tīkā, Published by Meharcand Lacchmandās Publicationa, New Delhi, 2006.



स्वदेश दीपक की रचनाओं में नये विमर्शों का उत्थान

श्रीमती लक्ष्मी साहू

(शोधार्थी) फीरोज गाँधी कॉलेज,

रायबरेली, उ०प्र०

मो० 9793300339

ईमेल: laxmisahu979@gmail.com

प्रस्तावना

स्वदेश दीपक हिंदी साहित्य के उन विरले रचनाकारों में हैं, जिन्होंने बीसवीं सदी के उत्तरार्ध और इक्कीसवीं सदी के आरंभिक दशकों में भारतीय समाज में हो रहे गहरे बदलावों को अपनी रचनाओं में अत्यंत संवेदनशीलता, ईमानदारी और गहराई के साथ अभिव्यक्त किया। उनके साहित्य में सामाजिक यथार्थ, व्यवस्था का विद्रूप, मनुष्य की टूटती चेतना, और हाशिए के समुदायों की आवाज़ के साथ-साथ अनेक नए विमर्शों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। ये नए विमर्श वे विचारधारात्मक दृष्टिकोण हैं, जो लंबे समय तक साहित्य की मुख्यधारा से अनुपस्थित रहे— जैसे दलित विमर्श, मानसिक स्वास्थ्य, नारी विमर्श, हाशिए के समुदायों की आवाज़, और सामाजिक न्याय। स्वदेश दीपक ने इन विषयों को अपने साहित्य में इस तरह पिरोया कि वे पाठक की चेतना को झकझोरते हैं और उसे अपने समय, समाज और व्यवस्था की नई व्याख्या के लिए प्रेरित करते हैं।

1. दलित विमर्श

स्वदेश दीपक की सबसे महत्वपूर्ण नाट्य रचना “कोर्ट मार्शल” में दलित विमर्श अत्यंत सशक्त रूप में सामने आता है। यह नाटक एक सैनिक रामचरण की कहानी है, जो उच्च जाति के अधिकारियों द्वारा लगातार अपमानित और प्रताड़ित किए जाने पर उन्हें गोली मार देता है। यह घटना केवल एक सैनिक द्वारा किया गया अपराध नहीं है, बल्कि यह उस समाज का प्रतिशोध है जिसने सदियों से एक वर्ग को न्याय, सम्मान और अवसर से वंचित किया है। इस नाटक के माध्यम से स्वदेश दीपक ने यह सवाल उठाया है कि क्या कोई व्यवस्था इतनी निष्पक्ष है कि वह न्याय दे सके? या वह भी जाति, वर्ग और सत्ता के पूर्वग्रहों से ग्रसित है? ‘कोर्ट मार्शल’ में दलित अस्मिता का वह स्वर है, जो किसी आरक्षण के दस्तावेज़ या आंदोलनों की सीमा से आगे जाकर, एक सांस्कृतिक और न्यायिक प्रतिरोध का रूप ले लेता है। यह नाटक दिखाता है कि दलित विमर्श अब करुणा या दया का नहीं, बल्कि समानता और स्वाभिमान की मांग का विमर्श है।

‘कोर्ट मार्शल’ के संवाद— “एक सूबेदार की औकात क्या होती है? वो भी नीची जाति का...” — समाज में व्याप्त जातिगत विषमता और सत्ता संरचना की विडंबना को उजागर करते हैं। यह नाटक न केवल सेना जैसी सशक्त और अनुशासित संस्था के भीतर मौजूद भेदभाव को सामने लाता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि किस प्रकार सामाजिक अन्याय की जड़ें हमारी संस्थाओं में गहराई तक फैली हुई हैं। स्वदेश दीपक ने इस नाटक के माध्यम से दलित अस्मिता, सामाजिक न्याय और व्यवस्था

की विफलताओं को साहित्यिक विमर्श का केंद्र बना दिया।

‘कोर्ट मार्शल’ में न्यायिक प्रक्रिया, सत्ता के दुरुपयोग और जातिगत भेदभाव के प्रश्नों को जिस गहराई से उठाया गया है, वह हिंदी नाट्य साहित्य में एक नया मोड़ है। यह नाटक पाठकों और दर्शकों को यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हमारी न्यायिक और सामाजिक व्यवस्थाएँ सचमुच निष्पक्ष हैं, या वे भी जाति और वर्ग के पूर्वग्रहों से ग्रसित हैं। स्वदेश दीपक ने इस नाटक के माध्यम से दलित विमर्श को केवल एक सामाजिक मुद्दा नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और नैतिक प्रश्न बना दिया है।

2. मानसिक स्वास्थ्य का विमर्श

स्वदेश दीपक का लेखन एक और महत्वपूर्ण विमर्श को हिंदी साहित्य में लाता है— वह है मानसिक स्वास्थ्य का विमर्श। उनकी आत्मकथात्मक कृति “मैंने मांडू नहीं देखा” इस दृष्टि से हिंदी साहित्य की सबसे साहसिक रचनाओं में से एक है। मानसिक रोग, अवसाद, समाज से कटाव, और अस्तित्व के संकट जैसे विषय लंबे समय तक हिंदी साहित्य में उपेक्षित रहे, क्योंकि इन्हें या तो सामाजिक कलंक माना गया या मनोरोगियों का मामला समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया गया। लेकिन स्वदेश दीपक ने इस कृति में अपनी ही मानसिक स्थिति को एक ‘प्रस्तावना’ के रूप में प्रस्तुत किया न कि उसे छुपाया या शर्मिंदगी के साथ व्यक्त किया। यह लेखन केवल एक व्यक्ति की व्यथा नहीं, बल्कि उस समाज की बीमारी का दस्तावेज़ है जो भावनात्मक रूप से अपंग होता जा रहा है, जहाँ संवेदनशीलता को पागलपन और सोच को विद्रोह कहा जाने लगा है। इस आत्मकथा ने हिंदी साहित्य में मानसिक स्वास्थ्य पर नए विमर्श की शुरुआत की और पाठकों को यह समझने पर मजबूर किया कि अंदर का युद्ध बाहर से अधिक खतरनाक होता है।

उनकी कहानी ‘काल कोठरी’ मानसिक पीड़ा और समाज की बेरुखी को दर्शाते हुए उस वर्ग की पीड़ा को उजागर करती है, जो न तो सामाजिक रूप से स्वीकृत है और न ही साहित्य में पहले प्रमुखता से स्थान पाया था। लेखक ने लिखारू धें मर चुका हूँ, बस साँसें चल रही हैं.....। दुनिया अब भी मेरी दीवारों से टकराकर लौट जाती है.....। यह कथन मानसिक अवसाद और अस्तित्व की विडंबना को दर्शाता है। स्वदेश दीपक ने मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे को न केवल व्यक्तिगत पीड़ा के रूप में, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक विमर्श के रूप में प्रस्तुत किया है।

‘मैंने मांडू नहीं देखा’ में लेखक ने अपने मानसिक संघर्ष, अवसाद, और अस्तित्व के संकट को जिस ईमानदारी और संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है, वह हिंदी साहित्य में दुर्लभ है। इस कृति ने मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे को साहित्यिक विमर्श का हिस्सा बनाया और पाठकों को यह सोचने पर मजबूर किया कि मानसिक रोग केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक समस्या भी है।

3. नारी विमर्श

स्वदेश दीपक के साहित्य में नारी विमर्श प्रत्यक्ष रूप से प्रमुख नहीं दिखता, लेकिन उनकी कहानियों और नाटकों में स्त्री की स्थिति को गहराई से महसूस किया जा सकता है। स्वदेश दीपक के साहित्य में स्त्री पात्रों की उपस्थिति, उनकी संवेदनशीलता, और उनके संघर्षों को जिस गहराई से चित्रित किया गया है, वह हिंदी साहित्य में नारी विमर्श को एक नई दिशा देता है। उनकी कहानियों में स्त्रियाँ केवल पीड़ित नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करने वाली, स्वप्न देखने वाली, और कभी-कभी प्रतिरोध करने वाली के रूप में चित्रित हैं। स्त्री की पीड़ा, उपेक्षा और चाहतों को उन्होंने मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया, जिससे वह एक हाशिए की आवाज़ बनकर उभरती है।

4. हाशिए के समुदायों की आवाज़ और सामाजिक न्याय

स्वदेश दीपक का साहित्य हाशिए पर खड़े लोगों की आवाज़ है। चाहे वह दलित हों, मानसिक रूप से संघर्ष कर रहे लोग हों, या वे नागरिक जो ‘मुख्यधारा’ की अपेक्षाओं में फिट नहीं बैठते। उनके पात्र प्रायः टूटे हुए, समाज द्वारा अस्वीकृत, और आत्मसंघर्ष से पीड़ित होते हैं, लेकिन वे अपने अस्तित्व के लिए जूझते हैं। उनके लेखन में प्रतिरोध का स्वर मौन होता है, लेकिन वह मौन पाठक के मन में सबसे अधिक प्रतिध्वनित होता है। यही कारण है कि वे हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक

और वैचारिक प्रतिरोध के एक सशक्त स्वर के रूप में स्थापित हुए।

स्वदेश दीपक के साहित्य में हाशिए के समुदायों की आवाज़ को जिस गहराई और संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है, वह हिंदी साहित्य में एक नया विमर्श है। उन्होंने उन लोगों की पीड़ा, संघर्ष और प्रतिरोध को साहित्यिक विमर्श का हिस्सा बनाया, जिन्हें समाज ने लंबे समय तक हाशिए पर रखा था। उनके पात्र समाज की मुख्यधारा में फिट नहीं बैठते, लेकिन वे अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हैं और अपने अधिकारों की मांग करते हैं।

5. समकालीन विमर्शों का विस्तार

स्वदेश दीपक की अन्य रचनाओं में भी नए विमर्शों का विस्तार मिलता है। उनके नाटकों, कहानियों और आत्मकथात्मक लेखन में समाज के उपेक्षित वर्गों, मानसिक रूप से संघर्ष कर रहे लोगों, और स्त्रियों की पीड़ा और संघर्ष को जिस गहराई से प्रस्तुत किया गया है, वह हिंदी साहित्य में दुर्लभ है। उन्होंने अपने साहित्य में न केवल सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत किया, बल्कि उसे एक वैचारिक और सांस्कृतिक विमर्श का हिस्सा भी बनाया।

स्वदेश दीपक के साहित्य में नए विमर्शों का जो उदय हुआ है, वह हिंदी साहित्य की दिशा को एक नई वैचारिक गहराई देता है। उन्होंने उन विषयों को सामने लाने का साहस किया जिन्हें आमतौर पर नजरअंदाज़ कर दिया जाता था— मानसिक स्वास्थ्य, दलित अस्मिता, सामाजिक न्याय, भीतर का टूटना, सत्ता का अन्याय, और संवेदना का क्षरण। उनके पात्र हमारी आँखें खोलते हैं, उनकी कहानियाँ हमारे समय की परतें खोलती हैं, और उनकी आत्मकथा हमें स्वयं से मिलने का अवसर देती है। वे नए विमर्शों को केवल 'विषय' की तरह नहीं, बल्कि साहित्य की आत्मा की तरह प्रस्तुत करते हैं। जो पाठक को भीतर से बदल देती है।

निष्कर्ष

स्वदेश दीपक के साहित्य में नये विमर्शों का उत्थान हिंदी साहित्य के लिए एक निर्णायक मोड़ है। उन्होंने समाज के उपेक्षित, हाशिए पर खड़े और मानसिक स्तर पर पीड़ित वर्गों को साहित्य की मुख्यधारा में स्थान दिया। उनके साहित्य में मानसिक विक्षिप्तता, सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और न्यायिक विफलताओं जैसे ज्वलंत विषयों को उठाकर साहित्य में नए विमर्शों को जन्म दिया। उनके लेखन ने हिंदी साहित्य को न केवल समकालीन बनाया, बल्कि उसे सामाजिक चेतना और वैचारिक संघर्ष का सशक्त माध्यम भी बनाया। स्वदेश दीपक का साहित्य एक ऐसी चेतना को जन्म देता है, जो उत्पीड़ित वर्गों की पीड़ा को न केवल उजागर करता है, बल्कि पाठकों को संवेदना और प्रतिरोध की ओर प्रेरित भी करता है। इस तरह वे हिंदी साहित्य में नये विमर्शों के एक सशक्त वाहक बनकर उभरे हैं।

संदर्भ

1. दीपक, स्वदेश. कोर्ट मार्शल. राजकमल प्रकाशन, 1991;
2. दीपक, स्वदेश. मैंने मांडू नहीं देखा. वाणी प्रकाशन, 2003;
3. सिंह, रेखा. 'स्वदेश दीपक की कहानियों में स्त्री विमर्श.' आलोचना, 2010;
4. यादव, रामनिवास. 'हाशिए के लोग: स्वदेश दीपक का साहित्य' समकालीन भारतीय साहित्य, 2015;
5. दीपक, स्वदेश. काल कोठरी, वाणी प्रकाशन, 1999
6. स्वदेश दीपक का साहित्य, विविध आयाम, डॉ सुरेश कुमार, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली
7. नाटककार स्वदेश दीपक, श्वेता कुमारी, अमन प्रकाशन, कानपुर;
8. दीपक, स्वदेश जी की अन्य रचनाएं और लेख;
9. अन्य पत्र एवं पत्रिकाएँ।



प्राकृतिक आपदाओं का चित्रण - एक साहित्यिक जिम्मेदारी

डॉ. टी. अरुणा कुमारी

विभागाध्यक्ष एवं सह आचार्य

हिन्दी विभाग, शासकीय महाविद्यालय स्वायत्त,

पाल्वंवा, जिला भद्राद्री कोत्तगूडेम

arunakumari-tata@gmail.com

Mobile no- 9440973384

सार

प्राकृतिक संसाधन सीमित होते हैं पर उनका विनिमय करने वाले प्राणी सबसे अधिक। प्राकृतिक संसाधनों का विनिमय मात्र आवश्यकता के अनुसार करना है वरना प्राकृतिक प्रकोप पबलने की स्थिति उत्पन्न होती है। भूचाल या भूस्खलन, ज्वालामुखी, बाढ़, आग का फैलाव, हरिकेन, टॉरनेडो, टायफून, चक्रवात, एलनिनो अकाल या सूखा आदि प्रमुख प्राकृतिक आपदाएं हैं। प्राकृतिक आपदाओं के अनेक परिणाम होते हैं। कुछ प्रकार के जीव जंतु, पौधे, प्रजातियों का नष्ट होता है। हिन्दी साहित्यकार अपने साहित्य में प्राकृतिक आपदाओं का चित्रण विभिन्न संदर्भों में किया है। इनको आप मानवीय जीवन की अनिश्चितता, अस्थिरता एवं संघर्षशीलता के प्रतीक मानते हैं। हिन्दी के कवि एवं लेखक प्राकृतिक आपदाओं के त्रासदी को शब्दबद्ध करते हैं। विकास से विपत्ति को बंद करने का आयोजन करना होगा।

बीज शब्द : प्राकृतिक संसाधन, प्राकृतिक आपदा, साहित्यिक चित्रण, निराकरण

प्राकृतिक आपदाओं का चित्रण - एक साहित्यिक जिम्मेदारी

प्राकृतिक संसाधन सीमित होते हैं पर उनका विनिमय करने वाले प्राणी सबसे अधिक। संसाधनों में कुछ जैविक, कुछ अजैविक होते हैं। जलवायु, मिट्टी, पर्यावरण, सूरज, ग्रह, नक्षत्र आदि सबको हम प्राकृतिक संसाधन के रूप में ही स्वीकारते हैं। उपलब्धि के आधार पर संसाधन चार प्रकार के हैं-सर्वत्र उपलब्ध हवा, जल-आदि। सामान्य रूप से उपलब्ध मिट्टी, खेत, बाग आदि। सीमित उपलब्ध सोना, यूरेनियम आदि, केंद्रित उपलब्ध -शीशम का पेड़, सुगंध पेड़-आदि। संसाधनों को कभी नवीनीकरण कर सकते हैं अर्थात् आधुनिक युगानुकूलन उपयोग में ला सकते हैं। कुछ संसाधनों का नवीनीकरण नहीं कर सकते, कुछ के पुनर्विनिमय भी कर सकते हैं। मानव, पशु-मवेशी, वनस्पति सब इन्हीं संसाधनों पर आधारित होते हैं। मानव के बौद्धिक विकास से इन प्राकृतिक संसाधनों में बदलाव तेजी से हो रहा है। प्राकृतिक संसाधनों को पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत के रूप में सुरक्षित सौंपना है इसलिए मानव समाज को इनका विनिमय मात्र आवश्यकता के अनुसार करना है वरना प्राकृतिक प्रकोप पबलने की स्थिति उत्पन्न होती है।

जन शून्य प्रदेश में भूमि, सागर में उत्पन्न होने वाले उपद्रवों को प्राकृतिक प्रकोप कहते हैं तो जन आवास में उत्पन्न उपद्रवों को प्राकृतिक आपदाएँ। अनादि काल से मानव इनके सामने विवश होता जा रहा है। भूचाल या भूस्खलन, ज्वालामुखी, हिमचलन या हिमपात, पहाड़ों का धसकना या गिरना, भूतल जल स्रोतों की कमी, भूक्षरण, सूखा, मरुस्थलीकरण, मरुभूमीकरण

आदि भूमि पर उत्पन्न आपदाएँ हैं।

जल स्थानों में उत्पन्न आपदाएँ हैं बाढ़, सागरीय तूफान या सुनामी, मिट्टी का अपक्षरण, जलक्षरण आदि। वन प्रदेशों में और जनावासों में आग का फैलाव एक भयंकर उत्पात है। वायुगत आपदाओं के अंतर्गत हरिकेन, टॉरनेडो, टायफून, चक्रवात, एलनिनो को गिनते हैं। प्राकृतिक आपदाएं एक से एक संलग्न हैं। भूचाल से बाढ़, ज्वालामुखी से मरुभूमीकरण का विकास होता है जो सुदूर भविष्य तक जैविक कार्य कालापों के लिए अवरोध खड़ा करता है।

प्राकृतिक आपदाओं के अनेक परिणाम होते हैं जैसे सामाजिक जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना, भौतिक जीवन उथल पुथल होना, तूफानों से महामारियों का फैलाव, उत्परिवर्तनों के कारण नए किटाणुओं, वायरस का आविर्भाव, जैविक क्रम में लड़खड़ापन, भूखंड एवं जल खंड के विशेष विचलन से आकृति में परिवर्तन, ओजोन परत पर छेद, परिवर्तित वातावरण, हरितगृह प्रभाव, तेजाबी वर्षा, ओले पड़ना, तापमान में बढ़ोती, ऊर्जा संकट, जल संकट, प्रदूषित वायु, मिट्टी की बंध्यता आदि आदि।

मानव पर, सरकारी तंत्र पर उसका घनत्व -अर्थात् दीर्घकालिक या अंशकालिक- किस हद तक प्रभाव छोड़ता है, उनकी आवृत्ति एवं अवधि, पूर्वानुमान की अवस्था आदि के अंतर्गत प्राकृतिक आपदाओं के प्रकारों को वर्गीकृत कर सकते हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि प्राकृतिक आपदाओं के कारणों में निर्ममता पूर्वक मानवीय क्रियाकलाप, अन्य जीव जंतुओं के कर्म, प्राकृतिक असंतुलन एवं असहजता, बांधों का निर्माण, वैश्विक संरचना के आधार जैसे ग्रह-नक्षत्र के गमन फल, भ्रमण फल आदि शामिल हैं।

यह तो सर्व विदित है कि साहित्य समाज का दर्पण है, अतः अत्यधिक संवेदनशील हिन्दी साहित्यकार अपने साहित्य में प्राकृतिक आपदाओं का चित्रण विभिन्न संदर्भों में किया है। कभी इनको जीवन की त्रासदी के रूप में दिखाया गया है, तो कभी प्रकृति के क्रोध एवं आगाह के रूप में चित्रित करते हैं। हिन्दी के महान साहित्यकारों ने प्राकृतिक आपदाओं के माध्यम से मानव जीवन का असंतुलन, प्रकृति के प्रति मानव के दुर्व्यवहार को मार्मिकता से प्रकटित करते हैं।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि प्रकृति को सदा सजीव पात्र के रूप में चित्रित करते हैं। प्रकृति क्रुद्ध होती है, तो कवि उसकी प्रलयकारी रूप, दहशत या भीषणता का सशक्त संवेदनशील चित्र खींचते हैं। आप बाढ़, भूकंप, तूफान, सूखा, वर्षा, महामारी जैसे स्थितियों को प्रकृति का क्रोध और मानव के कर्मों का परिणाम समझते हैं। भक्तिकालीन कवि तुलसीदास, सूरदास आदि प्राकृतिक आपदाओं को दैवीय चेतावनी या आगामी संकेतों के रूप में प्रस्तुत करते हैं। तुलसीदास रंचरित मानस में सूखा के बुरे परिणामों को स्पष्ट करते हैं पंक न रेनु सोह असि धरनी पानी के सूखने से पंक या कीचड़ की कमी हो गई जिससे क्षुद्र जीव भी तड़पने लगे। जल संकोच बिकल भई मीना अर्थात् जल के संकोच या सूखने से मछलियाँ व्याकुल हो गई। बिहारी अकाल को सामाजिक आर्थिक विपन्नता माते हैं। विनाश और युद्ध के वर्णन में केशवदास और भूषण जैसे कवि भूकंप, प्रलय, तूफान आदि प्रतीकों का प्रयोग किया।

भूकंप या भूस्खलन

इसके दो प्रकार हैं -प्राकृतिक भूकंप एवं कृत्रिम भूकंप। भू चलन, भू पटल चालन आदि प्राकृतिक तौर पर संभावित हैं तो सुरंग एवं खान खोदना, जलाशयों का निर्माण, जल एवं गैस का फैलाव कृत्रिम भूकंप के कारण बनते हैं। भूचाल से मानव जाति का हनन, निर्माणों का ढेरा बन जाना, प्राकृतिक परिवेश का बदलाव, नगरों का नाश, दरारें पड़ना आदि नुकसान देखे जाते हैं। राजेन्द्र साहनी की कविता में भूकंप की नष्ट दायक परिणाम इस प्रकार हैं—

झूले की तरह धरती झूले
कच्चे पक्के कई घर मकान गिरे
मलवे में हजारों लोग दब मरे
चित्कार, कोहराम मचा है भारी
जान बचाने दौड़ रहे बच्चे नर-नारी (1)

सविता व्यास ने अपनी कविता में भी इसी भावना की पुष्टि दी—

धरती की हल्की सी अंगड़ाई ने
कितने घरों को जमींदोज कर दिया है
कितने बेगुनाहों को जिंदा दफन कर दिया है⁽²⁾
कवि रणजीत का मानना है
उखाड़ कर प्राणवाही पेड़ पौधे
बो दिए धुआँ उगलते कल कारखाने
मैं थोड़ा हिली तो
लो भरभराकर गिर गए
तुम्हारे घर ⁽³⁾

आधुनिक काल के कवि प्राकृतिक आपदाओं को सामाजिक विडंबना, मानवीय और पर्यावरणीय आवश्यकता के संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं।

ज्वालामुखी

भू ताप एवं रासायनिक क्रियाओं के कारण पृथ्वी के अंदर उमस का उत्पन्न होने पर वह ज्वालामुखी बनकर तीव्र गति से भूमि के परतों को चीरकर बाहर उभरता है। ज्वालामुखी के तीन प्रकार हैं सक्रिय, सुप्त एवं शांत। रेडियो धर्मी तत्वों के आपसी संघर्ष, भूगत जल एवं गैसों के कारण भी ज्वालामुखी उभर पड़ सकता है। धूल, राख, कंकड़ जैसे पदार्थ, शिलाखंड, पत्थर, झामिक पत्थर, द्रव जैसे लावा, भिन्न प्रकार के गैस आदि का रिसाव ज्वालामुखी से होता है, जो कभी मानवीय एवं प्राकृतिक संपत्ति के रूप में उपयोगित होता है तो कभी विनाश के कारण भी बनता है। ज्वालामुखी के विस्फोटन से कभी गर्म पानी के स्रोत भी उद्भूत होते हैं, लावा से वनस्पति एवं औषधों का नाश अत्यधिक मात्रा में होता है। पर्यावरण परिचर्या में असंतुलन, विशेष जीव जातियों का अदृश्य या अंतर्धान होना भी इसके फल हैं।

बाढ़

अत्यधिक वर्षा के कारण नदियों के उमड़ने की स्थिति बाढ़ है। बाढ़ से कभी-कभी झीलों के निकलने, नए जल स्रोत बनने, खनिज निर्माण होने का लाभ भी होता है। हिम पर्वतों के पटल गिरने से जल बढ़ जाता है और कुछ प्रदेश जल प्लवन में डूब जाते हैं। वृक्षों का उन्मूलन, वनों का कटाव, मिट्टी या भूमि का क्षरण, तटीय बंधनों की बलहीनता आदि बाढ़ के प्रभाव हैं जो प्रादेशिक भिन्नता के अनुकूल प्रवर्तित होते हैं। इसके कारण कहीं फसलें डूब जाती हैं तो कहीं पर नगरों का मुख चित्र ही बदल जाता है। जल प्रलय में पशु एवं मानवीय संपत्ति का बहाव हो जाता है। मिट्टी एवं रेत के जमघट के कारण पृथ्वी की उर्वरा शक्ति लुप्त हो जाती है। मृदा के जमने से अवसाद की समस्या, लवणीयता बढ़ जाते हैं। सड़कों का उन्मूलन होता है, भिन्न प्रकार के कीटाणु जन्य रोगों की व्याप्ति भी होती है।

केदारनाथ सिंह बाढ़ में डूबे नगर का मार्मिक वर्णन करते हैं—

पानी की आँखों में
आँखे डाले हुए
वे रात-भर खड़े रहते हैं
पानी के सामने,
पानी की तरफ,
पानी के खिलाफ़

हर बार, पानी में कुछ गिरता है

छपाक् ... छपाक्...⁽⁴⁾

स्पष्ट है कि जल प्रबंधन व्यवस्था में असफलता के कारण वर्षा जल के निकसन में बाधा होती है जो बाढ़ बनकर जनआवासों पर गिर पड़ता है।

अकाल

भूमि पर वर्षा का न होना शुष्कता का कारण है जो अकाल को जन्म देता है। सूखा के दो प्रकार भूमि सूख और जल सूख। समय पर वर्षा न होना या मौसम से न होना अर्थात् पहले हो जाना या बाद में हो जाना, हवाओं का प्रभाव, फसल के प्रारूप में परिवर्तन, पारंपरिक जल स्रोतों का अपघटन, अपर्याप्तता भी इसका कारण है।

भूमि के ऊपरितल जल का गायब होना जैसे नदी, झील, तालाब आदि जल स्रोतों का अन्तर्धान जल सूख है। कृषि, घरेलू उपयोग, औद्योगिक क्षेत्र में जल का बढ़ता विनिमय, अनियमित-अपर्याप्त वर्षा, अधिक जल का विनिमय करने वाली फसलों को अपनाना आदि भूगत जलस्तर के गिरने के प्रमुख कारण हैं। सूखा पड़ने पर वृक्षराशि का विनाश, जंतु गण का असमय मृत्यु हो जाता है। मानव एवं जीव जंतुओं का प्रवास या प्रस्थान, कुछ प्रजातियों का नष्ट होना भी संभव है। परिस्थितकीय संतुलन में विचलन के कारण प्रदेश के सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों में अनावश्यक परिवर्तन दृश्यमान हैं और हरियाली भी कम हो जाती है। कृषकों की आत्महत्याएँ बढ़ती हैं, चोरी बढ़ती है। पेय जल की अलभ्यता होती है, मवेशियों या पशुओं को कबेला में डाला जाता है। श्रमिक शक्ति का बहाव, भूख-प्यास की व्यापकता, बीमारियों का फैलाव भी सूखा के प्रभाव माने जाते हैं।

अकाल और उसके बाद कविता में नागार्जुन मानव के साथ साथ जीव जंतुओं की व्यथा को भी दर्शाते हैं—

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कानी कुतिया सोई उनके पास

लगी भीत पर छिपकलियों का गश्त

चूहों की भी हालत रही शिकस्त ⁽⁵⁾

चक्रवात एवं एलनिनो प्राणी मात्र के लिए हानिकारक हैं। तटीय प्रदेशों में सागरीय एवं वायुमंडलीय प्रभाव से चक्रवात एवं एलनिनो बनते हैं। प्रचंड तूफान, प्रलयंकारी चक्रवात, समुद्री तरंग, एलनिनो के प्रभाव से काभी पूरे प्रदेश का नष्ट होना देखा जाता है। उष्ण धारा, एवं ठंडी धाराओं के बदलाव के कारण मछली जगत में उथल-पुथल मच जाता है साथ साथ जीवन निर्वाह में बदलाव से कुछ प्रजातियों का नाश भी हो सकता है।

मरुस्थल का अर्थ है मृत्यु स्थल। विशेषज्ञों का मानना है कि जहाँ प्राणि मात्र के उपजने के द्वार ही बंद हो जाते हैं, वह मृत्यु स्थल मात्र नहीं है, मानव की बुद्धिहीनता का उदाहरण है। आज विश्व में सालाना 13,000 एकड़ जमीन नया रेगिस्तान का रूप ले रहा है इसे उष्ण मरुस्थल कहते हैं। ठंडा मरुस्थल मात्र आर्कटिक में होता है। यहाँ पर भी प्राणि का आवास नहीं होता। अधिक वाष्पीकरण, कम वर्षा इसके कारण हैं।

मिट्टी का अपक्षरण भी प्राकृतिक आपदा है। वायु के कारण, नदियों के कारण, समुद्र के कारण, मानवीय क्रियाओं के कारण अपक्षरण आज त्वरित गति से हो रहा है।

संजीव सिंह कविता दावानल में प्रकृति के सामने प्राणि मात्र की विवशता को शब्द बद्ध करते हैं—

मृत जीव जंतु वृक्ष पते झर झर

गिर रहे प्राण हीन होकर भू पर शर शर

अनल के एक कण से फैला विश्वारण्य में एक दावानल।

चर अचर निशाचर सब जर रहे धूं धूं कर

धूम्र की चादरों से ढक गया नीलांबर
अस्त हुआ रवि तब भरी दोपहर
त्राहि त्राहि त्राहिमाम् गूँजा ये स्वर चहुं ओर ⁽⁶⁾

आधुनिक युग में मानव की आर्थिक उन्नति का दौड़ और बढ़ती औद्योगिक उन्नति के कारण नए-नए प्राकृतिक व्यापार एवं प्रकोप बढ़ रहे हैं। जैसे हरित गृह का प्रभाव, ओजोन परत का क्षयीकरण, विश्व ताप बढ़ाना, ऊर्जा की संकट स्थिति, जल संकट, मिट्टी का अपक्षरण, जलवायु में परिवर्तन की वजह से अनेक संक्रामक रोगों का प्रकोप हो रहा है।

अत्यधिक रासायनिक खादों और कीटनाशकों के विनिमय से उनके अवशेष खाद्य पदार्थों में मिल रहे हैं, जो मानव और मवेशियों के लिए विनाशक है। औसत उष्ण से तापमान थोड़ा सा बढ़ने पर भी कुछ प्रकार के जीव जंतु, पौधे, प्रजातियों का नष्ट होता है। घरेलू और औद्योगिक विनिमय के लिए ऊर्जा की बढ़ती मांग से ऊर्जा के स्रोतों के मनमानी विनिमय हो रहा है जिससे संकट उत्पन्न होता है।

जयशंकर प्रसाद की कृतियों में वर्षा, तूफान और बाढ़ के दृश्य मानवीय जीवन की अनिश्चितता, अस्थिरता एवं संघर्षशीलता को दिखाते हैं।

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह⁽⁷⁾

अर्थात् प्रकृति की सौंदर्यात्मकता के साथ-साथ उसकी विभीषिका का भयावह रूप भी प्रस्तुत है।

सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति को माँ के रूप में देखा, पर कभी-कभी उसकी प्रलयकारी शक्ति की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया, मानव और प्रकृति के बीच फैलती असंतुलन का परिणाम है यह उग्रता। नागार्जुन की कविताओं में यथार्थवादी दृष्टिकोण है यहाँ बाढ़ और अकाल से त्रस्त ग्रामीण जीवन का नग्न चित्र खींचा गया है। आप बिहार की बाढ़, अकाल और जनजीवन की त्रासदी को शब्दबद्ध करते हैं।

बादल का कोप नहीं रीता,
जाने कब से तू बरस रहा⁽⁸⁾

कवि के अनुसार बाढ़ केवल प्राकृतिक आपदा मात्र नहीं है बल्कि शासनतंत्र की विफलता का प्रतीक है।

क्रांतिकारी कवि दिनकर विद्रोह और प्रगति के प्रतीकों के रूप में ज्वालामुखी, तूफान, भूकंप आदि को चित्रित किया जो मानव जीवन की उत्तेजनात्मक दशा के सूचक हैं, अन्याय और अधर्म पर टूट पड़ने उद्युत हैं। प्रलय या प्राकृतिक विनाश को आप परिवर्तन का मार्गदर्शक मानते हैं जिनसे पुरानी-विषैली रीति रिवाजों को ध्वस्त कर नए समाज का निर्माण कर सके।

आधुनिक कवि सुनामी, ग्लोबल वार्मिंग, बाढ़, भूस्खलन आदि घटनाओं को मानव प्रेरित आपदा के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे मानते हैं कि प्रकृति का यह क्रोध मानव की असंवेदनशीलता और लालच का ही परिणाम है एवं प्रकृति और मानव के संबंधों की जटिलता एवं जड़ता के प्रतीक हैं। कवियों ने इन आपदाओं के माध्यम से जीवन की अशांति, मानव की परिधियाँ और प्रकृति का महत्व स्पष्ट करते हैं।

हिन्दी गद्य साहित्य भी प्राकृतिक आपदाओं के चित्रण में पीछे नहीं हटा। विशेष कर हिन्दी उपन्यास, कहानी, निबंध और यात्रावृत्तांत आदि विधाओं में प्रकृति के विभिन्न रंगों का चित्रण अत्यंत रमणीयता से किया है। वर्तमान समय के गद्यकारों ने सुनामी, भूकंप, चक्रवात, ग्लोबल वार्मिंग आदि आपदाओं का चित्रण केवल घटनाओं का विवरण नहीं, बल्कि मानव जीवन की करुणा, संघर्ष, और चेतावनी का प्रतीक मान कर किया है। आपका संदेश है कि मनुष्य को प्रकृति के साथ का संतुलन बनाया रखना होगा वरना वह प्रकृति के प्रकोप को सह नहीं पाएगा। बाढ़ या प्रलय के विध्वंस को आँखों के सामने देखनेवाला व्यक्ति अस्थिर, बल हीन और विचार शून्य हो जाता है।

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में बाढ़, अकाल, सूखा आदि आपदाओं का सजीव चित्रण यथार्थवादी दृष्टिकोण से किया। 'गोदान' उपन्यास में प्राकृतिक विपत्तियों के कारण सामाजिक व्यवस्था में मचलने वाली उथल पुथल का सजीव चित्रण प्राप्त है। इस उपन्यास में गोबर, होरी और धनिया जैसे पात्र प्रकृति की मार एवं सामाजिक अन्याय दोनों से पीड़ित हैं। 'पूस की रात' कहानी में गरीबी में डूबा हुआ हल्कू ठंड रूपी प्राकृतिक प्रतिकूलता का शिकार बनता है। 'कफन' कहानी में भी अकाल के कारण निर्धन लोगों की पीड़ा झलकती है। रेणु के 'मैला आँचल' में उपन्यास बिहार के ग्रामीण प्रदेश में बाढ़, महामारी और अकाल से पीड़ित समाज का अत्यंत मार्मिक चित्रण प्रस्तुत है। यहाँ बाढ़ केवल प्राकृतिक आपदा मात्र नहीं, गरीब किसान के जीवन की स्थायी पीड़ा बनकर रह गई है।

सुशांत सुप्रिय की कहानी भूकंप में ऐसा चित खींच गया है "ध्वस्त मकानों के मलबों में हमें एक छेद में से वह दबी हुई लड़की दिखी। जब खोजी कुत्तों ने उसे ढूँढ निकाला तब भुवन और मैं अपना माइक और कैमरा लिए खोजी दल के साथ ही थे। धूल मिट्टी से सने उसे लड़की के चेहरे को उसकी विस्फारित आँखें दारुण बना रही थीं। चारों ओर मलबे में दबी सड़ रही लाशों की दुर्गंध फैली हुई थी। ऊपर हवा में गिद्ध मंडरा रहे थे। मलबे में दबे कुचले लोगों की कराहों और चित्कारों से पूरा माहौल गमगीन हो गया था। इस सब के बीच दस-ग्यारह साल की वह लड़की जैसे जीवन के डोर पकड़े मृत्यु से संघर्ष कर रही थी। उसके दोनों पैर शायद कंक्रीट के भारी मलबे के नीचे दबे हुए थे। वह दर्द से बेहाल थी"।⁽⁹⁾

लेखक भूकंप से सम्बद्ध सामाजिक, आर्थिक और मानवीय पक्षों का चिंतन गहराई से किया।

रेणु ने दिखाया कि ऐसी आपदाएँ केवल प्राकृतिक समायोजन या समन्वय के कारण नहीं बनते बल्कि सामाजिक उपेक्षा और सरकारी तंत्र की लापरवाही के उपज हैं। अमरकांत प्राकृतिक संकटों के बीच मनुष्य की असहायता और नैतिक पतन की कथा कहा। यशपाल के उपन्यासों में प्राकृतिक विपत्तियों को सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक बताया गया है। मानव के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी जलवायु और प्राकृतिक स्थिति के प्रभावों का चित्रण भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में किया गया है। महादेवी वर्मा के निबंधों में प्रकृति के प्रति मनुष्य के निर्दयता पूर्ण व्यवहार, तदनुरूप उत्पन्न विनाश के संकेत सूचित हैं।

प्राकृतिक आपदाओं के कारण देश की आर्थिक स्थिति का नुकसान होता है। स्वास्थ्य एवं संचार व्यवस्था ठप्प हो जाता है। इनसे बचने के लिए रास्तों को ठीक करना, पूर्वानुमान तकनीक का इस्तेमाल करना, वृक्षारोपण करना, जल संसाधनों का सदुपयोग करना जनता का कर्तव्य होना चाहिए। जल- पवन-सौर ऊर्जा के विनिमय से सांप्रदायिक ईंधनों के विनिमय कम कर सकते हैं। पारंपरिक जल संरक्षण पद्धतियों को अपनाना है। उद्योग धंधों को अनुमति देने में नियंत्रण हो, विपत्ति को रोकना, उसके प्रभावों को कम करना, विपत्तियों से निपटने संसिद्ध रहना, तुरंत प्रतिक्रिया के कदम उठाना, राहत एवं पुनरावास की तैयारी करना, पूर्व चेतना देना भी आवश्यक है। सरकारी एवं जनता के सम्मिलित प्रयासों से उचित संरक्षण विधियों को अपनाना होगा।

प्रमुख वैज्ञानिक, साहित्यकार एवं विशेषज्ञों के अनुसार विकास से विपत्ति को बंद करने का आयोजन करना होगा, सार्वजनिक सूचना एवं चेतावनी से, संस्थागत एवं व्यवस्थागत प्रबंधन से विपत्तियों का निर्वहण कर सकते हैं। सरकारी, गैर सरकारी संस्थाएं, वैज्ञानिक संगठन, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम, अभिकरण, सामुदायिक जागरण, भागीदारी से सेवा प्राप्त करना, तकनीकी, कौशल अपनाना होगा। वार रूम तैयार करना, नाजुक क्षेत्रों को पहचानना, उनके मूल्यांकन-निगरानी-समीक्षा करना, आत्मनिर्भरता को बढ़ाना, सूचना क्रांति एवं ए आई से उत्पन्न नए दृष्टिकोण अपनाना, मानवीय आवबोधन को विकसित करना होगा। बाल गंगाधर तिलक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार जब तक मानव प्रकृति की ओर नहीं मुड़ता, तब तक उसे विपरीत परिणामों को भुगतना ही पड़ता है। प्राकृतिक आपदा मुक्त भविष्य की आशा में ...

उद्धरण

1. राजेन्द्र साहनी-अमर उजाला.कॉम

2. वेब दुनिया - सविता व्यास
3. रणजीत की कविता हिंदवी
4. प्रतिनिधि कविताएं - पृ 66 - राजकमल प्रकाशन 1985
5. नागार्जुन रचना संचयन- पृ 100 - साहित्य अकादमी 2017
6. संजीव सिंह दावानल- हिन्दवी
7. कामायनी- चिंता सर्ग- जयशंकर प्रसाद
8. वसंत-भाग-2, पृ-10, एन.सी.ई.आर.टी 2022
9. अमर उजाला.कॉम

संदर्भ

1. आर्थिक विकास और वातावरण.. प्रोफेसर विक्रम कोहली..पेष्ठ 81-902145-3-0 पेपर लिंक पब्लिशिंग कंपनी दिल्ली
2. प्राकृतिक आपदाएं कारण और प्रबंध-राजकुमार गुर्जर- बालाजी प्रकाशन जयपुर
3. भारतीय साहित्य-विविध परिदृश्य, डॉ. विजय राघव रेड्डी, साहित्य सहकार-दिल्ली



प्रमुख आचार्यों द्वारा रसों के काव्य आत्मतत्त्व की समीक्षा

नेहा कुमारी

(शोधच्छात्रा) संस्कृत विभाग,

जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

E-mail ID: nehakumari6977@gmail.com

संस्कृत साहित्य में रस शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में प्राचीन काल से ही किया जा रहा है। वेद, वेदांग, ब्राह्मण, उपनिषद्, आयुर्वेद, रामायण, महाभारत आदि साहित्य में रस शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया गया है। कोष ग्रन्थों के अनुसार रस शब्द के विभिन्न अर्थ प्राप्त होते हैं- स्वाद, जल, वीर्य, शृंगार आदि काव्य रस, विष, द्रव, पारद, राग, गृह धातु, तिक्त आदि भोजन के छः रस, परमात्मा आदि।¹ काव्य साहित्य में रस शब्द से शृंगार आदि रसों का बोध होता है। सार रूप पदार्थ को भी रस कहते हैं। वैदिक साहित्य तथा विशेष रूप से उपनिषदों में ईश्वर के लिए भी रस पद का प्रयोग हुआ है।

रस शब्द रस् धातु एवं अच् प्रत्यय से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है- सार, (वृक्षों का) दूध, रस, तरल, द्रव आदि।² व्याकरण के अनुसार रस पद की निष्पत्ति निम्न प्रकार से है- रस्यते आस्वाद्यते इति रसः अर्थात् जिन पदार्थों का आस्वादन किया जाता है वे रस कहलाता है 'रस्यते अनेन इति रसः' अर्थात् जिन पदार्थों के द्वारा आस्वादन किया जाता है वह भी रस कहलाता है।

तैत्तिरीय उपनिषद् में परम ब्रह्म को रस कहा गया है, क्योंकि उसको प्राप्त करके जीव आनन्द की अनुभूति करता है।³ इसकी व्याख्या में शंकराचार्य जी कहते हैं कि मधु आदि लौकिक रसों को पाकर के मनुष्य जिस प्रकार आनन्दित होते हैं, उसी प्रकार परमात्मा रूप रस को पाकर भी योगी जन परम आनन्द की अनुभूति करते हैं।

भारतीय काव्यशास्त्र में रस को अधिकांश आचार्यों ने काव्य का आत्मतत्त्व माना है। इसके पीछे मान्यता यह है कि रस ही वह तत्त्व है जो काव्य को आनन्ददायक, प्रभावशाली और जीवन्त बनाता है। विभिन्न आचार्यों ने इसे अपने-अपने दृष्टिकोण से प्रभावित किया है। सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि ने काव्य में रस का विवेचन किया। यद्यपि उन्होंने नाट्य की दृष्टि से, रसों की विवेचना की, तथापि नाट्य तथा काव्य में बाह्य रूप को छोड़कर कोई भिन्नता नहीं है। अतः काव्यों में भी उन रसों की स्थिति निहित रहती है। तदुपरान्त अनेक आचार्यों ने काव्य में रसों के स्वरूप की विवेचना के लिए भरत के ही रस सिद्धान्त को स्वीकार किया। उनका कहना है कि काव्य में रस के बिना कोई भी अर्थ प्रवर्तित नहीं होता।⁴

भरतमुनि के पश्चात् भी कतिपय आचार्यों ने रस को ही काव्य का प्रधान तत्त्व प्रतिपादित किया है। अग्निपुराण में भी कहा गया है कि रस न तो भाव से हीन होता है और न ही रस से रहित भाव होते हैं। भाव ही रसों को भावित करते हैं, एवं अनुभव का विषय बनाते हैं।⁵ इसी विषय में आगे कहा गया है कि वचन चातुर्य का चमत्कार होने पर भी रस ही काव्य का प्राण है।⁶

जबकि ध्वनिकार आचार्य आनन्दवर्धन ने 'काव्यस्यात्मा ध्वनि' कहकर ध्वनि को ही काव्य की आत्मा स्वीकार किया है तथापि वे रसध्वनि को ही सबसे प्रधान मानते हैं। उन्होंने ध्वनि को तीन प्रकार का माना है- वस्तुध्वनि, अलटार ध्वनि तथा रसध्वनि।

रस ध्वनि अर्थात् (रस, भाव, रसाभास, भावाभास, भावषक्ति, भावोदय, भावसन्धि और भावशबलता) को उन्होंने ध्वनि की आत्मा प्रतिपादित किया था।⁷ आनन्दवर्धन ने ध्वनि को अभिव्यग्य मानकर उसका ध्वनि के रूप में प्रतिपादन किया।

अन्य ध्वनिवादी आचार्यों ने भी ध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकार करके रस को सबसे प्रधान ध्वनि कहा। अभिनवगुप्त के गुरु भट्टतैत्ति ने 'काव्यकौतुक' में रस का विवेचन किया था, जिसके कुछ अंशों को अभिनवगुप्त ने उद्धृत किया। भट्टतैत्ति कहते हैं कि रस के आनन्द रूप होने से वह आत्मरूप है तथा रस का समुदाय ही रस है। जब भी काव्य में रस का नाट्यायमान प्रयोग होता है, तभी वह आस्वादित होता है। अर्थात् श्रव्य काव्य में भी वर्णित विषय के प्रत्यक्षवत् अवभासित होने पर ही सहृदय पाठक रस का आस्वादन करते हैं।⁸

प्रतिहारेन्दुराज ने उद्भट के 'काव्यालंकारसंग्रह' पर लघुवृत्ति नाम की टीका लिखी थी। यद्यपि वे अलंकारवादी आचार्य थे, तथापि उन्होंने काव्य में रस को आत्मा के रूप में प्रतिपादित किया। उनका मानना है कि रसयुक्त काव्य ही जीवित रह सकता है, अतः रस ही काव्य की आत्मा है।⁹

अभिनवगुप्त ने नाट्यशास्त्र की अभिनवभारती टीका में तथा ध्वन्यालोक की लोचन टीका में रस का स्पष्ट विवेचन किया है। उन्होंने प्राचीन आचार्यों के मतों को भी प्रस्तुत किया है, उनके मतानुसार काव्य में रस सदैव व्यग्य होता है। वह काव्य के ध्वनिरूप व्यापार से ही अवेक्षित होता है, अतः इसको रस ध्वनि कहते हैं। एवं यह रस ध्वनि ही विशेष रूप से काव्य की आत्मा है।¹⁰ यद्यपि ध्वनि तीन प्रकार की होती है- वस्तु, अलंकार तथा रस, तथापि वस्तु और अलंकार ध्वनियों का पर्यवसान रस ध्वनि में ही होता है। वस्तु ध्वनि तथा अलंकार ध्वनि वाच्यार्थ से उत्कृष्ट होती हैं, इसलिए सामान्यतः ध्वनि को काव्य की आत्मा कहा गया है। वस्तुतः काव्य की आत्मा रसध्वनि है।¹¹

अभिनवगुप्त के उपरान्त भी विविध आचार्यों ने काव्य में रस की प्रधानता का प्रतिपादन किया। भोजराज ने 'सरस्वती-कण्ठाभरण' तथा शृंगारप्रकाश में रस का विवेचन किया है। उन्होंने शृंगार रस को ही एकमात्र अभिमान रूप मानकर उसके द्वारा काव्य की कमनीयता प्रतिपादित की है।¹²

आचार्य मम्मट ने व्यग्य अर्थ को वस्तु, अलंकार तथा रस, तीन प्रकार का मानते हुए भी रस के प्रधानत्व को स्पष्ट शब्दों में प्रतिपादित किया है। यह रस रूप अर्थ ही काव्य में अंग होता है, जिसके गुण नियत धर्म हैं।¹³

आचार्य रूय्यक के अनुसार रस आदि ही काव्य के प्राण हैं। वे अलंकाररूप नहीं हो सकते। अलंकार तो उपकारक होते हैं, परन्तु रस आदि प्रधान होने से उपस्कार्य हैं। अतः रस आदि प्रतीयमान होते हुए भी वाक्यार्थ होते हैं और वे ही काव्य का जीवन हैं। वाक्यार्थवेत्ता सहृदय रस से इसी रूप को स्वीकार करते हैं।¹⁴ व्यक्तिविवेक के रचयिता महिम भट्ट भी रस को ही काव्य की आत्मा स्वीकार करते हैं।¹⁵ उनका ध्वनिवादियों से केवल इसी बात का मतभेद है कि वे रस को व्यञ्जना का नहीं, अपितु अनुमिति का विषय मानते हैं। आचार्य राजशेखर ने यद्यपि रस का विवेचन नहीं किया, फिर भी उन्होंने उसी को काव्य की आत्मा माना है।¹⁶

आचार्य विश्वनाथ ने रस का विस्तृत विवेचन किया तथा काव्य में उसको सबसे प्रधान प्रतिपादित किया है वह काव्य का लक्षण देते हुए कहते हैं- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'¹⁷ अर्थात् रस से युक्त वाक्य ही काव्य कहलाता है। अतः इससे रस का काव्य की आत्मा होना स्वयं सिद्ध होता है।

अलंकारकौस्तुभ के रचयिता कवि कर्णपूर ने शब्दार्थ शरीर काव्य में ध्वनि को प्राण तथा रस को आत्मा माना है।¹⁸ भूदेव ने वस्तु, अलंकार तथा रस के त्रिविध अर्थ को काव्य की आत्मा मान कर भी इनमें से रस को ही काव्य की वास्तविक आत्मा प्रतिपादित किया। इसका कारण यह है कि काव्य की प्रवृत्ति रस के लिए ही होती है। रसध्वनि के परम रमणीय होने के कारण रस ही काव्य की आत्मा है।¹⁹

आचार्य केशवमिश्र ने काव्य में रस को ही आत्मास्थानीय माना है उनका कहना है कि नीरस काव्य में रसिक जन उसी प्रकार आनन्द को प्राप्त नहीं करते, जिस प्रकार भोजन श्रेष्ठ प्रकार से पका हुआ होने पर भी नमक के बिना स्वादिष्ट नहीं होता।²⁰

पण्डितराज जगन्नाथ ने रस के सम्बन्ध में अभिनवगुप्त के परिप्रेक्ष्य को स्वीकार किया। उन्होंने उपनिषदों के 'रसौ वै सः' वचन को निर्दिष्ट करके रत्यादिविषयक आवरणरहित आत्मचैतन्य को रस कहा है। उनके अनुसार रस तथा चैतन्य में एकता है, अतः रत्यादि विशिष्ट आवरणरहित चैतन्य ही रस है तथा वह काव्य की आत्मा है।

रस की प्रधानता तथा आनन्दात्मकता के कारण काव्यशास्त्र की रचना के प्रारम्भ से आधुनिक समय तक प्रायः सभी आचार्यों ने उसको काव्य की आत्मा प्रतिपादित किया है। रस के प्रधानत्व को सिद्ध करने का श्रेय न केवल काव्यशास्त्र के आचार्यों का है अपितु कालिदास, भवभूति आदि महान् कवियों ने भी रस में ही सहृदयों की तन्मयता को स्वीकार किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रसः स्वादे जले वीर्ये शृंगरादौ विषे द्रवे।
बोले रागे गृहे धातौ तित्तादौ पारदेऽपि च॥ (हैमकोष)
2. वामन शिवराम आप्टे, पृ. 926
3. रसौ वै सः। रसं ह्येवायं लब्धवानन्दी भवति। (तैत्तिरीय उपनिषद्, 3.7)
4. न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते भरत नाट्यशास्त्र, 6.33
5. न भावहीनोऽस्ति रसो न भावो रसवर्जितः।
भावयन्ति रसानेभिर्भाव्यन्ते च रसा हति॥ अग्निपुराण, 319.12
6. वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्॥ अग्निपुराण, 319.13
7. ध्वन्यालोक, 2.3
8. भरत-नाट्यशास्त्र-अभिनवभारती टीका- प्रथम भाग, पृ 291
9. 'रसाद्यधिष्ठितं काव्यं जीवद्रूपतया यतः।
कथ्यते तद्रसादीनां काव्यात्मत्वं व्यवस्थितम्'॥
काव्यालंकारसंग्रह - लघुवृत्ति, पृ. 83 2.
10. ध्वन्यालोक- लोचनटीका, पृ. 18
11. वहीं, पृ. 31
12. रसोऽभिमानोऽहकारः शृंगार इति गीयते।
योऽर्थस्तस्यान्वयात् काव्यं कमनीयत्वमश्नुते॥
(सरस्वतीकण्ठा-भरण, 5.1)
13. ये रसस्याग्निो धर्माः - काव्यप्रकाश 8.66
14. अलटारसर्वस्व, पृ. 10
15. काव्यस्यात्मनि अग्नि रसादिरूपे न कस्यचिद्
विमतिः (व्यक्तिविवेक, पृ. 22)
16. रस आत्मा (काव्यमीमांसा, पृ. 14)
17. साहित्यदर्पण, 1.3
18. शरीरं शब्दार्थौ ध्वनिरसव आत्मा किल रसः। अलटारकौस्तुभ, 1.1
19. रसविलास, 1.1 की वृत्ति
20. साधुपाके विना स्वाद्यं भोजने निर्लवणं यथा।
तथैव नीरसं काव्यं स्यान्नो रसिकतुष्टये॥ अलटारशेखर



मोहन राकेश के यात्रा साहित्य : आखिरी चट्टान तक में प्रकृति सौन्दर्य

प्रणव कुमार

शोधार्थी, तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
तिरुवरूर, तमिलनाडु

डॉ. मधुलिका बेन पटेल

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, तमिलनाडु केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, तिरुवरूर, तमिलनाडु

शोध सार

मोहन राकेश आधुनिक हिंदी साहित्य में विशेष नाम हैं। इन्होंने हिंदी गद्य के कई विधा में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज किए हैं। इनका कथासाहित्य और नाट्य संसार बहुत विस्तृत है। इन विधाओं में इन्होंने महती उपलब्धि हासिल की है। कहानी और नाटक के क्षेत्र में इनकी रचना आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य में मील का पत्थर साबित हुआ। इनके नाटक आधे अधूरे, आसाढ़ का एक दिन और लहरों के राजहंस आधुनिक नाटक में बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन्होंने एक यात्रा साहित्य की भी रचना की है— आखिरी चट्टान तक। सिर्फ एक यात्रा साहित्य से इन्होंने खुद को इस विधा में भी स्थापित किया है। इसमें इन्होंने गोवा से कन्याकुमारी तक की यात्रा का सुंदर वर्णन किया है। इनका प्रकृति की सुंदरता का वर्णन अद्भुत है। 'ओम प्रकाश सिंहल' लिखते हैं यात्रा वृत्तों को सृजनात्मक उपलब्धि का रूप देने वाली रचनाओं में मोहन राकेश— कृत 'आखिरी चट्टान तक' का उल्लेखनीय स्थान है।¹ इनके यात्रा सहित में आधुनिक हिंदी साहित्य के सभी संवेदनाएं दृष्टिगोचर होती हैं। परंतु इनके यात्रा साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता प्रकृति के सौन्दर्य का चित्रण ही है।

बीज शब्द : साहित्य, यात्रा, प्रकृति, सौन्दर्य, यात्रा साहित्य, रंगबोध, गंधबोध, सूर्यास्त।

मूल आलेख

मोहन राकेश ने महज एक यात्रा साहित्य से खुद को इस विधा में स्थापित किया। यात्रा साहित्य में इनका एक कथाकार और एक नाटककार का स्वरूप भी उभर कर सामने आता है। इनके यात्रा साहित्य कहने की शैली बिल्कुल एक कथाकार की शैली है। 'आखिरी चट्टान तक' की शुरुआत ही प्रकृति के सुंदर वर्णन से शुरू होता है। वे लिखते हैं "खुला समुद्र तट। दूर दूर तक फैली रेत। रेत में से उभरी बड़ी बड़ी स्याह चट्टानें। पीछे की तरफ एक टूटी फूटी सराय। खामोश रात और एकटक उस विस्तार को ताकती एक लालटेन की मटियाली रोशनी। सब कुछ खामोश है। लहरों की आवाज के सिवा कोई और आवाज सुनाई नहीं देती। मैं सारे के अहाते में बैठा समुद्र के क्षितिज को देख रहा हूँ। लहरें जहाँ तक बढ़ आती हैं, वहाँ झाग से एक लकीर खिंच आती है।"²

इस यात्रा वृत्तांत की शुरुआत ही रचनाकार ने समुद्र तट के सुंदर वर्णन से किया है। समुद्र तट वाकई सुंदर होता है लेकिन मोहन राकेश के वर्णन ने इसकी सुंदरता को शब्दों के माध्यम से और भी अधिक बढ़ा दिया है। इनके यात्रा साहित्य की यह सबसे बड़ी खासियत है कि प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन बेहद खूबसूरती से किए हैं। रात के समय समुद्र तट की सुंदरता

को ऐसे शब्द चित्र में उतारा है कि मानो लालटेन की मटियाली रोशनी चाँदनी की जगमग चमक सी हो। रचनाकार ने प्रकृति की सुंदरता को बहुत बारीकी से पन्नों पर अंकित किया है। वे शाम के समय दरिया की सुंदरता का वर्णन कुछ इस प्रकार करते हैं “साँझ होने के साथ दरिया का ज़हरमोहरा रंग धीरे धीरे बैजनी होता जाता है। वृक्षों के साये लंबे होकर अदृश्य होते जाते हैं।”³

रंगों की सूक्ष्म परख यात्राकार को है। इन्हीं सूक्ष्म वर्णन से प्रकृति की सुंदरता और भी अद्भुत नजर आती है। रचनाकार का रंगबोध और गंधबोध कई और जगह उभर कर सामने आता है। वे गंध का वर्णन करते हुए लिखते हैं “लकड़ी की गंध से ऊब होने लगती है। साथ की झोपड़ी से आती धुएं की गंध अच्छी लगती है।”⁴ यहाँ यात्राकार ने प्रकृति की अद्भुत सौन्दर्य का वर्णन किया है। एक गंध लकड़ी से आ रही थी जो रचनाकार को ऊब पैदा कर रही थी वहीं एक गंध धुएं की आ रही थी जो सोंधी सी गंध लिए हुए अच्छी लग रही थी। धुएं की गंध अक्सर मनुष्यों के पेट भरने का या वातावरण में गर्मी उत्पन्न करने का एक साधन है इसलिए ये गंध लेखक को अच्छी लग रही थी। झोपड़ी से उठता धुआँ एक मनुष्य को ही सुंदर लग सकता है और इसकी गंध मनुष्य को संतुष्टि का अनुभव कराता है। लेखक दूध सागर झरने से गुजरते हुए लिखते हैं “गाड़ी झड़ने के पास पहुंची, तो नीले कोटों वाले व्यक्ति एक साथ खिड़की से बाहर झुक गए। प्राकृतिक सौन्दर्य के उपभोग में भी शायद वे बिल्कुल बराबर का हिस्सा रखना चाहते थे। पहली बार गाड़ी झड़नों के बिल्कुल पास से हो कर निकली। काफी ऊंचाई से पानी की चार पाँच धारें नीचे गिर रही थीं। वहाँ से देखने पर उनमें कुछ विशेषता नहीं लगी। पर ज्यों ज्यों गाड़ी आगे निकलती आई, त्यों त्यों दूर के कोणों से देखने पर उनका सौन्दर्य बढ़त गया। जब झरने नजर से ओझल हो गए तो लगा कि सचमुच उनका अपना ही एक सौन्दर्य था।”⁵

रचनाकार ने एक जगह का वर्णन किया है जब वे रेलगाड़ी से आगे जा रहे थे, वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य गाड़ी से और भी अद्भुत नजर आ रहा था। खिड़की से प्रकृति का सुंदर स्वरूप दिख रहा था, वे लिखते हैं “जिधर मैं बैठ था, उधर नीचे घाटी थी। घाटी में उगे नारियलों के शिखर उस ऊंचाई तक उठे थे जिस पर गाड़ी चल रही थी। लगता था जैसे गाड़ी जमीन पर न चल कर उन शिखरों के ऊपर ऊपर से गुजर रही हो। जहाँ घाटी कम गहरी होती, वहाँ गाड़ी तनों के बराबर से गुजरती। फिर सहसा ऊंची जमीन आ जाने पर शिखर आकाश में उठ जाते और गाड़ी उनकी जड़ों से भी नीचे चलती नजर आती। मैं शीशे में आँख सटाये हरियाली की विस्तार को समुद्र की तरह उफनते देख रहा था।”⁶

नारियल के पेड़ के शिखर की सुंदरता का ऐसा वर्णन हिंदी साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। इस तरह की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन मोहन राकेश के यात्रा साहित्य में बहुत अधिक है। इनको हरियाली की विस्तार उफनते समुद्र के समान रोमांचित करता है। प्रकृति की इस अनुपम सौन्दर्य को जीना अपने आप में बहुत रोमांचकारी है। इन्हें हरियाली कभी उफनते समुद्र की तरह सुंदर लगती है तो कभी झीलों के तरह सुंदर। वे समुद्र के पास एक धान के खेत और नारियल के झुरमुट के बारे में लिखते हैं “धूप बहुत थी। मैं नारियल के एक घने झुरमुट की तरफ बढ़ गया। झुरमुट में पहुंचकर दूर दूर तक फैले धान के खेत के पास से समुद्र की तट रेखा को देखता रहा। आसपास और भी वैसे खेत थे जो चारो ओर हरियाली की छोटी छोटी झीलों जैसे लग रहे थे। धान लहलहाता तो झीलों में लहरे उठ आती।”⁷

हरियाली की झीलों हवा चलने पर लहरों के समान मचलने लगती है। लहलहाते धान के खेत की सुंदरता समुद्र की लहरों के समान लगती है। यहाँ तो झील सी हरियाली की बात की गई है और इसमें लहरें भी हैं। धान के खेत के सौन्दर्य के लिए ऐसी उपमा शायद ही किसी लेखक या कवि ने दिए हों। यात्रा के दौरान इनको बहुत से प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते हैं जिनका सूक्ष्म वर्णन वे करते हैं। प्रकृति के प्रति इनका सौन्दर्यबोध बेहद संवेदनशील है। इनकी नजर बहुत सूक्ष्म चीजों को भी परख लेती है।

मोहन राकेश ने समुद्र के अंदर मछलियों की भी सौन्दर्य को परखा और सराहा है। इनको प्रकृति का सौन्दर्य जिंदगी का बड़ा चमत्कार लगता है। मछलियों का सौन्दर्य कोई जादू सा लगता है। वे लिखते हैं “मैं गौर से रस्सी देखने लगा। प्राणी विज्ञान का विद्यार्थी बोला— यह समुद्र एक बहुत बड़ा जादूगर है इनमें न जाने कितनी तरह के जादू छिपे हैं। रात को चाँद

निकालने पर मैं आपको सोने चांदी और हीरे मोती की मछलियाँ दिखाऊँगा। सचमुच सोने चांदी की? वह हंसा और बोला असली सोने चांदी की नहीं— केवल फॉस्फोरस से चमकने वाली मछलियाँ।”⁸

प्रकृति के पास अनुपम सौन्दर्य का खजाना है रचनाकार के पास सौन्दर्य को समझने का संवेदनशील नजरिया। फास्फोरस से चमकने वाली मछलियाँ अपने आप में दुर्लभ जीव है इसका सौन्दर्य भी दुर्लभ और अद्वितीय है। प्रकृति के इस अद्भुत सौन्दर्य का इन्होंने अपनी यात्रा साहित्य में जिक्र किया है। मछलियों के सौन्दर्य को सोने, चांदी, हीरे, मोती से तुलना करते हैं। इन द्रव्यों को एक साथ कर देने पर भी इन चमकने वाली मछलियों के सौन्दर्य के आसपास नहीं आ पाती है। प्रकृति वास्तव में सर्वाधिक सौन्दर्य से भरपूर है। मोहन राकेश ने इन प्राकृतिक सौन्दर्य के हर एक चीज को सूक्ष्मता से देखा और आनंद लिया है।

इन्होंने साँझ के सौन्दर्य को रंगों के माध्यम से चित्रांकन किया है। अपने तीक्ष्ण रंग बोध के माध्यम से साँझ की सुंदरता को जीवंत कर दिया है। रंगों को पन्ने पर उतार कर चित्र बनाते हुए तो बहुत बार देखा है लेकिन रचनाकार ने शब्दचित्र के माध्यम से साँझ के रंग से पन्ने पर सुनहली साँझ को सजीव कर दिया है। वे लिखते हैं “पूवी आकाश में रात हो गई थी और तारे झिलमिलाने लगे थे, पर पश्चिम की ओर अरब सागर के क्षितिज में अभी साँझ शेष थी। परंतु साँझ के वे बादल जो कुछ देर पहले सुर्ख और तांबई थे, और जिनके कारण सूर्यास्त सुंदर लग रहा था, अब स्याही में घुलते जा रहे हैं। समय साँझ के सौन्दर्य से आगे बढ़ आया था— रात के एक नए सौन्दर्य को जन्म देने के लिए।”⁹

साँझ के समय की सुंदरता को इनसे पहले भी साहित्य में लिखा गया है लेकिन इनके तरह किसी ने साँझ को रात के सौन्दर्य की जननी नहीं कहा था। इन्होंने साँझ के सुर्ख और तांबई रंग को साँझ के सूर्यास्त की सुंदरता को साँझ खू में बहुत सुंदर है और नए सौन्दर्य को जन्म देने वाला भी है। सूर्यास्त के सुंदर समय को इन्होंने कई बार अलग अलग रूपों में देखा है। यहाँ इन्होंने तारे की झिलमिल रोशनी का भी जिक्र किया है। समझ का यह सौन्दर्य हिंदी साहित्य में अन्यत्र किए गए वर्णन से सर्वथा भिन्न है। साँझ के सौन्दर्य का वर्णन काव्य में अक्सर होता आया है। साँझ के अलावा भी इनकी नजर प्रकृति के अन्य सौन्दर्य पर भी गई। प्रकृति के सौन्दर्य को रंगों के माध्यम से इन्होंने एक अलग कोण प्रदान किया है। इनको साँप का मोतिया रंग भी आकर्षित और रोमांचित करता है। सूर्यास्त के समय में रचनाकार को हर एक चीज में सौन्दर्य दिखाई देता है। वे लिखते हैं “ऊपर कगार की चड़ानों पर कुछ लोग खड़े हुए थे जिनकी आकृतियाँ सूर्यास्त की झिलमिल में स्याह पत्थर की मूर्तियों जैसी लग रही थी।”¹⁰

इनको सूर्यास्त की रोशनी में मनुष्य भी पत्थर की आकृति सा लगता है। सूर्यास्त पूरी प्रकृति को अपने रंग में रंगा लेती है। हर एक चीज इस समय अलग अलग रंगों से रंगी हुई नजर आती है। पानी में सूर्यास्त का सौन्दर्य बिल्कुल निखार कर सामने आता है। सूर्यास्त के सौन्दर्य पर वे लिखते हैं “पानी में सूर्यास्त के कई कई हल्के गहरे रंग झिलमिला रहे थे। तांबई, बैजनी, कथई। किनारे की तरफ आती हर लहर के आगे झाग की सफेद जाली बन जाती थी जो लहर के लौट जाने पर भी कुछ देर बनी रहती थी। बढ़ता पानी सूखी रेत को भिंगो जाता, परंतु पानी के लौटते ही फिर रेत सूखने लगती। पानी उसे फिर भिंगो जाता और कितने ही केकड़े उछलते हुए आकार रेत में सुराख करके उनमें दुबक जाते हैं। टिर री, टिर री— यह स्वर सारे वातावरण में फैल रहा था। मुझे लगा कि वास्तव में ऐसे ही समय को साँझ कहा जा सकता है।”¹¹

यहाँ मोहन राकेश ने साँझ के कई रंगों का जिक्र किया है। इन रंगों में ही साँझ का असली सौन्दर्य है। समुद्र तट का साँझ का तो कहना ही क्या। लहरों का सफेद झाग सम्पूर्ण समुद्र के सौन्दर्य में चार चाँद लगा रहा है। केकड़े की आवाज में वे प्रकृति के खुशनुमा सौन्दर्य को देख पा रहे हैं। खुले समुद्र तट के साँझ का सौन्दर्य बेहद अद्भुत है। वास्तव में ऐसे ही व्यक्त को साँझ कहा जा सकता है। साँझ का वास्तविक सौन्दर्य को इसी समुद्र किनारे देखते हैं तो कभी कथई आकाश में प्रकृति के अद्भुत रंग को निहारते हैं। प्रकृति मानो कोई विस्मयकारी चित्रकारी कर रहा हो साँझ के समय। आज कल कैमरा के युग में भी लोग सूर्यास्त के समय के साँझ को ‘गोल्डन आवर’ कहते हैं और बहुत सुंदर सुंदर तस्वीर निकालते हैं। हर साँझ प्रेमी के फोन में इस समय की सैकड़ों तस्वीरें होती हैं। मोहन राकेश ने इन्हीं संवेदनाओं को रंगों के माध्यम से यात्रा

के पन्ने पर उतार है। उनका यह प्रकृति के सौन्दर्य के प्रति नजरिया सौन्दर्य प्रेमी के लिए जीवंत दस्तावेज है।

कन्याकुमारी को रचनाकार “सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि”¹² कहा है। मोहन राकेश सूर्यास्त देखने सूर्यास्त की दिशा में यानि पश्चिम दिशा में चलने लगते हैं। और पीली रेत की ऊंची भूमि पर चढ़ कर सूर्यास्त का आनंद लेने के लिए आगे बढ़ते हैं। इनके साथ सूर्यास्त देखने कई और भी पर्यटक उसी सैंड हिल की तरफ जा रहे थे। सूर्यास्त के समय रेत भी बहुत सुंदर दिख रहा था। रेत के सौन्दर्य को भी वे कुछ इस तरह शब्दों में अंकित करते हैं “सुनहली किरणों ने पीली रेत को एक नया स रंग दे दिया था। उस रंग में रेत इस तरह चमक रही थी जैसे अभी अभी उसका निर्माण करके उसे वहाँ उड़ेल दिया गया हो। मैंने उस रेत पर दूर तक बने अपने पैरों के निशानों को देखा। लगा जैसे रेत का कुंवारापन पहली बार उन निशानों से टूटा हो।”¹³

यह देख कर रचनाकार का मन सिहर जाता है और वे उदास भी हो जाते हैं। प्रकृति के सौन्दर्य में हल्की सी भी खलल वे बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं। सूर्यास्त के समय चमकीली रेत पीली और सुंदर नजर आती है। इस सूर्यास्त को देखने के लिए खुद भी सुंदर रंगों का रेशम पहनते हैं। जिसमें हवा समुद्र की ही तरह लहरें पैदा कर रही थी और लेखक के मन में भी प्रकृति की तरंगें उठ रही थी। किसी भी सूरत में रचनाकार सूर्यास्त के रंग से बने सौन्दर्य में खलल नहीं डालना चाहते हैं। रेत भी साँझ के समय समुद्र तट का सौन्दर्य को कई गुण बढ़ा देता है। इनको रेत पीले रंग के अलावा और भी कई रंग में रंगे मिले। वे लिखते हैं “यूँ पहले भी समुद्र तट पर कई कई रंगों की रेत देखी थी— सुरमई, खाकी, पीली, और लाल। मगर जैसे रंग उस रेत में थे, वैसे मैंने पहले कभी कहीं की रेत में नहीं देखे थे। कितने ही अनाम रंग थे वे, एक एक इंच पर एक दूसरे से अलग और एक एक रंग कई कई रंगों की झलक लिए। काली घटा और घनी लाल आँधी को मिलाकर रेत के आकार में ढाल देने से रंगों के जितनी तरह के अलग अलग सम्मिश्रण पाए जा सकते थे, वे सब वहाँ थे— और उनके अतिरिक्त भी बहुत से रंग थे। मैंने कई अलग अलग रंगों की रेत को हाथों में लेकर देखा और मसलकर नीचे गिर जाने दिया। जिन रंगों को हाथों से नहीं छू सका उन्हें पैरों से मसल दिया। मन था कि किसी तरह हर रंग की रेत थोड़ी थोड़ी अपने पास रख लूँ। पर उसका कोई उपाय नहीं था।”¹⁴

प्रकृति के अद्भुत सौन्दर्य इनके मन को अपने में बांध लेता है। वे हर रंग के रेत को अपने पास रखना चाहते हैं। रेत का सौन्दर्य इनके मन में बस गया। वे अपनी विवशता भी दर्शाते हैं कि उनके पास उन सुंदर रेत को अपने पास रखने का कोई उपाय नहीं था। इस प्रकार मोहन राकेश के यात्रा साहित्य ‘आखिरी चट्टान तक’ में प्रकृति का सौन्दर्य अनेक रंगों में देखने को मिलता है। प्रकृति का हर रंग सौन्दर्यपूर्ण है। मोहन राकेश के माध्यम से पाठकों को प्राकृतिक सौन्दर्यबोध का एक नया आयाम देखने को मिलता है। रंगों और गंधों के माध्यम से रचनाकार ने प्रकृति के सर्वाधिक रोमांचकारी और अद्भुत चित्र को अपने यात्रा साहित्य में उतारा है। इस यात्रा साहित्य में वे प्रकृति के अद्भुत सौन्दर्य का दर्शन कराते हैं।

निष्कर्ष : मोहन राकेश के यात्रा साहित्य में प्रकृति के प्रति बेहद संवेदनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। प्रकृति सौन्दर्य के प्रति वे बेहद सजग नजर आते हैं। उनकी कृति ‘आखिरी चट्टान तक’ में वे प्रकृति के सौन्दर्य के एक एक बारीक बिन्दु को बहुत सूक्ष्मता से वर्णन किये हैं। इस रचना में उनका सौन्दर्यबोध उभर कर सामने आता है। यात्रा स्थल में आए सामाजिक, सांस्कृतिक और लोक जीवन पर भी राकेश जी की दृष्टि बराबर पड़ी है। इनके द्वारा वर्णित प्राकृतिक दृश्य की मनोरम सुंदरता बेहद वास्तविक नजर आते हैं। इन्होंने गंध और रंग के माध्यम से प्रकृति का मनोहर छवि पाठकों के सामने रखते हैं।

सन्दर्भ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं डॉ नगेन्द्र और डॉ हरदयाल, मयूर बुक्स प्रकाशन, पृष्ठ 824
2. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 13

3. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 15
4. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 14
5. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 30
6. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 31-32
7. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 35
8. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 43
9. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 45
10. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 58
11. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 58
12. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 105
13. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 106-107
14. मोहन राकेश, आखिरी चट्टान तक, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 108



Bhakti as experienced by Kūrathāzhvān in Atimānuṣa-stavam

Priyamvada Kannan

Ph. D Research Scholar

Post Graduate and Research Department of Sanskrit

Presidency College (Autonomous)

Chennai - 600005

Ph: 9962982929

Email: kannanpriyamvada@gmail.com

ABSTRACT:

The Atimānuṣa-stavam is a revered set of devotional hymns in the Sri Vaiṣṇava tradition, part of the Panchastavam composed by the 11th-12th century philosopher and poet Sri Kūrathāzhvān.

Kūrathāzhvān was a principal disciple of the great guru Sri Rāmānujāchārya and assisted him in writing key philosophical works.

The name atimānuṣa-stavam means “hymns to the Superhuman one” referring to the Supreme Being Lord Nārāyaṇa. The work is a deep philosophical and devotional one that extols the divine attributes such as soulabhya (ease of access to devotees), vātsalya (unconditional compassion), aiśvarya (supreme lordship) and paratva (transcendence) of the Lord, showing how these coexist harmoniously in His form.

The stavam has references to Rāma and Kṛṣṇa avatāras and the superhuman leelas of Srīman Nārāyaṇa during the two Vibhava Avatāras. Kūrathāzhvān selects some of these atimānuṣa cheṣṭitams from the itihāsas and purānas for salutations.

A distinctive feature of the work is its interweaving of personal devotion and philosophical clarity. The stavam repeatedly asserts that no

human intellect, spiritual study or ritual mastery can fully measure the Lord's nature extends infinitely beyond the limits of speech and mind.

Kūrathāzhvān highlights the paradox that the same Lord who governs infinite universes offers himself lovingly to devotees in a simple temple icon inviting refuge through pure surrender (śaraṇāgati).

INTRODUCTION:

Ālvārs and Nāyanmārs played a very important role in the Bhakti Movement in the 7th-12th centuries, singing thousands of songs reflecting their love and devotion to the Supreme. The Ālvārs' Bhakti literature contributes to the establishment of a culture deviating from the Vedic religion, with devotion as the only path to salvation. Following this mārgā, many brilliant āchāryas and sishyas, considered as incarnations of various amśās of the Bhagavān, have propagated this bhakti through their innumerable works in Sanskrit and Tamil.

One such monumental āchārya, Sri Rāmānujāchārya, in the 10th century, re-established the Sanātana Dharma during his lifetime. His disciple, Kūrathāzhvān, who assisted him in all his endeavours, such as spiritual study, management of the temple and philosophical compositions is revered as the most indispensable attendant of Rāmānuja. With his unparalleled knowledge, unflinching devotion to his guru and service to Viśiṣṭādvaita philosophy, Kūrathāzhvān has etched his place in the annals of spiritual history.

Some of his works are Yamaka Ratnākara, Puruṣasūkta bhāṣyam and Kūreśa Vijayam, and by far the most famous among them are the five stavams called the Panchastavam:

- Sri-stavam (10 slokas) on Sriranga Nāchiyār
- Sri Vaikuṇṭha-stavam (100 slokas) on Paramapadanātha.
- Sri Sundarabāhu-stavam (132 slokas) on Azhagar of Tirumāliruncholai
- Sri Varadarāja-stavam (102 slokas) on Hastigiri Varada.
- Sri Atimānuṣa-stavam (61 slokas)

THE SUBJECT:

Sri Atimānuṣa-stavam has 61 ślokas and has extensive references to Rāma and Kriṣṇa avatāras and the superhuman feats (Atimānuṣa leelas) of Srīman Nārāyaṇa during these Vibhava avatāras.

A bewildered Āzhvān argues how, even though claiming to be just human, He did superhuman feats or Atimānuṣa cheṣṭithams in His various avatāras. Āzhvān has unassailably proved with Tarka (logic), Pramāṇa (authority) and Anubhava (experience) as to how Emberumān is the Sarveśvara. Kūreśa selects cheṣṭithams from Itihāsas and Purāṇas in this stavam for salutations, demonstrating that there is none who is equal to or superior to Him in the world of humans and celestials:

“न तत्समः चाप्यधिकः च विद्यते”

In the first few ślokas, Kūreśa talks of Para, Vyūha, Vibhava, Archā and Antaryāmi svarūpams of the Brahman and establishes that He, Bhagavān, has aprākṛta śuddha satvamaya śareera. His vibhava avatāras are just a result of His own will and not due to the karmas associated with prakṛti and the three guṇas.

This brahman possesses the two-fold characteristics -freedom from imperfections and possession of infinite auspicious guṇas, like soulabhya, souśeelya, kāruṇya, dhairya and so on. When one seeks His refuge, out of compassion, He performs delightful activities, uncharacteristic of mere humans which fills us with wonder.

The Atimānuṣa cheṣṭithams of the Lord are countless as described and enjoyed by Āzhvān - let us enjoy a few of those wonderous acts through the eyes of Āzhvān.

त्वन्निर्मिता जठरगा च तं त्रिलोकी
किं भिक्षणादियमृते भक्ता दुरापा ।

मध्ये कदा तु न विचक्रमिषे जगच्चेत्
त्वद्विक्रमैः कथमिव श्रुतिरञ्जिता स्यात् ॥¹

Āzhvān says - The three worlds are created by You and kept inside your stomach ready for protection during the pralaya kāla. How is it then that You could not gain these three worlds without having to request/beg Bali to cede them to You as bhikshā? Your souśeelya got You these three worlds through yāchaka.

एतत् कथं कथय यन्मथितस्त्वयाऽसौ
हित्वा स्वभावनियमं प्रथितं त्रिलोक्याम् ।
अश्वाप्यसरोविषसुधाविधुपारिजात
लक्ष्म्यात्मना परिणतो जलधिर्बभूव ॥²

Kūreśa is struck with disbelief about the Atimānuṣa cheṣṭithams of the Lord churning the milky ocean- here the general rules of - what transforms into what - are all cast aside. Typically, clay transforms into pot and threads transform into cloth. But what has the milky ocean given out – a horse (Ucchaisravas), an elephant (Airāvāta), the Halāhala, Chandra, celestial nymphs like Rambha and Menaka, the life-giving nectar(Amṛuta) and the best of all, Mahālakshmi. This indeed is an Atimānuṣa cheṣṭitham of His.

पृच्छामि किञ्चन यदा किल राघवत्वे
मायामृगस्य वशगो मनुजत्वमौग्ध्यात् ।
सीतावियोगविवशो न च तद्रतिज्ञः
प्रादास्तदा परगतिं हि कथं खगाय ॥³

Āzhvān says-You ran after the magical golden deer, for Sitā, mesmerised by its beauty like a normal human being, even though You were cautioned by Lakshmaṇa that it was a delusion. On another occasion, when Rāvaṇa

¹ Atimānuṣa-stavam – Shloka 16

² Ibid – Shloka 17

³ Ibid – Shloka 18

zabducted Sitā, You could not trace his path. Yet, You had the power to set Jatāyu on the path of Moksha.

Here Āzhvān brings out the contrasting capabilities of the Lord and wonders how this can be reconciled without being awestruck.

सालान् हि सप्त सगिरीन् सरसातलान् यान्
एकेषुमन्दजवतो निरपत्रयस्त्वम्।
तेष्वेकविव्यथनखिन्नकपिप्रणुन्नं
शाखामृगं मृगयसे स्म कथं सहायम् ॥¹

Kūreśa is amused that Rāma, who could effortlessly pierce seven sāla trees and kula parvatas with a single arrow, sought the friendship and help of Sugrīva, a mere vānara, who even doubted his power capabilities in the first place. Kūreśa recounts the extent to which Rāma went to gain Sugrīva's friendship and trust.

मानुष्यकाचरितमाचरितुं प्रवृत्तो
देवातिगं चरितमङ्ग ! किमङ्ग्यकार्षीः ।
यत् सागरे बत बबन्धिथ नाथ ! सेतुं
शैलैः प्लवङ्गमसमिङ्गितसम्प्रणुनैः ॥²

Āzhvān says during the Setubandha, the boulders thrown by the vānaras floated on the ocean instead of sinking only because of Your Sankalpa śakti. This is a feat that cannot be achieved even by the Devas. What an “Atimānuṣeeka” act !

त्वं दक्षिणस्य निवसन् उदधेस्तटेऽपि
दूरान्तरोत्तरपयोधिमहान्तरीपे ।

¹ Atimānuṣa-stavam – Shloka 20

² Ibid – Shloka 23

दैत्यान् निजैकशरपारणयन् किमेतां
लङ्कां स्थितोऽत्र कुरुषे न किल स्म भस्म ॥¹

Dhairya guṇa is saluted here – he says-angered by the ocean king's indifference in helping You across the ocean to Lanka, you got ready to send your fiery arrow to dry up the waters of the ocean. Only after the ocean king performed śaraṇāgati was he spared; and the arrow that was set ready on the bow to destroy the ocean was redirected at wretched sinners of far-off, remote island in the North. If your power was so profound and far-reaching, how can one understand your inaction in not destroying Rāvaṇa and his army who were not far away from you?

यत् तादृशागसमरिं रघुवीर वीक्ष्य
विश्रम्यतां इति मुमोचिथ मुग्धमाजौ ।
कोऽयं गुणः कतरकोटिगतः कियान् वा
कस्य स्तुतेः पदमहो बह कस्य भूमिः ॥²

The Lord's Kāruṇya guṇa is demonstrated here - Rāma advises the undeserving Rāvaṇa to retire from the battlefield for the day and return the next day after resting, when he had lost his chariot and bow during the first day's battle. This wondrous act defies comprehension.

एतेन वै सुविदितोऽभवदिन्द्रशत्रोः
मायास्त्रबन्धननिबन्धनजो विमोहः ।
यल्लक्ष्मणस्त्वदनुजो रिपुशक्तिमुग्धः
शत्रोर्गुरुः हनुमतस्तु लघुत्वमाप ॥³

Āzhvān wonders how an injured Lakshmaṇa seemed heavy for Rāvaṇa but light for Hanumān to rescue. Thus, he concludes in wonder that this act of SriRāma can only be attributed as Atimānuṣeeka.

¹ Atimānuṣa-stavam – Shloka 26

² Ibid – Shloka 27

³ Ibid – Shloka 28

तादृग्गुणो ननु बभूविथ राघवत्वे
यस्तावकं चरितमन्वहं अन्वभुङ्क्त
सोऽत्रैव हन्त ! हनुमान् परमां विमुक्तिं
बुद्ध्वाऽवधूय चरितं तव सेवतेऽसौ ॥¹

Āzhvān remarks-What to say of the matchless guṇas of the Lord!! Hanumān even declined Rāma's invitation to go with Him to Srivaikuṇṭha and instead relished the three states of Bhakti Yoga – Para-bhakti, Para-jñāna , Parama-bhakti to stay here itself on earth, the Lord's leela vibhūti, singing His glories, engaging himself in deep Guṇānubhava.

After eulogising the Lord in Rāma avatāra, Āzhvān talks about His wondrous leelas during Kṛishṇa avatāra .

सा पूतना शकटं अर्जुनयोश्च युग्मं
बाल्योचितान्यपरचेष्टितविष्फुलिङ्गे ।
यस्यालभन्त शलभत्वमहो ! निगूढः
स त्वं व्रजे ववृधिषे किल कंसभीत्या ॥²

Āzhvān exclaims-Hey Bhagavān, how can we understand your baffling act of hiding at Gokula out of fear of Kamsa, when earlier you had destroyed effortlessly the evil Pūtana and Śakatāsura and brought down the two curse-stricken Arjuna trees, even as a crawling infant? How can we reconcile such a high act of yours?

गोपालपोतकतया निभृतं धरित्रीं
आवस्तुकाम इव सन्नपि बाल्यलौल्यात् ।

¹ Atimānuṣa-stavam – Shloka 32

² Ibid – Shloka 34

ऐन्द्रं निहत्य महं अद्रिमथो दधानः
किं तस्थिषे सुरगणाय सवासवाय ॥¹

Āzhvān enjoys the Paratva of Bhagavān here- He says- You lifted the Govardhana hill as an umbrella to protect everyone in Gokula from the violent thunderstorm and viscious downpour caused by a furious Indra when in fact, it was You who persuaded them to refrain from conducting the annual festival for Indra and had angered him. You taught a lesson to Indra that his vanity will not be pardoned.

बुन्दावने स्थिरचरात्मक कीटदूर्वा-
पर्यन्तजन्तुनिचये बत ये तदानीम् ।
नैवालभामहि जनिं हतकास्त एते
पापाः पदं तव कदा पुनराश्रयामः ॥²

Kūreśa laments about his misfortune of not being on this Earth when the Bhagavān incarnated among the Chetana forms and Achetana forms of Vrindāvana. He cries ‘Hey Bhagavān when can I come and serve you, me being the sinner that I am?’

सञ्जीवयन् अपि मृतं सुतमुत्तरायाः
सान्दीपनेश्चिरमृतं सुतमानयन् च ।
धाम्नो निजाद् द्विजसुतान् पुनरानयन् वा
स्वामेव तां तनुमहो ! कथमानयस्त्वम् ॥³

Āzhvān says - Oh Lord, You brought back to life Uttarā’s child, your guru Sandeepani’s son who was long-dead and the children of a Brāhmana of Dwārakā in the same form and age as they were at the time of death. This restoration of lives is indeed an ‘atimānuṣa cheṣṭitham’.

¹ Atimānuṣa-stavam – Shloka 44

² Ibid – Shloka 50

³ Ibid – Shloka 58

Āzhvān wishes that he were at the least a grain of sand, or a tree or one of the fellow Gopas in Vrindavan during Krishna avatāra so that he could have attained parama puruśārtha of 'Moksha'. He yearningly says, “when can we reach your sacred feet to perform Nitya Kainkarya?”

Finally, Āzhvān completely surrenders himself to the Sarvagnya Bhagavān, pleading to accept his Bhakti and forgive his sins. Uttering śaranāgati mantras, he calls to Bhagavān's Gnāna, Śhakti and Karuṇā to come to his rescue, considering his Akinchanatva and Ananyagatitva. He places a powerful appeal to correct him and engage him in His Kainkaryas.



स्वामी विवेकानन्द एवं अरविन्द घोष के शिक्षा दर्शन का अध्ययन

डॉ. गुंजन शर्मा

शोध निर्देशिका :

(प्रोफेसर)

शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

गोविन्द सिंह

शोधकर्ता :

शिक्षा संकाय

टांटिया विश्वविद्यालय

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा स्वामी विवेकानन्द एवं महर्षि अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान शिक्षा में महत्व का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोधकार्य हेतु ऐतिहासिक एवं दार्शनिक तथ्यों पर आधारित है। अतः शोध कार्य ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक विधि के द्वारा किया गया है।

Key Word :- स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द घोष व शिक्षा दर्शन।

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा की किसी समस्या को हल करने के लिए सबसे पहले सामान्य शिक्षा कार्य का अनुभव होना आवश्यक है, और इसके लिए शिक्षार्थी की आँखों से संसार की ओर चाहे वह क्षण भर के लिए ही क्यों न हो - देखते रहना सबसे बड़ा और नितान्त वांछनीय गुण है। शिक्षार्थी की आकांक्षाओं के विपरीत शिक्षा देना, भलाई की अपेक्षा दुष्परिणामों का निश्चित रूप से आह्वान करना है।

विवेकानन्द के उपर्युक्त विचार से यह आशय स्पष्ट प्रतीत है कि वह प्रकृतिवादी दार्शनिकों के समान शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक को स्वीकारते हैं। इन्होंने प्रकृतिवादियों के “प्रकृति की ओर लौटो” नारे के स्थान पर “वेदान्त की ओर लौटो” पर विशेष बल दिया। वैदिक और औपनिषदिक काल में जो शिष्य जिस योग्य होता था गुरु द्वारा उसको उसी प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। अतः शिक्षा के सम्बन्ध में पहली आवश्यक शर्त यह है कि शिक्षा शिक्षार्थी के दृष्टिकोण से उसकी योग्यता, क्षमता - आवश्यकतानुसार दी जाये। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा से क्या तात्पर्य है? इस पर पहले विचार कर लेना युक्ति संगत होगा।

विवेकानन्द के अनुसार, शिक्षा की व्याख्या शक्ति के विकास के रूप में की जा सकती है। उनका मानना है कि सभी ज्ञान मनुष्य में स्वभाव सिद्ध है अर्थात् मनुष्य के अन्दर स्थित है सिर्फ उसके ज्ञान को बाहर प्रकट करने योग्य बनाना है। इसी को हम कहते हैं कि मनुष्य सीखता है। विवेकानन्द कहते हैं कि मनुष्य जो कुछ सीखता है वह मानस शास्त्र संगत भाषा में अविष्कार करता है, अनावृत्त या ‘प्रकट’ करता है। ‘अविष्कार’ का अर्थ है - मनुष्य का अपनी अनन्त ज्ञान स्वरूप आत्मा के ऊपर से आवरण को हटा लेना। मानव में कुछ शक्तियाँ विद्यमान रहती हैं। शिक्षा उसकी इन्हीं शक्तियों का, उसमें उपस्थित गुणों का विकास करती है। पूर्णता बाहर से नहीं आती है, वरन् मनुष्य के भीतर छिपी रहती है। गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त अपने प्रतिपादन के लिए न्यूटन की खोज की प्रतीक्षा नहीं कर रहा था। वह न्यूटन के मस्तिष्क में पहले से ही विद्यमान था।

शिक्षा को अरविन्द ने नवीन दृष्टिकोण से देखा है। उन्होंने रूसो की भाँति घोषित किया है कि सूचनाओं का संग्रह मात्र शिक्षा नहीं है। “सूचनाएँ ज्ञान की नींव नहीं हो सकती, वे अधिक से अधिक वह सामग्री हो सकती है जिसके द्वारा जानने वाला अपने ज्ञान की वृद्धि कर सके अथवा वे वह बिन्दु है, जहाँ से प्रारम्भ किया जाय या नई खोजों का निकालना प्रारम्भ किया जाय। वह शिक्षा जो अपने को ज्ञान देने तक सीमित रखती है, शिक्षा नहीं है।” इस प्रकार उन्होंने शिक्षा को एक व्यापक दृष्टि से अपनाया है। यह कहा जाता है कि प्राचीन ऋषि-परम्परा में होने के कारण अरविन्द बुद्धिवादी और ज्ञेयवादी थे अतएव उनका विचार था कि शिक्षा बौद्धिक इमारत बनाने की नींव होती है जिसके ऊपर विकास का दृढ़ भवन तैयार होता है। बौद्धिक विकास में केवल तथ्य नहीं एकत्र होते हैं वरन् बुद्धि उनका प्रयोग कर सके, तभी विकास सार्थक होता है। शिक्षा इस प्रकार वह साधन है जिससे बालक और प्रौढ़ सभी नई सामग्री एकत्र करें और उस सामग्री का जो उनके अधिकार में है कुशलता से प्रयोग करें और जिस भवन की वे नींव डालते हैं वह केवल इस बल और शक्ति की व्यवस्था होगी जो अन्तःकरण विवेक, ज्ञान तथा रचना शक्ति की बराबर बढ़ती हुई क्रियाओं का भार वहन कर सके।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विवेकानन्द के शब्दों में - “मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है” यह विचार वेदान्त दर्शन को आधार मानने के फलस्वरूप प्रकट हुए हैं जिसमें यह स्वीकारा गया है कि मानव में ईश्वरीय पूर्णता विद्यमान होती है यह पूर्णता चिरकाल से हमारे भीतर उपस्थित है, यह प्रत्येक व्यक्ति का जन्म स्वत्व है, इसी जन्म स्वत्व की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि शिक्षा व्यक्ति में स्थित पूर्णता का ज्ञान और अनुभूति है लौकिक व आध्यात्मिक समस्त ज्ञान मनुष्य के भीतर होता है परन्तु मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप के प्रति पूर्णरूप से सचेत नहीं रहता है। इस कारण वह अपना आध्यात्मिक परिचय आत्मा जो सत् चित् और आनन्द है, से नहीं कर पाता जिस क्रिया द्वारा व्यक्ति में पूर्णता का ज्ञान होता है और पूर्णता की अभिव्यक्ति होती है वहीं वास्तव में शिक्षा है। आधुनिक शिक्षा की व्याख्या और विवेकानन्द की शिक्षा की व्याख्या में अन्तर केवल इतना ही है कि स्वामी जी ने आध्यात्मिक तत्व पर विशेष बल दिया है उनका विश्वास है कि शिक्षा द्वारा आत्म विश्वास आता है और आत्म विश्वास से छिपे हुए ‘ब्रह्म’ की जागृति होती है। समस्त ज्ञान मनुष्य के अन्तर में अवस्थित है, उसे केवल जागृति-केवल प्रबोधन की आवश्यकता है। हमें बालकों के लिए केवल इतना ही करना है कि वे अपने हाथ, पैर, कान और आँखों के उचित उपयोग के लिए अपने बुद्धि का प्रयोग करना सीखें।

वास्तविक शिक्षा व्यक्ति के मस्तिष्क, आत्मा, विवेक, बुद्धि का उचित मार्ग प्रदर्शित करती है, प्रशिक्षित करती है तथा विकसित करती है। इससे स्पष्ट है कि “सच्ची एवं वास्तविक शिक्षा वही है जो मानव की अन्तर्निहित शक्तियों को इस प्रकार विकसित करती है कि वह उनसे पूर्णरूपेण सफल होता है। यह शिक्षा जीवन को सफल बनाने में मानव की सहायता करती है। इसके अतिरिक्त यह शिक्षा जीवन एवं मानव जाति के मन तथा आत्मा और उस समस्त मानवता की आत्मा से जिसका कि वह अंश है, पूर्ण सम्बन्ध की स्थापना में सहायता देती है” ये शब्द अरविन्द के हैं।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा का प्रथम लक्ष्य व्यक्ति की आन्तरिक पूर्णता को बाह्य जगत में प्रकट करना है जिससे वह अपने आपको भली भाँति समझे। अपने आपको समझने का अर्थ है मनुष्य की आत्मा का उस परमात्मा से, जिसका वह अंश है पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना। ऐसे ही विचार फ्रोबेल के भी दृष्टिगत होते हैं। इनके अनुसार शिक्षा का अर्थ है मनुष्य की आत्मा का उस परमात्मा से, जिसका वह अंश है पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना। ऐसे ही विचार फ्रोबेल के भी दृष्टिगत होते हैं। इनके अनुसार शिक्षा का लक्ष्य बालक को यह अनुभूति कराना है कि उसके भीतर ईश्वर है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा का प्रथम उद्देश्य आध्यात्मिक विकास है।

श्री अरविन्द के विचार में शिक्षा के उद्देश्य

श्री अरविन्द वास्तविक, जीवन्त तथा सच्ची शिक्षा बालक की सुषुप्त इन्द्रिय शक्तियों को उद्बुद्ध करना मानते हैं। शिक्षा को मानव आत्मा की माँगों की पूर्ति करने वाली होनी चाहिए। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य प्रकृति की सर्वोत्तम शक्ति का विकास करना होना चाहिए। अतः आत्म शिक्षा को ही श्री अरविन्द सच्ची शिक्षा मानते हैं। शिक्षा का प्रमुख कार्य मानव मस्तिष्क एवं शक्तियों का सृजन शिक्षा करना है। सामान्य मस्तिष्क के अतिरिक्त विशिष्ट मस्तिष्क भी होता है जो जीवन और विषयों के परे स्थित है और जो इस संसार में अपना प्रकाशन करता है। इस विशिष्ट मस्तिष्क की अनुभूति करना कराना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द के विचार में शिक्षा का पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसे प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकता व इच्छानुसार शक्तियों के उचित विकास का अवसर प्राप्त हो। सभी के लिए एक सा पाठ्यक्रम उचित नहीं है। कृषि व्यवसाय में संलग्न लोगों को उनके व्यवसाय की तथा अन्य लोगों को उनके रुचि के व्यवसायों की शिक्षा दी जानी चाहिए। आत्मनिर्भर होने के लिए विभिन्न उद्योगों की शिक्षा का पाठ्यक्रम में यथेष्ट स्थान दिया जाए। वैदिक संस्कृति व ज्ञान को जानने के लिए उन्होंने संस्कृत भाषा की अनिवार्यता पर जोर दिया। उनका मानना था कि संस्कृत शब्दों की ध्वनि मात्र से हमारी जाति को प्रतिष्ठा, बल और शक्ति प्राप्त होती है। जनसाधारण को उनकी निजी भाषा में शिक्षा देने के वह पक्षधर हैं परन्तु साथ ही साथ संस्कृत शिक्षा भी दी जाये ऐसा उनका मानना था। आध्यात्मिक सत्त्यों को जानने के लिए भी संस्कृत का ज्ञान आवश्यक बताया, क्योंकि सभी आध्यात्मिक तथ्य संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध हैं।

श्री अरविन्द जी के विचार से शिक्षा का पाठ्यक्रम

श्री अरविन्द जी के अनुसार बालक को सर्वप्रथम उसके चारों ओर के जगत से शिक्षक द्वारा परिचित करवाया जाना चाहिए, जिससे बालक अपने चारों ओर के दैनिक कार्यों एवं उसे ज्ञान के विषय में रुचि ले सके। प्रत्येक बालक में विभिन्न मानसिक शक्तियाँ होती हैं। इन शक्तियों के उचित उपयोग के लिए शिक्षा का उचित पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाना चाहिए।

शोध निष्कर्ष :-

स्वामी विवेकानन्द एवं श्री अरविन्द के जीवन वृत्त, कृतित्व, जीवन दर्शन, शैक्षिक दर्शन, धर्म सम्बन्धी विचार तथा शैक्षिक आदर्शों का गहन, विस्तृत एवं विश्लेषित अध्ययन करने के उपरान्त शोधकर्ता ने पाया कि दोनों विचारक भारतीय परम्परावादी आदर्शवादी दर्शन के समर्थक होने के साथ-साथ वैज्ञानिकता को मानने वाले थे। इस दृष्टि से इनके शैक्षिक विचारों में यथेष्ट साम्यताएं दिखाई देती हैं, परन्तु भिन्न भिन्न सामाजिक व पारिवारिक परिवेश में पोषित होने के कारण कहीं-कहीं विचारों में व कार्य करने की शैली में भिन्नता आना स्वाभाविक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लाल रमन बिहारी (2001), “शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त”, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
2. गुप्त, बाबूराम : भारतीय शिक्षा का इतिहास, रतन प्रकाशन मन्दिर, साहित्य कुंज, आगरा।
3. पाठक, डी.पी. : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. विवेकानन्द, स्वामी (2008), “शिक्षा” रामकृष्ण मठ, नागपुर।
5. विवेकानन्द, स्वामी (2005), “जाति संस्कृति और समाजवाद” रामकृष्ण आश्रम, नागपुर।



महात्मा गाँधी की बेसिक शिक्षा एवं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शान्ति निकेतन की प्रारम्भिक शिक्षा

डॉ. किरण गिल

शोध निर्देशिका :

(सहायक प्रोफेसर)

शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

सुरेश

शोधकर्ता :

शिक्षा संकाय

टांटिया विश्वविद्यालय

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा महात्मा गांधी की बेसिक शिक्षा एवं गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर के शान्ति निकेतन की प्रारम्भिक शिक्षा के बारे में बताया गया है तथा महात्मा गांधी की बेसिक शिक्षा का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्व तथा उपयोगिता एवं गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर के शान्ति निकेतन की प्रारम्भिक शिक्षा के महत्व के बारे में चर्चा की गई है।

Key Word :- बेसिक शिक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा।

प्रस्तावना

महात्मा गाँधी एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को एक ऐसे ज्ञान और कौशल के रूप में स्वीकार किया, जो मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के लिए आवश्यक है। मनुष्य के भौतिक विकास की दृष्टि से महात्मा गाँधी जी ने कहा है कि - “शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में स्वावलम्बन लाना है। व्यक्ति का व्यावसायिक, सांस्कृतिक, चरित्र विकास एवं सर्वांगीण विकास करना ही शैक्षिक उद्देश्य है।” तो विवेकानन्द जी ने उद्घोष किया - “हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी बनें।”

आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से ज्ञान मनुष्य के अन्दर होता है वह बाहर से किसी के द्वारा दिया नहीं जाता बल्कि ढुंके हुए ज्ञान के आवरण को हटाने का प्रयास किया जाता है। जिससे उसकी जन्मजात शक्तियाँ प्रकट हो सकें। यह बात दोनों दार्शनिक मानते हैं तो इस परिप्रेक्ष्य में रवीन्द्रनाथ टैगोर, “तपस्या एवं दृढ़ भक्ति की भावना का विकास करने का परामर्श देते हैं।”

इस प्रकार गाँधी जी एवं टैगोर दोनों ने ही शिक्षा के द्वारा मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास करने की बात कही। जो शिक्षा इन दोनों पक्षों का विकास नहीं करती है वह अपूर्ण है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों विचारकों ने भारतीय परम्परा के आध्यात्मिक और वर्तमान की आवश्यकता को देखते हुए भौतिक ज्ञान की शिक्षा देने की बात कहकर दोनों पक्षों में संतुलन बनाया।

समस्या कथन

“महात्मा गाँधी की बेसिक शिक्षा एवं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शान्ति निकेतन की प्रारम्भिक शिक्षा।”

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. महात्मा गाँधी के बेसिक शिक्षा एवं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के द्वारा प्रतिपादित प्रारम्भिक शिक्षा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन करना—

- (क) शिक्षा के उद्देश्य का तुलना करना।
- (ख) शिक्षा के पाठ्यक्रम का तुलना करना
- (ग) शिक्षण पद्धतियों की तुलना करना।
- (घ) अनुशासन एवं विद्यालयी व्यवस्था की तुलना करना।
- (ङ) आध्यात्मिक शिक्षा की तुलना करना।

2. महात्मा गाँधी के बेसिक शिक्षा एवं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रारम्भिक शिक्षा-प्रणालियों में निहित राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध को रेखांकित करना।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा ऐतिहासिक, दार्शनिक विधि का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षित युवा जब स्नातक या परास्नातक करके रोजगार की तलाश में निकलता है तो उसे अधिकांशतः निराशा हाथ लगती है जिससे इस समस्या के मूल से चोरी, हिंसा लूट, आवागामी जैसी उपसमस्याएं जन्म लेती हैं। इस दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था से गरीबी-बेरोजगारी बढ़ती जाती है। बेसिक शिक्षा की यह प्रमुख विशेषता है कि इसमें जब बालक शिक्षा ग्रहण करके निकलता है तो स्वरोजगार का सृजन कर लेता है और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन जाता है। आचार्य विनोबा भावे लिखते हैं कि “तालीम पा चुकने के बाद बालक अपने पैरों पर खड़ा होने लायक बन जाये।” यहां पैरों पर खड़े होने का तात्पर्य बालक अपनी शिक्षा के पश्चात आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होगा।

समग्र मानव के निर्माण के लिए शिक्षण संस्थाओं एवं इनमें कार्यरत शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्रों के उत्तरादायित्व तथा उनकी सहभागिता को स्पष्ट करने के लिए श्री गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने कहा है कि छात्र-शिक्षक में जरा सा भी भेद भाव नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा है कि शिक्षा केन्द्रों को चाहिए कि वे विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों को सहज रूप से मदद करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, प्रदीप (2019). महात्मा गाँधी जी के बेसिक शिक्षा व शिल्प शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, राजा हरपाल सिंह सिंगरौर महाविद्यालय, जौनपुर।
2. सरोज, शिवधनी (2019). स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गाँधी के स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित विचारों का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, राजा हरपाल सिंह सिंगरौर महाविद्यालय, जौनपुर।
3. पाण्डेय, के. पी. (2008), शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. मालवीय, डा. राजीव (2006), शिक्षा दर्शन एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
5. माथुर, डॉ. सावित्री (2007), शिक्षा दर्शन, जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
16. मिश्र, महेश्वर (2006), गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, नई दिल्ली: डायमण्ड बुक्स एक्स-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-2, ISBN : 81-288-1030-8A



तुलसीदास जी द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्य

डॉ. रेखा सोनी

शोध निर्देशिका :

(प्रोफेसर)

शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

प्रियंका

शोधकर्त्री :

शिक्षा संकाय

टांटिया विश्वविद्यालय

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा तुलसीदास जी द्वारा प्रतिपादित विभिन्न शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। तुलसीदास जी ने मानव विकास तथा जीवन में शिक्षा के प्रचार को दृष्टिगत रखते हुये मानव जीवन में विभिन्न प्रकार के शैक्षिक मूल्यों की आवश्यकता बताई है। तुलसी दास जी के साहित्य में प्रतिपादित विभिन्न शैक्षिक मूल्यों तथा सामाजिक, भौतिक, आध्यात्मिक, नैतिक, अनुशासन व्यवस्था, लोक मर्यादा, गुरु महिमा, छात्रानुशासन, नारी शिक्षा इत्यादि मूल्यों का विस्तृत भण्डार मौजूद है।

Key Word :- तुलसीदास, शैक्षिक मूल्य।

प्रस्तावना

गोस्वामी तुलसीदास तत्त्वद्रष्टा महापुरुष थे। उन्होंने भारतीय समाज की अनेक समस्याओं पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया तथा उन्हें युग-युग की समस्याओं के रूप में परख कर उनका शाश्वत समाधान खोजने का प्रयास किया था। गोस्वामी जी ने समय की परिस्थितियों के अनुकूल जो उचित था उसी के अनुकूल भारतीय समाज को चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने समस्त ग्रन्थों के मध्य इतना अधिक दार्शनिक विश्लेषण किया है कि काव्य-तत्त्व को हटा दिया जाए तो मानस एक दर्शन-ग्रन्थ हो जायेगा जिसमें विभिन्न शैक्षिक मूल्यों के उत्थान का प्रयास सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है।

तुलसी ने मध्यकालीन सामाजिक व्यवस्था और परिस्थितियों के दबावों को ध्यान में रखकर मानव और समाज के उद्धार का प्रयत्न किया है। तुलसी ने अपने परतन्त्रता पीड़ित और पतनोन्मुख युग में भौतिकताजन्य आसक्तियों और उनसे उत्पन्न काम, क्रोध आदि के विकारों के घेरे में बन्दी मानव को समता, सन्तोष, दया, विवेक, विरक्ति, विज्ञान आदि की उतीन्द्रिय और उदात्त भाव-भूमि पर प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से राम के रूप में महान जीवन-मूल्यों अथवा नैतिक आदर्शों की स्थापना की है और राम-भक्ति के रूप में जन-जन में निहित शामत्व के अनुसंधान और साक्षात्कार का विशद योजना प्रस्तुत की है।

नैतिक आचार नकारात्मक और सकारात्मक होता है। अनौचित्य की अस्वीकृति और औचित्य की स्वीकृति में नैतिक आचार चरितार्थ होता है किन्तु नैतिक चेतना इससे भी आगे बढ़कर सृजनात्मक और उदार रूप गृहण करती हुई साधुता का स्तर अधिगत करती है। यदि नैतिकता का अर्थ कर्तव्यपालन लिया जाए तो नैतिक व्यवहार होगा सभ्य व्यवहार। समाज की विभिन्न संस्थाएँ सभ्य व्यवहार के रूपों को अनिवार्य प्रथाओं अथवा रूढ़ियों का रूप दे देती हैं। किन्तु साधुता का व्यवहार यान्त्रिक नैतिकता के दायरे का अतिक्रमण करता है, उसकी स्थिति सांस्कृतिक मूल्यों के बीच है। साधु पुरुष ऊर्ध्वमुखी सृजनात्मक नैतिक चेतना द्वारा आत्म कल्याण और लोक-कल्याण के कार्यों में प्रवीण होते हैं।

शोध अध्ययन का औचित्य

तुलसी काव्य में भी विशेषतः 'मानस' में ऐसे प्रसंगों की कमी नहीं है जहाँ गुरु-महिमा के सिद्धान्त का प्रतिपादन किसी न किसी पात्र के मुखार बिन्द से नहीं करवाया गया हो। गुरु का भक्ति से भी बड़ा ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। तुलसी ने स्पष्ट शब्दों में यह घोषित किया है कि गुरु का आश्रय पाये बिना कोई भी व्यक्ति संसार-सागर को पार नहीं कर सकता है। परम कल्याण-आकांक्षी शिष्य सर्वप्रथम गुरु की शरण ढूँढ़ें, तदुपरान्त अन्य साधनों के उपयोग का अवसर आता है तुलसी का यह दृढ़ विश्वास था कि निरभिमान भाव से गुरु की शरण में जाने पर सुखनिधान भगवान की प्राप्ति अवश्य होती है। स्वयं तुलसी ने भी भक्ति का राजमार्ग गुरु के प्रसाद से ही देखा था। अपनी प्रगाढ़ गुरु-भक्तिवश उन्होंने ऐसा विचार भी प्रकट किया है कि अनन्य भगवत्प्रेम की प्रतिष्ठा के लिए गुरु-सेवा और गुरु के द्वारा बताये गये सन्मार्ग का अनुसरण करना साधक के लिए परमावश्यक है। गुरु के वचन-रूपी सूर्य किरणों से ही शिष्य के मोहान्धकार-भरित हृदय से तम की निवृत्ति होती है। गुरु शिष्य में विमल विवेक की प्रतिष्ठा करता है तथा संसार से उद्धार करता है। इसलिए गुरु का आश्रय ढूँढ़ना अनिवार्य है। गुरु का भक्ति क्षेत्र में भी उच्च स्थान है। ईश्वर के नाम-जप सम्बन्धी मर्म को भी गुरु ही समझाता है तथा गुरु की सहायता के बिना भक्ति सांगोपांग सम्पन्न नहीं हो सकती है। गुरु सेवा से लाभान्वित होने वालों में तुलसी रचित 'मानस' में वर्णित काग भुशुण्डि का स्थान भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, उन्होंने अपने पूर्व जन्म की शूद्रदेह में, परम साधु, शिवभक्त ब्राह्मण गुरु की सेवा करके नाना प्रकार के शुभ उपदेश तथा शिवमन्त्र का लाभ लिया।

शोध अध्ययन का उद्देश्य

तुलसी दास जी के साहित्य में प्रतिपादित विभिन्न शैक्षिक मूल्यों तथा सामाजिक, भौतिक, आध्यात्मिक, नैतिक, अनुशासन व्यवस्था, लोक मर्यादा, गुरु महिमा, छात्रानुशासन, नारी शिक्षा इत्यादि मूल्यों का विस्तृत अध्ययन करना।

तुलसीदास जी द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्य

तुलसी ने सामाजिक विषमताओं का खण्डन करके सबल और निर्बल, धनी और निर्धन, पण्डित और मूर्ख सबको मूलतः अधिकार की दृष्टि से एक समान माना है। समाज के सभी लोग यदि मर्यादा का पालन करके अर्थात् अपने कर्तव्यों का ध्यान रखें तो एक आदर्श समाज की स्थापना हो सकती है। इसके लिये तुलसीदास जी ने मानव जीवन हेतु मूल्यों की आवश्यकता बताई है।

राजनीतिक मूल्य

तुलसी ने मानस के माध्यम से जो राजनीतिक शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया है, वह प्रासंगिक ही है। विभिन्न रूपकों द्वारा राजा तथा उसके विभिन्न सहयोगियों के बारे में बताया गया है।

आध्यात्मिक मूल्य

तुलसी ने मानव जीवन का लक्ष्य राम-नाम को हृदय में धारण करके संसार समुद्र से पार होना बताया है। उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा का उद्देश्य ईश्वर को सर्वोपरि मानकर भक्ति द्वारा ईश्वर को प्राप्त करना बताया है।

नारी उत्थान

तुलसी ने नारी को माया रूपिणी माना है किन्तु धर्म सम्मत आचरण युक्त नारी जाति के लिए अत्यधिक आदर प्रकट किया है। पार्वती, अनुसुइया, कौशल्या, सीता, सुमित्रा, शबरी, ग्राम-वधू आदि के माध्यम से नारी जाति का सम्मान किया है तुलसी ने नारी जाति के सम्मान के लिए विभिन्न प्रसंगों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से शिक्षा देने का प्रयास किया है। नारी

को विभिन्न रूपों में लिया जा सकता है जैसे माँ, पुत्री, सास-बहू, पत्नी, बहन आदि। नारी के सभी रूपों का अलग-अलग महत्व है।

नैतिक मूल्य

तुलसी ने नैतिक आचरण पर अत्यधिक बल दिया है तथा नैतिकता का आधार सुमति को माना है। तुलसी ने सम्पूर्ण साहित्य में नैतिक शिक्षा सम्बन्धी वर्णन किया है। तुलसी ने सत्य, शील, अहिंसा, तप, श्रद्धा तथा दया को जीवन निर्वाह के लिए अत्यावश्यक माना है। सत्य को बहुत बड़ा तप माना है तथा इसके समान दूसरा कोई धर्म नहीं माना है।

लोक-मर्यादा सम्बन्धी मूल्य

तुलसी ने लोक-मर्यादित आचरण पर बल दिया है तथा मर्यादा उल्लंघन का विरोध किया है। यह मर्यादा सभी व्यक्तियों के लिए है चाहे वह किसी भी जाति, धर्म आयु का हो। तुलसी का समस्त सामाजिक चेतना प्रयास जनता-जनार्दन के मानस परिष्कार के लिए ही था। उनके द्वारा कल्पित समाज स्वार्थ त्याग तथा बलिदान की शिक्षा देने वाला है तथा लोकाराधन के लिए राज्य, सुख, राग आदि सबको निछावर करने वाला है। तुलसी ने छोटे-परिवार से लेकर विस्तृत राज्य तक को लोक-मर्यादा शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया है।

सैनिक शिक्षा

सैनिक शिक्षा में तुलसी ने शौर्य को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। शौर्य ही सैनिक शिक्षा का मूलाधार है। वीरता को केवल सैनिक धर्म का द्योतक ही न मानकर विजय का भी व्यंजक बताया है। शत्रु को पीठ दिखाने वाले सैनिकों की तुलसी ने निन्दा की है। सैनिकों को वीर तथा बलशाली होने की शिक्षा सुग्रीव के माध्यम से प्रदान की है

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

आधुनिक युग में नैतिक पतन की विकराल समस्या विद्यार्थी समाज को निगल जाने के लिए तैयार हैं। ऐसी स्थिति में कबीर और तुलसी द्वारा प्रतिपादित मूल्य नैतिक उत्थान का कार्य कर सकते हैं। मध्यकालीन कवियों द्वारा वर्णित शिक्षण-विधियाँ भी आज के विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त करने से उनका व्यक्तित्व केवल बहिमुखी ही न रहकर अन्तर्मुखी भी हो जायेगा। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व से छात्रों में चिन्तन एवं मनन शक्ति का विकास होगा और इससे विद्यार्थियों के प्रतिभावों का सही दिशा में विकास होगा। कबीर एवं तुलसी दोनों ने ही आन्तरिक अनुशासन का अधिक महत्व बताया है। बाह्य अनुशासन से छात्रों में उदण्डता उत्पन्न होती है। आज की शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त अनुशासनहीनता के अन्त के लिए धार्मिक तथा नैतिक मूल्य बहुत लाभकारी हो सकते हैं।

भविष्य में किये जाने वाले शोध-प्रबंधों के लिए सुझाव

(1) प्रस्तुत शोध-अध्ययन में शोधकर्त्री ने केवल कबीर तथा तुलसी दो ही कवियों द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन किया है। इस प्रकार का अध्ययन अन्य कवियों जैसे सूरदास, बिहारी, मीराबाई आदि के द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों के लिए भी किया जा सकता है।

(2) यह शोध अध्ययन मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में किया गया है। इसको प्राचीन कालीन शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।

(3) प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक मूल्यों, गुरु-महिमा, नारी-उत्थान, सामाजिक उत्थान तथा समन्वयवादी विचारधारा आदि का ही अध्ययन किया है इसी प्रकार का अध्ययन सांस्कृतिक मूल्यों के लिए भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. सीताराम जायसवाल (2005) : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ।
2. प्रताप सिंह चौहान (1985) : कबीर साधना औ साहित्य, ग्रन्थम रामबाग कानपुर।
3. कबीर एक विश्लेषण (1990) : प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी (1992) : कबीर संक्षिप्त चिन्तन वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण।
5. हरिकृष्ण अवस्थी (1989) : तुलसीदास परिवेश, प्रेरणा प्रतिफल काशी नागरी प्रचारणी सभा वाराणसी प्रथम संस्करण।



EDUCATION IN RURAL AREA: CHALLENGES AND INITIATIVES

Musarath Unnisa. A

Assistant Professor Department of English
Krupanidhi College of Commerce and Management Affiliated to Bengaluru City University
Email ID: musarathunnisa17@gmail.com Contact Number: 7624951572

Stella Joseph

Assistant Professor Department of Commerce and Management
Krupanidhi College of Commerce and Management Affiliated to Bengaluru City University
Email ID: stellajoseph6875@gmail.com Contact Number: 8660255149

Hajira Sultana

Assistant Professor Department of Commerce and Management
Krupanidhi College of Commerce and Management Affiliated to Bengaluru City University
Email ID: hajirasultana821@gmail.com Contact Number: 8792175020

Abstract

Education is one of the most powerful instruments for the social and economic transformation of a nation. Since independence, India's education system has undergone significant paradigm shifts. As a critical pillar of progress and empowerment, education plays an especially vital role in rural India, where shaping young minds is essential for sustainable development. India's vast and diverse population is broadly divided into urban and rural sectors, and education remains the key driver of economic advancement across both.

However, the rural education system continues to face persistent challenges such as inadequate infrastructure, limited investment, traditional teaching practices, and deep-rooted social inequalities. These factors collectively hinder the holistic development of rural learners. Education, therefore, becomes a crucial catalyst for social change and rural upliftment.

To integrate youth from underprivileged rural backgrounds into the national mainstream, strategic investments in education are imperative. Experiences from developed countries demonstrate that continuous improvement in education fosters long-term social transformation. Similarly, empowering rural communities in India through strengthened educational initiatives such as use of local languages, expand digital access, flexible schooling and providing skill based learning can lead to inclusive growth and progressive societal change.

Keywords: Rural Education, transformation, empowerment, parameters, sustainability.

Introduction

From ancient times, India is known as “Home of Rural Life” and people living in villages represent the true images of “Real India”. Currently India’s population is more than 1.44 billion and 83.3 crore live in rural areas while 37.7 crore stay in urban areas. The majority of the population lives in the rural areas. The percentage of people living in rural India stands at 66% and another 34% of the population lives in urban areas.

If a country’s rural education is performing well, it reflects on the entire economic state of a country. In India, Right to Education (RTE) is a fundamental right, which states that every citizen of India between the ages of 6 to 14 years will get free and compulsory education irrespective of caste, creed, religion, and economic conditions, it gives equal opportunity to all. Even though education is a basic right of every citizen, many are deprived of this right. Compared with the education facilities available in urban areas, the schools in Rural India have a scarcity of basic needs like drinking water, transportation facilities, and competent teachers. Even though the population residing in rural area is very high, not much attention is given to the rural education system. Though government schools exist in rural areas, but when compared to private schools then quality and access to education is major issue. Since independence government has taken initiative to improve its quality of education through different educational policies, increasing fund for development of education in the country. In spite of several attempts, the desired goal not achieved.

Education is considered as the pillar of economic growth of a nation. Sufficient education helps in the overall development of society and the country as a whole. I am sure everyone is aware of this fact and these are no new words still, when we talk about India, there are significant number of children who are deprived even of basic Education. According to the National Family Health Survey literacy rate of India is 77.7 percent, which is significantly improved since independence but still, a literate person means one who can read and right at least one language. It does not ensure the level of education required to acquire a steady livelihood.

Objective

- To analyse the problems faced in rural education in India
- To assess the reasons for the failure of rural education
- To examine the initiatives taken by the Government to overcome the challenges
- To provide feasible suggestions for improving rural education in India

Review of Literature

In 21st century, Education is the one of the most important instruments for social and economic transformation of a country. Education in India has been gone through a paradigm shift since independence. Considerable emphasis has been given on literacy, school enrollment, and spread of institutions of higher education including technical education over the decades. India is a country of 1.3 billion people, where 67% of the Indian population lives in rural areas. Approximately 196 million elementary school going children, out of that 146 million are enrolled in rural schools (U-DISE, 2015-16). The enrollment of children for the age group 5-14 has been above 95% in rural India (ASER, 2018). This is a good sign as far as rural education is concerned, quality and access to

education is major issues in rural education system. AN OVERVIEW OF RURAL EDUCATION IN INDIA-THE WAY FORWARD MR. RANJAN KUMAR MUDULI. Vol. 10 | No. 8 | August 2021.

Quality and access to education is the major concern in rural schools as there are fewer committed teachers, lack of proper text books and learning material in the schools. Though Government schools exist, but when compared to private schools then quality is a major issue. Majority of people living in villages have understood the importance of education and know that it is the only way to get rid of poverty. But due to lack of money they are not able to send their children to private schools and hence depend upon government schools for education. SAHANA SRIDHAR, Proceedings of Cloud based Technical Symposium, 25th June, 2020.

The real India live in villages', this saying is as true today as it was when the country got independence 65 years back. As more than half of the population of the country lives in villages, rural development is an eminent factor for the development of our economy. The crucial motivating factor for the development of the economy in today's time is education. Like in the body of human being liver is responsible for the proper functioning of the body, in

the same way education acts a backbone for the economy. To explore this significant role of education in India especially in rural India, this paper tries to explain the present condition of rural education, rural education v/s urban education failures and problems being faced by the rural education. It also focused the various initiatives been taken by the government and some of the suggestions for improving the education system in rural or remote areas. ADVANCE RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE Volume 4 | Issue 1 | June, 2013 | 115-119.

Statement of Problem

The rural education system continues to face persistent challenges such as inadequate infrastructure, limited investment, traditional teaching practices, and deep-rooted social inequalities. The study aims to highlight the challenges faced in rural areas and provide the feasible suggestion based on the data collected

Research Methodology

This study adopted a qualitative research methodology to explore the challenges and initiatives related to education in rural areas. The research was conducted in selected rural villages of Bangalore using random sampling to include teachers, students, parents and management. Data were collected through semi-structured interviews, document reviews, articles, journals and government websites. Ethical considerations such as informed consent and participant confidentiality were maintained throughout the study.

Limitations of the study

The findings provide rich, contextual understanding, they are limited to the specific study areas and may not be universally generalizable.

To analyse the major problems in growth of Rural Education in India

Since independence government has taken initiative to improve its quality of education through

different educational policies, increasing fund for development of education in the country. In spite of several attempts, the desired goal not achieved.

The major problems faced by the rural schools in India are

Number of Schools - In comparison to the number of schools in urban area, there are very few schools in rural areas. Due to non-availability schools in nearby areas, students have to walk long distance in order to reach their schools.

Low Income of Parents - Usually, peoples in rural area have little income which is usually consumed in basic survival, making education out of their income is insufficient.

Inadequate Infrastructure -One of the most challenging obstacles in rural education is the lack of adequate infrastructure, which includes schools, classrooms, libraries, and computer laboratories. Also, many rural schools lack basic utilities such as electricity, water supply, and sanitation facilities, making the learning environment unsuitable for pupils.

In addition to infrastructure constraints, rural schools often lack essential resources like textbooks, teaching aids, and technology, which are essential for quality education. This limitation severely impacts the education system in rural areas and restricts students' learning scope, hampering their overall development.

Shortage of Qualified Teachers

Rural areas frequently face a shortage of qualified and trained teachers, especially in mathematics, science, and English. This gap in teaching expertise directly affects the quality of education imparted to students, ultimately impacting their future employability and prospects.

Gender Disparities

Despite efforts to promote gender equality, the education system in rural areas continues to grapple with deep rooted gender disparities. In certain areas, girls face restrictions on attending school or pursuing higher education, limiting their opportunities for personal growth and empowerment.

To assess the reasons for the Failure of Rural Education in India

1. Poor Infrastructure

Many rural schools lack basic facilities such as proper classrooms, drinking water, toilets (especially for girls), electricity, libraries, and laboratories. This discourages students from attending regularly and affects the quality of education.

2. Shortage of Qualified Teachers

There is a significant gap in the availability of trained and motivated teachers in rural schools. Often, teachers are underqualified, irregular, or overburdened, leading to ineffective teaching and learning outcomes.

3. High Dropout Rates

Due to poverty, child labor, household responsibilities, and early marriage (especially among girls), many students drop out after primary or middle school, disrupting their educational journey.

4. Gender Inequality

Social norms and safety concerns in rural areas lead to gender bias, where girls are often denied education or are forced to leave school early.

5. Language Barriers

Most rural children speak regional dialects, but the medium of instruction in schools is often Hindi or English, which they struggle to understand, making learning difficult.

6. Lack of Awareness and Parental Illiteracy

Many parents in rural areas are illiterate or unaware of the long-term benefits of education. As a result, they don't prioritize schooling for their children, especially daughters.

7. Irregular Attendance and Multi-grade Classrooms

Low student attendance and the practice of teaching multiple grades in a single classroom due to staff shortages lead to reduced learning outcomes.

To examine the initiatives taken by the Government to overcome the challenges

The Indian government has implemented various policies and programs to improve rural education. Initiatives like the Sarva Shiksha Abhiyan (Education for All Movement) and the Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan (National Mission for Secondary Education) focus on increasing rural school access, enrollment, and retention rates. These programs provide financial assistance, infrastructure development, and capacity-building for teachers.

Government Policies and Programs Sarva Shiksha Abhiyan or SSA, is an Indian Government program aimed at the universalization of Elementary education “in a time bound manner”, the 86th Amendment to the Constitution Of India making free and compulsory education to children between the ages of 6 and 14 (estimated to be 206 million children in 2001) a fundamental right (Article- 21A). The program was pioneered by former Indian Prime Minister Atal Bihari Vajpayee. It aims to educate all children between the ages of 6 and 14 by 2010. However, the time limit has been pushed forward indefinitely.

Right to Education (RTE) Act, 2009

- Ensures free and compulsory education for children aged 6–14.
- Mandates minimum standards for school infrastructure, teacher-student ratio, and inclusive education in rural areas.

Mid-Day Meal Scheme (MDMS)

- Provides nutritious meals to schoolchildren to boost enrollment, retention, and attendance in rural schools.
- Also improves nutritional levels among children from economically weaker sections.

Rastriya Avishkar Abhiyan

- Encourages Science and Math education through hands-on activities, especially in rural and under-resourced schools.

Operation Digital Board

- Introduces smart classrooms and digital content to rural schools to enhance learning quality and bridge the urban-rural digital divide.

Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya (KGBV)

- Residential schools for girls from disadvantaged communities in rural areas to promote girls' education and reduce dropout rates.

Suggestions to Improve Rural Education

- **Improve Infrastructure:** Build well-equipped schools with toilets, clean water, libraries, and digital tools.
- **Recruit and Train Teachers:** Hire more local, multilingual, and trained teachers with incentives for rural postings.
- **Use Local Language for Teaching:** Promote mother tongue or bilingual education in early classes for better understanding.
- **Strengthen Community Involvement:** Empower School Management Committees (SMCs) and conduct awareness programs for parents.
- **Expand Digital Access:** Provide affordable internet, devices, and digital content tailored for rural learners.
- **Flexible Schooling Options:** Evening or seasonal classes for children involved in farm work or labor.
- **Vocational and Skill-based Learning:** Integrate practical skills with formal education to make it more meaningful for rural youth.
- **Monitoring and Evaluation:** Regular audits, teacher performance reviews, and feedback mechanisms.

Conclusion

Rural education in India remains a critical concern that directly impacts the nation's overall development. Despite government initiatives, challenges such as poor infrastructure, lack of qualified teachers, socio-economic barriers, and digital divide continue to hinder progress.

Over the years, the government has introduced several policies and programs—including the Right to Education Act, Samagra Shiksha Abhiyan, Mid-Day Meal Scheme, and Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya—to address these challenges. While these initiatives have led to improvements in enrollment and literacy rates, their impact is often undermined by poor implementation, corruption, and a lack of localized, need-based solutions.

The failure of rural education can often be traced to systemic issues like weak implementation, low community involvement, and inadequate monitoring. However, with targeted solutions—such as improving school facilities, recruiting and training local teachers, promoting digital inclusion, and encouraging community participation—rural education can be transformed.

Bibliography

- AN OVERVIEW OF RURAL EDUCATION IN INDIA-THE WAY FORWARD MR. RANJAN KUMAR MUDULI. Vol. 10 | No. 8 | August 2021.
- SAHANA SRIDHAR, Proceedings of Cloud based Technical Symposium, 25th June, 2020.
- ADVANCE RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE Volume 4 | Issue 1 | June, 2013 | 115-119
- <https://www.smsfoundation.org/rural-education-in-india/>
- <https://www.humanify.in/rural-poor-underprivileged-education-villages-ngo-india>



Major Barriers to Development in IMT Rohtak, Haryana: A Case Study

Dr. Santosh Kumar

Assistant Professor
Department of Geography
Govt. College Barota (Sonipat)

Abstract

The main obstacles to IMT Rohtak, Haryana's expansion are examined in this study. The most important barriers are listed as water, drainage, electricity and road infrastructure problems, as well as environmental and regulatory difficulties, social and human resistance, and financial barriers. To obtain a thorough understanding of developmental challenges, the research makes use of district-level data, environmental project clearances, official HSIIDC project documents, and recent news reports. In order to guarantee that future development in IMT Rohtak stays inclusive, ecologically conscious, and socioeconomically advantageous, the study attempts to offer insights to planners and policymakers. In order to promote sustainable industrial and regional growth, this work highlights solutions that address both hard infrastructure and softer socio-political factors through a thorough case study approach.

Keywords: IMT Rohtak, HSIIDC, Barriers, Development

Introduction:

IMTs in Haryana show a forward-thinking push for industry, driven by the state government via HSIIDC. Set up with clear goals, these hubs aim to spread growth evenly across regions - bringing more factories, creating jobs, boosting local economies. Most sit near the capital region, linked by top-tier roads and transport routes - close to big consumer centers.

The IMTs in Haryana come built with up-to-date setups - broad roads, special factory areas, steady electricity, clean water flow plus waste removal, shared pollution control units, storage centers, worker homes along with open parks. These zones create good conditions for big factories as well as small businesses working in car production, machinery parts, cloth making, gadgets, preparing food items, packing materials or moving goods around. Places like Manesar, Rohtak, Kundli, Faridabad, Bahadurgarh and Bawal stand out as key business spots pulling interest from local entrepreneurs and overseas backers alike.

These towns don't just boost factories - they push city-like changes, shift villages toward cities, while linking regions economically. As fresh zones such as IMT Sohna and IMT Kharkhoda grow,

Haryana keeps building its name as a top industrial performer across India. Because of this, IMTs are key in reshaping Haryana's economy - spreading industry, pulling in tech upgrades, creating jobs that fuel progress.

Study Area:

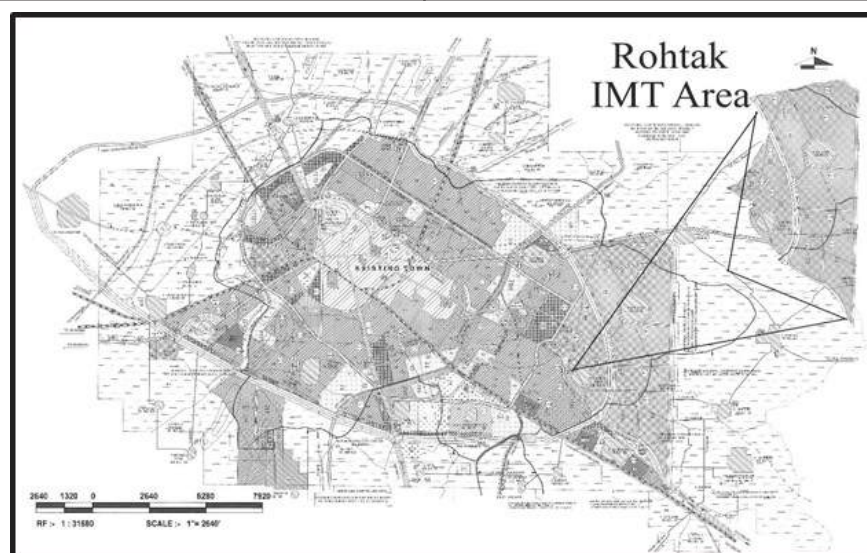
Rohtak district is located in the center of the northern Indian state of Haryana. It is located near the National Capital Region and is approximately 70 kilometers from New Delhi. Its location makes it key for movement and growth across nearby zones. Touching areas like Jhajjar, Sonipat, Jind, Hisar, plus Bhiwani, this place links several parts together. Because of where it's placed, getting around or building things here helps wider progress.

Rohtak lies in a dry region where the land is rich from river deposits, plus farming thrives thanks to canals fed by the Western Yamuna system. Over recent years, its long-standing farm-based livelihood has branched out - now including schools, clinics, commerce, along with small-scale industries. Since MDU opened, followed by Pt. Bhagwat Dayal Sharma University and several training centers, the city's becoming a go-to spot for learning across Haryana.

The Case Study:

IMT Rohtak was developed through a subsequent process by the Government of Haryana and HSIIDC through various phases like Phase 1, 2, and 3 since the year 2007. It is an estate for planned

Total area of Industrial Model Township (3680.64 acres)	Area in Acres	Year of establishment
Phase - I	859	2007
Phase - II	1893.19	2008
Phase - III	928.45	2013



Source: HSIIDC

industrial purposes, promoting industrialization of the state, encouraging investment therein, and generating local employment. The project has a total area of 3680.64 acres. Rohtak benefits from convenient transportation because of its close proximity to the capital, which is near National Highway NH 10 and the Delhi-NCR area. Roads, drainage, power supply, logistics support, and well-planned plotting are all part of the modern industrial infrastructure being developed at IMT Rohtak.

The area is designed mainly for manufacturing units, engineering industries, the automobile sector, food processing, and other MSME industries. IMT Rohtak is gradually becoming a hub of regional economic development, which is also developing entrepreneurship and industrial culture in the rural-urban transition zone. While IMT is being developed at an enormous pace, IMT Rohtak is one of the major projects in the industrial development of Haryana, which will continue to play a major role in the state and regional economy in the future.

Objectives of the study:

The purpose of the case study is to give planners and policymakers useful advice on how to handle IMT Rohtak's development issues in a way that will promote inclusive, ecologically conscious, and socioeconomically advantageous future development. The two goals of this study are as follows:

- To Discuss the critical physical, environmental and social barriers that deter the development of Rohtak as an IMT.
- To Assessing the effectiveness of available infrastructure and policy provisions for IMT development.

Research Methodology and data collection:

The collection of data was done through the extraction of secondary data from government reports and newspapers and through direct observation by way of field visits and surveys. This methodology ensures a comprehensive understanding of both the quantitative and qualitative contexts influencing the development of IMT Rohtak.

The survey and visits to IMT Rohtak clearly revealed the following constraints to its development: inadequate physical infrastructure, socio-political instability, urban planning and governance deficiencies, and social problems.

Infrastructure Shortfalls

Poor civic facilities: During the visit to IMT Rohtak, a number of issues with the civic facilities were noted, including deep potholes on numerous roads, clogged sewer lines, standing rainwater, weed growth in undeveloped areas, and broken streetlights.

Power cuts: Furthermore, the frequency and unreliability of power supply significantly hamper industrial operations.

Lack of traffic symbols: There is no proper foresight about the traffic flow, and few places have installed symbols. IMT Rohtak needs to be connected with the metro line in order to provide greater transportation facilities and cheap and fast commuting facilities to workers.



Source: Photograph taken by the author.

Water Management: A lot of the area has saline water and problems of waterlogging; therefore, it is in real need of better water management and a proper drainage system.

Economic and Sociopolitical Barriers

Unrealistic Planning and Political Interference: Political factors have tarnished Rohtak, which was supposed to be a regional hub within the NCR. Very few industrial units have been established here since 2007, necessitating the Haryana government's attention.

Social Unrest: Incidents in the past, like the violent Jat agitation in 2016, have ruined the image of the city as an investment destination and made many firms retreat. For the development of the region, therefore, substantial actions are required to be taken to enhance the behavior of its residents.

Law and Order Situation

The lack of street lighting in the industrial area has increased the risk of crime due to increasing crime. Unemployment has led to incidents of robbery by criminal gangs.

Skill Lack and Government Policy

The local population has limited skills required for the industrial sector. The Haryana Employment of Local Candidates Act, 2020, mandates policies such as 75% reservation in private sector jobs (up to

the ¹ 50,000 salary slab). In a NASSCOM survey, 80% of companies expressed concern about their future business operations due to the new reservation law, citing concerns that such policies could lead to future losses for companies, and there is a severe housing shortage for industrial workers.

Environmental Difficulties

Although the current facility at IMT Rohtak can only handle 4 MLD, the CETP should be able to handle 10 MLD (million liters per day). Groundwater is contaminated when the remaining 6 MLD of water is released untreated. With an Air Quality Index (AQI) of 498 in 2019, Rohtak was the most polluted city in India. Although 600 MT of solid waste are generated daily, only 400 MT are collected (67%).

A number of specific recommendations that strike a balance between infrastructure, governance, the environment, and sociocultural factors can be made to hasten the development of IMT Rohtak. Their application can enhance the project's industrial, social, and environmental quality.

Infrastructure Upgrades

- To lower production costs and operational disruptions for industries, make sure that roads, water supplies, and sewerage lines are repaired promptly and maintained on a regular basis.
- To reduce power outages, expand grid capacity and encourage solar energy and backup systems.
- To guarantee effective management of pollution and industrial effluent, construct a full-capacity CETP (Common Effluent Treatment Plant).

Reforms in Administration and Policy

- Handle outstanding land acquisition and compensation cases in a timely, open and one-window manner.
- To avoid corruption and delays, the plot allocation process should be fully digitalized and transparent.
- Enhance a one-window clearance process for all departmental authorizations.

Social Reforms and Human Resources

- Start providing local youth with industry-specific skill development training (like ITIs, polytechnics, and toolroom workshops) in order to end the labor shortage.
- Provide workers with safe, hygienic, and reasonably priced housing.
- Implement social inclusion programs and special livelihood rehabilitation packages for families impacted by the project.

Smart Infrastructure and the Environment

- Establish strict guidelines for solid waste management and air quality monitoring, and create green spaces and green belts.

- In urban planning, give priority to mixed-use (commercial, residential, and industrial), a “walk-to-work” culture, and smart technology (IoT, digital monitoring, etc.).

Long-Term Perspective

- Create a budget and plan of action for internal link roads, multimodal access (road, rail, metro), and the Delhi-Rohtak Rapid Transit.
- Use industry-academic collaboration models and special incentives (tax breaks, subsidies) to draw in investment and increase employment.

IMT Rohtak’s industrial development can be competitive, inclusive, and sustainable if these suggestions are put into practice.

Conclusion:

There are several obstacles to IMT Rohtak’s development, including poor power and physical infrastructure, policy bottlenecks, sociopolitical unpredictability, a lack of skilled workers, and poor environmental management. The study suggests a well-rounded, integrated strategy with particular enhancements like consistent upkeep of public utilities, increased power capacity, efficient pollution control, and open digital plot distribution systems. In addition to inclusive planning and smart technologies, social interventions like improved worker housing and industry-specific skill training are crucial for overcoming human resource constraints. Long-term development requires promoting administrative effectiveness, implementing strict environmental laws, and using industry-academia collaborations to attract investment and generate employment. IMT Rohtak can develop into a competitive, inclusive, and sustainable industrial hub by implementing these strategies, creating new chances for Haryana’s urban and economic development.

References:

1. HSIIDC reports
2. News Papers (Amar Ujala, Hindustan times, The Tribune)



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

भक्ति कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

for the paper titled

हिन्दी साहित्य में गाँधी का प्रभाव
(विशेष सन्दर्भ-सियाराम शरण गुप्त)

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

राकेश

शोधार्थी, हिन्दी विभाग

प्रो. ज्योति किरण

शोध निर्देशिका, महिला महाविद्यालय पी.जी. कॉलेज, किदवई नगर, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

for the paper titled

हरीश अरोड़ा की कविताओं में स्त्री-जीवन के
विविध सौंदर्य आयाम

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

सन्तोष कुमारी

पी.एच.डी. हिन्दी शोधार्थी

ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

पंजीकरण संख्या : GU23R2203

for the paper titled

मलबे का मालिक कहानी में भारत विभाजन की त्रासदी :
एक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Atul Kumar

Assistant Professor, Department of Commerce, Shri Ram College,
Muzaffarnagar

Dr. Pardeep Kumar

Assistant Professor, S.G.Technical University, Sikkim

for the paper titled

**Quality Analysis and Management Practices for
Sugar Factory Wastewater**

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Arti Sood

for the paper titled

**AI and Digital Education in India: Driving a Pedagogical
Shift for Better Learning Outcomes**

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Dhanya B

Assistant Professor, University of Kerala
Dhanya house, Elampa PO 695103
Attingal, Trivandrum

for the paper titled

हिंदी साहित्य में पर्यावरण प्रदूषण - जल प्रदूषण समकालीन
हिंदी कविताओं के विशेष संदर्भ में

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. बी.के. चौधरी

शोध निर्देशक : (ऐसोसिएट प्रोफेसर)

शारीरिक शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

पूजा नागपाल

शोधकर्त्री : शारीरिक शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

for the paper titled

आधुनिक जीवन-शैली में योग की प्रासंगिकता का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

विनोद प्रसाद जायसवाल

शोध छात्र - हिन्दी विभाग

डॉ. विनोद कुमार शर्मा

शोध निर्देशक - सह- प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉ. सी. वी. रमण विश्वविद्यालय, वैशाली, बिहार

for the paper titled

मुंशी प्रेमचंद के कथा-साहित्य में स्त्री-पुरुष मनोविज्ञान
का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

प्रवीण कुमार

शोधार्थी (समाजशास्त्र) शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

डॉ. अश्विनी महाजन

शोध निर्देशक (प्राचार्य) डॉ. खूबचंद बघेल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई-3, जिला-दुर्ग (छ.ग.)

for the paper titled

छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में निवासरत बैगा जनजाति
के विकास में शासकीय योजनाओं की भूमिका

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

प्रो. डॉ. केशव क्षीरसागर
हिंदी विभागाध्यक्ष,
रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, धाराशिव

for the paper titled

समकालीन हिंदी नवगीतों में व्यक्त पर्यावरणीय चेतना

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Jagdish Rai

Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Department of
Commerce, Jhunjhunu, Rajasthan

Dr. Aman Gupta

Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Department of
Commerce, Jhunjhunu, Rajasthan

for the paper titled

**Stacked for Scale: India's Digital Public Infrastructure, UPI
Adoption, and Inclusive Growth**

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

रोहताश कुमार

शोधार्थी (भूगोल), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

डॉ. सोम प्रकाश

शोध निर्देशक (भूगोल), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

for the paper titled

कृषि में कीटनाशकों का उपयोग : मानव व पारिस्थिति
पर प्रभाव (हनुमानगढ़ जिले का भौगोलिक अध्ययन)

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. विजयलक्ष्मी देवांगन

सहा प्राध्यापक राजनीति विज्ञान

पं देवी प्रसाद चौबे शासकीय महाविद्यालय साजा, जिला बेमेतरा छ.ग.

for the paper titled

मानव अधिकार की अवधारणा, विकास और महत्व : एक
विश्लेषणात्मक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Subhash Chander

(Research scholar), Department of History
Tantia University, Riico, Sri Ganganagar

Dr. Vijay Shankar Kaushik

Supervisor - Assistant professor

for the paper titled

राजस्थान की स्थापत्य कला : एक ऐतिहासिक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

आदित्य राज

शोधार्थी (NET) राजनीति विज्ञान विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

for the paper titled

जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति एवं विचारों का एक
विश्लेषणात्मक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. सुनीता सिंह मरकाम

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी

शास. इन्दिरा गांधी गृहविज्ञान कन्या महाविद्यालय शहडोल, मध्य प्रदेश

for the paper titled

भाषा और समाज

(वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भाषाओं का योगदान)

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

शोध समालोचन Shodh Samalochan

ISSN:2348-5639

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

नेहा जैन अजीज़
सहायक अध्यापक, कवयित्री

for the paper titled

प्रेमचंद का साहित्य : समाज का दर्पण

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

सावन कुमार

शोधार्थी (इतिहास विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डॉ. विजय शंकर कौशिक

सहायक आचार्य (इतिहास विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

for the paper titled

डॉ. बी.आर. अंबेडकर और उनका समतामूलक समाज-
इतिहास के परिप्रेक्ष्य में

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

कुसुम लता टाक

(शोधार्थी) शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

डॉ. श्रद्धा सिंह चौहान

शोध निर्देशिका (सहायक आचार्या), श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई. केशव
विद्यापीठ जामडोली जयपुर (राज.)

for the paper titled

उच्च माध्यमिक स्तर पर विभिन्न संकाय में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी
शिक्षकों की शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

आरती ग्वालेर

शोधार्थी

डॉ. मोहम्मद नासिर

पर्यवेक्षक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छत्तीसगढ़)

for the paper titled

मध्यप्रदेश के विश्वविद्यालयों में शोधार्थियों की डिजिटल सूचना
संसाधनों के प्रति अभिरुचि और संतुष्टि : एक समीक्षात्मक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

कविता

शोधकर्त्री : कला संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

डॉ. जगदीश प्रसाद कड़वासर

शोध निर्देशक : (सहायक प्रोफेसर)

कला संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

for the paper titled

महिला सशक्तिकरण में मानवाधिकारों की भूमिका : एक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

आन्नपूर्ण भोसले

शोध छात्रा, हिंदी विभाग, कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर, कर्नाटक

डॉ. अमरनाथ प्रजापति

शोध पर्यवेक्षक, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर, कर्नाटक

for the paper titled

अगम बहै दरियाव : किसान जीवन का महाकाव्य

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

सरिता पूनिया

शोधकर्त्री : कला संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

डॉ. जगदीश प्रसाद कड़वासरा

शोध निर्देशक : (सहायक प्रोफेसर), कला संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

for the paper titled

भारत में महिला अधिकार विधान एवं संरक्षण : एक
विश्लेषणात्मक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. विजय सदामते

हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

for the paper titled

मोहनदास नैमिशराय का उपन्यास 'महानायक बाबासाहब डॉ.
आम्बेडकर' डॉ. बाबासाहब आंबेडकर- संघर्षशील महानायक

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

निहारिका शुक्ला
प्रो. राजीव कुमार

for the paper titled

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

శోధ సమాలోచన Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Adapa Kedari

Telugu Lecturer,
Y.N.N.R. Government Degree College,
Kaikaluru, Eluru Dist.

for the paper titled

పాల్కురికి సోమనాథుని రచనలు - సామాజిక దృక్పథం

“కులరహిత సమాజంకోసం కలంపట్టిన తొలి తెలుగు అభ్యుదయ కవి”

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

बबिता सिंह मरकाम

शोधार्थी

(अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, म.प्र.)

for the paper titled

गोंड जनजातियो में 750 का योगदान
(सीधी जिले के विशेष संदर्भ)

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

ललित कुमार

एम. ए. तृतीय सत्र हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राया सुचानी
बांग्ला जम्मू - कश्मीर

for the paper titled

कबीर समाज सुधारक के रूप में

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Anupama

Assistant Professor, Department of Hindi, Mount Carmel College,
Autonomous,
#58, Palace Road, Abshot Layout,
Vasanth Nagar, Bangalore

for the paper titled

किन्नर विमर्श : सामाजिक पहचान और
आधुनिक संदर्भ में संभावनाएँ

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Indu P.

Assistant Professor Department of languages - Hindi
M.O.P.Vaishnav College for Women (Autonomous)
Nungambakkam, Chennai

for the paper titled

धर्मशास्त्रों का नारी के प्रति दृष्टिकोण

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

पूनम व्यास

शोधार्थी, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर (राज)

प्रो. ग्रीष्मा शुक्ला

जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, स्कूल ऑफ एजुकेशन

for the paper titled

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के समक्ष ऑनलाइन शिक्षण
की चुनौतियों का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. वाणीश्री बुग्गी

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

माउंट कार्मल महाविद्यालय (स्वायत्त), बेंगलुरु

कर्नाटक (भारत)

for the paper titled

पारम्परिक पारिस्थितिकी ज्ञान और जलवायु

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

SILPA. A

Research scholar

Govt.Arts and Science College meenchanda, Calicut

for the paper titled

हिन्दी उपन्यास में मानव तस्करी : सरिता पटेल का उपन्यास
'बिकता बदन' के विशेष संदर्भ में

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. श्रीकांत राठोड

श्री गु रा गाँधी कला, श्री य अ पाटील वाणिज्य एवं
श्री मा पु दोशी विज्ञान उपाधि महाविद्यालय इंडि, जिला विजयपुर

for the paper titled

मरंग गोडा नीलकंठ हुआ : विकिरण, प्रदूषण से जूझते
आदिवासियों की गाथा

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

इच्छा उपाध्याय

छात्रा (एम. ए.) हिन्दी विभाग

जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

for the paper titled

डॉ. नरेश सिहाग का कहानी संग्रह और किन्नर विमर्श

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Mahesh Chand Gurjar

Education department - Assistant professor

Smt. Anar Devi Teacher's Training College Bakharana (Kotputli -Behror)

for the paper titled

2047 में भारत की उच्च शिक्षा का परिदृश्य : विश्वविद्यालय
और कॉलेजों में शिक्षा के स्वरूप और वैश्विक प्रतिस्पर्धा

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Nimesh Kumar

Assistant Professor of Mathematics

St. Paul Teachers' Training College Birsinghpur, Samastipur, Bihar

for the paper titled

A Study on Differential Geometry of Curved Manifolds

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. सरिता भवानी मालवीय

असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ लॉ, आरकेडीएफ यूनिवर्सिटी, भोपाल (म.प्र.)

for the paper titled

किन्नर समुदाय और आत्म-पहचान का संवैधानिक अधिकारः

ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण)

अधिनियम, 2019 का आलोचनात्मक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Chandani Kumari

Assistant Registrar, AISECT University, Hazaribagh, Jharkhand

Prof. (Dr.) Smruti Ranjan Rath

Dean - Commerce & Management and Dean - Student Welfare, AISECT
University,
Hazaribagh, Jharkhand.

for the paper titled

**The Role of Digital Marketing in Shaping Consumer Behaviour
in Tier-II Cities: A Case Study of Ranchi, Jharkhand**

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

संजय मोहन

शोधार्थी (अर्थशास्त्र विभाग)

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

डॉ. सुमन लता

सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र विभाग)

for the paper titled

केन्द्र सरकार द्वारा मनरेगा योजना के लिए ग्राम पंचायतों को
आवंटित बजट की उपयोगिता का धरातलीय अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

प्रो. डॉ. मन्जु सोलंकी

निर्देशिका, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा

सुधीर कुमार

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

for the paper titled

भारतीय विदेश नीति निर्माता के रूप में पं. जवाहर लाल नेहरू
की भूमिका

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

चंद्रकला हळीमनी

शोधार्थी हिन्दी स्नातकोत्तर एवं अनुसंधान विभाग,
गुलबर्गा विश्वविद्यालय कलबुरगि (कर्नाटक)

for the paper titled

हिन्दी एवं कन्नड भक्ति परंपराओं में महिलाएँ

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. प्रवीन शर्मा

शोध पर्यवेक्षिका, सह आचार्या, हिंदी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

अनिल कुमार

शोधार्थी, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

for the paper titled

अदृश्य जीवन, अदृश्य साहित्य : हिंदी उपन्यासों में किन्नर
समुदाय का प्रतिनिधित्व एवं उसकी सीमाएँ

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

गायत्री देवी

शोधार्थिनी, राजनीति विज्ञान, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट सतना (म.प्र.)

प्रो. नीलम चौरे

विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय वि.वि. चित्रकूट सतना (म.प्र.)

for the paper titled

वर्तमान भारत में बालगंगाधर तिलक के राजनीतिक विचारों की
प्रासंगिकता

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

प्रो. चन्द्रशेखर सिंह

समाज कार्य विभाग

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

for the paper titled

वैश्विक शांति में महात्मा गांधी की भूमिका:

प्रभाव और समाधान

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

प्रो. शिवनारायण सिंह

शोध निर्देशक

सतीश कुमार पाण्डेय

शोधार्थी, हिंदी विभाग, पाटलीपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

for the paper titled

डॉ. राजेंद्र प्रसाद पाण्डेय की कविताओं में ग्रामीण परिवेश

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. दस्तगीर एम. मुल्ला

एसोसिएट प्रोफेसर और अध्यक्ष हिंदी विभाग,
मराठा मंडल कला, वाणिज्य, विज्ञान और गृह विज्ञान महाविद्यालय,
बेलगावी, (कर्नाटक)

for the paper titled

समस्या : शोध का विषय

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Mala Srivastava

Asst. Professor, Department of English
Deen Dayal Upadhyay Govrnment Degree Collage,
Saidabad Prayagraj, U.P.

for the paper titled

Marriage as a Socio-Economic Institution in *Jane Austen's Pride and Prejudice*

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Alok Kumar Rai¹, Dr. Vivek Kumar Jaiswal²

1. Research Scholar, Department of Economics, Kisan P.G College, Bahraich
2. Assistant Professor, Department of Economics, Kisan P.G College, Bahraich

for the paper titled

**Disparities in Health and Well-Being: A Comparative Study of
Women and Men in Uttar Pradesh**

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. Rajendra Prasad Meena

(Research Supervisor)

Assistant Professor, Department of Political Science

Amit Batra

(Researcher)

Subject- Political Science, Tantia University, Sri Ganganagar

for the paper titled

**DEMOCRACY IN THE DIGITAL AGE: NAVIGATING THE
IMPACT OF SOCIAL MEDIA**

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. मो. रियाज खान
बी एम एस महिला महाविद्यालय बेंगलुरु

for the paper titled

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताएं : जन चेतना से
जन आंदोलन तक

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

चंचल कुमार सिंह

शोधार्थी,

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,

अमरकंटक (मध्य प्रदेश)

for the paper titled

जनसंचार के आधुनिक माध्यम

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

रोहित कुंवर
(शोधार्थी)

डॉ. सोनू सारण
(शोध निर्देशिका)

डॉ. केशव देव शर्मा
(सह-शोध निर्देशक)

इतिहास विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनूं

for the paper titled

सतनामी सम्प्रदाय की पूजा पद्धति, भक्ति एवं दर्शन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr Bharti Tyagi

Professor & Head, Dept. of English, D J College, Baraut, UP

Indresh Prasad Purohit

Research Scholar

for the paper titled

**A THEMATIC ANALYSIS OF JÂTAKAS AND THERÎGÂTHÂ:
ANCIENT INDIAN PERSPECTIVES ON CASTE, GENDER,
AND MORALITY**

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. सूर्यप्रकाश

(सहायक आचार्य) शिक्षा संकाय,

suryaprakasheducator@gmail.com, Mob.8707457353

डॉ. पूनम रावत

(सहायक आचार्य) शिक्षा संकाय, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय (झाँसी)

for the paper titled

मानवाधिकारों के प्रति शिक्षित ग्रामीण व शहरी महिलाओं की
जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Gaganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

डॉ. नरेश कुमार सिहाग

स्वतंत्र शोधकर्ता, हिंदी साहित्य अध्ययन

गुगन निवास 26 पटेल नगर भिवानी हरियाणा-127021

for the paper titled

जब्त-सुदा साहित्य की परंपरा और इतिहास

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

ISSN:2348-5639

శోధ సమాలోచన Shodh Samalochan

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Certificate of Publication*

is awarded to

Dr. N. Anitha Margaret

Lecturer in Telugu

Srr&cvr Government Degree college (Aut)

Vijayawada

for the paper titled

డాక్టర్. ఏ.బి. మాసిలామణి - క్రైస్తవ కథానికా సాహిత్యం

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152



Impact Factor
6.521

An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple
Languages Quarterly Research Journal

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

ISSN:2348-5639

शोध समालोचन Shodh Samalochan

Certificate of Publication*

is awarded to

लवप्रीत सिंह
(शोधकर्ता)

डॉ. अनिल कुमार
(शोध निदेशक)

for the paper titled

श्रीगंगानगर जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के
द्वारा किये जाने वाले गैर-शैक्षिक कार्यों का शिक्षण पर प्रभाव
का अध्ययन

Published in Shodh Samalochan ISSN:2348-5639

October to December 2025, Vol. 12, Issue-4

Executive Editor

Dr. Varsha Rani

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A. (JMC), M.Lib.& Information Science,
DHLT, M.Phil. Ph.D., Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

***This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic**

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152